तीन पीढ़ी

लेखक

मैक्सिम गोर्की

अनुवादक

शिवदान सिंह चौहान

विजय चौहान

प्रकाशक
जगत शङ्खधर

मूल्य ५)

सरस्वती प्रेस, बनारस द्वारा प्रचारित

मुद्रक
लालता प्रसाद
ज्योति प्रेस,
गोलादीनानाथ, बनारस

प्रकाशकीय

मैक्सिम गोर्की केवल रूस के ही नहीं, वरन् विश्व के उन इने-गिने महान् कलाकारों में से हैं, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट यथार्थवादी कला से योरप और एशिया के लगभग हर देश के आधुनिक राष्ट्रीय साहित्यों को प्रभावित किया है और बीसवीं सदी के असंख्य तरुण लेखकों को सच्चे जीवनपरक साहित्य के निर्माण की प्रेरणा दी है। गोर्की और उनकी कृतियों से हमारे देशवासी अपरिचित नहीं हैं। उनके क्रान्तिकारी उपन्यास 'माँ' और 'वे तीन', उनकी आत्म-कथा का पहला भाग 'मेरा बचपन', और उनकी अनेक कहानियाँ हिन्दी में अनूदित हो चुकी हैं और अनेक संस्करणों के बाद भी वे हिन्दी-पाठकों में अधिकाधिक प्रचारित हैं और गोर्की-साहित्य की माँग उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। गोर्की ने अपनी रचनाओं में पुराने रूसी समाज के जिन अगणित अभिशप्त मानवों का चित्रांकन किया है, वे हमारे पाठकों को अपने समाज और देश की विषम समस्याओं और लोगों के अभिशक्त जीवन का स्मरण दिलाकर वर्तमान व्यवस्था को आमूल बदलने की चेतना जगाते हैं। इसीलिए गोर्की के उपन्यास भारतीय पाठक के हृदय को अपनी मार्मिकता, अपनी मानवीयता और अपनी गहरी संवेदनशीलता से सीधा पकड़ लेते हैं।

दुर्भाग्य से गोर्की का सबसे सुगठित और कलात्मक उपन्यास 'अर्तामोनोव्ज़' अभी तक हिन्दी में अप्राप्य था, यद्यपि बँगला और कई दूसरी भारतीय भाषाओं में उसके अनुवाद प्रकाशित हो चुके थे। अब इस उपन्यास को हिन्दी में सर्व-प्रथम 'तीन पीढ़ी' नाम से प्रकाशित करते हुए हम गर्व का अनुभव कर रहे हैं। इस उपन्यास में गोर्की ने एक पूँजीपति परिवार की तीन पीढ़ियों का चित्रण किया है। एक प्रकार से लाक्षणिक रूप में यह रूसी पूँजीवाद के विकास और ह्रास का कलात्मक आकलन है।

इसका अनुवाद हिन्दी के प्रमुख प्रगतिवादी आलोचक श्री शिवदान सिंह चौहान और उनकी सुयोग्य पत्नी श्रीमती विजय चौहान ने किया है। हमें खेद है कि श्री चौहान ने गोर्की के उपन्यासों की कला पर भूमिका-रूप में जो निबन्ध भेजा था, वह डाकघर में कहीं खो गया। पाठकों को अब इस भूमिका के बिना ही सन्तोष करना पड़ेगा। हमें आशा है कि गोर्की की अन्य रचनाओं की तरह इस महान् कृति का भी हिन्दी पाठकों में हार्दिक स्वागत होगा।

मैक्सिम गोर्की : अपने पुत्र मैक्सिम के साथ

यह चित्र गोर्की ने ऐन्तन चेखव को भेंट किया था। उस पर गोर्की ने लिखा था : "मेरे साथ यह मेरे बेटे का चित्र है जो डेढ़ साल का फ़िलासफ़र है। यह मेरे जीवन की सब से अच्छी चीज़ है।"

(१८९९)

तीन पीढ़ी

१

दास-प्रथा से मुक्ति पाने के लगभग दो वर्ष बाद की बात है। सन्त निकोला के गिरजाघर की जागीर पर बसनेवालों ने निर्माण-दिवस की प्रार्थना के समय एक आगन्तुक को देखा। घनी भीड़ में से लोगों को उजड्डपने से धकियाते हुए उसने द्रिओमोव के सबसे अधिक श्रद्धास्पद धर्म-चिह्नों के सामने भारी-भरकम मोमबत्तियाँ लगा दीं। वह हृष्ट-पुष्ट काठी का आदमी था। उसकी जिप्सियों जैसी घुँघराली दाढ़ी थी—विशाल और घनी—जिसके अधिकतर बाल आगे की ओर भूरे और जड़ में काले थे। नाक बड़ी थी, नीली-भूरी आँखें उसकी छितरी भौंहों के नीचे साहसी दृष्टि से घूरती थीं। जब वह अपनी बाँहें छोड़ देता तो चौड़ी हथेलियाँ उसके घुटनों को छू लेतीं।

नगर के सबसे प्रसिद्ध लोगों के साथ ही वह क्रूस चिह्न के पास सबसे आगे पहुँच गया। यह बात उन लोगों को सबसे अधिक अखरी और प्रार्थना के बाद द्रिओमोफ़ के प्रमुख लोग गिरजाघर के सहन में रुक गये ताकि इस अजनबी के बारे में विचार-विनिमय करें। कुछ लोगों ने उसे पशुओं का व्यापारी समझा। कुछ के विचार में वह अमीन ठहरा और दुर्बल-स्वास्थ्यवाले किन्तु शान्तिप्रिय मेयर येव्सी बाइमाकोव ने आहिस्ता से खाँसते हुए कहा—

"शायद वह किसी जागीरदार का दास रहा होगा, या शिकारी, या कुछ ऐसा ही आदमी जो बड़े लोगों की दिलबस्तगी का सामान करता है।"

बजाज़ पोमियालोव को लोगों ने "रँडुवा तिलचट्टा" नाम दे रखा था। वह चञ्चल और कामुक व्यक्ति था और द्वेष-भरे शब्दों का प्रेमी, भयानक और चेचक-मुँहे शक्ल का आदमी था। वह द्वेष-भाव से बोला—

"उसकी बाँहें देखो कितनी लम्बी हैं! और देखो तो चलता कैसे है, मानो गिरजाघर के सारे घण्टे उसके लिए ही बज रहे हों।"

चौड़े कन्धों और बड़ी नाकवाला वह आदमी सड़क पर बढ़ता गया। उसके क़दम इतनी दृढ़ता से पड़ रहे थे जैसे यह उसकी अपनी ही ज़मीन हो। वह

बढ़िया कपड़े का नीला कोट और रूसी चमड़े के जूते पहने था। उसके हाथ जेबों में पड़े थे और कोहनियाँ बदन से सटी हुई थीं। टिकिया और बिसकुट बनानेवाली येरदान्स्काया को इस आदमी का ठीक-ठीक पता लगाने का काम सौंप दिया गया। गिरजा की घण्टियाँ टन-टना रही थीं और लोग खाना खाने के लिए अपने-अपने घरों की ओर लौट पड़े। शाम को पोम्यालोव के बग़ीचे में चाय के निमन्त्रण पर उन्हें फिर मिलना था।

खाने के बाद नगर के और लोगों ने उस अजनबी को नदी के उस पार राजकुमारी रान्स्की की ज़मीन पर "गो-मुख"* स्थान के पास देखा। वह बेद-वृक्षों के कुञ्जों में लम्बे और सम डग भरता रेतीली भूमि पर टहल रहा था। अपने हाथ से आँखों पर छाया करके उसने मुड़कर नगर की ओर, फिर ओका नदी और उसकी कच्छ-भूमि से भरी चक्करदार सहायक नदी वतरक्षा की ओर देखा। द्रिओमोव के निवासी फूँक-फूँककर पाँव रखनेवाले थे। किसी की इतनी हिम्मत न थी कि उससे पूछता कि तुम कौन हो और यहाँ क्यों घूम रहे हो। अन्त में उन्होंने यह काम पुलिस के सिपाही मश्कास्तूपा के सुपुर्द किया। वह नगर का विदूषक और मशहूर पियक्कड़ था। सब लोगों के सामने औरतों की निगाहों से भी शर्म न खाकर स्तूपा ने निर्लज्जतापूर्वक अपनी पतलून उतारकर फेंक दी, पर अपनी मुड़ी-मुड़ाई फौजी टोपी सर पर जमा ली। कीचड़ से भरी वतरक्षा में से चलकर उसने अपना पेट फुलाया और बत्तख़ की-सी भोंडी चाल से वह उस अजनबी के पास जा पहुँचा। अपना साहस क़ायम रखने के लिए उसने बड़े ऊँचे स्वर में पूछा—

"तुम कौन हो?"

उस अजनबी का जवाब तो सुनाई नहीं पड़ा, पर स्तूपा तुरन्त वापस लौट आया और उसने आकर कहा—

"वह जानना चाहता है कि मैंने अपनी भलमनसी कहाँ गँवा दी। उसकी निगाह में वैसी ही दुष्टता भरी हुई है जैसी उचक्कों की आँखों में होती है।"

---

* अंग्रेज़ी में cow's Tongue है पर हिन्दी में उसका अनुवाद 'गाय की जीभ' बड़ा भद्दा होता, इसलिए यह गोमुख कर दिया गया है।

घेघे की रोगी टिकियावाली यरदन्स्काया के बारे में प्रसिद्ध था कि वह बुद्धिमती थी और लोगों के भाग्य बताती थी। शाम को पोम्यालोव के बगीचे में बड़ी बुरी तरह आँखें मटकाते उसने कहा—

"उसका नाम अर्तामोनोव है और बप्तिस्मे का इलिया। कहता है कि वह यहाँ धंधा शुरू करने आया है, पर पता नहीं चल सका कि यह धंधा कैसा होगा। वह वोगोंरोद की राह आया और अभी तीसरे पहर तीन बजे के कुछ ऊपर उसी सड़क से चला गया।"

बस, उस आदमी के बारे में वे लोग और कोई मतलब की बात न जान सके। यह बात उन्हें बुरी लग रही थी, मानो रात को खिड़की पर दस्तखत देकर कोई ग़ायब हो गया हो और आनेवाली मुसीबत की निःशब्द चेतावनी छोड़ गया हो।

लगभग तीन हफ़्ते बीत गए। इस घटना के बारे में नगर के लोगों की याद मिट-सी गई थी कि अचानक एक दिन यह अर्तामोनोव अपने तीन बेटों को लिए हुए वहाँ फिर दिखाई दिया। उसने सीधे बैमाकोव के पास जाकर रोब-दार स्वर में कहा—

"सुनो, यव्सी मित्रिच, तुम्हारे योग्य शासन में रहने के लिए ये नए निवासी आये हैं। कृपा कर मुझे अपने साथ बसने और एक अच्छी ज़िन्दगी बनाने में मदद दो।"

बिना किसी घुमाव-फिराव के संक्षेप में उसने बताया कि वह रती नदी के किनारे कुर्स्क नगर के पास राजकुमारी रान्स्की की जागीर पर पहले कभी दास था। वहाँ वह राजकुमार ज्योर्जी के लिए कारिन्दे का काम करता था। दास-प्रथा के ख़त्म होने पर एक मोटी रक़म प्राप्त कर उसने वह काम छोड़ दिया। अब उसने अपना लिनेन के कारखाने का कारोबार शुरू करने का निश्चय किया है—उसकी पत्नी जीवित नहीं है। बेटों के नाम इस प्रकार हैं: सबसे बड़ा प्योत्र, कुबड़ा निकिता, और सबसे छोटा अल्योशा भतीजा है लेकिन क़ानूनी तौर पर गोद लिया है।

"हमारे किसान तो छालटीन बहुत कम लगाते हैं", बैमाकोव ने सोचकर कहा—

"हम उनसे अधिक लगवा लेंगे।"

अर्तामोनोव का स्वर भारी और रूखा था और जब वह बोलता तो ऐसा लगता मानो एक बड़ा ढोल बज रहा हो। बैमाकोव ने अपनी सारी ज़िन्दगी ज़मीन पर फूँक-फूँककर पाँव रखते काटी थी। वह इतने धीमे और कोमल स्वर में बोलता था मानो डरता हो कि कहीं किसी डरावने जन्तु को न जगा दे। अपनी उदास बैंगनी रंग की दयालु आँखों को झपकाते हुए उसने अर्तामोनोव के बेटों की ओर देखा, जो दरवाज़े पर मूर्तिवत् खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी आकृतियाँ एक दूसरे से भिन्न थीं। सबसे बड़ा लड़का अपने पिता से मिलता-जुलता था—चौड़ी छाती, घनी भौंहे और छोटी भालू जैसी आँखें। निकिता की आँखें लड़की-जैसी बड़ी और उसकी कमीज की तरह नीली थीं। अलेक्सी सुन्दर-सा बालक था। उसके लाल कपोल, गोरा रंग, घुँघराले बाल थे और उसकी निश्छल, प्रफुल्ल मुद्रा थी।

"इनमें से क्या एक फौज में भर्ती होगा?" बैमाकोव ने पूछा।

"नहीं, मुझे लड़कों की ख़ुद ज़रूरत है। फ़ौज से मैंने छुटकारा ले लिया है।" अर्तामोनोव ने लड़कों की ओर इशारा किया।

"बाहर जाओ।"

अपनी उमर के हिसाब से वे लड़के जब सिलसिलेवार एक कतार में चुप-चाप कमरे से बाहर निकल गए तो अर्तामोनोव ने बैमाकोव के घुटने पर अपना भारी हाथ रखकर कहा—

"यव्सी मित्रिच, ये काम तो होते रहेंगे, लेकिन मुझे एक रिश्ता पक्का करना है। मैं अपने बड़े लड़के के लिए आपकी बेटी चाहता हूँ।"

बैमाकोव तो सचमुच डर गया। अपनी बाँहें हवा मे फैलाते वह उस बेंच पर से उछलकर खड़ा हो गया।

"भगवान् तुम्हारा भला करे! आज से पहले तुम्हें कभी नहीं देखा। तुम्हारे बारे मे कुछ जानता भी नहीं; और तुम हो कि इस तरह का प्रस्ताव लेकर आये हो। मेरे एक ही तो बेटी है और वह भी इतनी नन्ही कि शादी के लायक नहीं; और फिर तुमने उसे कभी देखा भी नहीं, तुम यह भी नहीं जानते कि वह कैसी है, फिर तुम ऐसी बातें कैसे कह सके हो?"

लेकिन अर्तामोनोव अपनी घुँघराली दाढ़ी के भीतर-ही-भीतर केवल मुसक-

राया और बोला—

"मेरे बारे मे तुम पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट से पूछ-ताछ कर लो। उस पर मेरे राजकुमार के बहुत से अहसान हैं और राजकुमार ने उसको लिख भी दिया है कि वह मेरे हर काम में मदद करे। पवित्र धर्म-चिह्नों की कसम खाकर मैं कह सकता हूँ कि तुम्हे मेरे बारे में कोई बुरी चीज़ सुनने को न मिलेगी, मैं तुम्हारी बेटी को भी जानता हूँ। तुम्हारे इस शहर की कोई भी बात मुझसे छिपी नहीं है। मै यहाँ चार बार आया हूँ और खामोशी से सब चीजों का पता कर लिया है। मेरा बड़ा लड़का भी पहले यहाँ आया था। उसने तुम्हारी बेटी को देखा है—तुम इसकी चिन्ता न करो।"

भालू के आलिङ्गन मे फँसे आदमी-सा अनुभव करते हुए बैमाकोव ने कहा—

"ज़रा ठहरो....."

"मैं ठहर सकता हूँ लेकिन अधिक दिनो तक नहीं। मेरे बुढ़ापे के दिन हैं", कठोरतापूर्वक उस रोबदार अजनबी ने कहा। खिड़की मे से झाँककर उसने आँगन में आवाज़ दी—

"अन्दर आओ और प्रणाम करो।"

जब वे लोग चले गये तो बैमाकोव ने घबराते हुए धर्म-चिह्नों की ओर मुड़कर अपने ऊपर तीन बार क्रास का चिह्न बनाया और फिर दबे स्वर में कहा—

"भगवान्, हमारी रक्षा करो। ये न जाने कैसे लोग हैं? विपत्ति से रक्षा करो।"

डंडे के सहारे अपने को घसीटता हुआ वह बाहर बगीचे मे पहुँचा जहाँ उसकी पत्नी और बेटी जँभीरी नीबू के पेड के नीचे मुरब्बे पका रही थी। उसकी मोटी-ताज़ी सुन्दर पत्नी ने पूछा—

"मित्रिच, आँगन मे ये कौन लड़के थे?"

"पता नहीं कौन थे। नतालिया कहाँ गई?"

"भंडारे से चीनी लाने गई है।"

"चीनी लाने!" एक घास के टीले पर बैठते हुए बैमाकोव ने खिन्नतापूर्वक दोहराया। "चीनी। हाँ, लोग ठीक ही कहते हैं कि दासों की मुक्ति से लोगों की मुसीबतें बढ़ जायँगी।"

उसकी पत्नी ने घबड़ाकर पूछा—

"क्या हुआ ? क्या फिर तबियत खराब है ?"

"मेरा मन परेशान है, मुझे लगता है कि वह आदमी मेरी जगह लेने आया है।"

उसकी पत्नी ने सान्त्वना देने की कोशिश की—

"बेवकूफ़ न बनो। देहात से आजकल कितने ही लोग तो शहर में बसने के लिए आते रहते हैं।"

"यही बात तो है। अभी मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा। मुझे ज़रा सोच लेने दो।"

पाँच दिन बाद बैमाकोव ने खाट पकड़ ली और बारह दिन बाद वह चल बसा। उसकी मौत ने अर्तामोनोव और उसके लड़कों पर एक घनी छाया डाल दी। बीमारी के दिनों मे अर्तामोनोव दो बार मेयर को देखने गया और वे दोनों बड़ी देर तक एकान्त में बात-चीत करते रहे। दूसरी बार बैमाकोव ने अपनी पत्नी को भी अन्दर बुला लिया और थकावट से अपने सीने पर हाथ रखकर बोला—

"लो, यह आ गई। इनसे बात करो। मुझे तो लगता है कि अब मैं दुनिया के कामों मे हाथ न डाल सकूँगा। मुझे आराम करने दो।"

"उल्याना इवानोव्ना, मेरे साथ आओ।" अर्तामोनोव ने कहा और मुड़कर यह देखे बिना ही कि वह उसके साथ आ रही है या नहीं, वह कमरे से बाहर निकल गया।

"जाओ उल्याना, लगता है कि भाग्य में यही बदा है।" अपनी पत्नी को आगन्तुक के पीछे जाने से हिचकिचाते हुए देखकर मेयर ने धीमे स्वर मे सलाह दी। वह दृढ़ चरित्र की और चतुर स्त्री थी; ऐसी कि जो बिना अच्छी तरह सोचे-भाले किसी काम मे हाथ नहीं डालती। फिर भी कुछ ऐसी बन आई कि एक घण्टे बाद पति के पास लौटकर वह अपनी सुन्दर लम्बी बरौनियों से आँसू पोंछते हुए बोली—

"हाँ मित्रिच, भाग्य में यही बदा लगता है। बेटी को आशीर्वाद दो।"

"उस दिन शाम को नये वस्त्राभूषणों से सजाकर वह अपनी बेटी को पिता की रोगशय्या के पास ले गई। अर्तामोनोव ने अपने बेटे को आगे बढ़ाया और

लड़के और लड़की ने एक दूसरे से आँखें चुराते हुए हाथ मिला लिए और अपने घुटनों के बल नीचे झुक गए। उन्होंने अपने सर झुका दिए और साँस लेने के लिए छटपटाते हुए वैमाकोव ने उनके सर पर अपने घराने के मोतिया जड़े प्राचीन धर्म-चिह्न को उठाकर थाम लिया।

"पिता और पुत्र के नाम पर....या भगवान्, मेरी एकलौती बच्ची को अनाथ न छोड़ना।"

अर्तामोनोव से उसने कठोर मुद्रा में कहा—

"याद रखो, मेरी बेटी के लिए भगवान् के आगे तुम्हें उत्तरदायी होना पड़ेगा!"

अर्तामोनोव ने झुककर हाथ से फ़र्श छूते हुए कहा—

"मुझे मालूम है।"

"अपनी भावी पुत्र-वधू से एक भी स्नेह शब्द कहे बिना और उसकी और अपने बेटे की ओर बिना एक नज़र देखे ही उसने दरवाज़े की ओर इशारा कर कहा—

"जाओ।"

जब लड़का-लड़की कमरे से बाहर चले गये तो उसने खाट के एक किनारे बैठते हुए दृढ़ स्वर में कहा—

"फ़िकर न करो। सब काम ठीक हो जाएँगे। सैंतीस साल तक मैंने अपने राजकुमारों की सेवा की और कभी किसी विपत्ति में नहीं फँसा। आदमी ईश्वर तो नहीं है। आदमी दयावान नहीं होता। वह मुश्किल से ख़ुश होता है। समधिन उल्याना तुम भी इसके लिए न पछताओगी। तुम मेरे लड़कों की माँ रहोगी और उन्हें तुम्हारा सम्मान करने का आदेश दिया जायगा।"

वैमाकोव कोने में रखे धर्म-चिह्नों की ओर अपलक-दृष्टि से देखता हुआ चुप-चाप सुनता रहा। उसकी आँखों से आँसू बहते रहे और उल्याना भी रोती रही। पर यह आदमी खेद-भरे शब्दों में कहता गया—

"हाय! यव्सी मित्रिच! तुम बड़ी जल्दी हमें छोड़े जा रहे हो। तुमने अपनी ओर ध्यान नहीं दिया और ठीक ऐसे वक्त, जब मुझे तुम्हारी बेहद जरूरत है—यह तो जैसे मेरे गले पर छूरी चल रही है।"

उसने छूरी फेरने की-सी भंगिमा से अपना हाथ दाढ़ी पर चलाया और

ज़ोर से आह भर कर कहा—

"मैं तुम्हारा कुल हाल जानता हूँ। तुम ईमानदार तो हो ही, समझदार भी हो। अगले पाँच सालों में मिलकर हम तुम क्या कुछ न कर सकते थे ? हाय ! भगवान् की यही इच्छा है।"

उल्याना के आँसू फूट पड़े—

"कौए की तरह काँव-काँव क्यों किये जाते हो ? हमें क्यों डरा रहे हो ? कौन जाने....।" लेकिन अर्तामोनोव उठ खड़ा हुआ और बैमाकोव के आगे इस तरह झुका मानो मुर्दे के आगे झुक रहा हो।

"आपके विश्वास के लिए धन्यवाद, नमस्कार। मुझे नदी तक जाना है—मेरा सामान लेकर बजरा आ गया है।"

उसके चले जाने पर बैमाकोव की पत्नी ने क्रोध और घृणा से चीख़ कर कहा—

"देहाती गँवार ! अपने बेटे की मँगेतर से स्नेह का एक शब्द भी नहीं कहा—"

पर उसके पति ने रोका, "चिढ़ो मत, मुझे परेशान न करो।"

कुछ सोचकर वह बोला, "उसके साथ लगी रहना। मुझे लगता है कि वह यहाँ के लोगों से भला है।"

बैमाकोव को दफ़नाने के लिये सम्मान से सारी बस्ती आयी और पाँचों गिरजाघरों के पादरियों ने प्रार्थना में भाग लिया। बैमाकोव की पत्नी और बेटी के ठीक पीछे-पीछे अर्तामोनोव और उसके लड़कों का ताबूत के साथ चलना बस्ती के लोगों को बुरा लगा। अपने पिता और भाइयों के पीछे चलते-चलते कुबड़े निकिता ने भीड़ में से बड़बड़ाती हुई आवाज़ें सुनीं—

"अजब आदमी है, कोई जाने न पूछे, लेकिन वह है कि सबके आगे जमा हुआ है।"

पोमियालोव ने अपनी गोल कजी आँखों को मटकाते हुए फुसफुसाकर कहा—

"भगवान् उसकी आत्मा को शान्ति दे, यव्सी सोच-विचारकर चलनेवाले आदमी थे और उल्याना भी होशियार औरत है। ये लोग बिना सोचे-समझे कोई ऐसी-वैसी बात नहीं करते। इसमें कोई न कोई बात ज़रूर है। इस मूज़ी ने इन लोगों को ज़रूर किसी न किसी लालच में फाँस लिया होगा। नहीं तो ये

लोग उसे अपना रिश्तेदार क्यों बनाते ?"

"हाँ....ज़रूर दाल में कुछ काला है ।"

"मैं भी तो यही कहता हूँ—दाल में कुछ काला है । बिलकुल यही लगता है कि यह जाली रुपयों का खेल है । ख़्याल तो करो कि बैमाकोव कैसा सन्त बनता था !"

ये बातें सुनकर निकिता ने अपना सिर झुका लिया और इस आशंका से कि अब घूँसे पड़ने ही वाले हैं, उसने अपने कूबड़ को हाथों से ढँक लिया । हवा उस दिन तेज बह रही थी । हवा के झोंके लोगों की पीठ से टकराते थे और सैकड़ों क़दमों से उड़ाई गई धूल जलूस के पीछे पीछे एक धुँधले बादल की तरह उड़ रही थी और लोगों के तेल लगे खुले हुऐ सिरों पर घनी परत जमाती जा रही थी ।

"ज़रा अर्तामोनोव को तो देखो, हमारी धूल से एकदम अँट गया है । जिप्सी की शकल भूरी हो गई है ।"

अत्येष्टि के दस दिन बाद उल्याना बैमाकोवा और उसकी बेटी मठ में दाखिल होने के लिए चली गईं और अर्तामोनोव ने उनका घर किराये पर ले लिया । वह और उसके बेटे एक क्षण को भी चैन से न बैठते । सुबह से रात तक ये शहर की तमाम सड़कों पर इधर से उधर चक्कर काटते दिखाई देते । जब वे किसी गिरजाघर के सामने से निकलते तो अपने ऊपर झट क्रॉस का चिह्न बनाकर लम्बी-लम्बी डगें भरते हुए आगे बढ जाते । बाप बड़ा शोर मचाता और उसके अन्दर की उग्र शक्ति जैसे थकती ही न थी । बड़ा लड़का उदास और घुन्ना था और देखने मे डरपोक या झेंपू लगता था । सुन्दर अल्योशा बस्ती के लड़कों को हेच समझता और लड़कियों को खुल्लमखुल्ला आँख मारता । कूबड़ वाले निकिता का हाल यह था कि वह सूर्योदय होते ही नदी के पार 'गोमुख' जा पहुँचता । यहाँ पर बढ़ई और राजगीर रोज कौवों की तरह जमा होते । वे ईंटों की एक लम्बी बारक चुनते । उससे थोड़ा हटकर ओका के पास बारह इञ्च मोटे शहतीरों से कैदखाने-सा एक विशाल दुमञ्जिला मकान बनाते । किसी दिन शाम को द्रिओमोव नगर के निवासी वतरव्या के किनारे जमा हो जाया करते । वे लोग लौकी और सूरजमुखी के बीजों को कुतरते हुए आरों की घर्र-घर्र, रन्दों की

घस-घस, तेज बसूलों की धाड-धाड़ आवाज़ें सुनते रहते। वे आपस में बाबुल की मीनार जैसी इस इमारत के निकम्मे निर्माण की बात की खिल्ली उड़ाया करते। पोमियालोव अजनबी लोगों पर सारी आफतें टूटने की भविष्यवाणी करते हुए उन सबको आश्वासन देता—

"बसन्त की बारिशें इन भद्दी इमारतों को ढहा देंगी। यों बढ़ई लोग तमाखू पीते ही रहते हैं और छीलन चारों तरफ बिखरी पड़ी है, आग भी लग सकती है।"

दिक का बीमार पादरी वासिली जवाब देता—

"बालू की भीत खड़ी कर रहे हैं।"

"अपनी मिल के लिए जब वह मजदूर भर लेंगे तो आये दिन नशाख़ोरी, चोरी और दुराचार हुआ करेंगे।"

इस पर चक्की और सराय का मालिक, लूका बास्की जो चर्बी से थुलथुल और भीमकाय था, पलटकर अपने कर्कश भारी स्वर में बोला—

"जितने ही ज़्यादा आदमी होंगे उतने ही ज़्यादा गाहक भी होंगे। यह तो अच्छी बात है—लोगों को काम करने दो।"

निकिता अर्तामोनोव बस्ती के लोगों की काफ़ी मनोरञ्जन की चीज बन गया। उसने बेद-वृक्षों के कुञ्जों को काटकर और उखाड़कर एक बड़ी चौकोर ज़मीन साफ़ की थी। इसके बाद वह बहुत दिनों तक बतरचा के तली में से गाढ़ी कीचड़ निकाल-निकालकर ढोता रहता। दलदल की सड़ी झाड़ियों को काटकर ठेले पर ढोते-ढोते उसका कूबड़ झुककर सीधे आसमान की सीध में हो जाता। उसने मिट्टी और सड़ी झाड़ियों के छोटे-छोटे काले ढेर उस सारी बलुही चौकोर धरती पर लगा दिए।

"यह सब्जियों का खेत बनाना चाहता है।" बस्ती के लोग अपनी बुद्धिमानी का परिचय देते हुए कहते—"कैसा मूर्ख है। कोई बालू को भी बञ्जर कर सकता है?"

सूर्यास्त होने पर अर्तामोनोव का परिवार एक दूसरे के पीछे लगकर फिर नदी पार करते। बाप सबसे आगे रहता। उनकी छायाएँ हरे रंग के पानी पर पड़तीं। पोमियालोफ़ इशारा करते हुए फुसफुसाता—

"देखो, देखो! ज़रा कूबडे की परछाईं तो देखो!"

और सब लोग देखते कि तीसरी वाली निकिता की परछाईं पानी पर हिलती और कॉपती हुई चलती थी। वह दूसरे भाइयों की लम्बी परछाइयों से ज्यादा भारी-भरकम दिखाई देती थी। ज़ोर की बारिश के बाद एक दिन जब नदी का पानी चढ़ा हुआ था, कुबड़े का पाँव कहीं फँस गया या किसी गड्ढे में फिसल गया और वह डूब गया। किनारे पर खड़े सभी लोग ख़ुशी से ठहाका मारकर हँसते रहे। सिर्फ शराबी घड़ी-साज़ की तेरह साल की लड़की ओलगा ओरलोवा करुणा से चीख़ उठी—

"हाय-हाय, वह डूब जायगा!"

उसे ख़ूब डाँट-डपटकर कह दिया गया—

"बे-बात चीखा मत कर!"

अलेक्सी ने जो सबसे पीछे चल रहा था, डुबकी लगाई और भाई को पकड़कर फिर से खड़ा कर दिया। सर से पाँव तक गीले और काली मिट्टी से लथ-पथ वे दोनों जब किनारे पर निकल आये तो अलेक्सी सीधा बस्ती के लोगों की ओर बढ़ा। उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया और उनमें से एक ने डरते-डरते कहा—

"आह, छुटका जानवर!"

"हम लोग इन्हें नहीं भाते", प्योत्र ने कहा। उसके बाप ने चलते-चलते उसकी ओर मुड़कर देखा और बोला—

"थोड़ा वक्त मिल जाय, ये लोग हमें चाहने लगेंगे।"

उसने निकिता को डाँटा—

"सुन बे उल्लू! आँखें खोलकर चला कर और अपने को सबके हँसने की चीज़ न बनाया कर। हम लोग भोंड़ नहीं हैं, बुद्धू।"

अर्तामोनोव का परिवार अपने ही आप में सिमटा रहता। किसी से जान-पहिचान बढ़ाने की कोशिश न करता। उनके घर का प्रबन्ध काले वेश में रहनेवाली एक मोटी बूढ़ी औरत करती थी। वह अपने सिर के चारों ओर एक काला रूमाल इस तरह बाँधती कि उसके कोने सींगों की तरह ऊपर को उठ जाते। वह बहुत कम बोलती और ऐसे अजब ढंग से भींचकर शब्द बोलती कि कोई उसकी बात समझ ही न पाता, मानो वह रूसी नहीं थी। अर्तामोनोव परिवार के

बारे में उससे कोई अता-पता न लगता।

बस्ती के लोग कहते, "लोग अपने को सन्त दिखाना चाहते हैं, लुटेरे कहीं के!"

कुछ दिनों में लोगों को इस बात का निश्चित पता लग गया कि बाप और सबसे बड़ा लड़का ये दोनों आस-पास के गाँवों में अक्सर चक्कर लगाते हैं और किसानों को पटसन की खेती करने के लिए उकसाते हैं। एक बार इलिया अर्तामोनोव पर इसी तरह के दौरे में भागे हुए फौजी सिपाहियों ने आक्रमण कर दिया। उसके पास चमडे की पेटी से बँधा एक सेर का ठोस वज़न था। उसी को घुमाकर मारने से उसने एक सिपाही को तो ठण्डा कर दिया और दूसरे सिपाही का सर फोड़ दिया। तीसरा अपनी जान लेकर भागा। किसानों ने इलिया अर्तामोनोव को ख़ूब शाबाशी दी, पर इलिन्स्क गाँव के दीन-हीन गिरजे के युवा पादरी ने हत्या के पाप का प्रायश्चित निश्चित किया कि वह चालीस दिन तक रात को गिरजे में प्रार्थना करे।

पतझर के दिनों में निकिता अक्सर सन्ध्या के समय अपने पिता और भाइयों को सन्तों की जीवनियाँ और पादरियों की प्रार्थनाएँ ज़ोर-जोर से पढ़कर सुनाया करता। लेकिन उसका बाप अक्सर उसे टोककर कहता—

"ये बड़ी ऊँची बातें हैं। उनका ज्ञान हमारी समझ से बाहर है। हम तो सीधे सादे मज़दूर लोग हैं। और इन चीजों के बारे में सोचने का काम हमारा है भी नहीं। हम सीधी-सादी चीज़ों के लिए पैदा हुए हैं। राजकुमार यूरी ने—भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे—सात हज़ार पुस्तकें पढ़ डालीं थीं और वह उन विचारों में इतने गहरे डूब गये कि भगवान् पर से उनका विश्वास ही उठ गया। उन्होंने सारी दुनिया घूमकर देखी थी और हर जगह के राजा उनसे भेंट करते थे। बडे मशहूर आदमी थे। लेकिन जब उन्होंने कपड़े का कारख़ाना खोला तो उसको चला न पाये। सच, और यही क्यों, वे जिस काम में हाथ डालते वह कभी आगे न बढ़ता। हार मानकर उन्होंने अपनी बाक़ी ज़िन्दगी किसानों के सहारे ही काटी।"

वह शब्दों का स्पष्ट उच्चारण करने की कोशिश करता, रुक-रुककर सोचने और अपनी ही वाणी का स्वर सुनने के लिए बीच-बीच में ठहर जाता और फिर

अपना उपदेश जारी रखता—

"तुम लोगो के लिए ज़िन्दगी बड़ी कठिन होगी। तुम्हें ही अपना कानून और अपनी रक्षा का साधन बनना पड़ेगा। मेरी और बात थी, मैंने अपनी इच्छा से जीवन नहीं बिताया—मुझे जैसी आज्ञा मिलती थी मै वैसा ही करता था। कोई बात अगर बिगड़ती और मुझे दिखाई भी पड़ती थी, तो उसे मैं सुधार नही सकता था। सुधारने का काम बड़े लोगों के ज़िम्मे था, मेरे नहीं। मैं अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कोई काम करने की जुर्रत ही नहीं कर सकता था। मुझे तो सोचने तक से डर लगता था कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे विचार बडे लोगों के विचारो से गड्ड-मड्ड हो जायँ; सुन रहे हो न प्योत्र ?"

"हाँ सुन रहा हूँ।"

'ठीक है, मैं चाहता हूँ कि तुम सब बातें समझ लो। लेकिन वैसी जिन्दगी होना न होना एक-सा है। यह सच है कि ऐसी हालत मे आदमी बहुत कम बातों के लिए ज़िम्मेदार होता है। वह अपनी मर्ज़ी की राह नही चल पाता। जब किसी बात की ज़िम्मेदारी न हो तो ज़िन्दगी आसान होती है—लेकिन उस जीने से क्या लाभ ?"

कभी-कभी वह घण्टे दो घण्टे तक बातें करता रहता और बीच-बीच मे रुककर लड़कों से पूछता जाता कि सुन रहे हो या नहीं। वह अँगीठी के ऊपर पाँव लटकाकर बैठता, उँगलियाँ घुँघराली दाढ़ी में खोस लेता और फिर बिना किसी जल्दबाजी के धीरे-धीरे शब्दों की एक-एक कड़ी जोड़कर बातों की शृङ्खला पूरी करता। साफ़-सुथरे और चौडे रसोईघर में गरम-गरम धुध-सी छा जाती। जब कि तूफ़ानी हवा बाहर सीटियाँ मारती और खिड़की के शीशों पर से टकराकर, रेशम की तरह फिसल-फिसलकर बहती। कभी जब चारों ओर घने कोहरे से नीला पड़ जाता, उस समय प्योत्र अपने आगे एक चर्बी की बत्ती रखकर मेज़ के सहारे बैठ जाता। वह कागज़-पत्रों को उलटता-पुलटता रहता और गिनती सीखनेवाले चौखटे की गोलियों को आहिस्ता से अलेक्शी की सहायता से तार पर इधर से उधर सरकाता रहता। निकिता उस समय अलग बैठा झाऊ की कमचियों से टोकरियाँ बुनता रहता। "अब हमपर शासन करनेवाले ज़ार ने हमें आजादी दे दी है। हमें इस बात को समझ लेना है कि इसके पीछे कौन-सा

कारण छिपा हुआ है ? बिना किसी वजह के कोई आदमी अपनी भेड़ तक को तो बाड़े से बाहर जाने नहीं देता। और यहाँ लाखों करोड़ों आदमियों को छूट दे दी गई। इसका मतलब यह है कि ज़ार यह भलीभाँति जान गये हैं कि अब बड़े लोगों से कुछ मिलना नहीं है। उनके पास जो कुछ है उसे वे .खुद ही खा-पीकर उड़ा देते हैं राजकुमार ज्योर्जी के मन मे यह बात हमारी आज़ादी मिलने के पहले ही आ गयी थी। उन्होने मुझसे कहा था कि दासों की कमाई में कोई फ़ायदा नही रहा। इसलिए अब हमारे ऊपर ही छोड़ दिया गया कि हम आजाद आदमियों की तरह काम करें। अब तो एक फौजी सिपाही को भी पच्चीस साल तक कन्धे पर बन्दूक नहीं ढोनी पड़ेगी। मैदान में निकलो और काम करो! कौन किस काम के लायक है, अब तो यह .खुद ही दिखाना पड़ेगा। अब बड़े लोगों के भाग्य पर तो ताला पड़ गया। अब तुम लोग ही बड़े हो। सुन रहे हो ?"

उल्याना बैमाकोवा मठ मे लगभग तीन महीने रही। जब लौटकर घर आई तो अर्तामोनोव ने एक दिन के बाद ही उससे पूछा—

"शादी जल्दी से जल्दी कब रखी जाय ?"

उल्याना ने क्रोध से आँखें तरेरकर उसकी ओर देखा—

"कैसी बात करते हैं ? बाप को मरे अभी छः महीने भी नहीं हुए और आप.... । क्या इतना भी नहीं जानते कि यह पाप है ?"

लेकिन अर्तामोनोफ़ ने कठोरता से उसकी बात काट दी—

'मुझे तो इसमें कोई पाप दिखाई नहीं देता। बड़े आदमी इससे भी बुरे-बुरे काम करते हैं और भगवान् उनका ही साथ देता है। मेरे लिए यह ज़रूरत का सवाल है। प्योत्र को एक पत्नी चाहिए।"

फिर उसने उल्याना के पास कितना धन है, इसके बारे मे पूछा। वह बोली—

"मैं अपनी लड़की के दहेज में पाँच सौ से अधिक नहीं दूँगी !"

"इससे अधिक ही दोगी" उसकी आँखों में सीधे घूरते हुए इस भारी-भरकम आदमी ने विश्वास भरे निस्संङ्क भाव से कहा। वे दोनों मेज़ के आमने-सामने बैठे थे। अर्तामोनोव अपनी कोहनियों के बल झुका हुआ था और उसके दोनों हाथ उसकी दाढ़ी के उलझे बालों में लगे हुए थे। उल्याना खीझ

गई और आशका से भरकर यकायक सीधे होकर बैठ गई। वह चालीस के लगभग थी, लेकिन देखने में बहुत छोटी लगती थी। उसके गदराये गुलाबी मुख पर उसकी भूरी आँखो की चमक मे प्रखर बुद्धि झलकती थी। अर्तामोनोव अपने कन्धो को झटक कर उठ खड़ा हुआ।

"तुम देखने मे सुन्दर हो उल्याना इवानोव्ना।"

"और कुछ?" उल्याना ने तीखे स्वर से पूछा जिसमे एक साथ ही क्रोध और व्यंग मिश्रित था।

"कुछ नहीं।"

वह अनिच्छापूर्वक ज़ोरों से पाँव रखता हुआ कमरे से बाहर चला गया। बैमाकोवा ने मुड़कर उसकी ओर देखना चाहा और एक क्षण के लिए उसकी नज़र दर्पण के ठण्डे शीशे पर अटक गई। उसने खीझ में फुसफुसा कर कहा—

"दढ़ियल शैतान, आखिर चाहता क्या है!"

इस आदमी की ओर से किसी अस्पष्ट खतरे की आशका से चिन्ताकुल बैमाकोवा उठकर ऊपर की मञ्जिल में अपनी बेटी के सोने के कमरे मे चली गई। लेकिन नतालिया वहाँ न थी। बैमाकोवा ने खिड़की से बाहर आँगन की ओर झाँककर देखा, वहाँ उसकी बेटी दरवाज़े के पास प्योत्र के पास खड़ी थी। वह लपक कर नीचे उतरी और दहलीज़ में ही पुकार कर बोली—

"नतालिया, अन्दर आओ।"

प्योत्र ने झुककर उसे नमस्कार किया।

"भले आदमी, माँ की गैरहाजिरी मे लड़की से बातें करना कोई अच्छी बात नहीं है, अब फिर यह सब न होना चाहिये।"

"हमारी मँगनी हो गई है।" प्योत्र ने उसे याद दिलाई।

"ठीक है। पर यहाँ हमारे रीति-रिवाज अपने हैं।" बैमाकोवा ने उत्तर दिया, किन्तु मन ही मन उसे आश्चर्य हुआ—

"मुझे हो क्या गया है? दोनों की चढ़ती उमर है—क्यों न वे एक दूसरे के समीप होना चाहेंगे? मैंने यह अच्छी बात नहीं की। लगता है जैसे मैं ख़ुद अपनी बेटी से ईर्षा करने लगी हूँ।"

फिर भी अन्दर जाकर उसने अपनी बेटी के बाल पकड़कर ज़ोर से खींचे

और अकेले मे प्योत्र से फिर कभी बात न करने की ताकीद की :

"तुम दोनों की चाहे मॅगनी हो गई हो, लेकिन कौन कह सकता है—बारिश हो या बर्फ़ पड़े—हाँ, हो या न हो, कौन जाने क्या हो, क्या न हो !" उसने कठोरतापूर्वक कहा ।

एक गहरी चिन्ता ने उसके विचार उलझा दिए । कुछ दिनों बाद भविष्य के बारे मे पूछने के लिए वह येरदान्स्काया के पास पहुँची । बस्ती की तमाम स्त्रियाँ इस मोटी, घण्टी की आकृतिवाली, घेघा की रोगिन ज्योतिषी स्त्री के पास अपने पाप, अपने डर और दुःखों की मारी जाती थीं ।

"इसके लिए ताश के पत्तों से पूछने की ज़रूरत नहीं है ।" येरदान्स्काया ने कहा । "मैं तुम्हें दो टूक बात बताये देती हूँ कि तुम उस आदमी का दामन पकड़े रहो । मेरी आँखें यूँ ही ऐंची-बैंची नहीं हैं—मैं लोगो को ख़ूब पहचानती हूँ । मै उनके मन की बात उसी तरह जानती हूँ, जैसे अपने ताश की गड्डी खोलकर देखती हूँ । देखो वह कितना भाग्यवान् है । जो काम शुरू करता है; वह धड़ल्ले से आगे बढ़ता जाता है और ईर्षा के मारे हमारे यहाँ के मर्दों की लार टपकी पड़ती है । उससे तुम डरती ही क्यों हो ! वह लोमड़ी की तरह नही, बल्कि भालू की तरह रहता है ।"

"यही तो बात है, वह निरा भालू जैसा है", विधवा ने सहमति प्रकट की और एक आह भरी । फिर ज्योतिषी औरत से बोली—

"मुझे डर लगता है । तभी से जब से उसे पहली बार देखा है; जब वह पहले पहल मेरी बेटी की मॅगनी के लिये आया था । उसने मुझे डरा दिया । वह अचानक इस तरह आया, जैसे आसमान से टपक पड़ा हो । सभी के लिए वह अनजान था, सबको हटाकर और आगे बढ़कर वह सम्बन्धी बन गया । ऐसी बात किसी ने सुनी है ? मुझे याद है कि वह बातें कर रहा था और मै, बस, उसकी साहसी आँखों को एक-टक देखती रही और हर बात पर हाँ करती गई, उसकी हर बात को मानती गई, जैसे उसने मेरा गला दबा रखा हो ।"

"इसका मतलब है कि उसे अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा है ।" टिकिया बनानेवाली चतुर स्त्री ने कहा ।

लेकिन इन सब बातों से बैमाकोवा की चिन्ताएँ कम न हुईं । यद्यपि सूखती

जडी-बूटियों की गंध से भरे कमरे से निकलते-निकलते येरदान्स्काया ने उससे एक बार फिर कहा—

"याद रखो, परियों की कहानियों मे ही मूर्खों के भाग्य जागा करते हैं।"

अर्तामोनोव की प्रशसा उसने इतने जोरो से की थी कि सन्देह होता था, मानो उसे रिश्वत दी गई हो। मुटल्ली मैत्रीयोना वास्कोंवा ने, जो दुष्ट और निर्दय स्वभाव की थी, एक दूसरे ही ढग से बात की—

"उल्याना, तुम्हारे लिए सारी बस्ती दुखी और परेशान हो रही है। तुम्हे इन बाहरी लोगों से डर नहीं लगता? सावधान रहना यह कोई आकस्मिक बात नहीं है कि उनमे से एक लड़का कूनडा है। उसके माँ-बाप ने कितना बड़ा पाप किया होगा कि उनके घर ऐसा राक्षस जन्मा।"

विधवा बैसाकोवा के लिए यह सब असह्य हो गया। वह रह-रहकर अपनी बेटी को ही इन सब मुसीबतो की जड समझने लगी। यद्यपि वह यह भी जानती थी कि लड़की को किसी भी तरह दोषी नही ठहराया जा सकता। वह अपने किरायेदारों से कम से कम मिलने की कोशिश करती, लेकिन ये लोग बार-बार उसके सामने पड़ जाते और उसके जीवन को आतङ्क की परछाईं से घेरे रहते।

अनजाने ही सरदी का मौसम चुपचाप आ गया और हुंकारते हुए तूफान और कटकटे कोहरे के कुपित उद्वेग के साथ नगर पर छा गया। जाडे ने गलियों और घरों में रवादार चीनी के बर्फ़ के ढेर लगा दिए। चिड़ियों के दरबों व गिरजाघरों के गुम्बजों को रूई के गालो का मुकुट पहना दिया और नदियों तथा गन्दी दलदलों के पानी को सफ़ेद लोहे की बेड़ियो मे बाँधकर क़ैद कर लिया। छुट्टी के दिनो नगर के लोग आस-पास के गाँव के किसानों के साथ मुक्का-मुक्की खेलने के लिए बर्फ से ढके ओका नाम के स्थान पर जमा होते। अलेक्सी इनमे से हर दंगल मे शामिल होता और हर बार चुटियल होकर गुस्से से तमतमाया हुआ घर लौटता।

"अल्योशा, क्या मामला है, क्या हमारी तरफ के लोगों से यहाँ के लोग ज्यादा अच्छा लड़ते हैं?"—अर्तामोनोव पूछता।

अलेक्सी अपने घावों को ताँबे के सिक्के या बर्फ़ से मलता हुआ उदास खामोशी

क़ायम रखता। उस समय उसकी बाज़ जैसी आँखें चमकती रहतीं।

लेकिन एक दिन प्योत्र ने कहा—

"अलेक्सी लड़ता ख़ूब है, यह तो हमारी अपनी ओर के लोग, यानी बस्ती-वाले, उसे घायल कर देते हैं।"

मेज़ पर घूँसा मारते हुए इलिया अर्तामोनोव ने पूछा—

"क्यों?"

"नफरत से।"

"नफरत इसके प्रति है?"

"हम सबके प्रति।"

बाप ने मेज पर घूँसा दे मारा। मोमबत्ती उलटकर बुझ गई। अँधेरे में से एक गुर्राहट सी सुनाई दी।

"नफरत और प्यार—तुम लड़कियों जैसी बात करते हो! मैं तुमसे ऐसी बात फिर कभी नहीं सुनना चाहता!"

मोमबत्ती को जलाकर निकिता ने धीमे से कहा—

"अल्योशा को दंगल लड़ने नहीं जाना चाहिए।"

"ताकि लोग हँसें और कहें—अर्तामोनोव डरपोक है। चुप रह, गीदड़ कहीं का।"

बाप ने अपने लड़कों की ख़ूब भर्त्सना की। कुछ दिनों बाद रात को भोजन करते समय उसने रूखे स्नेह से कहा—

"तुम लोगों को भालू के शिकार के लिए जाना चाहिए—बड़ा बढ़िया शिकार होता है! मैं राजकुमार ज्योर्जी के साथ रियाज़ान के जंगलों में जाया करता था। हम लोग भाले से शिकार खेलते थे, काफ़ी मजा आता था।"

उत्साहित होकर वह कुछेक सफल शिकारों के किस्से सुनाता। एक सप्ताह बाद वह प्योत्र और अलेक्सी को लेकर जंगल में शिकार खेलने गया और एक बड़ा भालू मार लाया। इसके बाद दोनों भाई अकेले ही गए और उन्होंने एक रीछनी को छेड़ दिया। उसने अलेक्सी की भेड़ की खालवाली जाकेट फाड़कर उसका कूल्हा खरोंच डाला। लेकिन अन्त में भाइयों की विजय हुई। वह रीछनी के दो बच्चों को उठा लाए और शव को जंगल में ही भेड़ियों के लिए छोड़ दिया।

"अजी, तुम्हारे अर्तामोनोव लोगों का क्या हाल-चाल है, वे किस तरह पेश आते हैं ?" नगर के लोग बैमाकोवा से पूछते।

"क्यों ? ठीक तो हैं।"

"सर्दियों में सूअर आपस में मेल रखते हैं।" पोमियालोव ने कहा।

बैमाकोवा को यह अनुभव करके अपने बारे में एक शंका-सी हुई थी कि कुछ दिनों से अर्तामोनोव परिवार के प्रति विरोधी रुख से वह स्वय चिढ़ने लगी थी और उसे यह लगने लगा था कि उनकी घृणा में उसके प्रति भी उपेक्षा का भाव है। वह देखती थी कि अर्तामोनोव परिवार के लोग गम्भीरतापूर्वक और आपस में मिल-जुलकर रहते हैं। जो काम उन्होंने अपने लिए निश्चित कर लिए हैं, वे उनमें पूरी लगन से जुटे रहते हैं और किसी बुराई का मौक़ा नहीं देते। अपनी बेटी और प्योत्र को लगातार ध्यान से देखते रहने के बाद उसे इस बात का विश्वास हो गया कि यह गठीला मित-भाषी नवयुवक अपनी उमर के हिसाब से कहीं ज़्यादा गम्भीर है। उसने शहरी लड़को की तरह नतालिया को कोने में ठेल ले जाने की, उसके अंगों को छूने की और उसके कान में अनुचित शब्द फुसफुसाने की कभी कोशिश नहीं की, बैमाकोवा को अपनी पुत्री के प्रति प्योत्र के इस विचित्र बर्ताव पर, जिसमे विरक्ति के साथ-साथ थोड़ी करुण लालसा और ईर्षा भी रहती, कभी-कभी थोड़ी चिन्ता भी हो जाया करती।

"यह लड़का स्नेहशील पति न बन सकेगा।"

लेकिन एक दिन जब वह सीढ़ियों से नीचे उतर रही थी तो उसने ड्योढ़ी मे से अपनी बेटी की आवाज़ सुनी—

"क्या आज फिर भालू के शिकार के लिए जा रहे हो ?"

"इरादा तो कुछ ऐसा ही है। क्यों ?"

"ख़तरनाक होता है। पिछली दफ़ा अल्योशा को चोट आ गई थी।"

"यह तो उसकी ही ग़लती थी। उसने जल्दबाज़ी से काम लिया। क्या मेरे बारे में भी तुम्हारा यही ख़याल है ?"

"मैंने तुम्हारे बारे में तो कुछ नहीं कहा।"

"नटखट छोकरी !" माँ ने मन ही मन कहा और मुस्कराई। फिर उसने एक आह भरी। "लेकिन यह लड़का बड़ा सीधा-सादा है।"

इलिया अर्तामोनोव उससे अक्सर अधिकाधिक जोर देकर कहता—

"शादी जल्दी कर दो, नही तो ये लोग ख़ुद ही जल्दी कर लेंगे।"

वैमाकोवा ने सोचा कि वह ठीक ही कहता है, लडकी नीद-भर सो नही पाती और न अपनी शारीरिक उद्विग्नता को ही छिपा पाती है। ईस्टर के त्योहार से पहले वह उसे फिर मठ मे ले गई। एक महीने बाद उसने लौटकर देखा कि उसके लापरवाही से छोडे बग़ीचे की पूरी देख-भाल की गई है। उसकी रौस-पट्टियो की घास छीलकर साफ़ कर दी गई है, और पेड़ो पर से जगली बेलें काट दी गयी हैं। बेर की झाड़ियों को करीने से काटकर होशियारी से बॉध दिया गया है। नदी की ओर जानेवाली सड़क की ओर मुड़ते ही उसे निकिता दिखाई दिया। वह बाड़े की उन लकड़ियों को दुरुस्त कर रहा था जिन्हे बसन्त की बाढ़ ने तोड़कर गिरा दिया था। उसकी लिनेन की क़मीज़ में से स्पष्ट रेखाएँ बनाता हुआ उसका कूबड़ ऊपर को दयनीय ढंग से उठा हुआ था और उसके भारी सिर और ललछौंहें खडे बालों को ढँके हुए था। अपने मुँह पर बलों को गिरने से रोकने के लिए निकिता ने उन्हे बर्च की एक मुलायम टहनी से बॉध रखा था। इस सुन्दर हरियाली के बीच उसे खडा देख मन में एक ऐसे योगी का चित्र याद आता जो अपने अस्तित्व को ही भूलकर एकाग्रमन से अपने काम मे लगा हुआ हो। वह बड़ी चतुरता से एक खूँटे की नोक तेज़ कर रहा था। चलाते समय उसका बसूला सूरज की किरणों के पड़ने से चॉदी की तरह चमक रहा था। लड़कियों जैसी पतली आवाज मे वह मृदु स्वर से कुछ गा रहा था—शायद कोई धार्मिक गीत था। बाड़े के उस पार हरे रेशमी रंग का पानी चमचमा रहा था और उस पर सूर्य-रश्मियों के नन्हे-नन्हें बिम्ब सुनहरी मछलियों की तरह फुदकते फिरते थे।

"भगवान् तुम्हारे काम मे मदद करे।" बैमाकोवा ने ऐसे स्नेह से कहा कि उसे स्वय अपने ऊपर अचरज हुआ। अपनी नीली ऑखों की सरल ज्योति को उसकी ओर घुमाते हुए निकिता ने कोमल स्वर मे उत्तर दिया—

"भगवान् तुम्हारा कल्याण करे।"

"बग़ीचे को क्या तुमने ही सँभालकर ठीक किया है?"

"हाँ।"

"बड़े करीने से सजाया है। क्या तुम्हे बाग़-बगीचे अच्छे लगते हैं?" अपने काम पर झुके-झुके उसने सक्षेप में समझाकर बताया कि नौ साल की उमर से ही उसे राजकुमार के बाग़बान के नीचे रहकर काम करना पड़ा था और अब उसकी उमर उन्नीस साल की है।

"कूबड चाहे जितना बड़ा हो, लेकिन लड़का कटु स्वभाव का नहीं है।" बैमाकोवा ने मन ही मन सोचा। शाम को जब वह अपनी बेटी के साथ ऊपर के कमरे मे बैठकर चाय पी रही थी, निकिता अपने फूलों का एक गुलदस्ता लिए अपने भूरे, कुरूप, उल्लासहीन मुख से मुस्कराता हुआ दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

"क्या मैं गुलदस्ता भेंट कर सकता हूँ?"

"किसलिए?" बैमाकोवा ने सुन्दर ढग से सजाए फूलों और पत्तियो के गुलदस्ते की ओर सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए हैरान होकर कहा। निकिता ने उसे बताया कि जब वह बडे लोगों के यहाँ रहता था तो सुबह राजकुमारी के लिए फूलों का गुलदस्ता बनाकर ले जाने का काम उसके ही ज़िम्मे था।

"समझ गई।" बैमाकोवा बोली। किञ्चित शरमाकर उसने गर्व से सिर ऊपर उठाया—"तो क्या मुझे देखकर तुम्हे अपनी राजकुमारी की याद आ गई? वह तो बहुत ही सुन्दर होगी!"

"हाँ, लेकिन तुम भी तो कम नहीं हो।"

बैमाकोवा और भी शरमा गई। उसने अपने मन मे सोचा—

"कहीं इसके बाप ने तो इसे नहीं सिखा दिया?"

"अच्छा, तो इस सम्मान के लिए धन्यवाद।" उसने कहा, पर उसने निकिता को अपने साथ चाय पीने को नहीं बुलाया। जब वह चला गया तो वह सोचती हुई बोली—

"उस लडके की आँखे प्यारी हैं, अपने बाप के जैसी नहीं, शायद माँ पर पड़ी हैं।"

उसने एक आह भरी—

"लगता है कि हमारी क़िस्मत में इन लोगों के साथ ही रहना लिखा है।"

उसने इस बार अर्तामोनोव के सामने विवाह को पतझड़ के दिनों तक यानी

अपने पति की मृत्यु को पूरा साल गुज़र जाने तक के लिए शोक रखने पर ज़ोर नहीं दिया, बल्कि दृढ़तापूर्वक उससे कहा—

"इलिया वासीलिएविच, बस तुम इस काम मे टॉग न अड़ाना। मुझे अपने पुराने ढग से इसका सारा इन्तज़ाम करने दो। इसमें तुम्हारा भी फ़ायदा है—यहाँ के सबसे अच्छे लोगों मे तुम्हारी गिनती होगी तब सब लोग तुम्हें देखेंगे।"

अर्तामोनोव ने उपेक्षा से .गुर्राते हुए कहा—"हुं:, मैं जैसा कुछ हूँ वह तो उन्हें ठीक ही दिखाई दे सकता है।" उसके अहंकार से चिढ़कर बैमाकोवा ने उत्तर दिया—

"लोग यहाँ तुम्हे पसन्द नही करते।"

"तो वे मुझसे डरेंगे।"

उसने चटखारा लिया और अपने कन्धे हिलाए—

"प्योत्र भी हमेशा लोगों की पसन्दगी और नापसन्दगी की तान छेड़े रहता है। तुम्हारी बातो पर मुझे हँसी आती है।"

"आती होगी, लेकिन लोगों की नापसन्दगी मे से मुझे भी एक हिस्सा दिया जाता है।"

"डरो मत, समधिन।"

अर्तामोनोव ने अपनी लम्बी बाँह उठाई और अपनी मुट्ठी इतने ज़ोर से बाँधी कि तनी हुई खाल लाल पड़ गई।

"लोगों को ठीक करना मुझे .खूब आता है। कोई मुझे बहुत दिनों तक तंग नहीं कर सकता। लोगों के बिना चाहे भी मैं अपने काम मे आगे बढ़ता जाऊँगा।"

बैमाकोवा चुप रही। भय से काँपते हुए उसने सोचा—

"यह आदमी जानवर है।"

और इस तरह वह दिन भी आ गया जब उसके सुखद घर में नतालिया की सखियाँ भर गयीं, यह बस्ती के सबसे ऊँचे घरानों की लड़कियाँ थी; वे सब पुराने ढग से कटे किमख़ाब का काम किए हुए क़ीमती गाऊन पहने हुए थी, जिनकी फूली बड़ी-बड़ी बाँहें—श्वेत लिनन की थीं—और उन पर रेशम के रंगीन धागों से कसीदा कढ़ा हुआ था तथा कफों पर फीते लगे हुए थे। वे सब अपने

पाँवो में किड लेदर या मोरक्को लेदर के सलीपर पहने हुए थीं और अपनी लम्बी वेणियों में फीते बाँधे हुए थीं। गर्दन से लेकर पाँवों तक चाँदी की किमखाब का काम किए चमकीले बटन लगे भारी गाऊन मे लिपटी भावी बधू का दम घुट रहा था। उसके कन्धों पर सुनहले किमखाब का जाकेट पड़ा था और बालों मे सफ़ेद और नीले फीते बँधे थे। वह एक कोने मे धर्म-चिह्नों के नीचे हिम-प्रतिमा-सी बैठी हुई थी। एक रेशमी रूमाल से अपने मुँह का पसीना पोंछती हुई वह गुन-गुना रही थी—

घनी घास के मैदानों पर
आसमान से फूलों पर
बहती है बसन्त की बाढ़
गँदली, शीतल बाढ़

उसकी सहेलियो ने उसके उपालम्भ-भरे गीत की अस्फुट लय को पकड़कर जोर से गाना शुरू किया—

पनिया भरन कैसे जाऊँ री आली
जियरा डरे मोरी बारी उमिरिया
थर-थर सीत से अँग-अँग काँपैं
फाटी भिर-भिर तार चुनरिया

अलेक्सी जो लड़कियों की भीड मे नज़र से ओझल हो रहा था, जोर से हँसता हुआ चिल्लाया—

"अजीब गाना है यह! पहले तो ये लोग लड़की को किमखाब के कपड़ो मे इस तरह सजा देते हैं जैसे मुर्ग़ी को टीन के पिंजडे मे बन्द कर दिया हो और फिर विलाप करते हैं कि वह नंगी और निर्वसना है।"

निकिता नीले कपडे का एक नया जाकेट पहने बधू के पास बैठा था। उसके कूबड़ पर जाकेट की उठी हुई सलवटो का गुच्छा भद्दा और बेढगा लग रहा था। वह अपनी नीली आँखें फाड़े नतालिया की ओर एक विचित्र भाव से टकटकी बाँधे देख रहा था, मानो उसे डर हो कि लड़की पिघलकर ग़ायब न हो जाय। दरवाज़े को अपनी स्थूल काया से पूरी तरह घेरकर मत्रियोना बास्कोया खड़ी हुई थी और अपनी आँखो को घुमा-घुमाकर भारी स्वर से कह रही थी

"बालिकाओं, तुम्हारे गीत मे मुझे विलाप नही सुनाई पड़ता।" घोड़े की-सी लम्बी डगें भरती हुई वह कमरे में घुस आई और कठोर भाव से उन्हे पुरानी प्रथा के अनुसार सिखाने लगी कि किस तरह विवाह की तैयारी के समय एक कुमारी का हृदय भय और कम्पन से भरा होना चाहिए।

"कहते हैं कि शादी पत्थर की दीवार है। तो समझ लो कि यह दीवार मज़बूत होती है, तोड़ी नहीं जाती और यह दीवार ऊँची है, कूदी नहीं जाती।" लेकिन लड़कियाँ उसकी बात सुनने को राज़ी न थीं। कमरे मे गर्मी थी और बेहद भीड थी। इस बुढ़िया को उजड्डपन से धक्का देती हुई लड़कियाँ दरवाजे से निकलकर बगीचे मे भागकर जा पहुँची। अलेक्सी पीली रेशमी कमीज़ और चौड़ी प्लश की पतलून पहने उनके बीच इस तरह मँडराता फिरता था जैसे फूलों पर मधुमक्खी मँडरा रही हो। शोरगुल मचाता हुआ वह इतना ख़ुश लग रहा था जैसे उसने पी रक्खी हो।

अपनी आँखों से रोष टपकाती हुई और गुस्से से ओंठ मींचे बस्कोया अपने जामदानी घाघरे को समेटती हुई सीढ़ियो पर धुएँ के भारी बादल की तरह चढने लगी और एक भविष्यवक्ता के अन्दाज़ से उसने उल्याना को सूचना दी—

"तुम्हारी बेटी आज बहुत ख़ुश है, यह अच्छी बात नही। यह यहाँ के रीति-रिवाज के खिलाफ़ है। शुरू की ख़ुशी से अन्त बुरा होता है।"

बैमाकोवा घुटनों के बल बैठी एक बड़े लोहे के सन्दूक की चीज़ों को उलटने-पुलटने मे लगी हुई थी। जामदानी कपड़े, ताफ़ता, मास्को के बने हुए लाल कपड़े, कश्मीरी शाल, फ़ीते और क़सीदा काढ़ी हुई तौलियाँ उसके चारों ओर बिछौने और फ़र्श पर इस तरह फैली हुई थीं जैसे किसी मेले की दुकान हो। सूरज की किरणों की एक चौड़ी पट्टी रेशमी कपड़ों पर पड़ रही थी और उनके रंगों को सूर्यास्त के समय के बादलों की तरह प्रज्ज्वलित कर रही थी।

"यह कोई तरीक़ा है कि शादी पहले ही दुलहा दुलहिन के मकान मे रहने लगे। अर्तामोनोव के परिवार के लोगों को कहीं और जा टिकना चाहिए था।"

"यह तुमने पहले क्यों नहीं बताया? अब कहने से क्या फ़ायदा?" उल्याना

ने अपने चिन्ताकुल मुख को छिपाने के लिए सन्दूक पर और झुकते हुए शिकायत की। उधर से बास्कीया की भारी आवाज सुनाई दी—

"लोग हमेशा तुम्हे होशियार कहते रहे। इससे मैं चुप रही। मैं सोचती थी कि तुममें इतनी समझ होगी। मुझे इससे क्या? मैं तो सच ही कहूँगी। अगर लोग उसे अनसुनी कर दें, तो भगवान् तो जानेगा कि मैंने ठीक कहा था।"

बस्कीया एक विशाल स्मारक की तरह खड़ी थी और अपने सिर को इस अन्दाज़ से उठाए हुए थी, जैसे वह बुद्धिमानी से लबालब भरा हुआ कोई पात्र हो। कोई उत्तर न पाकर वह झपटकर बाहर निकल गई। उल्याना ने कौंधते रंगों के बीच घुटनों के बल झुककर भय और वेदना से दबे स्वर में कहा—

"हे भगवान्, मेरी सहायता करो। मेरी अक्ल ठिकाने रहे।"

द्वार पर फिर सरसराहट-सी हुई और वह इस भय से कि कोई उसके आँसुओं को न देख ले, जल्दी से बक्स मे अपना सिर डालकर चीजों को उलटने-पुलटने लगी। इस बार निकिता आया था।

"नतालिया यव्सेयेव्ना ने मुझे आपसे यह पूछने के लिए भेजा है कि आपको मदद की जरूरत तो नही।"

"शुक्रिया, बेटा।"

"नीचे रसोईघर मे नन्हीं-मुन्नी ओलगा ओलोंवा ने अपने सारे कपड़ों पर शर्बत गिरा लिया है।"

"सच, वह बड़ी प्यारी बच्ची है, तुम्हारी दुलहन बनने लायक है।"

"मुझसे कौन ब्याह करेगा?"

बाहर बग़ीचे मे घर की खिंची हुई बीयर पी जा रही थी। एक तरफ जंभीरी नीबू की छाँह मे मेज के सहारे इल्यिा अर्तामोनोव, गवरीला वास्कीं, पोमियालोन दुलहन के धर्म-पिता, शून्य दृष्टिवाला जीतीक्विन जो खालें साफ करने का काम करता था और छकड़े बनानेवाला वोरोपोनोव बैठे थे। प्योत्र पेड़ के सहारे झुका हुआ पास खड़ा था। उसके काले बालों में इतना तेल पड़ा था कि उसका सिर धातु की तरह चमचमा रहा था। वह चुपचाप खड़ा अपने बुजुर्गों की बातचीत सुन रहा था—

"तुम लोगों के रीति-रिवाज अलग ढंग के हैं।" अर्तामोनोव ने विचार-मग्न

मुद्रा में कहा। पोमियालोव ने डींग मारते हुए उत्तर दिया—

"हम ही तो देश के असली लोग हैं, महान् रूस देश यही है।"

"हम भी कोई विदेशी नहीं हैं!"

"लेकिन हमारे रीति रिवाज बहुत प्राचीन हैं।"

"वे मोर्दोवी और चूवाश लोगों के-से लगते हैं।"

किलकिलाती, हँसती और धक्कम-धक्का करती हुई लड़कियों के झुण्ड ने बग़ीचे पर हमला बोल दिया और वह तेज रंगों की छटा बिखेरती हुई मेज़ को चारों ओर से घेरकर दुलहे के पिता के लिए मुबारकबादी का गीत गाने लगीं।

सुनो इलिया और वासिलीविच, यह दिन तुम्हे मुबारक हो
रिश्ता लो जुड़ गया हमारा, मुबारक हो, मुबारक हो
टूट जाय एक टाँग तुम्हारी, पहला जब तुम पैर उठाओ
बची दूसरी टाँग भी टूटे, ज्योंही अगला पाँव बढ़ाओ
फिर टूटे गर्दन भी जो तुम, इतने पर भी बाज न आओ

"यह तुम्हारे लिये मुबारकबादियाँ हैं!" अर्तामोनोव ने अपने पुत्र की ओर मुड़ते हुए आश्चर्य से चिल्लाकर कहा।

प्योत्र कनखियों से अगल-बगल में खड़ी लड़कियों की ओर देखते हुए और अपने कान की लौ पकड़कर नीचे की ओर खींचते हुए दबे-दबे मुसकरा दिया।

"और सुनो।" बारस्कीं ने कहा और ज़ोर से हँस पड़ा।

कुमारियों के बीच में घुसकर
जिस छलिया ने ऐसी लूट मचाई
हम न्योछावर फिर भी उस पर
यह सम्बन्धी अपना है भाई

"बहुत मेहरबान हैं।" अर्तामोनोव ने मेज पर अपनी उँगलियों से तबले की ताल बजाते हुए कहा। वह स्पष्ट रूप से उत्तेजित हो गया था और स्तम्भित भी।

लड़कियाँ उसी जोश से गाती गईं—

हाय, हमको धोखा देकर छलने के बदले
दूर अजाने देशों औ स्थानों के गुण गाकर
सपने रंगीन जगाने के बदले

जहाँ हमारे लिए निर्जन झोंपड़ियों में
दुख और पीड़ा की खेती बोई जाती है
और नित्य आँसुओं से सींची जाती है
उनका मोह जगाकर हमको ठगने के बदले
भगवान् करे, तुम हेगी के दाँतों से टकरा जाओ,
पहाड़ की चोटी से नीचे चट्टानों पर गिर जाओ।

"तो यह बात है!" अर्तामोनोव ने खिसियाकर कहा। "तो सुनो लड़कियो, मैं तुम्हे नाराज़ नहीं करना चाहता, लेकिन फिर भी मैं अपने प्रदेश की तारीफ़ जरूर करूँगा। हमारे यहाँ के रीति-रिवाज यहाँ की अपेक्षा अधिक उदार हैं और हमारे यहाँ के लोग भी अधिक शिष्ट हैं। हमारे यहाँ एक कहावत भी है—'स्वापा और उसोज़ा की धाराएँ सीम नदी में जाकर मिलती है। शुक्र है ईश्वर का कि ओका नदी में जाकर नहीं मिलती।"

"ठहरो, तुम अभी हम लोगों को नहीं जानते।"—बास्की ने कहा। उसके कहने के ढग से यह पता नही चल सकता था कि वह डींग हाँक रहा था या धमकी दे रहा था। "अरे भई लड़कियो को इनाम दो।"

"कितना इनाम दूँ?"

"जितना देकर तुम्हे अफ़सोस न हो।"

लेकिन जब अर्तामोनोव ने लड़कियों को चाँदी के दो रूबल निकाल कर देने चाहे तो पोमियालोव क्रोध से बोला—

"तुम तो मानो पैसे लुटा रहे हो, क्या दिखाना चाहते हो?"

"तुम लोगों को ख़ुश करना टेढ़ी खीर है।" अर्तामोनोव भी क्रोध से चिल्लाया। बास्की ने जोर से हा-हा-हा-हा करके अट्टहास किया और ज़ितांकिन ही-ही-ही-ही हँसने लगा। अपनी बचपन की सखी-सहेलियों से दुलहन ने प्रभात की बेला मे बिदा ली। मेहमान चले गए और सारा घर नींद की गोद में सो गया।

अर्तामोनोव बग़ीचे मे प्योत्र और निकिता के साथ बैठा अपने इर्द-गिर्द के पेड़-पौधों और ऊपर बादलों में खेलती हुई ऊषा की लाल आभा की ओर देखता रहा। अपनी दाढ़ी को हिलाते हुए उसने धीमे स्वर में कहा—

"यहाँ के लोग तेज स्वभाव के हैं, स्नेह-शील नहीं हैं। बेटा प्योत्र, तुम्हारी सास तुमसे जो कहे, वैसा करते जाओ। यह सब औरतों की मूर्खता है। लेकिन अब करना ही पड़ेगा। अलेक्सी कहाँ गया? लड़कियों को अपने घरों पर छोड़ने के लिए? लडकियाँ उसे पसन्द करती हैं, यह अच्छी बात है। लेकिन लडके उसे नहीं चाहते। वास्कों का लड़का उसे जलन की निगाह से देखता है.... सच? निकिता, तुम उनके साथ भलमनसी से पेश आया करो, तुम ऐसा करने में होशियार भी हो। तुम्हे अपने बाप की मदद करनी चाहिए। मैं अगर अपनी बात से किसी के खरोंच मार दूँ तो, तुमको उस पर मरहम लगा देना चाहिए।"

उसने पास में पड़े एक विशाल लकड़ी के पीपे में झाँकते हुए उदास मुद्रा में अपनी बात जारी रक्खी—

"उन्होंने नदीदों की तरह इसकी सारी शराब गटा-गट पी डाली। ये लोग घोड़ों की तरह पीते हैं। क्या सोच रहे हो प्योत्र?"

अपनी मँगेतर के दिये हुए रेशमी रूमाल को उँगली से टटोलते हुए बेटे ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया—

"देहात में ज़िन्दगी कहीं ज़्यादा सीधी-सादी और आसान है।"

"हूँ। दिनभर सोते रहना—इससे आसान और क्या हो सकता है!"

"ये लोग शादी की रस्म को बेकार में ही लम्बा खींच रहे हैं।"

"सब्र से काम लो।"

आख़िरकार दिन आ ही गया, प्योत्र के लिये एक लम्बा और कठिन दिन। धर्म-चिह्नों के नीचे बैठे हुए उसे लगा जैसे उसकी भृकुटि एक कठोर अनिष्ट-कारी मुद्रा में मिल गई हों। वह जानता था कि यह ठीक नहीं है। उसकी वाग्दत्ता को उसका यह रूप प्रिय न लगेगा। लेकिन यह उसके बस की बात न थी। उसे लगा जैसे उसकी भौंहे किसी धागे से खींचकर एक साथ सी दी गई हों और वह उस धागे को तोड़ने में असमर्थ हो। उसने अपने बाल उठाकर पीछे की ओर फेंके और उनमें से ताज़ी पत्तियाँ और फूलों के दल गिरकर मेज़ और नतालिया के अवगुण्ठन पर बिखर गये। वह भी अपना सिर नीचा किये बैठी थी और थकान से उसकी अलकें झुकी जा रही थीं। एक शिशु की तरह डर से सहम कर वह पीली पड़ गई थी और शर्म से काँप रही थी।

"कडुवी है।" दाँत निपोरते हुए इर्द-गिर्द जमा लोगों ने शराब के गिलास खाली करते हुए बीसवीं बार चिल्लाकर कहा।

अपनी गर्दन झुकाये बिना ही प्योत्र ने भेड़िए की तरह मुड़कर अवगुण्ठन उठाया और नतालिया के गाल पर फूहड़ ढंग से अपने सूखे ओंठ लगा दिये। उस समय उसने नतालिया की त्वचा की साटन जैसी कोमल शीतलता और उसके कन्धों का भीत कम्पन अनुभव किया। उसका हृदय नतालिया के लिये खेद से भर गया और वह स्वयं लज्जित अनुभव करने लगा। शराब के नशे में चूर मेहमानों का घेरा चीख़-पुकार मचा रहा था—

"इस लड़के को तो चूमना भी नहीं आता!"

"ओठों पर निशाना लगाओ!"

"अगर मैं होता तो क्या मैं उसे चूम न लेता!"

नशे में चूर एक औरत चिल्लाई—

"कोशिश करके देखो!"

"कड़वी है।" बास्कीं चिल्लाया।

अपने दाँत पीसकर प्योत्र ने लड़की के कम्पित गीले ओठ छुए। ऐसा लगता था जैसे वह सूरज की किरणों के सामने सफ़ेद बादल की तरह पिघल जायगी। दोनों भूखे थे, क्योंकि पिछले दिन से उन्हें खाने को कुछ नहीं दिया गया था। सारे समारोह की तीव्र उत्तेजना, शराब की तीखी गन्ध और डॉन की शराब के दो गिलासों ने प्योत्र को नशे में चूर कर दिया था। उसे डर लग रहा था कि उसकी दुलहिन उसकी इस अवस्था को कहीं भाँप न ले। चारों ओर की चीजें उसे लगता था जैसे झूल रही हों और अपने स्थान से इधर-उधर भाग रही हों। कभी वे एक सतरंगी इकाई बनकर मूर्तिमान हो जाती हों और कभी भद्दी शकल के लाल बुलबुलों की पाँत बनाकर बिखर जाती हों। बेटे ने अपने बाप की ओर विनय और क्रोध-भरी दृष्टि से देखा, लेकिन उत्तेजित और अस्त-व्यस्त दशा में खड़ा इलिया अर्तामोनोव बैमाकोवा की ओर घूरकर देख रहा था और सीधे उसके गुलाबी मुख पर चिल्ला रहा था—

"समधिन, शहद की यह शराब मैं तुम्हारी सेहत के लिए पी रहा हूँ। यह इतनी ही मधुर है, जितनी इसके बनानेवाली।"

बैमाकोवा ने अपनी गोल गोरी बाँह उठाई और सूरज की रोशनी उसके सुनहले हार पर, जिसमें कई रंगों के हीरे-जवाहिरात जड़े थे—खेल गई। उसके वक्ष पर पड़ी मोतियों की माला तारों-सी चमकने लगी। औरों की तरह वह भी शराब पीती रही थी। उसकी आँखों में एक अलस मुसकान चमक रही थी और उसके खुले हुए ओठों मे लुभाना कम्पन हो रहा था। उन्होंने जाम से जाम मिलाए और बैमाकोवा ने पीकर अपने समधी के आगे कोरनिश की। हर्षातिरेक से चीखते हुए उसने अपना रूखा सिर ऊपर को झटका—

"समधिन, तुम अदब-क़ायदा जानती हो, राजकुमारियों जैसा अदब-क़ायदा। अब भगवान् ही बचाये।"

प्योत्र को अस्पष्ट रूप से यह अनुभव हो रहा था कि उसका पिता ठीक व्यवहार नहीं कर रहा है। मेहमानो की मदोन्मत्त चीख़-पुकार के बीच उसने पोमियाल्लोव के द्वेष-भरे शब्द, बरूर्काया के उलाहने और झिड़कियाँ और ज़िस्तीकिन के दवे-दवे कह-कहे साफ़-साफ़ सुन लिये।

"यह शादी नहीं है, यह तो अभी एक परीक्षा है।" उसने सोचा और उसने फिर सुना—

"देखो तो, उल्याना की ओर कैसा घूर रहा है, शैतान! बाप रे बाप!"

"एक और शादी होनेवाली है, लेकिन इस बार उसमें पादरी नहीं होगा।"

एक क्षण के लिये यह शब्द प्योत्र के कानों में पीड़ा बनकर गूँजते। लेकिन जैसे ही नतालिया के घुटने या कोहनी का उससे स्पर्श होता कि वह तुरन्त इन बातों को भूल जाता और उसके अंग-अंग में एक उन्मादकारी बेचैनी दौड़ जाती। अपने सिर को हठपूर्वक दूसरी ओर मोड़े रखकर वह उसकी ओर न देखने की कोशिश कर रहा था। लेकिन उसकी आँखें बस मे ही न रहती थीं। रह-रहकर वह उसकी दिशा में घूम जातीं।

"यह कब तक चलता है?"

उसने अस्फुट स्वर में पूछा—और नतालिया ने अस्फुट स्वर में ही उत्तर दिया—

"पता नहीं।"

"मुझे शर्म लग रही है।"

"मुझे भी।" उत्तर मिला और प्योत्र यह जानकर सुखी हुआ कि ननालिया भी उसकी ही तरह अनुभव कर रही है।

अलेक्सी लड़कियों के साथ था, जो इस समय बग़ीचे मे दावत खा रही थीं। निकिता कमरे के अन्दर गीली दाढ़ी और पीली, ताम्र आँखोंवाले चेचक-मुँह कृशकाय पादरी के पास बैठा था। आँगन और सड़क की ओर खुलनेवाली खिड़की से नगर के लोग झाँककर देख रहे थे। वहाँ दरजनों आदमियों के सिर नीले आकाश की पृष्ठ भूमि मे मुँह खोले, काना-फूसी करते, सिसकारते या चीखते-चिल्लाते हिल-डुल रहे थे और एक अटूट-क्रम मे नज़र के सामने पड़ते और गायब होते जाते थे। खिड़कियाँ खुले मुँह की बोरियों की तरह दिखाई देती थीं जिनमे से कलरव करते सिरों के दाने किसी समय भी तरबूजों की तरह ढुलकते हुए कमरे मे गिर पड़ सकते थे। निकिता ने विशेष ध्यान से खन्दक खोदनेवाले तिखोन व्यालोव के चेहरे की ओर देखा जिस पर लाल झाँइयाँ पड़ी हुई थीं और जिसकी गाल की ऊँची हड्डियाँ मानों एक ललछौंहीं ऊन की मोटी गद्दी मे जड़ी हों। उसकी आँखें जो पहली नजर मे वर्णहीन लगती थीं, इस अजग ढग से चमकती थीं जैसे टिमटिमा रही हों। लेकिन यह उसकी पुतलियाँ थी जो रह-रहकर चमकती थीं, न कि उसकी निस्पन्द बरौनियाँ। उसके पतले, जोर से भिचे हुए ओंठ भी जिन्हे घुँघराली मूँछ ने ढँक रक्खा था, निःस्पन्द थे। उसके कान भद्दी तौर से उसकी चाँद के पास तक उठे हुए थे। व्यालोव खिड़की की दहलीज़ से छाती टिकाए खड़ा था। लोग जब उसे धक्का देते तो वह न उन पर चिल्लाता और न उन्हे गाली ही देता, बल्कि अपने कन्धों और कोहनियों से हलकी ठेस देकर उन्हे दूर हटा देता। उसके गोल कन्धे पहाड़ की चोटियों की तरह ऊपर की ओर उठे हुए थे और उसकी गर्दन उनके बीच मे धँसी हुई थी, जिससे यह लगता था मानों उसका सिर सीधे उसके वक्ष मे से निकला हो और वह भी कुबड़ा-सा दिखाई देता था। निकिता को उसके मुख में कोई चीज अत्यन्त स्नेहमयी और चित्ताकर्षक लगी।

एक कानी आँखवाले आदमी ने अचानक चंग पर एक जोर का घूँसा मारा और उसके चमड़े के सिरे पर अपनी उँगलियाँ दौड़ाईं। चग से एक कराह-भरी झम-झम का स्वर फूट पड़ा। किसी ने एक कर्कश सीटी बजाई। एक ने हाथ

के बाजे पर तान छेड़ी। दुलहे का सहचर स्तियोपा बास्की, जो गोल-मटोल शरीर और घुँघराले बालोंवाला लड़का था, कमरे के बीच में चक्कर दे-देकर और पाँव पटक-पटककर संगीत की ताल-लय के अनुसार चिल्लाने लगा—

अरी सलोनी, प्यारी, मधुर छबीली!
तुम तो नृत्य गीत में, केलि-कलावन्ती हो।
मेरे सिवा भरी हुई हैं जेबें किसकी सोने से?
तो फिर आ जाओ, नाचो, होड़ लगाओ, सोना लूटो!

उसका भीमकाय बाप उठकर गरजा—

"स्तियोपका, बस्ती की नाक न कटने देना। कुस्की चिकाबिडी नाच दिखाओ।"

फिर इलिया अर्तामोनोव कूदकर खड़ा हो गया। उसका मुँह लाल हो रहा था और उसकी नाक जलते हुए अंगारे की तरह लाल हो रही थी। उसने अपने अस्त-व्यस्त सिर को झटकते हुए बास्की की ओर चिल्लाकर कहा—

"कौन कहता है कि चिकाबिडी नाच नाचो। हम देखेंगे किसको नाचना आता है। अल्योशा!"

अलेक्सी एक क्षण भर द्रिओमोव के नाचनेवाले को प्रफुल्लित और सस्मित दृष्टि से देखता रहा। तब अचानक पीला पड़कर वह वृत्त के चारों ओर आश्चर्य-जनक गति से चक्कर काटकर नाचते हुए एक लड़की की तरह कूकने लगा।

"इसे गीत के शब्द नहीं आते।" द्रियोमोव के लोग चिल्लाये और अर्तामोनोव क्रोध से गरज पड़ा।

"अल्योशा! मैं तेरी जान ले लूँगा।" बिना रुके अपने पाँव से चाप देते हुए अलेक्सी ने अपने ओठों के बीच दो उँगलियाँ डालकर एक बार तेज़ सीटी बजाई और उसके बाद साफ़ सधे स्वर में गाना शुरू किया—

इतना था बस काम जब मोकी था मालिक औ स्वामी
बैठे हुकुम चलाना और बताना ऐब टहलुओं में
किन्तु हाय, मोकी, वही हँसमुखा मोकी अब
बेयरा बना, हुकुम बजा लाता, भरता है आदेशों पर हामी

"लो, सुनो!" अर्तामोनोव ने जैसे विजय के उल्लास में गरजकर कहा।

"आहा !" पादरी अर्थपूर्ण मुद्रा में चिल्लाकर बोला और अपना सिर हिलाते हुए उसने एक उँगली उठाई।

"अलेक्सी तुम्हारे यहाँ के लड़के को तो नाच में पछाड़ देगा।" प्योनेत्र नतालिया से कहा और उसने सहमी आवाज़ में उत्तर दिया—

"उसके पाँव बहुत हलके पड़ते हैं।"

दोनों के बाप अपने-अपने बेटों को इस तरह बढ़ावा दे रहे थे जैसे मुर्गे लड़ा रहे हों। दोनों कन्धे से कन्धा मिलाए शराब के नशे में चूर खड़े थे। उनमें से एक विशाल बेढंगा व्यक्ति था, जैसे जई के दानों से भरा बोरा हो। उसकी भौंहों के नीचे आँखों की संकुचित लाल दरार से मदहोशी के उल्लास के आँसू टपक रहे थे। दूसरा व्यक्ति अपनी लम्बी बाँहों को ऐंठता, हाथों से जाँघें टटोलता और उन्माद-भरी आँखों से देखता हुआ ऐसी तनी मुद्रा में खड़ा था, जैसे उछल ही पड़नेवाला हो। अपने बाप की झटके खाती हुई दाढ़ी के अन्दर जबड़ों की हरकत का अनुमान करके प्योत्र ने सोचा—

"वह दाँत पीस रहा है, किसी को मार बैठेगा।"

"यह भोंडा नाच है, अर्तामोनोव !" मत्रियोना बास्कॉया की भारी आवाज़ सुनाई दी। "पाँव क़ायदे से उठते ही नहीं। बहुत बुरा नाच है !"

इलिया अर्तामोनोव ने उसके कड़ाही-जैसे गोल और साँवले मुँह पर हँस दिया। फिर उसकी मोटी नाक पर हँसा। अलेक्सी जीत गया था। बास्कीं का लड़का लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े की ओर जा रहा था। इलिया ने झपाटे से बैमाकोवा की बाँह पकड़कर आदेश दिया--

"समधिन आओ, अब तुम्हारी बारी है।"

वह एकदम पीली पड़ गई। उसने अपने खाली हाथ से इलिया को दूर हटाने की कोशिश करते हुए आश्चर्य-भरे क्रोध से चीख़कर कहा—

"पागल हो गये हो ? यह नहीं समझते कि यह बुरी बात है ?"

मेहमान धूर्तता से खीसें निपोरते हुए यकायक ख़ामोश हो गये। पोमियालोव ने बास्कॉया पर एक उड़ती नज़र डाली। तेल की-सी फुफकार करते शब्दों-सी उसकी आवाज़ सुनाई दी—

"ठीक तो है, नाचो उल्याना, नाचो। हम लोगों को ख़ुश करने के लिए

३

ही सही। भगवान् क्षमा कर देंगे।"

"इसका पाप तो मुझे लगेगा।" अर्तामोनोव चिल्लाया।

उसका नशा उतरता-सा दिखाई दिया। किञ्चित झेंपते हुए वह आगे बढ़ा, जैसे अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जंग के मैदान में उतर रहा हो। किसी ने वैमाकोवा को आगे की ओर ढकेल दिया। यह मदहोश औरत एक ओर को लड़खड़ाई और फिर अपने कन्धे पीछे की ओर फेंक और सर उठाकर दायरे में फिरकी-सी नाचने लगी। इस दृश्य से स्तम्भित लोगों की कानाफूसी प्योत्र को सुनाई दी—

"भगवान् ही बचाये अब हमें! इसके पति को क़ब्र में गये अभी एक साल भी नहीं हुआ और यह है कि अपनी लड़की का ब्याह रचा के नाच रही है!"

उसने अपनी नई दुलहन की ओर तो नहीं देखा, लेकिन उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वह अपनी माँ के व्यवहार पर शर्म से गड़ी जा रही है और वह बड़बड़ाया—

"बाबा को नहीं नाचना चाहिए।"

"न माँ को ही।" नतालिया ने उत्तर दिया। उसका स्वर धीमा और उदास था। वह एक बेंच पर खड़ी लोगों के सिरों के ऊपर से नाच के दायरे में देख रही थी। अचानक उसे चक्कर-सा आ गया और उसने प्योत्र का कन्धा पकड़कर अपने को सँभाला।

"देखो, सँभलकर!" प्योत्र ने दुलराते हुए कहा और सहारा देने के लिए उसकी कोहनी को थामने को अपना हाथ उठाया।

खुली हुई खिड़कियों से बाहर खड़े दर्शकों के सिरों पर से होकर अस्त होते हुए सूरज की लाल रोशनी आ रही थी और इस रोशनी में अन्धे की तरह औरतें और मर्द दायरे के अन्दर नाच रहे थे। लोग दरवाज़ों के बाहर बग़ीचे में, सहन में और सड़क पर शोरगुल मचा रहे थे और हँस रहे थे, लेकिन इस भरे हुए कमरे में निस्तब्धता और अधिक घनी होकर छायी जाती थी। डफ़ के कसे हुए चमड़े पर धीमी-धीमी छाप पड़ रही थी और हाथ का बाजा चीख़ रहा था। ये दोनों जवान लड़कों और लड़कियों के दायरे में और भी उन्मत्त होकर नाच रहे थे। जवान लड़के-लड़कियाँ उन्हें गम्भीर ख़ामोश निगाहों से देख रहे थे, जैसे यह नाच उनके लिए असाधारण महत्व का हो। बड़े-बूढ़े अधिकतर आँगन में

चले गये थे और वहाँ सिर्फ़ वही रह गये थे जो शराब के नशे की वजह से चल भी नहीं सकते थे।

अर्तामोनोव अपना पाँव पटककर जहाँ का तहाँ खड़ा हो गया—

"तुम मुझसे जीत गई, उल्याना इवानोव्ना!" वह औरत चकित हो गई और फिर वह भी अचानक रुक गई जैसे एक पत्थर की दीवार के सामने पड़ गई हो। उसने दायरे में खड़े लोगों के सामने कोरनिश बजाते हुए कहा—

"मेरे बारे में बुरा न सोचना।" और वह अपने रूमाल से हवा करती हुई फ़ौरन कमरे से बाहर चली गई। अब बास्काँया मैदान में सामने आया—

"दुलहे-दुलहिन को एक-दूसरे से अलग कर दो। प्योत्र, तुम मेरे साथ आओ। दूल्हे की ओर के लोगों, इसकी बाँह पकड़कर नीचे उतारो।"

प्योत्र के पास खड़े आदमी को हटाते हुए बाप ने अपना बोझिल हाथ बेटे के कन्धे पर रखते हुए कहा—

"जाओ, भगवान् तुम्हें ख़ुश रक्खे।" उसने अपने बेटे को छाती से लगा लिया। फिर आगे को ढकेल दिया। बास्काँया उसे लेकर दाएँ-बाएँ थूकती और बड़बड़ाती हुई दायरे में घुसी—

"थू, थू! थू, थू! रोग भाग, दुःख भाग, बैर भाग, बुरे दिन भाग, थू। आग और पानी, देश और काल का विचार करके आये हैं, मुसीबतें ढाने के लिए नहीं, सुखी बनाने के लिए!"

जब बूढ़ी औरत के पीछे चलकर प्योत्र नतालिया के कमरे में पहुँचा, जहाँ एक ऊँचा कोमल बिछौना बिछा हुआ था, तो वह औरत कमरे के बीच में कुर्सी खींचकर धम से बैठ गई—

"सुनो और याद रक्खो।" वह गम्भीरता से बोली। "ये रहे ढाई रूबल। इन्हें अपने जूते की एड़ी में रख लो। जब नतालिया आयेगी, तो वह तुम्हारे जूते उतारने के लिए झुकेगी, उसे मत उतारने देना।"

"आख़िर इसका मतलब क्या है?" प्योत्र ने मलिन भाव से पूछा।

"यह तुम्हारे समझने की बात नहीं है। तीन बार तुम इन्कार कर देना और चौथी बार उसे उतारने देना। तब वह तीन बार तुम्हारा चुम्बन लेगी और तुम आधे रूबल देकर कहना—'ये मैं तुम्हें देता हूँ, मेरी दासी—मेरी क़िस्मत!'

भूलना मत। फिर कपड़े उतार कर उसकी ओर पीठ करके लेट जाना और वह रात भर को बिस्तर में दाखिल होने के लिए तुमसे प्रार्थना करेगी। लेकिन तुम चुप रहना। बस, जब वह तीसरी दफ़ा पूछे, तब उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा देना—समझे? और फिर....।"

उपदेश देनेवाली इस चौड़े और फूले मुँह की औरत की ओर प्योत्र आश्चर्य से घूरता रहा। वह अपने ओठों को चाटती हुई, अपनी तेल से गीली गर्दन और ठोड़ी का पसीना रूमाल से पोंछती हुई, नथुने फुलाए बैठी चौकस ढंग से भद्दे और शर्मनाक शब्दों का उच्चारण कर रही थी। चलते-चलते उसने दोहरा कर कहा—

"चीखों और आँसुओं पर विश्वास न करना।" और वह लड़खड़ाती हुई कमरे से बाहर निकल गई। अपने पीछे शराब की मादक गन्ध छोड़ती गई। प्योत्र के तन-बदन में आग लग गई। उसने अपने जूते उतारे और एक कोने में फेंक दिए। जल्दी से कपड़े उतार कर वह पलंग पर इस तरह कूदकर चढ़ा, जैसे घोड़े पर सवार हो रहा हो। इस डर से कि उसके हृदय में अपमानित होने का जो भाव उमड़ रहा था, वह कहीं सुबकी बनकर न फूट पड़े, उसने अपने दाँत भींच लिये—

"नाली के कीड़ो!"

बिस्तर गरम था। वह उसमें से बाहर निकला और खिड़की के पास गया। खिड़की खोलते ही बगीचे में होनेवाले मदहोश शोरगुल, अट्टहास और लड़कियों की चीख़ पुकार से उसके कान बहरे हो गये। सन्ध्या की नीलिमा में पेड़ों के नीचे काली छायाएं घूम रही थीं। सन्त निकोला के गिरजाघर की मीनार अपनी ताँबे की-सी उँगली से आकाश को बेध रही थी। उस पर से क्रॉस का चिह्न ग़ायब था। सोने का पानी चढ़ाने के लिये उसे नीचे उतार लिया गया था। बस्ती की छतों के ऊपर से दृष्टि डालते हुए प्योत्र ने ओका नदी को देखा, जो पिघले हुए चाँद की पीली आभा में शोकाकुल-सी चमक रही थी। नदी के आगे सीमा-हीन जङ्गलों की काली रेखाएँ थीं। उसी समय उसे किसी दूसरे ही प्रदेश की याद आई—एक ऐसे खुले-चौड़े देश की जिसके सुनहले खेत नाज के सुनहले दानों से चमकते रहते हैं—और उसने एक आह भरी। सीढ़ियों पर से पाँवों

की चाप और हँसी-ठट्ठे की आवाज़ें सुनाई दीं। वह कूदकर फिर बिस्तर में दाख़िल हो गया। दरवाज़ा खुला, रेशमी फीतों की सरसराहट और जूतों की चरमर सुनाई दी। कोई आँसुओं के बीच नाक से सूँ-सूँ कर रहा था। दरवाज़ा बन्द होते ही बाहर से चटख़नी चढ़ाने की आवाज़ आई। प्योत्र ने बड़ी सावधानी से अपना सिर उठाया। कमरे की धुँधली रोशनी में एक श्वेत आकृति दरवाज़े के पास खड़ी पृथ्वी तक झुककर धीरे-धीरे क्रॉस का चिह्न बना रही थी।

"ये तो प्रार्थना कर रही है। मैंने नहीं की।"

लेकिन उसमें प्रार्थना करने की रत्तीभर इच्छा न थी।

"नतालिया यर्स्तायेव्ना!" वह मृदु स्वर से बोला—"डरो मत।" मैं ख़ुद सहमा हुआ हूँ और थकान से चूर हूँ।"

उसने दोनों हाथों से अपने सिर के बाल सँवारे। अपना कान पकड़कर खींचते हुए उसने टूटे-फूटे शब्दों में कहा—

"उस सब काम की ज़रूरत नहीं, जूते-ऊते उतारने की। ये निरी मूर्खता है। मेरा दिल टीसें मार रहा था और वह अपनी बेहूदा बकवास कर रही थी। रोओ मत।"

सहमी-सी नतालिया एक बग़ल से कमरे को पार करके खिड़की पर पहुँची। बाहर झाँककर उसने कोमल स्वर में कहा—

"लोग अब तक उत्सव मना रहे हैं।"

"हाँ।"

बड़ी देर तक वे इसी तरह इधर-उधर की निरर्थक बातें करते रहे। दोनों थके और किसी तरह डरे हुए थे। वे एक दूसरे का स्पर्श करने का साहस न जुटा पाते। पौ फटते ही सीढ़ियाँ चरमराईं और किसी का हाथ दीवार टटोलने लगा। नतालिया उठकर दरवाज़े तक गई।

"अगर बास्कोया हो तो उसको अन्दर मत आने देना।" प्योत्र ने फुसफुसाते हुए कहा।

"माँ है।" नतालिया ने चटख़नी खोलते हुए कहा। प्योत्र उठकर बैठ गया। उसके पाँव फ़र्श पर झूल रहे थे। वह ख़ुद अपने से असन्तुष्ट था और उदास मन से सोच रहा था—

"मैं किसी क़ाबिल नहीं, मेरी हिम्मत ही नहीं बँधी। वह मुझ पर हँसती होगी।"

दरवाज़ा खुला और नतालिया ने कोमल स्वर में कहा—

"माँ तुम्हें बुलाती है।"

वह अँगीठी के सफ़ेद टाइल के सहारे अदृश्य-सी झुकी खड़ी रही। प्योत्र बाहर चला गया। दरवाज़े के बाहर अँधेरे में से बैमाकोवा ने डर और .गुस्से से भरकर फुसफुसाती ज़बान में तेज़ी से कहा—

"तुम कर क्या रहे हो—प्योत्र इलिच ? क्या मुझे और मेरी बेटी को बद-नाम करना चाहते हो? सुबह होने को आई और कुछ ही देर में लोग तुम्हें जगाने के लिए पहुँच जाएँगे। मुझे इन लोगों को अपनी बेटी का उतारा पेटीकोट दिखाना पड़ेगा, ताकि वे जान जायें कि वह अब तक पवित्र थी।

उसने अपना एक हाथ प्योत्र के कन्धे पर रखा था और दूसरे हाथ से वह उसे .गुस्से से झकझोरती हुई पूछ रही थी—

"आख़िर बात क्या है ? क्या तुम कमज़ोर हो या नपुंसक हो ? जवाब दो, मुझे डराओ मत !"

प्योत्र ने बिना किसी उत्साह के जवाब दिया—

"मुझे उस पर दया आती है और डर भी लगता है।"

वह अपनी विधवा सास का चेहरा न देख पाया, लेकिन उसे लगा कि वह हँस रही हो।

"तुम जाओ और एक मर्द की तरह अपना काम करो। सन्त क्रिस्टोफ़र की प्रार्थना करो, जाओ ! अच्छा ठहरो, मैं तुम्हें प्यार कर लूँ।"

प्योत्र के चारों ओर अपनी बाँहें फेंककर उसने अपने मीठे चिपचिपाते ओठों से, जिनसे शराब की गरम-गरम गन्ध उठ रही थी, उसे चूम लिया। इसके पहले कि वह उसके चुम्बन का जवाब देता, वह वहाँ से जा चुकी थी और प्योत्र का सस्वर चुम्बन हवा में गूँज गया। वह लौटकर कमरे में आया और दरवाज़े पर चट-ख़नी चढ़ाकर उसने निश्चयात्मक ढंग से अपनी भुजाएँ फैलाईं। लड़की आगे बढ़ी और उसके आलिंगन में बँध गई। काँपती हुई वह बोली—

"माँ ने बहुत ज़्यादा शराब पी है।"

प्योत्र को ऐसे शब्द सुनने की अपेक्षा न थी। पलङ्ग की ओर पीछे हटते

हुए वह अस्फुट स्वर में बोला—

"डरो मत, मैं चाहे सुन्दर न होऊँ, लेकिन स्नेहशील हूँ।"

नतालिया उसके हृदय से और अधिक सटती हुई दबे स्वर से बोली—

"मैं गिरी जाती हूँ।"

द्रियोमोव में लोग दावतें उड़ाने के बहुत शौक़ीन थे। शादी का जलसा पाँच दिन तक चलता रहा। सुबह से लेकर आधी रात तक लोग सड़कों पर, एक घर से दूसरे घर तक शराब के नशे में लड़खड़ाते आते-जाते रहे। बार्स्की-परिवार ने सबसे शानदार और तड़क-भड़क की दावत खिलाई। लेकिन अलेक्सी ने ओलगा ओर्लोवा का अपमान करने के लिये उनके लड़के की ख़ूब मरम्मत की, और जब उसके माँ-बाप ने इसकी शिकायत की तो अर्तामोनोव को बड़ा आश्चर्य हुआ—

"यह तो कभी नहीं सुना कि लड़के आपस में झगड़ते नहीं हैं।"

उसने लड़कियों पर फ़ीते और मिठाइयाँ बरसाई और लड़कों को पैसे लुटाए। उनके माँ-बापों को छककर शराब पिलाई। हर आने-जानेवाले को यह कहकर गले से लगाया—

"देखो भाई, शादी इसे कहते हैं।"

अर्तामोनोव के सारे व्यवहार में प्रचण्ड आवेग था और वह बेहिसाब शराब पीता रहा था, मानों अपने अन्दर की किसी आग को बुझाना चाहता हो—वह पीता ही जाता था, लेकिन मदहोश न होता। इन थोड़े दिनों में वह काफ़ी दुबला पड़ गया था। यद्यपि वह उल्याना बैमाकोवा से अपने को दूर रखने की कोशिश करता था, फिर भी उसके लड़कों ने यह बात ताड़ ली थी कि वह अक्सर एक रोष-भरी माँग करती हुई निगाह से बैमाकोवा की ओर देखता है। अपने बल की डींग हाँकते हुए उसने नगर की गारद के सैनिकों को ललकारकर खंभा खींचा और एक फ़ायरमैन तथा तीन राजगीरों को कुश्ती में पछाड़ दिया। तब खन्दक़ खोदनेवाला तिखोन व्यालोव उसके सामने आया और प्रस्ताव करने के बजाय उसने ललकारा—

"आओ, मुझसे लड़ो।"

उसके स्वर के कड़ेपन से आश्चर्यचकित हो अर्तामोनोव ने इस मोटे-तगड़े

खन्दक़ खोदनेवाले को सर से पाँव तक देखा ।

"तुम क्या हो ? ताक़तवर हो या डींगिया ?"

"मैं यह सब नहीं जानता ।" उसने गम्भीरता से उत्तर दिया ।

एक दूसरे की पेटियाँ पकड़कर वह कुछ देर तक एक दूसरे से गुँथ रहे। व्यालोव के कन्धों पर से देखते हुए इलिया औरतों की ओर बेशर्मी से आँख मारता रहा । ख़न्दक खोदनेवाले की अपेक्षा वह अधिक लम्बा, पर पतला और अच्छी गठन का था । व्यालोव ने अपना कन्धा इलिया के सीने से भिड़ाकर उसे उठा लेना और पीछे ज़मीन पर पटक देना चाहा । लेकिन उसके पैंतरे को भाँप-कर इलिया चिल्लाया—

"भाई, यह पैंतरा तो कुछ भी नहीं है । बड़ा मामुली है ।"

यकायक एक हुंकार भरकर उसने व्यालोव को अपने सिर के ऊपर से उछालकर इतने ज़ोर से पटका कि उसके पाँव गिरने की चोट खाकर अवसन्न रह गये । उठकर घास पर बैठते हुए और गालों का पसीना पोंछते हुए व्यालोव ने बेशर्मी से कहा—

"मान लिया, तगड़े आदमी हो ।"

"यह तो हम भी देख सकते हैं ।" दर्शकों ने खिल्ली उड़ाई ।

"ख़ूब तन्दुरुस्त हो ।" व्यालोव ने दोहराया ।

इलिया ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया—

"उठो ।"

बढ़े हुए हाथ की उपेक्षा करके ख़न्दक खोदनेवाले ने अपने आप उठने की कोशिश की, लेकिन वह उठ न सका । वह फिर पाँव फैलाकर अपनी विचित्र पिघलती हुई आँखों से भीड़ की ओर देखता रहा । निकिता ने उसके पास जाकर हमदर्दी से पूछा—

"दर्द होता है ? मैं मदद करूँ ?"

ख़न्दक खोदनेवाले ने एक सूखी हँसी हँसते हुए कहा—

"मेरी हड्डियाँ दर्द कर रही हैं । मैं तुम्हारे बाप से कहीं ज़्यादा मज़बूत हूँ, लेकिन उतना फ़ुर्तीला नहीं । अच्छा, निकिता इलिच, तुम बड़े सीधे हो ! चलो ।"

उसने कूबड़े की बाँह पकड़ ली और दोनों साथ-साथ भीड़ में पहुँचे । व्यालोव

अपनी टाँगों के दर्द को शायद कम करने के लिए रह-रहकर ज़ोर से पाँव पटकता जाता था।

थकान और जागरण से चूर, निरन्तर प्रदर्शन के लिये नवदम्पती प्रसन्न, शोर मचानेवाली, नशे में चूर भीड़ के साथ सड़कों पर चुपचाप इधर से उधर चल रहे थे। कहीं उसे खाना भी पीना पड़ता और उन दोनों पर की गई, चारों ओर की निर्लज फब्तियों पर उनका मुँह लजा से लाल हो जाता। एक दूसरे की ओर न देखने या एक दूसरे से बात न करने की लगातार कोशिश करते रहे। दोनों हमेशा बाँहों में बाँहें डालकर पास-पास चलते, पास-पास बैठते हुए अजनबियों-सा व्यवहार करते रहे। उनके इस व्यवहार से मत्रियोना वास्कोया बेहद खुश हुई और उसने इलिया और उल्याना के सामने डींग मारते हुए कहा—

"मैंने तुम्हारे बेटे को ठीक नसीहत की थी न? मैं तो यही सोचती हूँ। देखो उल्याना, मैंने तुम्हारी बेटी को कैसी सीख दी! और अपने दामाद के बारे में तुम्हारी क्या राय है? पूरा मोर है। कहता है, मैं ऐसा नहीं हूँ और न मेरी पत्नी ही है!"

लेकिन अपने कमरे में पहुँचकर प्योत्र और नतालिया अपने कपड़ों के साथ-साथ उस सारे दिखावटी व्यवहार को भी उतार फेंकते जो उन पर लादा जाता था और जिसे सर्वसाधारण के सामने जाते समय उन्हें कर्त्तव्य मानकर अपनाना पड़ता था। अकेले में वे दिनभर की घटनाओं के बारे में बातें करते।

"तुम्हारे शहर में लोग शराब-सी शराब पीते हैं!" प्योत्र ने आश्चर्यपूर्वक कहा।

"तुम्हारी तरफ़ क्या लोग कम पीते हैं।" उसकी पत्नी ने पूछा।

"हमारे यहाँ किसान इस तरह तो नहीं पी सकते।"

"तुम किसानों से तो नहीं लगते हो!"

"हम जागीर पर रहनेवाले लोग हैं—एक तरह के शरीफ़ लोग।"

कभी-कभी वे एक दूसरे के आलिंगन में बँधकर खिड़की पर खामोश बैठे रहते और बग़ीचे से आनेवाली सुरभित वायु का सेवन करते रहते।

"तुम कुछ बोलते क्यों नहीं हो?" पत्नी कोमल स्वर में पूछती और कोमल स्वर में ही पति उत्तर देता।

"मुझे रोज़-रोज़ की मामूली बातें इस समय भली नहीं लगतीं।" वह एक

और ही प्रकार की बातचीत के लिए लालायित रहता जो साधारण न हो। लेकिन नतालिया उसकी इस ज़रूरत को पूरा नहीं कर पाती और जब वह ख़ुद सुनहले स्टेपी मैदानों के सीमाहीन विस्तार और व्यापकता का वर्णन करता तो नतालिया पूछती—

"इसमें जंगल भी नहीं, कुछ नहीं है ? ओह, कितनी डरावनी जगह होगी !"

"डर तो जंगल में रहता है।" प्योत्र ने निश्चेष्ट भाव से उत्तर दिया। "स्टेपी के मैदानों में डर का क्या काम ? वहाँ तो सिर्फ़ ज़मीन होती है, आसमान होता है और मैं होता हूँ।"

एक दिन जब वे खिड़की पर बैठे चुपचाप तारों-भरी रात का आनन्द ले रहे थे, उन्हें ग़ुसलखाने के निकट बग़ीचे में चलने-फिरने की आवाज़ सुनाई दी। कोई रसभरी की झाड़ियों को कुचलता हुआ भाग रहा था। फिर एक दबी हुई रोषभरी आवाज़ सुनाई दी—

"तुम यह करते क्या हो ? शैतान !"

नतालिया घबराकर उछल पड़ी—

"यह तो माँ है।" प्योत्र ने खिड़की से बाहर झाँककर देखा। उसकी चौड़ी पीठ ने सारी खिड़की घेर ली। ग़ुसलखाने के पास उसका बाप खड़ा उसकी सास को दीवार से ठेलकर दबा रहा था और गिराने की कोशिश कर रहा था। औरत उसके सर को धक्के मार-मारकर बच निकलने के लिये छटपटा रही थी और हाँफते हुए फ़ुसफ़ुसाती जाती थी—

"मुझे छोड़ो, नहीं तो चिल्ला दूँगी !"

फिर वह पागलों की तरह चिल्लाई—

"भले आदमी, मुझे मत छूओ। मुझपर दया करो।"

प्योत्र ने बिना शोर किये खिड़की बन्द कर दी और अपनी बाँहों में भरकर अपनी पत्नी को घुटनों पर बैठा लिया—

"बाहर मत देखो।"

वह उसके आलिंगन में तड़पती हुई रोई—

"बात क्या है ? यह कौन आदमी है ?"

"मेरा बाप।" प्योत्र ने उसे और कसते हुए कहा—

"तुम नहीं समझतीं ?"

"हाय, वह कैसे ऐसा कर सकते हैं ?" उसने शर्म और डर से अस्फुट स्वर में कहा। उसका पति उसे उठाकर बिस्तर पर ले गया और उससे धीमे से बोला—

"अपने माँ-बाप के कार्यों को भला-बुरा कहने का हमें अधिकार नहीं है।" नतालिया अपने हाथों से सिर पकड़ कर विक्षोभ से तड़पती और कराहती रही—

"पाप है, यह पाप है !"

"यह पाप हमारा नहीं।" प्योत्र ने अपने पिता के शब्दों को याद करते हुए कहा—

"बड़े आदमी इससे बड़े-बड़े पाप करते हैं और फिर यह अच्छा ही हुआ—वह अब तुम्हें नहीं तंग करते फिरेंगे। बड़े-बूढ़े लोग आसानी से बिना परेशान हुए काम कर डालते हैं। वे अपने बेटे की बहू से बलात्कार करना पाप नहीं मानते। रोओ मत !"

रोते हुए पत्नी बोली—

"उस दिन जब वे नाच रहे थे, तो मैंने सोचा था....अगर तुम्हारे पिता ने माँ के साथ ज़बरदस्ती की तो हम क्या करेंगे !"

लेकिन अपने तीव्र भावोद्रेक से थककर वह जल्द ही सो गई। प्योत्र ने खिड़की खोली और बाहर को मुँह निकाल बग़ीचे में झाँककर देखा। वहाँ कोई प्राणी न था। केवल सिसकती हुई वायु की लहरियाँ और सुगन्धिपूर्ण अन्धकार में झूमते हुए पेड़ खड़े थे। खिड़की को खुला ही छोड़कर वह अपनी पत्नी की बग़ल में जा लेटा और जो घटना अभी हुई थी, उस पर आँखें खोले सोचता रहा। कितना अच्छा होता अगर वह किसी फ़ार्म पर जा बसते, जहाँ बस वह और नतालिया रहते....।

नतालिया तड़के जग गई। उसे लगा जैसे अपनी माँ के प्रति किसी दया की भावना ने उसे जगा दिया है और मानों उसके प्रति सहानुभूति रखने से मर्म पर चोट लगती हो। नंगे पाँव सिर्फ़ पेटीकोट पहने ही वह तेज़ी से सीढ़ियाँ उतर कर नीचे आई। रोज़ उसकी माँ का कमरा अन्दर से बन्द रहता था, लेकिन आज उसके दरवाज़े खुले पड़े थे। इससे वह डर गई। लेकिन अन्दर झाँकने पर उसने देखा कि दूर कोने में सफ़ेद चादर के नीचे एक सफ़ेद ढूह-सा उठा हुआ

है और तकिये पर काले बाल बिखरे हुए हैं--

"सो रही है, बिचारी कितनी रोई और दुखी हुई होगी !"

मर्माहत माँ को सान्त्वना देने के लिए उसे कुछ करना चाहिए, यह सोच-कर नतालिया बाहर बगीचे में चली गई। ओस पड़ी हुई घास उसके नंगे पाँवों को गुदगुदाकर शीत से ठिठुरा रही थी। सूरज तभी जंगल के पीछे से ऊपर हुआ और नतालिया की आँखें उसकी तिरछी हल्की गर्म किरणों से चौंधिया गई। उसने ओस-कणों से चाँदी-सी चमकती बरदाक की पत्ती तोड़कर पहले एक गाल पर, फिर दूसरे गाल पर फेरी। फिर ताज़गी महसूस करते हुए उसने लाल अंगूरों के गुच्छे तोड़कर उस पत्ती में रख लिए। बिना किसी आक्रोश के उसने अपने ससुर के बारे में सोचा। वह अक्सर उसके कन्धे को ज़ोर से थपथपाते हुए चटखारा लेकर पूछता था--

"ज़िन्दा हो ? अच्छी तरह ? बहुत ख़ूब, जियो !"

नतालिया को लगा जैसे उससे कहने के लिए उसके पास और कोई शब्द न थे। वह उसकी स्नेहपूर्ण थपकियों से किञ्चित रुष्ट भी थी-- घोड़ों के दुलारने जैसी उन थपकियों से।

"जानवर !" उसने अपने ससुर के प्रति जबरन क्रोध उभारने के लिए सोचा।

चिड़ियाँ चहचहा रही थीं और ऊपर पत्तियों में रेशमी मरमर हो रहा था। किसी गड़रिये ने नगर के दूर छोर से बाँसुरी पर तान छेड़ी। वतरच्चा के तट से जहाँ कारख़ाने की इमारत बन रही थी, आदमियों की आवाज़ें मध्यम-गति से प्रभात की स्वच्छ उज्ज्वल निस्तब्धता में तैरती हुई आ रही थीं। इसी समय कुछ खट-सी हुई और नतालिया ने कुछ चौंककर सर उठाया। सेब के एक पेड़ पर जाल में फँसी एक बुलबुल जान छुड़ाने के लिए तड़प रही थी।

"यह जाल किसने लगाया ? निकिता ने ?"

बगीचे में कहीं एक सूखी टहनी चटाख़ से टूटी। जब उसने घर में लौटकर अपनी माँ के कमरे की ओर झाँककर देखा, तो उस समय उसकी माँ सिर के नीचे एक हाथ रखकर लेटी हुई जग रही थी और उसकी भौंहें जैसे आश्चर्य प्रकट करने के लिए ऊपर को उठी हुई थीं—

"कौन है ?" उसने घबराकर पूछा "क्या बात है ?"

"कुछ नहीं, तुम्हारी चाय के लिए मैं अंगूर के कुछ गुच्छे तोड़ लाई हूँ।"

पलङ्ग के सहारे की मेज़ पर एक बड़ी शीशे की सुराही रखी थी, जिसमें क्वास (एक प्रकार की शराब) भरी जाती थी; किन्तु इस समय वह लगभग ख़ाली ही थी। उसका ढक्कन फर्श पर पड़ा था। मेज़पोश पर क्वास के दाग़ थे। माँ की चञ्चल कठोर आँखों के इर्द-गिर्द एक नीली झाँई-सी थी। लेकिन जैसा कि नतालिया का अनुमान था वह रोने से सूजी नहीं थीं। वह इस समय कुछ अधिक काली और गहरी दिखाई देती थी और उसकी सदा की उद्दण्ड दृष्टि इस समय विचित्र रूप से खोई-खोई और निःसंग लग रही थी।

"मच्छर तो अब मुझे यहाँ सोने नहीं देते। मुझे अब उस सहन में सोना पड़ेगा।" माँ ने अपने गले तक चादर खींचते हुए कहा—"मच्छरों ने मेरा सारा बदन छलनी कर दिया है। तुम इतनी जल्दी कैसे उठीं और तुम नङ्गे पाँव ओस पर क्यों चलीं ? तुम्हारे कपड़े गीले हो गए हैं। ठंड लग जायगी।"

माँ बिना किसी कोमलता के अनिच्छा से बोली थी, मानो वह अपने ही विचारों की उधेड़-बुन में लगी हो। बेटी की चिन्ताएँ अब धीरे-धीरे बढ़कर, एक स्त्री की दूसरी स्त्री के प्रति उठनेवाली उत्सुक द्वेषपूर्ण जिज्ञासा का रूप धारण कर रही थीं।

"मेरी नींद जल्दी ही खुल गई और मुझे तुम्हारा ख़्याल हो आया, मैंने तुम्हारे बारे में सपना देखा था।"

"और तुम्हारा ख़्याल क्या था ?" माँ ने छत पर अपनी दृष्टि गड़ाए रख-कर पूछा।"

"यही कि अब तुम मेरे बिना बिलकुल अकेली हो सोती हो।" नतालिया को ऐसा लगा, जैसे उसकी माँ के गालों पर शर्म की लाली दौड़ गई। "मैं डरती तो नहीं।" कहते समय की उसकी मुस्कराहट जैसे असली न हो। "तुम अब जाओ, तुम्हारा पति जग गया है—उसके चलने-फिरने की आहट तुम्हें नहीं सुनाई देती ?" माँ ने अपनी आँखें बन्द करते हुए कहा।

धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ते हुए नतालिया ने नकचिढ़ेपन से द्वेषभाव से सोचा—

"उसने माँ के साथ ही रात गुज़ारी है। क्वास उसके लिए ही रखी गई थी। माँ की सारी गरदन क्षत-विक्षत हो रही है—मच्छरों के काटने से नहीं, चुम्बनों से। मैं पेत्या से इसके बारे में कुछ भी न कहूँगी। वह अब उस सहन में सोया करेगी। फिर भी रात को चीख़ रही थी।"

"तुम कहाँ थीं?" प्योत्र ने अपनी पत्नी की ओर ध्यान से देखते हुए कहा—उसने एक अपराधी की तरह बिना कारण जाने ही अपनी आँखें नीची कर लीं।

"मैंने कुछ अंगूर तोड़े थे और माँ को देखने गई।"

"अच्छा! कैसी हैं वे?"

"ठीक ही तो लगती हैं।"

"ऐसा?" प्योत्र ने अपने कान खींचते हुए कहा—"ऐसा!"

उसके मुख पर एक निष्प्रभ मुसकान खेल गई और उसने एक आह भरी। फ़िर अपनी ठोडी के लाल गुच्छे को मलते हुए बोला—

"लगता है कि वह बेवकूफ़ औरत बस्कांया सच ही कहती थी। चीखों पर विश्वास न करना। आँसुओं पर भी विश्वास न करना।"

फ़िर उसने कठोर स्वर में पूछा—

"तुमने निकिता को देखा था?"

"नहीं।"

"नहीं का क्या मतलब? वह तो बगीचे में चिड़िया फँसा रहा है।"

"अरे!" नतालिया भय से चिल्लाई। "और मैं बाहर ऐसे ही गई थी, सिफ पेटीकोट पहने!"

"यही तो मैं कहता हूँ।"

"तो फिर वह सोता कब है?"

प्योत्र ने अपने जूते चढ़ाते हुए ज़ोर से हुंकारा। उसकी पत्नी ने उसकी ओर कनखियों से देखते हुए मुस्कराकर कहा—

"तुम तो जानते हो कि वह कुबड़ा होते हुए भी बहुत अच्छा है, अलेक्सी से भी अच्छा।"

पति ने एक बार फ़िर हुंकार भरी, लेकिन उतने ज़ोर से नहीं।

....प्रतिदिन सूरज निकलने के समय जब गड़रिया अपनी भेड़ों को एकत्र

करने के लिए निकलकर अपनी लम्बी बाँसुरी पर गीत की करुण तान छेड़ता जाता और जब नदी के उस पार कुल्हाड़ियों की आवाज़ सुनाई देने लगती और बस्ती के लोग अपनी गायों को बाहर निकालते हुए एक-दूसरे से मखौल के स्वर में कहते—

"सुनते हो? अभी सूरज भी नहीं निकला और उन्होंने काम शुरू कर दिया।"

"लालच है लालच—शान्ति का सबसे बड़ा दुश्मन।"

कभी-कभी इलिया अर्तामोनोव को यह लगता कि नगर के निष्क्रिय द्वेष पर उसने क़ाबू पा लिया है। क्योंकि द्रियोमोव के लोग उसको देखकर आदरपूर्वक अपने टोप उठा देते और रान्स्की के राजकुमारों के बारे में बड़े ध्यान से उसकी कहानियाँ सुनते। किन्तु फिर भी उनमें कोई न कोई किञ्चित गर्वीले ढंग से ज़रूर ही बोल उठता—

"हमारे यहाँ के रईस यद्यपि ग़रीब और सीधे-सादे हैं, लेकिन फिर भी तुम्हारे रईसज़ादों से कहीं ज़्यादा नियम के पक्के हैं।"

कभी-कभी छुट्टियों की शाम को ओका नदी के किनारे बास्कीं की सराय के छायादार बग़ीचे में वह द्रियोमोव के धनी और शक्तिशाली लोगों के सामने कहता—

"मेरे व्यापार से तुम सबको लाभ होगा।"

"भगवान् ऐसा ही करे।" पोमियालोव अपने ओठों को एक सूक्ष्म कुत्ते की-सी मुसकान के रूप में मरोड़ते हुए उत्तर देता; और यह कहना असम्भव हो जाता कि वह जूते चाटना चाहता था, या काट खाना। उखड़ी-पुखड़ी पटसन-सी पतली दाढ़ी में उसका झुर्रीदार चेहरा बेढंगा-सा था। वह हर चीज़ पर एक सन्देह-जनित रूप में अपनी मोटी नाक सिकोड़ा करता था और उसकी कंजी आँखों में द्वेष और कपट झलकता रहता था।

"भगवान् ऐसा ही करे।" उसने दोहराया। "सच तो यह है कि तुम्हारे बिना भी हमारे दिन बड़े अच्छे बीत रहे थे। पर हो सकता है कि तुम्हारे साथ भी हम भले ही रहें।"

अर्तामोनोव के मुख पर क्रोध की रेखा दौड़ गई?

"तुम दोहरी बात बोलते हो? दोस्त की तरह नहीं।"

बास्कीं जोरों से हँसा।

"यह ऐसा ही आदमी है।"

जहाँ पर बास्कीं का मुख होना चाहिए, उस जगह मांस के कुछ लोथड़े असावधानी से जैसे एक दूसरे पर जमा कर दिए गये थे। उसके भारी-भरकम सिर, गरदन, गालों और बाहों पर रीछ के-से घने रूखे बाल उगे हुए थे। उसके कान नज़र न आते थे और उसकी आँखें, जिनकी इतने मांस में कहीं ज़रूरत न लगती थी, चर्बी की मोटी तहों के पीछे छिपी हुई थीं।

"मेरी सारी शक्ति तो चर्बी में चली जाती है।" वह कहा करता, और अट्टहास करके हँसता, जिससे उसके चौड़े खुले मुख में बड़े-बड़े मोटे दाँतों की पूरी पाँत दिखाई दे जाती।

छकड़े बनानेवाला वोरोपोनोव अपनी बेरंगी आँखें अर्तामोनोव पर टिकाकर धीमे सूखे स्वर में सलाह देता—

"काम तो करना ही है, लेकिन भगवान् के काम को भुला नहीं देना चाहिए। कहावत भी तो है 'मार्था-मार्था तुम बड़ी सयानी हो और तुम्हें बहुत-सी बातों की फ़िकर रहती है, लेकिन एक चीज़ ज़रूरी है।"

उसकी निष्प्रभ वर्णहीन आँखों से ऐसा संकेत मिलता, मानों वोरोपोनोव गुप्त रहस्यों का अनुमान करने में समर्थ हो और जैसे वह किसी भी समय कोई अद्भुत घोषणा करके सब लोगों को स्तम्भित कर देगा। कभी कभी वह इस तरह बात करता, मानों उसे अन्तर्ज्ञान होने ही वाला है।

"यह सच है कि ईशू मशीह ने भी उस रोटी में हिस्सा लगाया जिससे मार्था.... ।"

"बस, बस" चमड़ा साफ करनेवाला गिरजाघर का संरक्षक ज़ितीकिन बोल उठता। "यह तो ख्याल रक्खो कि तुम किधर बहके जा रहे हो!"

वोरोपोनोव ख़ामोश हो जाता। उसके कान फड़कते रहते। इलिया ने चमड़ा साफ़ करने वाले से पूछा—

"अच्छा तुम्हीं बताओ—क्या तुम मेरे व्यापार को समझते हो?"

"मैं क्यों समझूँ!" ज़ीतीकिन ने वास्तविक आश्चर्य से उत्तर दिया। "काम तुम्हारा है, उसको समझने का काम भी तुम्हारा है। अजब क़िस्म के आदमी हो! तुम्हारा काम तुम्हारा है, मेरा काम मेरा है।"

अर्तामोनोव गाढ़ी बीयर पीता रहा और पेड़ों के बीच से ओका नदी की दलदली रेखा की ओर देखता रहा, और भी आगे की ओर बायीं तरफ़ वतरचा के सर्पाकार घुमावों की ओर देखता रहा, जहाँ से वह बड़ी नदी में मिलने के लिए दलदलों और सरो के वृक्षों के कुञ्जों से बाहर निकलती थी, बालू पर छितरी हुई लकड़ी की छीलन और कतरन इस तरह चमक रही थी, जैसे उस पर सोने की जरी का काम किया गया हो। जमाकर रखी हुई ईंटों के ढेर से एक भूरे रंग की आभा फैल रही थी। रौंदी हुई नरकुल की झाड़ियों के बीच एक खुले कफ़न की तरह गहरे लाल रंग की एक लम्बी इमारत फैली हुई थी, यह कारखाना होगा। गोदाम की छत के कान्तिहीन, बिना रँगे हुए लोहे पर डूबते हुए सूरज की किरणों के पड़ने से ऐसा लगता था, जैसे उसमें आग लग रही हो। रहने के दुमञ्जिले मकान की पीली दीवारें, जिन पर तपते हुए आसमान के विपरीत मज़बूत सुनहले रंग की ऊँची शहतीरें रक्खी हुई थीं, ऐसी लगती थीं जैसे पिघले हुए मोम की बनी हों....अलेक्सी ने ठीक ही कहा था कि यह मकान दूर से देखने में एक सितार जैसा नज़र आता है। अलेक्सी सिरे पर बस्ती के और लड़कों से दूर-दूर ही रहता था। उसे सँभालना बड़ा मुश्किल होता। क्योंकि वह ग़ुस्सैल और उद्दण्ड था। प्योत्र का स्वभाव अधिक गम्भीर था। उसका मन व्यग्र रहता। वह अभी तक यह नहीं समझ पाया था कि साहस और निश्चय से आदमी कितना कुछ कर सकता है।

अर्तामोनोव के मुख पर काली छाया-सी पड़ गई। मुड़कर उसने अपनी झुरमुटी भौंहों में से नगर के लोगों की ओर देखा और उपेक्षा से मुस्करा दिया। ये लोग उसे हल्के क़िस्म के लोग लगे, जिनकी इच्छा-शक्ति निर्बल थी और जिनमें कोई जीवन न था।

रात को जब बस्ती के लोग गहरी नींद में सो जाते, अर्तामोनोव एक चोर की तरह छिपकर नदी के किनारे-किनारे चलता हुआ विधवा बैमाकोवा के बग़ीचे में पिछवाड़े से दाख़िल होता। अंधकार की ऊष्मा में मच्छर भिनभिनाते रहते, मानों खीरों, सेबों और मधुरिका लता की सुखद गन्ध पृथ्वी पर वे ही फैलाते फिर रहे हों। बादलों के भूरे पुलिनों के बीच चन्द्रमा तैरता जाता और बादलों की कोमल छायाएँ नदी को स्नेह से थपकियाँ देतीं। बाड़े को पार करके अर्ता-

मोनोव आहिस्ता-आहिस्ता बग़ीचे में होकर आँगन में पहुँचा। जैसे ही वह उस अँधेरे सहन में घुसा कि कोने में से चिन्ताकुल फुसफुसाहट सुनाई दी—

"तुम्हें विश्वास है कि तुम्हें किसी ने देखा नहीं?"

अपने कपड़े उतार फेंकते हुए वह कटुतापूर्वक बड़बड़ाया—

"इस तरह छिप-छिपकर एक छोकरे की तरह आने से मैं तो तंग आ गया!"

"तो तुम्हें प्रेमिका न रखना चाहिए।"

"मैं तो कभी न रखता, यह तो सिर्फ़ भगवान् ने भेज दी।"

"अरे, कैसी बात करते हो; नास्तिक! हम दोनों भगवान् की नज़र में पाप कर रहे हैं।"

"बस, बस, रहने दो। ये बातें फिर कभी करना। उफ़, उल्याना! लेकिन इस बस्ती में लोग....।"

"उनकी चिन्ता न करो।" स्त्री ने दबे स्वर में कहा और फिर उन्मादपूर्ण थपकियों से उसको सान्त्वना देने लगी। जब वह थककर आराम करती, उस समय उसको नगर के लोगों के बारे में बताती; उनमें से किनसे डरना चाहिए, कौन चालाक और कौन बेईमान है और किसके पास फालतू धन है।

"इन लोगों को पता है कि तुम्हें बहुत-सी लकड़ी की ज़रूरत पड़ेगी। इसलिए पोमियालोव और वोरोपोनोव पास-पड़ोस की सारी लकड़ी ख़रीदने की सोच रहे हैं, जिससे तुम्हारा काम मुश्किल हो जाय।"

"उनके हाथ से मौक़ा निकल गया। राजकुमार ने मुझे अपने जंगल बेच दिये हैं।"

उन पर और उनके चारों ओर अभेद्य अंधकार छाया हुआ था। वे एक-दूसरे की आँखें भी नहीं देख सकते थे। आपस में अस्फुट स्वरों में बातें करते रहे। उस सहन में भूसे और बर्च की झाडुओं की गन्ध फैली हुई थी और नीचे तहख़ानों में से सीलन-भरी शीतलता उठ रही थी। नगर इस समय एक बोझिल निस्तब्ध शान्ति में डूबा पड़ा था। कभी-कभी कोई चूहा भूसे में उछलता या क्षीण चूँ-चूँ करता और प्रति घण्टे सन्त निकोला का घण्टा रात की छाती में एक अप्रिय और स्पन्दित गूँज भर देता।

"आह! तुम्हारी गठन कितनी सुन्दर है।" अर्तामोनोव प्रेमोन्माद में भर-

कर उसके गरम मुलायम शरीर पर हाथ फेरता हुआ कहता है! तुम्हारे और बच्चे क्यों नहीं हुए?"

"नतालिया के अलावा दो और हुए, वे बीमार थे और मर गये।"

"तो तुम्हारा पति निकम्मा था।"

"तुम मुझपर विश्वास न करोगे।" वह फुसफुसाई। "लेकिन तुम्हारे आने से पहले मैं जानती ही न थी कि प्रेम क्या होता है। औरतें इसके बारे में अक्सर बातें करतीं, लेकिन मैं विश्वास न करती। मैं सोचती कि वे शर्म के मारे झूठ बोलती थीं। अपने पति के साथ तो मुझे शर्म ही उठानी पड़ती। उनके साथ सोना फाँसी पर चढ़ने के बराबर था। मैं भगवान् से मनाती रहती कि वे सो जायँ और मुझे न छुएँ। वह भला आदमी था; शान्तिप्रिय और होशियार। पर भगवान् ने उसे प्रेम करने का गुण नहीं दिया था।"

उसकी बातों ने अर्तामोनोव को उद्दीप्त कर दिया और साथ ही उसे अपने पर अचम्भा भी हुआ। उसके उन्नत उरोजों को दृढ़ता से सहलाते हुए वह बड़बड़ाया—

"तो ऐसी बातें भी होती हैं! मैं न जानता था। मेरा ख़्याल था कि हर आदमी औरत को प्यार करता है।"

इस औरत का, जिसे वह दिन में एक गम्भीर स्वभाव की विवेकशील गृहिणी के रूप में ही देखता और जिसे नगर के लोग उसकी बुद्धि और शिक्षा के कारण आदर-भाव से देखते, सामीप्य पाकर वह अपने को अधिक दृढ़ और बुद्धिमान अनुभव करता।

"मैं जानता हूँ कि इससे तुम्हारे दिल पर क्या बीतती है। हमें बच्चों की शादी न करना चाहिए था, हम-तुम शादी कर लेते।"

"तुम्हारे लड़के भले हैं। अगर उन्हें हमारे बारे में पता भी चल जाय, तो कोई हर्ज नहीं। पर अगर बस्तीवालों को पता चल गया तो....।"

उसके सारे शरीर में एक कँपकँपी-सी दौड़ गई।

"तुम चिन्ता न करो।" इलिया ने आहिस्ते से कहा।

दूसरे दिन वह उत्सुकतापूर्वक पूछ बैठी—

"बताओ तो, तुमने जिस आदमी की हत्या की थी—क्या उसको सपने में

देखते हो ?"

शान्तभाव से अपनी दाढ़ी सहलाते हुए इलिया ने उत्तर दिया—

"नहीं, मैं निश्चिन्त होकर सोता हूँ। सपने-वपने कुछ नहीं देखता और फिर उसका सपना क्यों देखूँ ? मैंने तो उसे देखा भी नहीं था। किसी ने मुझ पर वार किया और मैं लड़खड़ाकर गिरने लगा। मैंने झटका दिया, किसी के सर पर लगा, फिर किसी दूसरे को मारा और तीसरा भाग गया।"

उसने एक आह भरी और खिन्न होकर बड़बड़ाया—

"तुम्हारे मन में बेवकूफ़ी की बातें उठा करती हैं और फिर उनके लिए तुम अपने को भगवान् के आगे उत्तरदायी समझ लेती हो।"

कुछ देर तक वह ख़ामोश रहा। उल्याना ने पूछा—

"क्या सो गये ?"

"नहीं।"

"अब तुम जाने की तैयारी करो। पौ फटनेवाली है। कहाँ जाओगे, कारखाने ? हाय ! मेरे कारण तुम अपने को चूर कर डालोगे।"

"डरो मत, मैंने तपते हुए नीरस दिन काटे हैं। अब तो सरस दिन हैं।" उसने कपड़े पहनते हुए गर्व से कहा।

वह प्रातःकाल के शीतल झुटपुटे में कोट के अन्दर अपनी पीठ पर हाथ बाँधे, जिससे कपड़ा मुर्गे की पूँछ-सा ऊँचा उठ जाता, टहलता हुआ अपनी ज़मीन पर पहुँचता। चिप्पड़ और छीलन पर खड़े-खड़े वह सोचता—

"मुझे अल्योशा को प्रेम करने की इतनी छूट देनी पड़ेगी कि वह उफनना बन्द कर दे। उसको सँभालना कठिन है, लेकिन है वह अच्छा लड़का।"

बालू पर या छीलन के ढेर पर लेटकर वह तुरन्त गहरी नींद में सो जाता। अब हरे आसमान पर धीरे-धीरे ऊषा की लाली छाने लगती। गर्वीला सूरज अपनी मोरपंखी किरणों का वितान फैला देता और फिर प्राची से उसका सुनहला बिम्ब उदित होता। राजगीर और मज़दूर उठकर उसके भीमकाय शरीर को पृथ्वी पर लेटा पाते और सब लोगों में एक चेतावनी-सी फैल जाती—

"यह यहाँ है !"

ऊँची उठी हुई गाल की हड्डियोंवाला तिखोन व्यालोव अपने कन्धे पर लोहे

की कुदाल रक्खे खड़ा अर्तामोनोव को जलती आँखों से देखता रहा, मानों पाँव रखकर उसे कुचलना चाहता हो, लेकिन निश्चय न कर पाता हो।

वह भीमकाय मनुष्य मज़दूरों की चहल-पहल, शोर-गुल और हथौड़ों की घन-घन से न जागा। वह आकाश की ओर मुँह किये पड़ा सोता रहा और एक ऐसी आरी की तरह खुर्राटे भरता रहा, जिसके दाँतों को तेज़ करने की ज़रूरत हो। खन्दक खोदनेवाला पीछे की ओर मुड़-मुड़कर देखता हुआ चला गया। वह अपनी आँखें इस तरह झपका रहा था, जैसे उसके सर पर किसी ने चोट मारी हो। अलेक्सी सफ़ेद दुसूती कमीज़ और नीला पायजामा पहने घर से बाहर निकला। वह नहाने के लिए नदी की ओर ऐसे हल्के-हल्के पाँवों आगे बढ़ा, जैसे हवा पर चल रहा हो। सावधानी से कतराकर वह अपने पिता के पास से निकला, ताकि कतरन की क्षीण चरमर से उसकी नींद न टूट जाय। निकिता पौ फटने से पहले ही अपना छकड़ा लेकर बाहर निकल गया था। अक्सर प्रतिदिन ही वह एक या दो छकड़े भरकर अपने बगीचे के लिए साफ़ की हुई ज़मीन पर जंगल से सड़ी पत्तियों की खाद डालने के लिए ले आता था। उसने वर्च-पत्र, सेवल, रोवन और बर्डचेरी के वृक्ष तो लगा दिये थे और अब वह फलों के वृक्ष लगाने के लिए बालू में बड़े-बड़े गहरे गड्ढे खोदकर उन्हें सड़ी पत्तियों की खाद और नदी की दलदली मिट्टी से भर रहा था। छुट्टियों के दिन तिखोन व्यालोव भी उसे सहारा दे देता।

"बाग़ लगाना कोई पाप नहीं है, पर्व के दिन भी।" वह कहता।

प्योत्र अर्तामनोव उदासीनभाव से अपने कान मलता हुआ इमारत बनने की जगह, काम की देख-भाल करता फिर रहा था। एक आरा जैसे मिठास ले-लेकर लकड़ी चीर रहा था। रन्दे शपाशप हो रहे थे, कुल्हाड़ियाँ ज़ोर से ठक्-ठक् चल रही थीं। दीवार पर गीला चूना फैलाया जा रहा था और सान का पत्थर एक कुल्हाड़ी की कुन्द-धार से रगड़कर सुबक रहा था। शहतीरें उठाते हुए बढ़ई दुबिनुश्का गीत गा रहे थे और कहीं से एक तरुण स्वर ने मधुर तान छेड़ी—

दोस्त ज़कारी ने जाकर मेरी के पास,
काटी चुटकी गालों पर,
जगाने को उसका मृदु हास।

"यह फूहड़ गाना है।" प्योत्र ने व्यालोव से कहा। घुटनों तक बालू में खड़े ही ख़न्दक खोदनेवाले ने उत्तर दिया—

"कोई कुछ गाये, इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता।"

"तुम्हारा मतलब ?"

"शब्दों में आत्मा नहीं होती।"

"अजब आदमी है !" प्योत्र ने वहाँ से हटते हुए सोचा। उसे याद आया कि उसके पिता ने जब व्यालोव को ओवरसीयर की जगह पर नियुक्त करना चाहा, तो इस आदमी ने ज़मीन पर आँखें गड़ाए हुए उत्तर दिया—

"ना ना, मैं इस काम के लायक़ नहीं। मैं लोगों से काम नहीं करा सकता। मुझे बस जमादार की जगह पर रख लो।"

तब अर्तामोनोव ने उसे कोसा था।

....पतझड़ आया, शीत और वर्षा लेकर। बग़ीचे पर काई छा गई और जंगलों के काले लोहे पर उसके धब्बे नज़र आने लगे। गोमुख पर सीलन भरी वायु सी-सी कर बहने लगी और पीली रौंदी हुई छीलन को उड़ाकर नदी में फेंकने लगी। रोज़ सुबह मोटे रोएँवाले घोड़े छकड़ों को खींचते हुए गोदाम के सामने आकर रुकते। गाड़ियाँ फ्लैक्स से भरी होतीं। प्योत्र इस सामग्री की जाँच करता और ग़ौर से देखता कि यह घुन्ने दाढ़ियल किसान कहीं फ्लैक्स का वज़न बढ़ाने के लिये उसको गीला करके तो नहीं लाये और बेवक़ूफ़ तो नहीं बना रहे। और देखता कि लम्बे रेशेवाली फ्लैक्स की जगह पर कहीं मामूली क़िस्म की चीज़ तो नहीं दे रहे। किसानों से सौदा करना काफ़ी मुश्किल काम होता है। गुस्सैल अलेक्सी क्रोध में भरकर उनसे बात-बात पर उलझ पड़ता। बाप मास्को चला गया और फिर प्योत्र की सास भी मठ में प्रार्थना करते चली गई, कम से कम उसने कहा तो यही था। शाम को चाय पीते या खाना खाते समय अलेक्सी अक्सर चिड़चिड़े ढंग से कहता—

"यहाँ रहने में कोई तुक नहीं। मुझे ये लोग क़तई पसन्द नहीं हैं।"

इस पर प्योत्र हमेशा ही नाराज़ हो जाता।

"तुम भी तो उनसे अच्छे नहीं हो। दाएँ-बाएँ हर तरफ झगड़ा मोल लेते फिरते हो। बड़ी-बड़ी डींगें हाँकते हो।"

"मुझमें डींगें मारने लायक़ कुछ है तो !"

अपने घुँघराले बालों को ऊपर उछालते और कन्धों को पीछे की ओर झटकाते हुए वह अपना सीना फुलाकर और आँखें नचाकर अपने भाइयों और भाभी की ओर उद्दण्ड-दृष्टि से देखता। नतालिया उससे अलग रहती और उससे उदासीन व्यवहार करती। ऐसा लगता था कि वह उसकी किसी बात से भय खाती हो।

खाने के बाद जब उसका पति और अलेक्सी फिर काम पर चले जाते, तब वह निकिता के छोटे से साधुओं के-से कमरे में आराम कुर्सी पर खिड़की के पास सिलाई लेकर बैठ जाती। कुबड़े ने उसके लिए यह कुर्सी बर्च की लकड़ी पर चतुराई से खुदाई करके ख़ुद बनाई थी। दफ्तर के काम से वह मेज़ के सहारे सुबह से रात तक बैठा हिसाब-किताब लिखता रहता। लेकिन जब नतालिया आती, तो वह कुछ देर के लिये अपना काम छोड़कर उससे राजकुमारों के बारे में बातें करता रहता—वे कैसे रहते थे और गर्म कमरों में कैसे-कैसे फूल उगाए जाते थे। उसकी ऊँची, लड़कियों जैसी आवाज़ कुछ खिंची हुई, लेकिन स्नेहपूर्ण थी और स्त्री के मुख की ओर देखने में संकोचशील उसकी नीली आँखें खिड़की के बाहर घूरती रहतीं। सिलाई पर झुकी हुई नतालिया एक विचारपूर्ण ख़ामोशी के भाव से बैठी रहती, जैसे कोई एकान्त में बैठा हो। इस तरह वह एक या कभी-कभी दो घण्टे बैठे रहते और बीच में शायद ही कभी एक दूसरे को देखते। सिर्फ़ कभी-कभी ही सहमे भाव से निकिता अपनी नीली आँखों की स्नेहमयी ऊष्मा बरबस ही अपनी भाभी की ओर फेर देता। और उसके बड़े कुत्ते-जैसे कान देखते-देखते लाल पड़ जाते। कभी-कभी उसकी नज़र उठने पर नतालिया भी उसकी ओर देखकर स्नेह से मुसकरा देती। यह एक विचित्र मुसकान होती। कभी-कभी निकिता को लगता, मानों इसके पीछे उसके हृदय के भाव की एक धुँधली-स्वीकृति छिपी है और कभी उसे लगता, जैसे उसमें एक आघात की भावना व्यक्त हो रही है और साथ ही उसको आघात पहुँचाने की इच्छा भी, और वह एक अपराधी की तरह अपनी दृष्टि नीची कर लेता।

खिड़की के बाहर मेह की बूँदें रिम-झिम बरस रही थीं और गर्मियों में धुँधले

पड़ गये दीवारों के रंग को धो रही थीं। उन्होंने सुना कि अलेक्सी कहीं चिल्ला रहा है। एक रीछ का बच्चा जिसे हाल में ही ज़ंजीर डालकर आँगन के कोने में बाँध दिया गया था, ज़ोर से गरजा। कारख़ाने से, जहाँ औरतें पीट-पीटकर फ्लैक्स के रेशे अलग कर रही थीं, एक मन्द फट-फट आवाज़ उठी। अलेक्सी सर से पाँव तक भीगा और कीचड़ से लथपथ अन्दर आया। उसने अपना टोप सर पर पीछे की ओर खिसका रखा था, जिससे इस समय भी बसन्त के दिनों की याद ताज़ी हो जाती थी। हँसते-हँसते उसने बताया कि तिखोन व्यालोव ने अपनी एक उँगली उड़ा दी।

"वह बहाना तो करता है कि यह अचानक हो गया। लेकिन बात बिलकुल साफ़ है। वह पल्टन से डरता है और मैं? मैं तो यहाँ से जान छुड़ाने के लिये गोली की तरह जा सकता हूँ।"

वह रीछ के बच्चे की तरह ग़ुर्राया और बड़बड़ाया—

"हम तो यहाँ इस कुँए में बन्द हो गये, लोगों की बस्ती से मीलों दूर।"

फिर उसने आदेश भरे अन्दाज़ में अपना हाथ आगे बढ़ाया—

"मुझे कुछ पैसे दो। मैं शहर जा रहा हूँ।"

"किसलिए?"

"तुम्हें इससे मतलब?"

जाते-जाते उसने गुनगुनाना शुरू किया—

देखी तुमने झुरमुट में से एक सलोनी आती
गरम समोसे साँवरिया को अपने हाथ खिलाती

"हाय! यह किसी रोज़ अपने को मुसीबत में डाल लेगा।" नतालिया ने कहा। "मेरी सखियों ने इसे अक्सर ओलगा ओर्लोवा के साथ देखा है। वह अभी केवल चौदह साल की बच्ची है। उसकी माँ मर चुकी है और उसका बाप पियक्कड़ है।"

उसकी बात से निकिता घबड़ा गया। उसके शब्दों में उसे आवश्यकता से अधिक मलिन उदासी, चिन्ता और यहाँ तक कि ईर्षा का भी एक संकेत सुनाई दिया।

वह चुपचाप खिड़की से बाहर देखता रहा। बाहर की गीली हवा में देवदार

की शाखें झूमती रहीं और पारे-सी मेंह की बूँदों को अपनी हरी नुकीली पत्तियों की नोकों पर से फटकार कर नीचे गिराती रहीं। उसने ही देवदार के ये वृक्ष लगाये थे। घर के चारों ओर खड़े हुए सभी वृक्ष उसी के लगाए हुए थे।

प्योत्र उदास और थकी मुद्रा में अन्दर आया।

"चाय का समय हो गया, नतालिया!"

"अभी जल्दी है।"

"मैं कहता हूँ, समय हो गया।" वह चिल्लाया। पत्नी जब कमरे से बाहर चली गई, तो वह उसकी जगह पर बैठ गया। वह भी बड़बड़ाने लगा।

"पिता ने सारे कारोबार का बोझ मेरे कन्धों पर डाल दिया है। मैं चकरघिन्नी की तरह घूमता रहता हूँ और होश नहीं कहाँ-कहाँ चक्कर काटता हूँ। अगर ठीक से काम न चलाऊँ तो वह मुझे ही इसके लिए दोषी ठहराएँगे।"

निकिता ने सावधानी से दबी ज़बान में अलेक्सी और ओलोंवा के बारे में उससे ज़िक्र किया। लेकिन प्योत्र ने हाथ भर हिला दिया, जिससे स्पष्ट था कि वह इस सम्बन्ध में कुछ सुनने को तैयार न था।

"मेरे पास लड़कियों के बारे में सोचने को वक्त नहीं है। रात के सिवा और किसी वक्त मैं अपनी पत्नी तक से तो नहीं मिल पाता। तब मुझ पर नींद सवार रहती है, दिन में तो मैं चमगादड़ की तरह अन्धा रहता हूँ। पर तुम्हारे सिर में तो बेवकूफी भरी है।"

अपने कान की लोर मलते हुए वह फिर अधिक सावधानी से बोलने लगा—

"यह कारखाने का काम हम जैसे लोगों के लायक नहीं है। हमें तो कहीं स्टेपी के मैदान में चले जाना चाहिए और वहाँ ज़मीन खरीदकर उसे जोतना-बोना चाहिए। वहाँ शोर भी कम होगा, और फायदा अधिक होगा।"

इलिया अर्तामोनोव जब अपनी यात्रा से लौटा, तो वह अत्यन्त प्रसन्न दिखाई देता था और लगता था जैसे कई साल छोटा हो गया है।

उसने अपनी दाढ़ी छँटवा दी थी। उसके कन्धे पहले से अधिक चौड़े और उसकी आँखें अधिक चमकीली दिखाई देती थीं। वह एक नये पानी चढ़ाये हल की तरह लगता था। सोफ़ा पर सहज ढंग से बैठते हुए उसने कहा—

"हमारे कारोबार को बढ़ती हुई फ़ौज की तरह आगे बढ़ना चाहिए। तुम्हारे

लिये और तुम्हारे बेटों और नाती-पोतों के लिए तीन सौ साल तक के लिए काम ही काम रहेगा। हम अर्तामोनोव परिवार के लोग देश के व्यापार में एक नई ज़िन्दगी ला देंगे !"

उसने जिज्ञासु दृष्टि से अपनी पुत्रवधू की ओर देखा और चिल्लाया—

"गोल हो रही हो, नतालिया ? अगर लड़का हुआ, तो मैं तुम्हें एक सुन्दर भेंट दूँगा।"

रात को सोने की तैयारी करते समय नतालिया ने अपने पति से कहा—

"पिता जब मौज में होते हैं, तो बड़े स्नेह-शील हो जाते हैं।"

उसके पति ने कनखियों से देखते हुए उदासीन भाव से उत्तर दिया—

"क्यों नहीं ! वह स्नेहशील तो हैं ही—इन्होंने तुम्हें भेंट देने का वायदा जो किया है।"

लेकिन दो-तीन सप्ताह के बाद अर्तामोनोव की प्रसन्नता काफूर हो गई और ऐसा लगने लगा जैसे वह किसी गम्भीर तन्मय करनेवाले विचार में डूबा रहता हो। नतालिया ने निकिता से पूछा—

"पिता किस बात पर नाराज़ हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम। उन्हें समझना बहुत मुश्किल है।"

उसी दिन शाम को चाय पीते-पीते अलेक्सी ने अचानक बहुत ऊँचे और बहुत साफ़ शब्दों में कहा—

"बाबा ! मुझे फ़ौज में भर्ती होने दो।"

"क—क्या बात है ?" इलिया चिल्लाया।

"मैं यहाँ नहीं रहूँगा।"

"निकल जाओ !" अर्तामोनोव ने सबको बाहर जाने का आदेश दिया, किन्तु जब अलेक्सी सबके साथ बाहर दरवाज़े तक पहुँचा तो उसने पुकारा।

"अल्योशा, ठहरो।"

बड़ी देर तक वह उसकी ओर खड़ा घूरता रहा। उसके हाथ पीछे थे और भौंहें सिकुड़ रही थीं। तब उसने कहा—

"और मैंने तुमसे इतनी आशाएँ बाँधी थीं !"

"मैं यहाँ नहीं रह सकता।"

"बको मत ! तुम्हें यहाँ रहना है। तुम्हारी माँ ने तुमको मुझे दिया था, मेरा समझकर—जाओ।"

अलेक्सी ने हिचकिचाते हुए एक क़दम उठाया, लेकिन उसके पिता ने उसे फिर रोक दिया और उसके कन्धों पर अपना बोझिल हाथ रखते हुए कहा—

"मैं तुम्हारे साथ बहुत नम्र हूँ। मेरे बाप होते तो घूँसों से ख़बर लेते। जाओ"

एक बार फिर उसने लड़के को रुकने के लिए कहकर कठोरतापूर्वक समझाया—

"तुम्हें बड़े आदमी बनना है—समझे ? आइन्दा मैं कभी यह सब नहीं सुनना चाहता।"

वह बड़ी देर तक खिड़की के पास अपनी दाढ़ी खींचता हुआ खड़ा रहा और गीले-भूरे बरफ़ के फाहों को ज़मीन पर गिरते हुए देखता रहा। जब बाहर रात तहखाने जैसी अँधेरी हो गई, तो वह घर से निकलकर शहर की ओर चल पड़ा। बैमाकोवा का फाटक पहले से ही बन्द हो चुका था। उसने खिड़की पर दस्तक दी और उल्याना ने स्वयं उसे लेने आई। नाराज़ होकर उसने पूछा—

"इतनी रात चढ़े तुम यहाँ क्यों आए ?"

बिना जवाब दिये या कोट उतारे ही वह उसके पास से निकलता हुआ कमरों में घुसता चला गया। अपना टोप एक कोने में फेंककर वह एक कुर्सी पर धम से बैठ गया और मेज़ पर अपनी कोहनियाँ टिकाकर दाढ़ी में उँगलियाँ पिरोते हुए उसने उल्याना को अलेक्सी के बारे में बताया—

"वह चोरी से पैदा हुआ था—मेरी बहन मालिक के साथ खिलवाड़ करती फिरी। अब इसको भी देख लो। ख़ूब अपना काम करता है।"

उल्याना ने यह देखने के लिए कि खिड़कियाँ बन्द हैं या नहीं, सारी चटखनियाँ हिला-डुलाकर देखीं और फिर मोमबत्ती बुझा दी। कोने में धर्म-चिह्नों के नीचे चाँदी के दीवट पर रक्खे एक नीले दीये से मध्यम प्रकाश फैल रहा था।

"उसकी शादी कर दो। तब वह खूँटे से बँध जायगा।" वह बोली।

"हाँ, यह तो करना ही होगा। लेकिन सिर्फ़ इतना ही काफ़ी नहीं। प्योत्र में तो कोई उत्साह ही नहीं है। यह बहुत बुरी बात है। जिस आदमी में उत्साह न हो, वह न बन सकता है, न बिगड़ सकता है। वह इस ढंग से काम करता

है, जैसे किसी मालिक का काम कर रहा हो, अपना नहीं। मानों वह अभी भी ग़ुलाम हो। उसे अपनी आज़ादी का अहसास नहीं --समझीं ? और निकिता— उसके बारे में तो कहना ही क्या ? वह अपाहिज है। पेड़ों और फूलों के अलावा वह और कोई बात सोच ही नहीं सकता। मेरा ख़्याल था कि अलेक्सी काम में दिल लगायेगा।"

वैमाकोवा ने उसको दिलासा देने की कोशिश की—

"तुम इतनी जल्दी परेशान क्यों होते हो? धीरज रक्खो। जब पहिया तेज़ी से घूमने लगेगा तो सब उसमें लग जाएँगे।"

आधी रात तक कमरे की गरम ख़ामोशी में, जहाँ कोने में रखे धर्म-चिह्न के नीचे से दीये की सहमी टिमटिमाती नीली लौ से धुँधले बादल उठ रहे थे, वे दोनों बैठे बातें करते रहे। कारोबार और धन्धे के प्रति अपने लड़कों की विरक्ति के बारे में शिकायतें करते-करते अर्तामोनोव ने नगरवासियों की नुक्ता-चीनी शुरू कर दी—

"बहुत छोटे दिल के जीव हैं।"

"ये लोग तुमसे इसलिए नफ़रत करते है कि भाग्य तुम्हारा साथ देता है। पर हम औरतें तो इसे अच्छा मानती हैं। लेकिन एक पुरुष को दूसरे की ख़ुश-क़िस्मती काँटे की तरह चुभती है।"

उल्याना वैमाकोवा धीरज और दिलासा देना जानती थी। जब वह बोली कि "मुझे बस एक ही बात का डर है—कहीं पेट न रह जाय।" तो अर्तामोनोव ने केवल 'हूँ' कर दी।

"मास्को में व्यापार ज़ोरों पर है।" उठकर उसे आलिंगन करते हुए वह बोला। "काश ! तुम एक मर्द होतीं....।"

"जाओ प्रिय, नमस्कार !"

उसने उसको चूमा और चला गया।

....एक दिन येरदान्स्काया अलेक्सी को शहर से स्लेज गाड़ी में डालकर घर लाया। अलेक्सी पर इतनी मार पड़ी थी कि वह मूर्छित हो गया था और उसके कपड़े फटकर तार-तार हो गए थे। येरदान्स्काया और निकिता उसके शरीर पर हल्दी और वोद्का (रूसी शराब) मलते रहे, लेकिन वह बड़ी देर तक,

बस कराहता रहा और बोला नहीं। कमरे में अर्तामोनोव अपनी कमीज़ की बाँहें चढ़ाता और फिर उतारता। दाँत कटकटाते हुए वह इधर से उधर एक हिंस्र जन्तु की तरह टहलता रहा। जब अलेक्सी को होश आया तो हवा में अपना घूँसा तानते हुए वह गरजा—

"वह कौन था, बोलो!"

अपनी एक सूजी हुई आँख खोल हाँफ-हाँफकर साँस खींचते और खून थूकते हुए दर्द और क्रोध से स्याह पड़कर अलेक्सी ने केवल मन्द करुण स्वर में कहा—

"मुझे मार डालो।"

डर के मारे नतालिया ने ज़ोर-ज़ोर से सुबकना शुरू कर दिया। अर्तामोनोव ने क्रोध से पाँव पटककर उसको डाँटा—

"चुप रहो, निकल जाओ यहाँ से।"

अलेक्सी ने अपने हाथों से सिर थाम लिया, मानो खींचकर उसे अलग कर देगा और कराहा।

फिर अपनी बाँहें फेंककर वह एक करवट लुढ़ककर निःस्पन्द पड़ गया। उसका ख़ून के दाग़ से भरा मुँह खुला हुआ था और उसकी साँस मुश्किल से घरघराहट के साथ चल रही थी। बिस्तर के पास रखी मेज़ पर एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी और उसके आहत शरीर पर छायाएँ रेंग रही थीं, जिससे लगता था कि उसका शरीर सूज गया है और स्याह पड़ गया है। पैताने की ओर उसके भाई चुपचाप मलिन मुद्रा में खड़े थे और बाप, जैसे किसी अदृश्य न्यायकर्ता से माँग करता हुआ कमरे में इधर-से-उधर चल रहा था—

"क्या इसकी हालत सुधर न पाएगी?"

लेकिन आठ दिनों के बाद अलेक्सी फिर उठ खड़ा हुआ, यद्यपि वह अब भी तर खाँसी खाँसता और उसके खखार से ख़ून आता था। वह स्नान-घर में बैठकर बफ़ारे लेता और काली मिर्च मिलाकर वोद्का पीता। उसकी आँखों में एक आक्रोश-भरी उद्विग्न आग जलती रहती। इससे उसकी आँखें और सुन्दर लगने लगीं। उसने यह नहीं बताया कि उसे किसने पीटा था, लेकिन येरदान्स्काया ने पता लगाकर ख़बर दी कि स्टीपान बार्स्की, दो फायरमैन और बोरोपोनोव के मोर्दोवी चौकीदार ने उसको मारा है। अर्तामोनोव ने जब अलेक्सी

से पूछा कि क्या यह सच है, तो उसने उत्तर दिया—

"मैं नहीं जानता।"

"तुम झूठ बोलते हो।"

"मैंने उन्हें नहीं देखा। उन्होंने मेरे सिर पर पीछे से कुछ फेंका—शायद कोट हो।"

"तुम कुछ छिपा रहे हो।" अर्तामोनोव ने कहा। अलेक्सी ने उसकी ओर सीधे घूरकर देखा और उसकी आँखों में एक कुटिल ज्योति की रेखा कौंध गई। फिर उसने कहा—

"मैं अच्छा हो जाऊँगा।"

"तुमको ख़ूब खाना-पीना चाहिए।" अर्तामोनोव ने सलाह दी और फिर आहिस्ता-आहिस्ता बड़बड़ाया—

"इसके लिए उन सबको गर्म सलाख़ों से दाग़ना चाहिए। उनके पंजे भून देने चाहिएँ।"

अब वह अलेक्सी की ओर अधिक ध्यान देने लगा और उसका व्यवहार स्नेह-सिक्त हो गया। काम के प्रति वह अपने उत्साह का और अधिक प्रदर्शन करने लगा, ताकि उसके उद्देश्य सबको खुले नज़र आयें, चूँकि वह अपने लड़कों के अन्दर काम के प्रति अपना जैसा उत्साह जगा देना चाहता था।

"हर काम में हाथ डालने की आदत डालो। किसी एक काम में ही मत फँसा करो।" वह उन्हें उकसाता और स्वयं बहुत से ऐसे काम करता रहता जो दूसरों पर छोड़े जा सकते थे। वह जिस काम में हाथ लगाता, उसमें ऐसी फुर्ती दिखाता और ऐसी पशु-वृत्ति से काम लेता कि उसे पता लग जाता कि किस जगह बाधा सबसे अधिक है, और किस तरह आसानी से उस पर क़ाबू पाया जा सकता है।

उसकी पुत्रवधू की गर्भावस्था के दिन बहुत अधिक बढ़ते गये। अन्त में जब दो दिन की यातना के बाद नतालिया ने एक लड़की को जन्म दिया तो वह खेद से विक्षुब्ध होकर बोला—

"इसका क्या होगा?"

"भगवान् को उसकी दया के लिए धन्यवाद दो।" उल्याना ने कठोर स्वर

में उससे कहा—

"जानते हो आज किसका दिन है, फ्लैक्स की ऐलेना का।"

"नहीं!"

उसने गिरजाघर का पंचांग उठाकर तारीख़ निकाली और एक बालक की तरह प्रसन्न होकर कहा—

"मुझे नतालिया के पास ले चलो!"

नतालिया के वक्ष पर लाल जड़ी इयररिंग का जोड़ा और पाँच सोने की मोहरें रखते हुए वह चिल्लाया—

"ख़ुश रहो! शाबाश, यद्यपि लड़का नहीं है।"

और फिर प्योत्र की ओर मुड़कर उसने पूछा—

"कहो, ख़ुश हो? जब तुम पैदा हुए थे, तब मुझे तो ख़ुशी हुई थी!"

प्योत्र आशंकित दृष्टि से अपनी पत्नी के रक्तहीन, यन्त्रणा-ग्रस्त, कठिनाई से पहचान में आनेवाले चेहरे की ओर देख रहा था। उसकी थकी आँखें स्याह गढ़ों में धँस गई थीं, जहाँ से वह लोगों और चीज़ों की ओर इस तरह देखती थीं, जैसे किसी पुरानी भूली हुई याद को ताज़ा कर रही हों। उसने आहिस्ता से अपने काटे हुए होठों पर जीभ फेरी।

"यह कुछ बोलती क्यों नहीं है?" प्योत्र ने अपनी सास से पूछा।

"बिचारी काफ़ी चीख़-चिल्ला चुकी है।"

उल्याना ने उत्तर दिया और उसे कमरे से बाहर ढकेल दिया।

दो दिन और दो रात वह लगातार अपनी पत्नी की चीत्कारें सुनता रहा था। पहले-पहल तो उसे उस पर दया आई, और मन में यह डर समा गया कि वह अब नहीं बचेगी। बाद को उसके चीत्कारों और घर में लोगों की चहल-पहल से पैदा शोर-ग़ुल को सुनकर वह इतना संज्ञा-हीन हो गया कि थकान के मारे उसमें डरने या दया करने की क्षमता ही न रही। उसने कोशिश की कि वह वहाँ से जितनी दूर हो सके, किसी ऐसी जगह चला जाय, जहाँ उसे ये चीत्कारें न सुनाई दें। लेकिन इन चीत्कारों से कहीं भी छुटकारा न था। क्योंकि वह उसके मस्तिष्क में गूँज रही थीं; और वहाँ विचित्र-विचित्र विचारों की लड़ियाँ पिरो रही थीं। और फिर, वह जहाँ-कहीं भी जाता था, वहाँ निकिता कुदाल या

फावड़ा उठाये, लकड़ी काटते, छीलते, खोदते, चींटी की निःशब्द चाल से इधर-उधर दौड़ते-भागते उसके सामने पड़ ही जाता। लगता था, जैसे यह कूबड़ा गोलाई में दौड़ रहा हो। शायद इसीलिए वह हर जगह नज़र आ जाता है।

"लगता है कि वह इस मुसीबत से छुटकारा न पा सकेगी।" प्योत्र ने अपने भाई से कहा। बालू में अपना फावड़ा गड़ाते हुए कूबड़े ने पूछा—

"दाई क्या कहती है ?"

"वह तो कहती है कि चिन्ता न करो, सब ठीक हो जायगा। तुम इस तरह काँप क्यों रहे हो ?"

"मेरे दाँत में दर्द है।"

बच्ची के पैदा होने के बाद शाम को निकिता और तिखोंन के साथ बारजे में बैठे प्योत्र ने एक विचारपूर्ण मुस्कान भरकर कहा—

"उन्होंने बच्ची को मेरी गोद में रख दिया और मैं इतना ख़ुश था कि मुझे उसका वज़न ही न महसूस हुआ। मैंने उसे छत तक ऊँचा उछाला। कितने ताज्जुब की बात है कि एक ऐसी नन्हीं-सी चीज़ और उसके कारण इतनी कठोर पीड़ा !"

तिखोन व्यालोव ने सोचने की मुद्रा में गाल मलते हुए अपने स्वाभाविक शान्त स्वर में कहा—

"मनुष्यों की सारी पीड़ाएँ छोटी-छोटी चीज़ों से ही पैदा होती हैं।"

"इसका मतलब ?" निकिता ने कठोर स्वर में पूछा। जमादार ने जँभाई लेते हुए उदासीन भाव से उत्तर दिया—

"ऐसा ही होता है।"

खाने के लिए वे अन्दर बुलाये गये। बच्ची ख़ूब मोटी-ताज़ी और स्वस्थ थी। लेकिन पाँच महीने बाद वह कोयले की ज़हरीली गैस से मर गई। माँ पर इस ज़हरीली गैस का असर हुआ था, पर उसकी जान किसी तरह बच गयी।

"इसका क्या चारा ?" अर्तामोनोव ने क़ब्रिस्तान में प्योत्र से कहा। उसके और बच्चे होंगे और अब यहाँ हमारी भी अपनी एक क़ब्र हो गई। यह एक बहुत गहरा लंगर है। जब कोई आदमी कहीं अपने चारों ओर और अपने नीचे ज़मीन पर और ज़मीन के नीचे अपनी जगह बना लेता है, तो उस समय समझो वह

मज़बूत जड़ें पकड़ लेता है !"

प्योत्र ने सर हिलाकर हामी भरी ! वह अपनी पत्नी की ओर ध्यान से देख रहा था। नतालिया सहमी और उखड़ी-उखड़ी-सी झुकी खड़ी थी। उसकी आँखें अपने पाँवों के समीप उस छोटी-सी उभरी धरती पर गड़ी हुई थीं, जिसे निकिता बड़ी सावधानी से अपने फावड़े से सम कर रहा था। एक विक्षिप्त शीघ्रता से अपने गालों पर के आँसुओं को पोंछते हुए, मानों उसकी लाल सूजी हुई नाक से छू जाने पर उँगलियाँ जल जायँगी, उसने अस्फुट स्वर में कहा—

"हे भगवान् ! हे भगवान्....!"

अलेक्सी क़ब्रों पर के लेखों को पढ़ता हुआ क्रॉस चिह्नों के बीच घूमता रहा। वह पहले से दुबला हो गया था और कुछ अधिक उमर का भी नज़र आने लगा था। उसके गालों और ठुड्डी पर मसें भींगने लगी थीं, जिससे उसकी शहरियों जैसी आकृति धूप और धुँएँ से झुलसी हुई-सी दिखाई देने लगी थी। काली भौंहों के नीचे उसकी गहरी गड़ी हुई उद्दण्ड आँखें सारी दुनिया को नफ़रत की निगाह से देखती थीं। वह नीरस, दम्भपूर्ण बड़प्पन-भरे अन्दाज़ में बात करता और ऐसा लगता, जैसे जान-बूझकर अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग करता हो। और जब लोगों को उसकी बात समझ में न आती तो वह चीख़-चीख़कर उनकी लानत मलामत करता।

"तुमने मेरी बात सुनी, ठीक।" अपने भाइयों के प्रति उसके व्यवहार में एक अप्रिय विद्रूप की भावना रहती थी। और वह नतालिया से तो इस तरह डपटकर बात करता, जैसे वह नौकरानी हो। निकिता ने जब उससे तिरस्कार भरे स्वर में कहा—"तुम्हें नताशा के प्रति इतना नीच नहीं बन जाना चाहिए।" तो उसने उत्तर दिया—

"मैं एक बीमार आदमी हूँ।"

"वह तो काफ़ी सौम्य स्वभाव की है।"

"अच्छा, अच्छा ! रक्खे अपनी सौम्यता अपने पास।"

अलेक्सी अक्सर बड़े गर्व से अपने ख़राब स्वास्थ्य की बात करता, मानों यह ऐसा गुण हो, जो उसे साधारण मनुष्यों से अलग कर देता हो।

क़ब्रिस्तान से अपने मामा के साथ घर की तरफ़ आते हुए उसने कहा—

"हमारा अपना क़ब्रिस्तान अलग होना चाहिए। मरने के बाद भी इन नत्थू-बुद्धू लोगों के साथ रहना अपमान की बात है।"

अर्तामोनोव ने एक संक्षिप्त हँसी हँसकर उत्तर दिया—

"बनाएँगे! हर चीज़ अपनी होगी। गिरजाघर, क़ब्रिस्तान, स्कूल और अस्पताल। कुछ दिन की और बात है।"

वतरखा के पुल को पार करते समय वे एक भिखारी जैसे आदमी के पास से निकले, जो फटा पुराना-सा मैले रंग का चोग़ा पहने लोहे की छड़ के सहारे झुका खड़ा था। देखने में वह एक मामूली अफ़सर लगता था, जो शराब से तबाह हो चुका हो। उसके मोटे-मोटे गालों पर कड़े सफेद बालों के गुच्छे भरे हुए थे। उसके बालदार हिलते हुए ओठों के नीचे से काले दाँतों की उखड़ी-पुखड़ी पाँत नज़र आती थी और उसकी नम आँखों में एक मटमैली-सी रोशनी चमकती थी। अर्तामोनोव ने दूसरी ओर मुँह फेरकर थूक दिया। लेकिन यह देखकर कि अलेक्सी ने इस आदमी रूपी कूड़ा-करकट को असामान्य आदर के साथ सिर हिलाकर अभिवादन किया है, उसने पूछा—

"क्या मतलब?"

"यह आलोफ़ है, घड़ीसाज़।"

"यह तो मैं भी देख सकता हूँ कि यह आलोफ़ है!"

"इस आदमी के पास दिमाग़ है।" अलेक्सी ने अपनी बात पर दृढ़ रहते हुए कहा—"उसे अनुचित रूप से सताया गया है।"

अर्तामोनोव ने अपने भांजे पर एक तीखी नज़र फेंकी, परन्तु कुछ कहा नहीं।

फिर ग्रीष्म का मौसम आया, गरम और ख़ुश्क। ओका नदी के पार जंगल में अक्सर आग लग जाती। दिन में ज़मीन को कड़ुवे धुँए के दूधिया रंग के बादल घेरे रहते। रात को लाल बदसूरत रंग का गञ्जा-सा चाँद, ताँबे की कीलों की टोपी जैसे निष्प्रभ तारों के बीच लटका रहता और धुँधले आकाश को प्रतिबिम्बित करनेवाली नदी पृथ्वी के नीचे से उठनेवाली घुमस से एक शीर्ण चिप-चिपे जल की धारा बन जाती।

एक दिन घुटन पैदा करनेवाली सन्ध्या के समय खाने के बाद अर्तामोनोव परिवार के लोग चाय पीने के लिए बगीचे में बैठ गये। मेज़ के चारों ओर घने

छायादार वृक्षों की पाँत थी। ये वृक्ष उस भूमि में अच्छी तरह उगे थे, पर शाम के धुँधलके में उनकी पत्तियों से लदी चोटियाँ अपनी छाया न डाल पा रही थीं। झींगुर झंकार रहे थे और गोबरैले कीड़े भुन-भुन कर रहे थे। सेमावार उफन रहा था। नतालिया चुपचाप चाय ढाल रही थी। उसने अपने ब्लाउज़ के ऊपरी बटन खोल रखे थे और खुली जगह में से उसकी मक्खन-जैसी मुलायम गर्म त्वचा नज़र आ रही थी। कुबड़ा सिर झुकाए बैठा चिड़ियों का पिंजड़ा बनाने के लिए लकड़ी की सलाखें छील रहा था। प्योत्र ने अपने कान की लौर मलते हुए धीमे स्वर में कहा—

"ख़ामख़ा लोगों को नाराज़ करने से कोई लाभ नहीं, किन्तु हमारे पिता हैं कि हमेशा वही किया करते हैं।"

अलेक्सी सूखी खाँसी खाँसता हुआ बैठा रहा। वह गरदन मोड़कर बस्ती की ओर देख रहा था, मानों किसी की प्रतीक्षा में हो।

उदासीन स्वर से एक घण्टा ठनठनाया।

"ख़तरे का घण्टा? क्या कहीं आग लग गई?" अलेक्सी चिल्लाया और एक हाथ अपने सिर तक ऊँचा उठाते हुए उछलकर खड़ा हो गया।

"तुम्हारी क्या अक्ल मारी गई है? अरे, यह तो गिरजाघर का घण्टा है, जो समय बता रहा है।

अलेक्सी मेज़ छोड़कर चला गया। कुछ देर तक ख़ामोशी छाई रही। फिर निकिता ने आहिस्ता से कहा—

"उसके मन में आग का ही ख़याल रहता है।"

"अब तो यह हर वक्त जला-भुना रहता है।" नतालिया ने साहस बटोरकर कहा। "सोचो तो, यह कितना ख़ुशमिजाज़ था!" बड़प्पन के अनुकूल ही प्योत्र ने अपनी पत्नी और भाई की कठोर शब्दों में भर्त्सना की—

"तुम दोनों उसकी ओर घूर-घूरकर देखा करते हो। वह किसी की दया बर्दाश्त नहीं कर सकता। नतालिया, चलो सोने चलें।"

वे उठकर चले गये। कुबड़ा अपनी आँखों से उनका पीछा करता रहा। फिर वह भी उठ खड़ा हुआ और ग्रीष्म-कुटी में चला गया, जहाँ उसने अपने लिए पुआल का एक बिस्तर बना रक्खा था। वह बाहर दरवाज़े पर बैठ गया।

यह ग्रीष्म कुटी घास से ढँके हुए एक छोटे टीले पर बनी थी। द्वार पर खड़े होकर बाड़े के ऊपर से वह बस्ती के मकानों को देख सकता था, जो इस समय काली भेड़ों के ग़ल्ले की तरह नज़र आता था, जिसकी देख-भाल मानों गिरजा की मीनारें और आग से रक्षा करनेवालों की ऊँची केबिन-सरीखे गड़रिये कर रहे हों। वृक्षों के नीचे से तश्तरियों की खनखनाहट की आवाज़ आ रही थी। वहाँ नौकर-चाकर मेज़ पर से चाय का सामान हटा रहे थे। बाड़े के पास से जुलाहों का एक गिरोह निकला। एक के हाथ में मछली फँसानेवाला जाल और दूसरे के हाथ में एक बाल्टी थी। तीसरा लोहा और चकमक मारकर चिन-गारियाँ जगा रहा था और अपना पाइप सुलगाने की ख़ातिर इन चिन-गारियों को फलीते में लगाने की कोशिश में था। एक कुत्ता भोंका और रात के सन्नाटे में तिखोन व्यालोव की आवाज़ गूँज गई—

"कौन जा रहा है ?" गरमी से झुलसी और नगाड़े के पूड़ों की तरह सख्त पड़ गई पृथ्वी पर ख़ामोशी छा गई। यहाँ तक कि बालू पर चलनेवाले जुलाहों की मन्द पदचाप भी इस ख़ामोशी में दर्द-भरी कराह-सी स्पष्ट हो उठी। निकिता को ऐसी रातों की निःस्तब्धता प्रिय लगती थी। ख़ामोशी जितनी ही गहरी होती, उसकी कल्पना की तमाम शक्तियाँ उतने ही अधिक आवेग से नतालिया के चारों ओर केन्द्रित हो जातीं और उतनी ही सफ़ाई से वह उसकी किञ्चित भयभीत और विस्मित रहनेवाली प्यारी-सी आँखों का चित्र अपने आगे साकार कर लेता। और ऐसे में तरह-तरह की सुखद सम्भावनाओं की कल्पना कर लेना कितना सरल होता। शायद कभी उसे एक विशाल ख़ज़ाना मिल जायगा, जिसे वह प्योत्र को दे देगा और उसके बदले में वह उसे नतालिया को सौंप देगा या शायद डाकू हमला करेंगे और वह ऐसे साहसी कारनामे कर दिखाएगा कि उसके बाप और भाई ख़ुद अपनी ओर से उसे पुरस्कारस्वरूप नतालिया को सौंप देंगे या शायद कोई बीमारी पकड़ लेगी और उन दोनों को—उसे और नतालिया को छोड़कर बाक़ी सबको उठा ले जायगी और तब वह नतालिया को विश्वास दिला सकेगा कि उसका सुख निकिता में सन्निहित है।

आधी रात गुज़र चुकी थी, जब उसने आकाश के स्याह-भूरे धुँधलके में से शहर की घनी बस्ती के ऊपर से और बगीचे की निःस्पन्द छायाओं के बीच

एक नया बादल आहिस्ता-आहिस्ता उठते हुए देखा। एक क्षण बाद ही इस बादल में निचले सिरे से एक लाल आभा फैल गई और उसे लगा कि यह आग लगने का निशान है। घर की ओर भागते समय उसने अलेक्सी को गोदाम की छत पर एक सीढ़ी से चढ़ते हुए देखा।

"आग!" निकिता चिल्लाया। उसके भाई ने फिर भी चढ़ते-चढ़ते उत्तर दिया—

"मालूम है, तो क्या हुआ?"

"क्यों, तुम क्या इसकी प्रतीक्षा में थे?" कूबड़े ने आँगन के बीच रुककर अचानक पूछा।

"अगर मैं था तो इससे क्या? ऐसे सूखे मौसम में आगें लगा ही करती हैं।"

"जुलाहों को बुलाना चाहिए" लेकिन तिखोन उन्हें पहले ही बुला चुका था, और वे ज़ोरों से शोर मचाते हुए नदी की ओर भागे जा रहे थे।

"इस तरफ़ से ऊपर चढ़ो।" अलेक्सी ने कहा; जो इस समय छत की मुँडेर पर दोनों तरफ़ टाँगें डालकर बैठा था। कूबड़ा आदेश मानकर बड़बड़ाता हुआ ऊपर चढ़ गया—

"उम्मीद है कि नतालिया इससे डरेगी नहीं।"

"तुम तो नहीं डरे हो? प्योत्र मार-मारकर तुम्हारी पीठ पर एक और कूबड़ उठा देगा।"

"किसलिए?" निकिता ने आहिस्ते से पूछा और उसे उत्तर मिला—

"उसकी बीवी पर से अपनी नज़रें दूर रक्खो।"

बड़ी देर तक कूबड़ा कोई उत्तर न दे पाया। उसे लगा, जैसे वह छत से फिसलकर नीचे गिर रहा हो और अगले किसी क्षण वह जाकर ज़मीन से टकरा जायगा।

"तुम्हारा मतलब क्या है? कुछ कहने से पहले सोच लिया करो।" उसने बड़बड़ाते हुए कहा।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है। मैं कोई अन्धा तो नहीं हूँ....। ख़ैर, चिन्ता मत करो।" अलेक्सी ने प्रसन्नभाव से कहा। इस तरह वह बहुत दिनों से न बोला था। अपने हाथ से आँखों पर साया करके वह आग की भारी तेज़

लपटों को देखता रहा, जो निःस्तब्धता को चीकर उसमें एक रुँधा-सा गर्जन भर रही थीं। प्रसन्न मन से दिलचस्पी लेते हुए वह कहता गया—

"यह आग बास्की के घर में लगी है। उनके आँगन में तारकोल के बीसियों पीपे रक्खे हुए हैं। ये आग पड़ोसियों तक न पहुँचेगी—बग़ीचे उसको बीच में ही रोक लेंगे।"

"मैं भाग चलूँ।" निकिता आग से विद्युत अंधकार की ओर देखते हुए सोच रहा था। लाली में खड़े पेड़ ऐसे लगते थे, जैसे लोहे को ढालकर बनाये गये हैं। लाल ज़मीन पर आदमियों की खिलौनों-जैसी आकृतियाँ इधर से उधर दौड़ रही थीं। वह यहाँ से बैठा उन लम्बे-पतले कुलाबों को भी देख सकता था, जिन्हें लोग आग में धँसा रहे थे।

"आग ख़ूब जल रही है।" अलेक्सी ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा।

"मैं किसी पादरियों के मठ में चला जाऊँगा।" कूबड़े ने मन ही मन सोचा।

आँगन में से प्योत्र की उनींदी-सी चिड़चिड़ी आवाज़ उन्हें सुनाई दी और फिर तिखोन व्यालोव का अनमना-सा उत्तर भी सुनाई दिया। नतालिया खिड़की में खड़ी अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बना रही थी। लगता था, जैसे चौखटे में तस्वीर जड़ी हो।

जब आग बुझ गई और धुँआलों के काले ढेर के इर्द-गिर्द केवल सुनहली चिनगारियों की राख बनकर रह गई तब निकिता छत से नीचे उतरा और फाटक से बाहर जाने लगा। वहाँ अचानक अपने बाप से उसकी मुठभेड़ हो गई। अर्तामोनोव पानी से गीला और लथपथ हो रहा था और उसपर ऊपर से नीचे तक कालिख पुती हुई थी। टोपी लापता थी और उसका कोट चीथड़े-चीथड़े हो रहा था।

"कहाँ जा रहे हो?" अर्तामोनोव ने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर कहा, और निकिता को धकेलकर फिर आँगन में कर दिया। छत की सफ़ेद आकृति पर नज़र पड़ते ही वह और हिंस्रभाव से अलेक्सी पर चिल्लाया—

"तुम वहाँ ऊपर क्या कर रहे हो? नीचे उतरो। तुम्हें अपनी देखभाल ख़ुद करनी चाहिए। बेवकूफ़ कहीं के!"

निकिता बग़ीचे में चला गया और अपने पिता की खिड़की के नीचे पड़ी

बेंच पर बैठ गया। कुछ देर में उसने एक दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ सुनी, और अपने ऊपर कमरे में अर्तामोनोव की रुँधे हुए आक्रोश से भरी आवाज़ सुनाई दी —

"तुम क्या अपने को बरबाद करने पर तुले हो और मेरे मुँह पर कालिख पोतना चाहते हो? मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि....।"

अलेक्सी ने चीखकर कहा —

"तुमने ही तो मेरे दिमाग़ में यह विचार भरा था।"

"चुप रहो! तुम्हें ख़ुदा का शुक्र करना चाहिए कि वह बदमाश बोल नहीं सकता।"

निकिता जल्दी से, लेकिन बिना शोर किए चुपचाप बग़ीचे में होता हुआ ग्रीष्म-कुटी की ओर चल पड़ा।

दूसरे दिन चाय पीते समय बाप ने कहा—

"यह आग लगाई गई थी। उस शराबी घड़ीसाज़ ने लगाई थी। उन्होंने उसे ख़ूब पीटा। और लगता है कि वह अब बचेगा नहीं। लोग कहते हैं कि बार्स्की ने उसे तबाह किया था और इस्तियोपा के ख़िलाफ़ भी उसके मन में अदावत है। यह बड़ी काली करतूत है।"

अलेक्सी शान्त भाव से बैठा दूध पीता रहा। निकिता के हाथ काँप रहे थे। उसने उनको अपने घुटनों के बीच ज़ोर से पकड़कर दबा रक्खा था। बाप ने उसकी हरकत देखकर पूछा —

"तुम्हें क्या हो गया है?"

"मेरी तबियत अच्छी नहीं है।"

"तुम सबकी तबियत ख़राब है, सिर्फ़ अकेला मैं ही अच्छा हूँ।"

बिना समाप्त किए ही चाय की प्याली को ग़ुस्से से आगे सरकाकर वह उठकर चला गया।

अर्तामोनोव के कारोबार से सम्बन्ध रखनेवाले लोगों की संख्या तेज़ी से बढ़ती जा रही थी। मिल से दो फर्लांग दूर झाड़ियों से ढँकी पहाड़ी की बग़ल में सरो के वृक्षों की बिखरी पाँत के बीच मज़दूरों के लिए छोटे-छोटे जमीन से लगे हुए केबिन बनाए गये थे, जिनमें न बग़ीचे थे, न बाड़े ही। दूर से देखने पर वे शहद

की मक्खी को पालनेवाले दरबों की तरह नज़र आते थे। एक उथली खाई में, जहाँ कभी किसी ऐसी नदी का पाट था, जिसका नाम भी अब लोग भूल चुके थे, अर्तामोनोव ने ऐसे मज़दूरों के लिये जिनके परिवार न थे, एक बैरक बनवा दी। यह एक लम्बी इक-मंज़ली इमारत थी, जिसमें तीन धुँआरे बने हुए थे और अन्दर की गर्मी को बाहर जाने से रोकने के लिए छोटी-छोटी खिड़कियाँ लगी हुई थीं। खिड़कियों की शकल ऐसी थी कि यह जगह घोड़ों का अस्तबल दिखाई पड़ती थी। और मज़दूर इसे 'घोड़ों का भवन' कहकर पुकारते भी थे।

इलिया अर्तामोनोव अधिक शोर मचानेवाला और डींग मारनेवाला हो गया। लेकिन उसके अन्दर अक्खड़पन नहीं था। मज़दूरों के साथ वह सहज ही मिल-जुल जाता—उनकी शादियों में जाकर दावत खाता, उनके बच्चों का धर्म-पिता बन जाता और छुट्टी के दिन पुराने जुलाहों के पास बैठकर बातें करना उसे प्रिय लगता। उन्होंने उसे सुझाया कि वह किसानों को ऊसर ज़मीन पर और जंगल की आग से जले हुए स्थानों पर फ्लैक्स बोने की सलाह दे। इसके नतीजे बहुत अच्छे निकले। पुराने जुलाहे अपने कृपालु मालिक की तारीफ़ के गीत गाते। वे समझते कि वह उनके जैसा ही एक साधारण किसान है, जिस पर बस भाग्य मुसकरा दिया है। और वह नौजवानों को नेक सलाह देते।

"उससे सीखो कि कारोबार कैसे किया जाता है।"

इधर इलिया अर्तामोनोव ने अपने बेटों से कहा—

"किसानों और मेहनतकशों में शहर के लोगों से कहीं ज़्यादा समझ होती है। शहर के लोगों की हड्डियाँ कमज़ोर और उनके दिमाग़ उखड़े-पुखड़े होते हैं। शहर का रहनेवाला लालची होता है, लेकिन हिम्मत से काम लेते डरता है। उसकी कोशिशें उथली होती हैं, और वह जो कुछ भी करता है वह अधिक दिनों तक कभी नहीं टिक पाता। शहर के लोग अपना काम निकालने के लिए उचित-अनुचित का विचार नहीं करते, लेकिन एक किसान सत्य की हद से बाहर नहीं जाता और न वह एक काम से दूसरे काम पर फुदकता फिरता है और उसका सत्य एक बहुत सरल चीज़ है। मिसाल के लिए भगवान् और अनाज और ज़ार (बादशाह) बस। किसान अन्दर-बाहर सब ओर से सरल ही सरल होता है। उसको पकड़े रक्खो। प्योत्र, तुम मज़दूरों के साथ सख्ती से पेश आते

हो। तुम उनके साथ काम-काज के अलावा और कोई बात ही नहीं करते यह अच्छा नहीं है। ज़रूरत इस बात की भी है कि तुम उनके साथ छोटी-मोटी बातें करो और हँसी-मज़ाक भी करो—हँसी-ख़ुशी की बातें आसानी से समझ में आ जाती हैं।"

"मुझे हँसी-मज़ाक की बातें नहीं आतीं। प्योत्र ने यन्त्रवत् ढंग से अपने कान की लौर मलते हुए कहा—

"नहीं आतीं तो सीखो। एक मिनट की हँसी-ख़ुशी—एक घण्टा अधिक काम करने की स्फूर्ति देती है। लोगों के साथ अलेक्सी का बर्ताव भी ख़ास अच्छा नहीं है। यह उन पर ज़रूरत से ज़्यादा चिल्लाता है, और छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा मोल ले लेता है।"

"ये सारे के सारे लोग धोखेबाज़ और लफंगे हैं।" अलेक्सी ने उत्तेजना में भरकर कहा।

अर्तामोनोव ने कठोर स्वर में उसको फटकारा—

"तुम उनके बारे में जानते ही क्या हो?" लेकिन वह अपनी दाढ़ी के भीतर ही भीतर मुस्करा पड़ा और उसने अपनी मुसकान हाथ से ढँककर छिपायी, ताकि लोग देख न सकें। उसे इस बात की याद आ गई कि क़ब्रिस्तान के मामले में अलेक्सी ने शहर के लोगों के साथ कितने साहस और विवेक से काम लिया था। द्रियोमोव नगर के लोगों ने क़ब्रिस्तान में मिल के मज़दूरों को गाड़ने से इन्कार कर दिया था और अन्त में हारकर अर्तामोनोव को अलदर की झाड़ियों से भरे एक बड़े ज़मीन के टुकड़े को पोमियालोव से ख़रीदकर अपना अलग क़ब्रिस्तान साफ़ कराना पड़ा था।

"क़ब्रिस्तान!" तिखोन व्यालोव ने निकिता के साथ अलदर की पतली रोगी झाड़ियों को काटते हुए सोचा—"हम ग़लत जगह पर ग़लत शब्द का इस्तेमाल करते हैं। हम इसे 'स्तान' या (स्थान) कहते हैं, लेकिन दरअसल यह क़यामत तक के लिए हमारा घर है। ये मकान और शहर—सचमुच में 'स्तान' तो ये हैं जिनसे गुज़रकर हम क़यामत तक पहुँचते हैं।"

निकिता को मालूम था कि व्यालोव अपने काम में निपुण है और वह अपने दुरूह और अप्रत्याशित वक्तव्यों की अपेक्षा अपने काम में अधिक तर्क-संगत

दीखता है। अर्तामोनोव की तरह किसी भी काम के भेद्य स्थानों पर उसकी नज़र तुरन्त पहुँच जाती है। और वह अपनी शक्ति जुटाकर चालाकी और होशियारी से काम सर कर लेता है। लेकिन दोनों में एक फ़र्क़ भी बहुत साफ़ था। अर्तामोनोव हर काम में पूरे उत्साह से हाथ डालता, लेकिन व्यालोव के बारे में लगता, जैसे वह उचटे मन से काम कर रहा हो—बिलकुल कृपाभाव से—ऐसे आदमी की तरह जो यह जानता है कि उसमें इससे कहीं अच्छा काम करने की क्षमता है। उसका बोलने का ढंग भी ऐसा ही होता; संक्षिप्त, विनीत, अर्थपूर्ण, जिसमें हलकी उदासीनता का भाव छिपा होता, मानो वह संकेत कर रहा हो—

"मैं इसके अलावा और भी बहुत कुछ जानता हूँ। मैंने आधी बात भी तो नहीं कही।"

निकिता को उसके प्रत्येक शब्द में अस्पष्ट संकेत छिपे दिखाई देते जिससे उसके मन में इस व्यक्ति के प्रति बेचैनी से भरी भयमिश्रित जिज्ञासा और क्रोध की भावना पैदा होती।

"तुम तो बहुत कुछ जानते हो।" उसने व्यालोव से कहा। चौकीदार ने आराम के लहजे में उत्तर दिया—

"यही तो मेरी ज़िन्दगी है। अगर मुझे बहुत कुछ मालूम है तो यह कोई दुर्भाग्य की बात नहीं। मैं अपने लिये सब कुछ जानना चाहता हूँ और मैं जो कुछ जानता हूँ, वह एक कञ्जूस की तिजोरी में ताले के अन्दर बन्द है। कोई उसे देख नहीं सकता। तुम इस बारे में बिलकुल निश्चिन्त रहो।"

लोग क्या समझते हैं, क्या नहीं, इस बारे में तिखोन उनसे कभी न पूछता। बस वह आदमी को लगातार घूरता रहता। उसकी चिड़ियों जैसी आँखें झपकती रहतीं और तब जैसे मानो उसने उस आदमी के सारे विचारों को पढ़ लिया हो, वह अचानक ऐसी चीजों के बारे में बातें करने लगता, जिनका उससे कोई मतलब ही न हो। निकिता कभी-कभी यह चाहने लगता कि व्यालोव अपनी जीभ उसी तरह काट ले जिस तरह उसने अपनी उँगली काट ली थी, यद्यपि यह काम भी उसने बिगाड़ लिया था, यानी दाहिने हाथ के बजाय बाँया हाथ निकम्मा बना लिया था। अर्तामोनोव और प्योत्र और दूसरे सभी लोग व्यालोव को मूर्ख समझते थे। लेकिन निकिता को वह मूर्ख न लगता। गाल की ऊँची हड्डी वाले

इस विचित्र व्यक्ति के प्रति उसकी भयमिश्रत जिज्ञासा की भावना और दृढ़ होती गई। एक दिन जब वह और निकिता जंगल के रास्ते घर की तरफ आ रहे थे, तब व्यालोव ने अचानक एक बात कही, जिससे भय की यह भावना और भी अधिक तीव्र होती गई। उसने कहा —

"तुम अब भी अपने को अन्दर ही अन्दर खाए जा रहे हो। उससे अपने दिल की बात कह क्यों नहीं देते ? शायद तुम्हारे प्रति उसका व्यवहार स्नेहपूर्ण हो जाय। वह दयालु स्वभाव की लगती है।"

कुबड़ा यकायक जहाँ का तहाँ खड़ा रह गया। वेदना से उसका हृदय बैठने लगा और पाँव सीसे की तरह भारी हो गये। अपनी उलझन में वह बड़बड़ाया—

"क्या कह दूँ, किससे कह दूँ ?"

व्यालोव ने उसकी ओर एक नज़र फेंकी और आगे बढ़ चला। निकिता ने उसकी बाँह पकड़नी चाही, लेकिन तिखोन ने उपेक्षा से झटकार कर उसकी बाँह हटाते हुए कहा —

"बनने से क्या फ़ायदा ?"

निकिता ने अपने कन्धे पर रखे हुए बर्च के पौधे को नीचे फेंककर चारों ओर संत्रस्त-दृष्टि से देखा। उसके जी में आया कि वह तिखोन के ऊबड़-खाबड़ चेहरे पर एक तमाचा जड़ दे और उसकी ज़बान बन्द कर दे। लेकिन अपनी ऐंठी हुई आँखों से दूर क्षितिज तक घूरते हुए तिखोन ने अपने स्वाभाविक, धीर, शान्त लहजे में कहा —

"और अगर वह स्नेह न करेगी तो कम-से-कम वैसा दिखावा तो करेगी। औरतें बड़ी जिज्ञासु होती हैं। कोई औरत ऐसी नहीं होती जो दूसरे आदमी को जाँचना न चाहे, यह न देखना चाहे कि शक्कर से भी कोई मीठी चीज़ होती है। जहाँ तक हम लोगों की बात है हमें बहुत नहीं चाहिये। एक बार, और फिर हम सन्तुष्ट और सुखी हो जाते हैं। लेकिन तुम हो कि अपने को खाए जा रहे हो। अपनी क़िस्मत आज़माओ। उससे कह दो, कौन जाने वह राज़ी हो जाय।"

निकिता को इन शब्दों में एक दोस्त की सहानुभूति का स्वर मिला, जैसा उसने पहले कभी न सुना था और कटुता से उसका दिल मसोसकर रह गया। पर, साथ ही उसे लगा जैसे तिखोन उसको नंगा कर रहा है।

"तुम व्यर्थ की बकवास कर रहे हो।" उसने कहा।

लोगों को शाम की प्रार्थना को बुलाने के लिये गिरजे की घंटियाँ बज रही थीं। तिखोन ने अपने कन्धे पर रखे पौधों के बोझ को एक बार सँभाला और अपने कुदाल से ज़मीन पर टेक देता हुआ आगे बढ़ता गया। उसने उसी धीर शान्त स्वर में कहा--

"मुझसे डरो मत। मुझे तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है। तुम भले आदमी हो और काफ़ी दिलचस्प भी। तुम्हीं क्या, अर्तामोनोव परिवार के सभी लोग बेहद दिलचस्प हैं। तुम्हारी पीठ पर चाहे जितना बड़ा कूबड़ हो, लेकिन अन्दर से तुम कूबड़े नहीं हो।"

सघन होती हुई उदासी के बीच निकिता का भय घुल गया। उसकी आँखों में धुन्ध-सी छा गई और वह एक शराबी की तरह लड़खड़ाने लगा। उसे लगा, जैसे विश्राम के लिए वह ज़मीन पर गिर पड़ेगा। कोमल स्वर में उसने याचना की—

"इस बात को अपने तक ही रखोगे न ?"

"कह तो दिया—यह मेरे दिल की कोठरी में बन्द रहेगी, बिलकुल सुरक्षित।"

"इस बात को भूल जाओ और नतालिया से कुछ न कहना।"

"मैं तो उससे कभी बात भी नहीं करता। उससे बातें भी क्या करूँ!"

बाक़ी रास्ते वह चुपचाप चलते चले आये। कुबड़े की नीली आँखें अधिक बड़ी, गोल और उदास हो गई थीं। वह लोगों के कन्धों के ऊपर से अब और अधिक शान्त और अप्रत्यक्ष ढंग से शून्य की ओर ताकता रहता। लेकिन नतालिया ने भाँप लिया कि कहीं कुछ गड़बड़ ज़रूर है।

"इधर कुछ दिनों से तुम गुमसुम क्यों रहते हो ?" उसने पूछा। निकिता ने उत्तर दिया—

"काम बहुत अधिक है।" और वहाँ से फ़ौरन चलता बना। नतालिया को चोट-सी लगी। क्योंकि यह पहला ही मौक़ा नहीं था, जब उसने यह अनुभव किया हो कि उसके प्रति देवर के स्नेह में कमी आ गई है। उसकी ज़िन्दगी भी एकरस और उदास थी। चार वर्षों में उसके दो और लड़कियाँ हुई थीं और अब फिर उसके पैर भारी हो रहे थे।

"तुम्हारे लड़कियाँ ही क्यों होती हैं? उनसे क्या फ़ायदा?" दूसरी लड़की के पैदा होने पर उसके ससुर ने बड़बड़ाते हुए कहा था। उसने उसको कोई उपहार नहीं दिया और प्योत्र से कहा था—

"मुझे पोते चाहिए। दामाद नहीं। मैंने अपना कारोबार अजनबी लोगों के लिए नहीं शुरू किया।"

उसके प्रत्येक शब्द से नतालिया एक अपराध की भावना से भर जाती थी। उसे लगा कि उसका पति भी उससे ख़ुश नहीं है। रात को उसके साथ लेटे हुए और खिड़की से बाहर दूर के सितारों पर आँखें जमाये वह अपने पेट को सहलाती और मन ही मन प्रार्थना करती—

"मेरे भगवान्, एक बेटा दो।"

लेकिन कभी-कभी ऐसे भी मौक़े आते, जब वह अपने पति और ससुर से झल्लाकर कहना चाहती—

"मैं जान-बूझकर लड़कियों को ही जन्म दूँगी। सिर्फ़ तुम्हें नीचा दिखाने के लिए।"

उसकी इच्छा होती कि वह कोई असाधारण काम कर डाले। कोई ऐसा काम, जिसपर सारे के सारे लोग आश्चर्यचकित रह जायँ—कोई ऐसी अद्भुत चीज़, जिससे ये लोग उससे अधिक स्नेह करने लगे या फिर वह कोई ऐसा बुरा काम कर डाले, जिससे ये लोग डर जायँ। किन्तु वह अच्छी या बुरी किसी ठोस बात की कल्पना ही न कर पाती।

पौ फटते ही वह उठकर रसोईघर में चली जाती और बावरची को सुबह की चाय बनाने में मदद देती। फिर वह दौड़ी-दौड़ी अपने कमरे में बच्चों को खिलाने-पिलाने के लिए आती। फिर अपने ससुर, पति और देवरों को चाय देती या बच्चों को दुबारा खिलाती-पिलाती। फिर घर के कपड़े सीती-सिलाती या मरम्मत करती। दोपहर को भोजन के बाद वह बच्चों को लेकर बग़ीचे में जाती और शाम को चाय के समय तक वहीं रहती। बाहर की प्यारी-प्यारी लड़कियाँ बग़ीचे में झाँक-झाँकर देखतीं और इन बालिकाओं की सुन्दरता की तारीफ़ करतीं। नतालिया इस पर मुसकरा देती, लेकिन उनकी तारीफ़ को कोई महत्त्व न देती। उसे अपनी लड़कियों में किसी प्रकार की सुन्दरता न दिखाई देती।

कभी-कभी पेड़ों के बीच उसे निकिता मिल जाता। घर में अकेला वही था, जो उससे स्नेहपूर्वक बात करता था। लेकिन आजकल जब कभी वह उससे अपने पास बैठने के लिए आग्रह करती, तो वह एक अपराधी की भाँति उत्तर देता—

"दुःख है कि इस समय मुझे फ़ुरसत नहीं है।"

धीरे-धीरे नतालिया के मन में एक कटु विचार की रूप-रेखा बनती गई। उसको लगा, जैसे कुबड़े का सारा स्नेह बनावटी था। वह तो केवल उसके पति का चौकीदार था, जो उस पर और अलेक्सी पर जासूस की नज़र रखने को तैनात था। वह अलेक्सी से डरती थी, क्योंकि अलेक्सी उसे आकर्षित करता था। वह जानती थी कि उसका यह देवर अगर कभी चाहेगा, तो वह उसे ना न कह सकेगी। लेकिन वह उससे कुछ चाहता ही न था। वह उसको कभी पूरी नज़र देखता भी न था। इससे उसके अहंकार को चोट पहुँचती थी और उसके अन्दर अपने इस साहसी और ख़ुश-मिज़ाज देवर के प्रति एक वैमनस्य की भावना जग गई थी।

शाम को पाँच बजे वे लोग चाय पीते और रात को आठ बजे खाना खाते। इसके बाद वह घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करती और फिर यह आशा लेकर अपने पति के पास जा लेटती कि वह एक पुत्र को जन्म दे सकेगी। उसके पति को जब उसकी ज़रूरत महसूस होती, तब वह बिस्तर में से ही बड़बड़ाता—

"बस, बहुत हो गया, अब आओ न!"

वह जल्दी से प्रार्थना को बीच में ही छोड़कर अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाती और आज्ञाकारी की तरह आकर पति के निकट लेट जाती। कभी, पर बहुत कम, प्योत्र उससे मज़ाक करता।

"तुम इतनी प्रार्थना क्यों करती हो? चाहे जो हो, तुम जो कुछ माँगती हो, वह सबका सब तो मिल नहीं सकता, या फिर अगर मिल गया तो बाक़ी दुनिया के लिए वहाँ कुछ न बचेगा।"

रात को किसी बच्ची के रोने से जागकर और उसे दूध पिलाकर फिर सुलाने के बाद वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो जाती और बाहर बग़ीचे और आसमान की ओर देखती रहती। अपने बारे में, अपनी माँ के बारे में, अपने ससुर

और पति के बारे में, और उस कठिन दिन के बारे में जो इतनी जल्दी समाप्त हो गया, वह चुपचाप सोचती रहती। काम करनेवाली लड़कियों के कभी उल्लास, कभी विषादभरे गीत और कारखाने से आनेवाली दूसरी खट-खट और घर-घर की आवाज़ें, जो सब मिलकर मधुमक्खी के एक विशाल छत्ते की तेज़ भिनभिनाहट-सी बन जाती थीं, इस सारे शोर-गुल को जिसको उसके कान सुनने के आदी हो चुके थे, इस समय न सुन पाना कुछ अजब-सा लगता। दिन भर यह दौड़-धूप और शोर-गुल लगातार बना रहता। इसकी प्रतिध्वनियाँ कमरों में तैरती फिरतीं, बग़ीचे के झुरमुटों में सरसर-मरमर करती रहतीं और कोमल स्पर्श से खिड़की के शीशों पर टकराती फिरतीं। मज़दूरों की आवाज़ें बर-बस ध्यान खींच लेतीं और सोचना असम्भव बना देतीं।

लेकिन रात के सन्नाटे में, जब कि समस्त प्राणि-जगत निद्रा की गोद में चुपचाप पड़ा सोता, वह तातारों द्वारा लूटी गई औरतों की उन भयानक कहानियों और सन्त-साधुओं और शहीदों की जीवनियों को सोचती जो निकिता ने उसे सुनाई थीं। कभी-कभी वह सुखी और उल्लासपूर्ण जीवन की कहानियों का स्मरण करती, परन्तु बहुधा उसकी स्मृति में करुण विचार ही बार-बार उठ आते।

उसका ससुर उसकी ओर से ऐसे रहता, जैसे वह वहाँ हो ही न। यह भी तब, जब वह बहुत प्रसन्न हो। लेकिन यदि कभी हॉल में या किसी कमरे में वह उसे अकेले मिल जाती तो वह निर्लज्ज ढंग से उसे ऊपर से नीचे तक, वक्ष के उभार से लेकर घुटनों तक तीखी नज़र से घूरकर देखता और घृणा प्रगट कर देता।

उसे लगता कि कभी-कभी जब उसका पति उसकी ओर देखता है, तब उसकी दृष्टि में एक अप्रिय और कठोर भावना होती, मानो वह उसके मार्ग में आ गई हो, या जैसे अपने पीछे रखी किसी चीज़ की ओर देखने में वह बाधा बन गई हो। अक्सर वह रात को कपड़े बदलकर पलंग की पट्टी पर बड़ी देर तक एक हाथ परों की रज़ाई में डाले और दूसरे हाथ से अपने कान की लौर मलता या अपने गाल से दाढ़ी को इस तरह मलता बैठा रहता, जैसे उसके दाँत में दर्द हो रहा है। उसका भद्दा चेहरा झगड़ालू मुद्रा से या क्रोधपूर्ण झल्लाहट से सिकुड़-कर विकृत हो जाता और नतालिया को बिस्तर के निकट तक जाने का साहस न

होता। वह बहुत कम बोलता और वह भी घरेलू मामलों के बारे में ही। वह अक्सर किसान और ज़मींदार की जागीर पर बिताये गत जीवन की उन स्मृतियों को रह-रहकर दोहराता रहता, जो नतालिया के लिए एकदम अकल्पनीय थीं। सर्दियों में पर्व के दिनों, बड़े दिन के अवसर पर, वह उसे गाड़ी में बिठा कर नगर में घुमाता। गाड़ी में एक मोटा-ताज़ा काले रंग का घोड़ा जुता होता। घोड़े की आँखें पीलापन लिए रक्तिम-सी थीं और वह जैसे क्रोध-भरे दर्प से अपना सिर झटकारता और जोर से नथने फुफकारता। नतालिया को इस जानवर से डर लगता था और उसका डर उस समय और भी बढ़ गया, जब तिखोन व्यालोव ने कहा—

"यह घोड़ा तो बड़े आदमियों के लिए है, यह मामूली आदमी के काबू का नही है।"

नतालिया की माँ अक्सर आया करती। बेटी को अपनी माँ का स्वच्छन्द जीवन और उसकी आँखों में रहनेवाली उन्माद भरी ख़ुशी की चमक से ईर्षा होती। यह ईर्षा उस समय और भी तीव्र और पीड़ाजनक हो जाती, जब नतालिया देखती कि अर्तामोनोव कितने तारुण्य-भरे उत्साह से उसकी माँ के साथ ठिठोली करता है और अपनी प्रेमिका पर मुग्ध होकर कितने आत्म-विश्वास से अपनी दाढ़ी सहलाता है। उसकी माँ अर्तामोनोव के सामने गर्व से अपने नितम्बों को मटकाती हुई अपने सौन्दर्य का निर्लज्ज प्रदर्शन करती। नगर के रहनेवालों को बहुत पहले ही अर्तामोनोव के साथ बैमाकोवा के इस प्रणय-सम्बन्ध का पता चल गया था और उन्होंने कड़े शब्दों में इसकी निन्दा की थी। सब लोग अब उससे दूर रहते। नतालिया की पुरानी सहेलियाँ भी, जो नगर के उच्चपरिवारों की बेटियाँ थीं, अब उससे विमुख हो गईं। उनको इस बात की इजाज़त नहीं थी कि वे पाप में डूबी स्त्री की बेटी और एक अजनबी और निर्मम स्वभाववाले किसान की बहू तथा घमंड में फूले हुए और अपने ही आप में डूबे पति की स्त्री से मिला-जुला करें। नतालिया को अब अपने शैशव की छोटी-मोटी खुशियाँ भी अधिक सारपूर्ण और सजीव दिखाई देने लगीं।

अपनी माँ को, जो पहले हमेशा स्पष्टता का व्यवहार किया करती थी, अब चालाकी और बहानेबाज़ी से काम लेते देखकर उसको दुःख होता। नतालिया

को लगा जैसे उसकी विधवा माँ प्योत्र से डरती हो और इस डर को छिपाने के प्रयत्न में चापलूसी और उसकी निपुणता की तारीफ़ करती हो। उसे अलेक्सी की व्यंग-भरी आँखों से भी डर लगता होगा। क्योंकि वह उसके साथ दोस्ताना, हँसी-मज़ाक़ और रहस्यमय ढंग से उससे काना-फूसी करती रहती और अक्सर उसे चीज़ें भेंट किया करती। उसके देवता के पर्व के दिन वह उसके लिए एक पोर्सलेन की घड़ी लाई, जिसमें चरागाह में चरती हुई भेड़ों और फूलों की क्यारियों में खड़ी एक युवती का चित्र खुदा हुआ था। चीज़ सुन्दर थी और अत्यन्त कलात्मक बनाई गई थी। जिसने भी देखा उसने इसकी ख़ूब सराहना की।

"यह किसी ने मेरे पास गिरवी रखी थी" बैमाकोवा ने समझाया। "बस, तीन रूबल के बदले में। यह घड़ी अब चलती नहीं, बहुत पुरानी हो गई है। लेकिन अल्योशा जब शादी करेगा, तो उसके पास घर सजाने के लिए कम से कम एक चीज़ तो होगी।"

"घर तो अपना सजाने में मुझे भी एतराज़ नहीं है।" नतालिया ने सोचा।

माँ अक्सर घरेलू मामलों के बारे में पूछ-ताछ करती और बड़े ध्यान से नतालिया को सीख भी देती।

"हर रोज़ मेज़ पर झाड़न मत रख दिया करो। मर्द लोग उनसे अपनी दाढ़ी और मूँछें पोंछकर बड़ी जल्दी गन्दा कर देते हैं।"

यद्यपि प्रारम्भ में निकिता उसे अच्छा लगा था, परन्तु अब वह उसे देखते ही अपने होंठ भींच लेती और उससे इस तरह बात करती, जैसे लोग उन बाबू लोगों से बात करते हैं, जिन पर बेईमानी का संदेह होता है।

बैमाकोवा ने अपनी बेटी को सावधान करते हुए कहा—

"देखो, तुम उसके साथ घनिष्ठता न बरतो। कुबड़े बड़े चालाक होते हैं।"

नतालिया ने कई बार अपनी माँ से यह शिकायत करनी चाही कि उसका पति उस पर विश्वास नहीं करता और उसने उस पर जासूसी करने के लिए कुबड़े को लगा रक्खा है। लेकिन कोई न कोई बात ऐसी हो जाती कि वह यह बात न कह पाती।

और सबसे बुरा तो तब लगता जब नतालिया के पुत्र न होने से परेशान हो

उसकी माँ उससे शर्म छोड़कर और बिना छिपाए अपनी सजल आँखों को मटका-कर मुसकराते हुए, कोमल मध्यम स्वर में उससे तरह-तरह के प्रश्न पूछने लगती— रात को अपने पति के साथ सोने के सम्बन्ध में माँ की यह जिज्ञासा उसे असह्य लगती और ऐसे समय नतालिया को अपने ससुर की यह आवाज़ सुनकर बड़ा सुख मिलता—

"समधिन, क्या गाड़ी से वापस जाओगी ?"

"मुझे पैदल जाना अधिक पसन्द है ।"

"अच्छी बात है । मैं तुम्हें घर तक छोड़ आऊँगा ।"

नतालिया के पति ने सोचते हुए कहा—

"तुम्हारी माँ बहुत होशियार औरत है । मेरे पिता को अपनी मुट्ठी में रखती है । वह जब यहाँ होती है, तब हमारे प्रति बाबा का व्यवहार उतना कठोर नहीं होता । तुम्हारी माँ को चाहिए कि अपना घर बेचकर अब यहीं आ जायँ ।"

"मैं यह नहीं चाहती ।" नतालिया ने कहना चाहा, लेकिन उसका साहस नहीं हुआ । माँ को सुखी और किसी की प्रेमपात्री होने के कारण वह उससे पहले से कहीं अधिक ईर्षा करने लगी ।

अपने हाथ में सिलाई लेकर उस खिड़की के सहारे बैठे हुए, जो बग़ीचे की ओर खुलती थी, वह झाड़ियों के परे स्नानघर के निकट काम करते हुए तिखोन और निकिता की बात-चीत के अंश सुनती रहती । कारखाने की घर-घराहट के बीच जमादार का शान्त स्वर सुनाई देता ।

"लोगों की बहुतायत की वजह से ही परेशानी होती है । सब एक जगह इकट्ठे होने की कोशिश करते हैं और फिर ऐसी रेल-पेल मचती है कि सब परे-शान होते हैं !"

"कितनी सच्ची बात है ।" नतालिया ने सोचा । लेकिन निकिता ने अपने मधुर स्वर से प्रतिवाद किया—

"तुम सब बातों को उलझा देते हो । खेल-तमाशे और नाच-गाने का क्या होगा । लोगों के बिना तो हँसी और मनोरञ्जन सभी कुछ असम्भव हो जायगा ।"

"बात तो यह भी सही है ।" नतालिया ने आश्चर्य करते हुए सोचा ।

वह जिन लोगों को जानती थी, वे सब अपने निजी अनुभव और ज्ञान की

दृढ़ता से विश्वासपूर्वक बात करते थे। वह अपने मानस-पट पर इसका स्पष्ट चित्र अंकित कर लेती थी—सरल ठोस शब्द, जो बड़ी सरलता से साथ-साथ जड़ दिए गये हों और हर वक्ता के पास अपने अन्दर के दृढ़ सत्य को व्यक्त करने के लिए मानों इन शब्दों के घेरे बने हों। अलग-अलग लोगों की विशेषताएँ उनके शब्दों से ही निर्धारित की जातीं। लोग अपने को शब्दों से विभूषित करते हैं और घड़ी की सोने या चाँदी की ज़ंजीर की तरह उनको खनकाते रहते हैं। पर बिचारी नतालिया के पास शब्दों का धन नहीं था। उसके पास अपने विचारों को आच्छादित करने के लिए कुछ न था। पतझर के धोखा देनेवाले और धुंध-भरे कोहरे की भाँति उसके विचार भी उसे केवल भार बन जाते थे और उसकी वृत्तियों को मन्द बना देते थे। वह बार-बार आत्म-ग्लानि और दुराशा से भरकर सोचती—

"मैं निरी मूर्ख हूँ। न कुछ जानती हूँ, न कुछ समझती हूँ।"

"रीछ को ही लो। वह जानता है कि शहद कहाँ मिलेगा। इसी से उसका नाम मेदवेद* पड़ा है।" तिखोन ने रसभरी की झाड़ियों में से बुदबुदाते हुए कहा।

"अच्छा यह बात है!" नतालिया ने सोचा। काँपते हुए उसे याद आई कि अलेक्सी ने उसके पालतू जानवर को कैसे मार डाला था। तेरह महीने की उमर तक तो भालू का वह बच्चा आँगन में एक पालतू और स्नेही कुत्ते की तरह खेलता-फिरता रहा। वह रसोईघर में घुस आता और अपनी पिछली टाँगों के बल बैठकर मन्द-मन्द ग़ुर्राता और अपनी विचित्र नन्हीं-नन्हीं आँखों को झपकाते हुए रोटी माँगता—ऐसा मसख़रा जीव था वह। लेकिन कितना हिला हुआ और समझदार था। सब लोग उसे प्यार करते थे। निकिता उसके घने गुच्छेदार बालों में कंघी करता और उसे नदी में नहलाने के लिए ले जाता, और वह रीछ का बच्चा निकिता से इतना हिल गया था कि जब कभी निकिता घर पर न होता तो वह व्याकुल होकर ऊपर को थूथनी उठाकर हवा सूँघता फिरता और ग़ुर्राते हुए आँगन पार करके उसके दफ़्तर की खिड़की पर झपटता। कई बार उसने खिड़की के शीशे तोड़ दिए थे। यहाँ तक कि खिड़की का चौखटा भी तोड़ डाला था। नतालिया उसे सफ़ेद रोटी और शीरा खिलाया करती थी। कुछ ही दिनों

---

* रूसी भाषा में मेदवेद (रीछ); म्योद (शहद), वेदत (जानना)

में उसने अपने-आप शीरे की कटोरी में रोटी डुबो-डुबोकर खाना सीख लिया था। .खुशी से हुंकार भरते हुए और अपनी पिछली बालदार टाँगों पर बैठकर झूमते हुए वह शीरे में डूबी रोटी को अपने गुलाबी तीक्ष्ण दाँतोंवाले मुख में ठूँस लेता और फिर अपने चिपचिपाते पञ्जों से शीरा चाटता रहता। .खुशी से चमकती अपनी नन्हीं-नन्हीं भोली आँखें चमकाकर वह नतालिया के घुटनों पर अपना सिर रगड़कर उससे खेलने का आग्रह करता। इस प्यारे-से जन्तु से बात-चीत की जा सकती थी—लगता था, जैसे वह सब कुछ समझता हो।

लेकिन एक दिन अलेक्सी ने उसे थोड़ी-सी वोद्का पिला दी। मदोन्मत्त होकर रीछ लोटने-पोटने और उछलने-कूदने लगा। वह स्नान-गृह की छत पर चढ़ गया, और उसने चिमनी तोड़कर उसकी एक-एक ईंट नीचे फेंक दी। इस जानवर के खिलवाड़ पर शोर मचाती मज़दूरों की भीड़ जमा हो गई। उस दिन के बाद कोई ऐसी छुट्टी न जाती जब अलेक्सी लोगों के खिलवाड़ के लिए रीछ को शराब न पिलाता। इस जानवर को नशे की ऐसी आदत पड़ गई कि अगर किसी मज़दूर से वोद्का की तनिक गन्ध भी आ जाती तो वह उसका पीछा न छोड़ता, और अलेक्सी को तो एक क्षण को भी चैन न लेने देता। वह जब-जब आँगन में से निकलता, रीछ एक झपाटे में उसके पास जा पहुँचता। उन्होंने उसे ज़ंजीर से बाँध दिया, लेकिन उसने अपना बाड़ा तोड़-फोड़ डाला, और आँगन में अपना सिर ऊँचा उठाए और जजीर बँधे खूँटे को साथ खींचते हुए उसने चक्कर काटने शुरू किए। उसे पकड़ने की कोशिश की गई। उसने तिखोन की टाँग खँरोंच ली, मोरोज़ोव नाम के एक मज़दूर को पटक दिया और ज़ोर से पंजा मारकर निकिता की जाँघ घायल कर दी। इस पर अलेक्सी भाला उठाकर दौड़ा और उसके पेट में भोंक दिया। खिड़की में से झाँकते हुए नतालिया ने रीछ को पिछाड़ी के बल गिरते हुए देखा। उसके अगले पंजे इस तरह हिल रहे थे, मानों .गुस्से से चिल्लाते हुए इर्द-गिर्द खड़े लोगों से माँफ़ी माँग रहा हो। किसी ने अलेक्सी के हाथ में एक तेज़ कुल्हाड़ी पकड़ा दी और उसने उछल-उछलकर पहले एक पंजे पर और फिर दूसरे पंजे पर कुल्हाड़ी से वार किया। ज़ोर से दहाड़कर रीछ अपने ज़ख्मी पंजों के बल गिर पड़ा। दाएँ-बाएँ चारों ओर .खून के फ़व्वारे बह निकले और कड़ी धरती पर गहरे लाल धब्बे पड़ते गए। एक

दयनीय .गुर्राहट के साथ रीछ ने अपना सिर नीचे झुका दिया, मानों नये वार की प्रतीक्षा कर रहा हो। तब अलेक्सी ने मज़बूती से अपने दोनों पाँव जमाकर कुल्हाड़ी से रीछ की खोपड़ी पर इस तरह वार किया, मानों वह एक लकड़ी का कुन्दा हो। जानवर की थूँथनी अपने ही रक्त के कुण्ड में डूब गई। कुल्हाड़ी हड्डी में इतनी गहरी गड़ी थी कि अलेक्सी को उसके बालदार शव पर पाँव जमाकर पूरी ताक़त से खींचकर निकालना पड़ा था। रीछवाली घटना बहुत अप्रिय थी। लेकिन यह तो उससे भी ज़्यादा बुरा था कि उसका यह .खुश-मिज़ाज, निडर, उद्यमी और नटखट देवर ऐरी-ग़ैरी लड़कियों के साथ तो घूमता फिरता था, और उस बिचारी नतालिया को आँख उठाकर भी न देखता था।

हर किसी ने अलेक्सी को उसके साहस और कौशल के लिए बधाई दी। बाप ने उसके कन्धों को थपथपाते हुए चिल्लाकर कहा—

"और तुम कहते हो कि तुम बीमार हो, कामचोर कहीं के!"

निकिता आँगन में से उठकर भाग गया और नतालिया उस समय तक सुबकती रही, जब तक कि उसके पति ने खीझ-भरे आश्चर्य से डाँटकर न पूछा—

"मान लो कि तुम्हारे सामने ही आदमी की हत्या हो जाय, तब तुम क्या करोगी?"

वह उस पर इस तरह झल्लाया, जैसे वह निरी बच्ची हो—

"चुप रह बेवक़ूफ़!"

नतालिया ने सोचा कि वह उसे मार देगा। अपने आँसुओं को आँखों में ही पीते हुए उसने अपने सुहाग की पहली रात की याद की। उस दिन वह कितने मृदु स्नेह से भरा था, कितना सहमा-सहमा-सा! और उसे याद आया कि उसने आज तक अन्य पतियों की तरह उस पर कभी हाथ नहीं उठाया था। उसने अपनी सुबकियों को कण्ठ में ही दबाते हुए कहा—

"मुझे माफ़ करो। मुझे यह रीछ बहुत प्यारा लगता था।"

"तुम्हारा प्यार तो मेरे प्रति होना चाहिए, रीछ के प्रति नहीं।" उसने कुछ नरम पड़ते हुए कहा।

उसे याद आया कि जब उसने पहली बार अपने पति की कठोरता के बारे में अपनी माँ से शिकायत की थी, तो माँ ने कहा था—

"आदमी तो मधु-मक्खियों की तरह हैं, और हम उनके फूल। वे हमारे पास मधु लेने आते हैं। तुम्हें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए और इसे बरदाश्त करना सीखना होगा। आदमी सब चीज़ों के मालिक हैं। उनकी चिन्ताएँ भी हमसे अधिक हैं। वे गिरजे भी बनाते हैं, कारख़ाने भी। यही देखो, तुम्हारे ससुर ने जहाँ कुछ नहीं था, वहाँ क्या बनाकर खड़ा कर दिया है।"

इलिया अर्तामोनोव दिन-दूने उत्साह से अपने कारोबार को बढ़ाने और जमाने में लगा रहा, जैसे कोई आशंका उसके कान में कह जाती हो कि उसके दिन गिने रह गये हैं। सन्त निकोला के दिन से कुछ पहिले ही मई महीने में मिल के दूसरे ब्लॉक के लिए भाप की भट्ठी वहाँ पहुँच गई थी। जिस नाव पर यह भट्ठी लाई गई थी, उसने ओका नदी के बलुआ तट पर उस जगह लंगर डाला था, जहाँ वतरत्ता की हरी दलदली धारा उसमें आकर मिलती है। आगे का काम ज़्यादा मुश्किल था। भट्ठी को उतारकर बलुआ भूमि पर से खींचते हुए लगभग तीन सौ पचास गज़ तक ले जाना था। सन्त निकोला के दिन अर्तामोनोव ने अपने मज़दूरों को एक शानदार प्रीतिभोज दिया था, जिसमें वोद्का और बीयर छककर पिलाई थी। आँगन में मेज़ें लगाई गई थीं। औरतों ने हर चीज़ को देवदार और बर्च की टहनियों और बसन्त के फूलों के गुच्छों से सजाया था और स्वयं भी फूलों जैसे रंगों में सज-धजकर आई थीं। अपने परिवार और थोड़े-से बुलाए हुए मेहमानों के साथ घर का मालिक जुलाहों के बीच बैठा, गरारी भरनेवाली मुँहफट लड़कियों के साथ हँसी-मज़ाक करता रहा और ख़ूब पीकर मेहमानों का बड़े कौशल से मनोरञ्जन करता रहा। उसने अपनी भूरी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उल्लास से चिल्लाकर कहा—

"अह दोस्त! यह ज़िन्दगी ही मौज है!"

वह जानता था कि लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। वह जैसा कुछ था, वैसा होने की ख़ुशी से ही उसका नशा बढ़ता गया। बसन्त ऋतु के इस धूप खिले दिन की तरह, इस सारी धरती की तरह, जो नई घास की हरियाली और वृक्षों के छायादार पत्तों में सजी और उन भोज-पत्रों, और देवदार के पौधों की श्वास से सुरभित है, जो अपनी स्वर्णिम नोकें नीले-पीले आकाश की ओर उठाए रहते हैं, इन सबकी तरह वह भी चमक और खिलखिला रहा था। उस वर्ष

वसन्त ऋतु पहले ही आ गई, और लिलैक और बर्डचेरी खिल चुके थे। सारी दुनिया हर्ष में भर गयी और मानो उत्सव मना रही थी। मनुष्यों के हृदयों में भी, जो कुछ भी उत्तम था, वह इस समय फूल-सा फूट पड़ना चाहता था।

एक पुराना जुलाहा उठ खड़ा हुआ; बोरिस मोरोज़ोव एक रोगी जैसा दुर्बल व्यक्ति था। नहलाई-धुलाई लाश की तरह सफ़ेद और स्वच्छ दिखाई देता था। उसका छोटा-सा मोम का-सा मुँह बड़े आराम से सफ़ेद दाढ़ी में लगा हुआ था, जो उमर के साथ हरी पड़ती जा रही थी। अपने सबसे बड़े बेटे के कन्धे पर झुकते हुए, जो लगभग साठ वर्ष का था—वह पूरे उत्साह के साथ अपने हड़ियल मांसहीन हाथ को हिलाकर चिल्लाया—

"देखो, मैं नब्बे साल का बूढ़ा हूँ, नब्बे या इससे भी ज़्यादा। बोलो कैसा लगता है? मैं एक फौजी था—पुगाचोव से लड़ा था और फिर ख़ुद बग़ावत भी की थी। हाँ सच, मास्को में प्लेग फैलने के साल! मैं—नैपोलियन के खिलाफ़ लड़ा था.... ।"

"और किस-किसको अपने सीने से लगाया था?" अर्नामोनोव ने उसके कान के पास ज़ोर से चिल्लाकर पूछा। जुलाहा कान का बहरा था।

"बाहरवालियों के सिवा अपनी दो बीवियों को। देखो सात बेटे, दो बेटियाँ, उन्नीस नाती-पोते, पाँच परपोते---यह सब मेरी कारगुज़ारी है। वे रहे, यह सब, तुम्हारे साथ ही रहते हैं, वो बैठे हैं।"

"हमें अभी कुछ और नाती-पोते दो।" इलिया ने चिल्लाकर कहा।

"हाँ हाँ, क्यों नहीं, मेरी ज़िन्दगी में तीन ज़ार और एक ज़ारीना हो चुके हैं! बोलो, क्या समझे? जितने मालिकों के लिए मैंने काम किया, वे सबके सब आज मर चुके हैं और मैं ज़िन्दा हूँ। मैंने मीलों लम्बा कपड़ा बुना है। इलिया वासिलीविच, तुम खरे और ठोस आदमी हो। तुम्हारे जैसे लोग ही ज़िन्दा रहते हैं। तुम एक सही क़िस्म के मालिक भी हो। तुमको काम पसन्द है और काम को तुम भाते हो। तुम्हारे अन्दर कोई नीचता की रेखा नहीं है। तुम हमारे ही पेड़ की एक डाल हो। इसलिए चाहता हूँ कि तुम्हारा भाग्य ख़ूब चमके। सफलता तुम्हारी असली जोरू है, और ऐसी जोरू नहीं जो एक क्षण के लिए दयालु हो और फिर छोड़कर चली जाय! इस प्रेयसी के पास जाओ। अपने भले के लिए,

भले आदमी ! अपने भले के लिए, मैं कहता हूँ.... ।"

अर्तामोनोव ने इस बुड्ढे को अपनी बाँहों में उठाकर चूम लिया और भावावेश से चिल्लाते हुए कहा—

"शुक्रिया, बच्चे शुक्रिया ! मैं तुम्हें अपना मैनेजर बनाऊँगा ।"

ज़ोर-ज़ोर की चीख़-पुकार और हँसी-ठट्ठे के बीच शराब के नशे में चूर इस बूढ़े जुलाहे ने मेज़ पर खड़े होकर अपने ठठरीदार घूँसों को हवा में घुमाते हुए तीक्ष्ण चीत्कार-भरी आवाज़ से कहा—

"हर चीज़ के लिये इस आदमी का अपना ही ढंग है, बिलकुल अपना ढंग ।"

उल्याना बैमाकोवा ने बिना छिपाए ही अपने गालों पर से .खुशी के आँसू पोंछ लिए ।

"कितनी .खुशी की बात है ।" उसकी बेटी ने कहा । बैमाकोवा ने उत्तर देने से पहले अपनी नाक साफ़ की—

"यह आदमी ही ऐसा है । भगवान् ने उसे .खुशी के लिए ही पैदा किया है ।"

"लड़कों, यह आदमी तुम्हारे लिए एक सबक़ है ।" अर्तामोनोव ने चिल्लाकर अपने बेटों से कहा । "लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह इससे सीखो । पेत्रूखा ! देखा तुमने ।"

खाने के बाद जब मेज़ें हटा दी गईं, तो औरतों ने गाना शुरू किया । दूसरी तरफ़ पुरुष कुश्ती और बल के दूसरे खेलों में लग गये । अर्तामोनोव हर जगह पहुँचता । सबसे अच्छे नाचनेवालों के साथ नाचता, और कुश्ती लड़ने-वालों के साथ कुश्ती लड़ता । वे लोग पौ फटने तक आनन्द मनाते रहे और सूरज की पहली किरणों के आते ही सत्तर मज़दूरों का एक जत्था, जिसके सिरे पर उसका मालिक चल रहा था, शोर-.गुल मचाता नदी के किनारे की ओर चल पड़ा; जैसे कोई लुटेरों का दल डाका डालने जा रहा हो । लोग शराब के नशे में हिचकियाँ लेते और गाने गा रहे थे । अपने कन्धों पर वह मोटे-मोटे लट्ठे, बलूत की ढेकली और रस्सी के भारी-भारी लच्छे उठाए हुए थे । और वह बूढ़ा जुलाहा सबके पीछे बालू पर फुदक-फुदककर चलता हुआ निकिता से बुदबुदाता जाता था—

"वह अपना मनचाहा काम करवा लेगा । उसे क्या मैं जानता नहीं !"

बिना किसी दुर्घटना के वे लोग उस भट्ठी को नाव से उतारकर नदी के किनारे ले आए। यह भट्ठी एक लाल दानव जैसी थी, जो सिर कटे बैल की तरह दिखाई देती थी। उन्होंने उसके चारों ओर रस्सियाँ डाल दीं और सबने मिलकर हुंकार भरते हुए उसे लट्ठों के सहारे बालू में बिछे तख्तों पर सरकाना शुरू किया। आगे की ओर घसिटती हुई यह भट्ठी हलकोरे खाती चलती और निकिता को लगा कि इसका गोल मूर्खतापूर्ण मुख लोगों की उत्साह-भरी शक्ति पर मानों आश्चर्य से मुँह बा रहा हो। शराब के नशे में चूर निकिता का बाप भी औरों के साथ ही उसे खींच रहा था और उत्तेजित भाव से चिल्ला रहा था—

"सँभलकर, उधर सँभलकर!"

उसने लोहे के इस दानव की लाल छाती को थपथपाते हुए आग्रह-पूर्वक कहा—

"चल री भट्टी, लुढ़क।"

ये लोग मिल से अभी सौ गज़ इधर ही थे कि भट्टी ने ज़ोर के हिलकोरे खाए और अगले लट्ठे से हटकर धीरे-धीरे एक ओर बालू में अपना मुँह गड़ाकर धँस गई। निकिता ने देखा कि उसके गोल मुँह से भूरी-सी धूल उड़कर उसके बाप के पाँवों पर जा गिरी थी। लोग इस भारी-भरकम लाश के चारों ओर ग़ुस्से से जमा होकर उसके नीचे रोलर ठूँसने लगे, लेकिन सब व्यर्थ। क्योंकि भट्टी बालू के अन्दर मज़बूती से गड़ गई थी और लगता था कि वे उसे निकालने की जितनी ही कोशिश करते थे, वह उतनी ही गहरी गड़ती जाती थी। अर्तामोनोव भी अपने हाथ में एक ढेंकुल लिए औरों के साथ ज़ोर लगा रहा था और चिल्लाता जाता था—

"सब मिलकर! हाँ, एक बार फिर सब मिलकर!"

भट्टी एक बार अनमने ढंग से कुछ सरकी और फिर एक ज़ोर के धक्के के साथ जहाँ की तहाँ लौटकर गड़ गई। निकिता ने अपने पिता को मज़दूरों की भीड़ में से निकलकर बाहर आते देखा। उसकी चाल विचित्र और अजीब-सी हो रही थी और उसका मुख भी विचित्र और अपरिचित लगता था। दाढ़ी के नीचे से वह एक हाथ से अपना गला पकड़े हुए था, दूसरे हाथ से वह हवा में कुछ टटोलता-सा था, जैसे किसी अन्धे का हाथ हो। बूढ़ा जुलाहा उसके पीछे

लँगड़ाकर दौड़ता हुआ चिल्लाया—

"थोड़ी-सी धूल फाँक लो, थोड़ी सी धूल फाँक लो।" निकिता दौड़कर अपने बाप के पास पहुँचा। अर्तामोनोफ़ ने एक ज़ोर की हिचकी ली और थूका। ख़ून का एक लोथड़ा-सा निकिता के पाँवों के पास गिरा। बाप ने मन्द स्वर में कहा—

"ख़ून।"

उसका मुँह सफ़ेद पड़ गया था। आँखें डर से झपक रही थीं। दाँत कट-कटा रहे थे और उसका सारा विशाल निपुण शरीर जैसे धँस रहा हो।

"क्या चोट लगी है?" निकिता ने उसकी बाँह पकड़ते हुए कहा। बाप ने उसके सहारे लड़खड़ाते हुए अत्यन्त धीमे स्वर में उत्तर दिया—

"लगता है कोई नाड़ी फट गई है।"

"तुमसे कहा न, थोड़ी धूल फाँक लो।"

"मुझे अकेला छोड़ दो—हट जाओ।"

अर्तामोनोव ने फिर ढेर का ढेर ख़ून उगल दिया। व्यग्रतापूर्वक वह बड़बड़ाया—

"यह तो बहता जा रहा है। उल्याना कहाँ है?"

कुबड़े ने भागकर घर जाना चाहा, लेकिन बाप ने मज़बूती से उसका कन्धा पकड़कर रोक लिया। अर्तामोनोव सिर झुकाए खड़ा था और अपने पाँव से बालू कुरेद रहा था, मानो उससे पैदा होनेवाली खर-खर की उस आवाज़ को सुन रहा हो, जो मज़दूरों की क्रोधभरी चिल्लाहट के बीच कठिनाई से ही सुनी जा सकती थी।

"यह मामला क्या है?" उसने पूछा, और सावधानी से क़दम रखते हुए वह घर की ओर चल पड़ा, जैसे किसी गहरी नदी को पार करने के लिए एक पतले तख़्ते पर से गुज़र रहा हो। बैमाकोवा बाहर के दालान में खड़ी अपनी बेटी से बिदा ले रही थी। निकिता ने देखा कि अर्तामोनोव पर नज़र पड़ते ही उसका सुन्दर मुख पीला पड़ गया और उसका मुँह एक विचित्र ढंग से पहिए की तरह कभी दाईं और कभी बाईं ओर ऐंठने लगा।

दालान की सीढ़ियों पर जब अर्तामोनोव भद्दे ढंग से ढुलक गया और हिच-कियों के साथ बार-बार ख़ून उगलने लगा, तो वह चिल्लाई—

"बरफ लाओ, जल्दी !"

जैसे एक सपने में निकिता ने तिखोन को बड़बड़ाते हुए सुना—

"बरफ़ तो पानी होता है। पानी से ख़ून नहीं बनता।"

"इन्हें थोड़ी धूल फाँकनी चाहिए....।"

"तिखोन, जल्दी पादरी को बुला लाओ।"

"इन्हें उठाकर अन्दर ले चलो।" अलेक्सी ने आदेश दिया। निकिता ने अपने बाप की कोहनी पकड़ी, लेकिन किसी ने उसके अँगूठे पर इतने ज़ोर से पाँव रख दिया कि एक क्षण के लिए उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। इसके बाद वह पहले से भी अधिक तीखी दृष्टि से देखने लगा। और वह अपने दिमाग़ पर उन सारी बातों को एक कुत्सित उत्सुकता के साथ अंकित करने लगा, जिन्हें लोग उसके बाप के ठसाठस भरे कमरे में और घर के आँगन में कर रहे थे। तिखोन आँगन में एक बड़े काले घोड़े पर चढ़ने की कोशिश में लगा था। वह उसके क़ाबू में न आ रहा था। फाटक पर जाकर घोड़ा अड़ गया। वह ग़ुस्से से अपना सिर ऊपर को झटकारकर हिनहिनाने और चक्कर काटने लगा। लोग उसके सामने से तितर-बितर हो गए। उगते हुए सूरज ने आसमान में जो लाल लपटें-सी जला दी थीं, यह घोड़ा शायद उनसे ही भड़क गया था। आख़िरकार वह एक झपाटे से आगे बढ़ा और सरपट दौड़ने लगा। लेकिन आगे जाकर भट्ठी के विशाल लाल आकार को देखकर वह हठात् ठिठक गया और तिखोन को नीचे फेंककर आँगन की ओर फुंकारता और पूँछ हिलाता लौट पड़ा।

कोई चिल्लाया—

"लड़को, भागो !"

खिड़की के दासे पर बैठा अलेक्सी अपनी काली नुकीली दाढ़ी को ऐंठ रहा था। उसका कुटिल वक्र-मुख भूरा हो रहा था, जैसे उस पर धूल अँटी हो। आँखें बिना झपकाए ही उसने लोगों के सिरों के ऊपर से कमरे के भीतर उस पलंग की ओर देखा, जिस पर उसका बाप लेटा हुआ एक विचित्र और बिलकुल बदली हुई आवाज़ से बड़बड़ा रहा था—

"तो मैंने ग़लती की। भगवान् की यही मर्ज़ी है। लड़को, मैं तुम्हारे पास

उल्याना को तुम्हारी माँ के रूप में छोड़ रहा हूँ—सुनते हो ? उल्याना, ईशु के नाम पर तुम इनकी मदद करना। आह ! बाहरवालों को यहाँ से हटा दो।"

"ख़ामोश रहो।" बैमांकोवा ने उसके मुख में बरफ़ के टुकड़े डालते हुए विनय के स्वर में विह्वल होकर कहा। "यहाँ बाहरवाला कोई नहीं है।"

अर्तामोनोव ने बरफ़ का टुकड़ा निगल लिया और फिर एक दबी आह से कहा—

"अगर मैंने पाप किया है, तो मेरे बच्चों, इस पर कोई फ़ैसला देना तुम्हारा काम नहीं है। उल्याना का कोई दोष नहीं। और नतालिया, मैं तुम्हारे साथ हमेशा कड़ाई करता रहा। इसका बुरा न मानना। बेटे पैदा करना ! प्योत्र और अल्योशा, आपस में झगड़ना मत। मज़दूरों के साथ अच्छा व्यवहार करना। ये सब अच्छे लोग हैं, चुन-चुनकर रक्खे हुए। अल्योशा, तू उस लड़की के साथ शादी कर लेना। बस इतना ही !"

"बापू, हमें छोड़कर मत जाओ।" प्योत्र ने घुटनों के बल गिरते हुए अनुरोध किया। लेकिन अलेक्सी ने उसको कोहनी मारते हुए फ़ुसफ़ुसाकर कहा—

"चुप करो, मुझे तो विश्वास नहीं कि....।"

नतालिया एक ताँबे के कटोरे में चाकू से बरफ़ के टुकड़े कर रही थी। बरफ़ कटोरे के अन्दर कुचकुच और कटर-कटरकर रहा था और इन आवाज़ों के साथ उसकी हलकी सुबकियाँ मिल रही थीं। निकिता ने देखा कि उसके आँसू बहकर बरफ़ पर गिर रहे थे। किसी सूराख़ से सूरज की एक पीली किरण कमरे में घुस आई और दर्पण से प्रतिबिम्बित होकर उसने दीवार पर एक आकृतिहीन स्पन्दित बिन्दु बना दिया, मानो वह दीवार पर चिपके हुए रात के आसमान सरीखे नीले-श्याम रंग के काग़ज़ों पर बनी और लाल कपड़ों में लिपटी लम्बी मूँछोंवाले चीनी आदमी की आकृति को खुरचकर मिटाना चाहती हो।

निकिता अर्तामोनोव के पाँयते खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था कि उसका बाप उसे भी याद करेगा। बैमाकोवा इलिया के घने घुँघराले बालों पर कंघी फेर रही थी। वह तौलिया लेकर एक-एक क्षण बाद उसके मुख की कोरों से लगातार बहता हुआ रक्त और माथे और कनपटी से पसीने की बूँदें पोंछती जाती थी। उसने इलिया की उदास ज्योतिहीन आँखों में देखते हुए ऐसे भावोद्रेक से अस्फुट

स्वर में कुछ कहा, जैसे कुछ प्रार्थना कर रही हो। इलिया ने एक हाथ उल्याना के कन्धे पर और दूसरा उसके घुटने पर रखते हुए बड़े यत्नपूर्वक बड़बड़ाते हुए अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट की—

"मैं जानता हूँ। प्रभु ईशु तुम्हारी रक्षा करें। मुझे अब अपने क़ब्रिस्तान में ही गाड़ना, शहर में नहीं। मैं वहाँ नहीं सोना चाहता। वे सब....।"

और फिर एक बार अपार पीड़ा से आर्त्त होकर वह अस्फुट स्वर में बोला—

"अह, लेकिन यह मेरी ग़लती थी, हे भगवान्........सारी ग़लती.... ।"

पादरी आया। वह एक लम्बा, ढालू कन्धोंवाला आदमी था, जिसकी आँखें करुण और दाढ़ी ईसामसीह जैसी थी।

"ठहरो पिता!" अर्नामोनोव ने कहा और एक बार फिर अपने बेटों की ओर उन्मुख होकर बोला—

"साथ-साथ रहना, तुम तीनों जायदाद का बँटवारा न करना! झगड़ना मत। आपस की दुश्मनी तुम्हें कहीं का न रक्खेगी। प्योत्र, तुम सबसे बड़े हो। तुम्हीं सब चीज़ों के लिए उत्तरदायी हो—सुनते हो? अब जाओ....।"

"निकिता।" बैमाकोवा ने उसे याद दिलाई।

"निकिता को प्यार करना। है कहाँ वह? जाओ....। फिर....। नतालिया तुम भी....।"

दोपहर बीतते ही जब सूरज अपने पूरे तेज से चमक रहा था, वह ख़ून की कमी से मर गया। वह तकिए के सहारे सिर उठाये लेटा था। उसके स्निग्ध मुख पर आक्रोश और चिन्ताओं के भाव अंकित थे। उसकी अधखिली आँखें छाती पर विनयपूर्वक बँधे हुए चौड़े हाथों की ओर विचारमग्न मुद्रा में घूर रही थीं।

निकिता को ऐसा लगा, मानों उसकी मृत्यु से सारे परिवार को उतना शोक और भय नहीं था जितना कि आश्चर्य। बैमाकोवा को छोड़कर वह और सबके अन्दर इस मन्द आश्चर्य की भावना को मन ही मन भाँप रहा था। बैमाकोवा मृत-पुरुष की बग़ल में मूक और अश्रु-रहित, एक स्तम्भित और बधिर प्रतिमा की तरह बैठी थी। उसके हाथ उसके घुटनों पर ढीले पड़े थे और उसकी आँखें बर्फ़ीली दाढ़ी पर पत्थर-जैसे कठोर मुख पर अविचल गड़ी हुई थीं।

कमरे में घूमते हुए, जहाँ उसका बाप लेटा था, और जहाँ निकिता और

एक मोटी-सी ईसाई भक्तिन बारी-बारी से प्रार्थना-पुस्तक में से प्रार्थनाएँ पढ़कर सुना रहे थे, प्योत्र ने कठोर और सीधी मुद्रा में अत्यधिक ज़ोर से बोलना शुरू किया। प्योत्र कभी जिज्ञासु भाव से अपने बाप के मुख की ओर देखता, कभी अपने ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाता या पलंग के सहारे दो-तीन मिनट तक खड़ा हो जाता और कभी सावधानी से कमरे से बाहर निकल जाता। फिर उसका भारी भरकम शरीर आँगन में और बग़ीचे के पेड़ों के बीच चलता-फिरता दिखाई देता, लगता जैसे वह किसी चीज़ की तलाश में हो।

अलेक्सी कामकाज में बेसुध हो रहा था। वह जनाज़ा उठाने की तैयारी में लगा था। वह कभी गाड़ी में बैठकर शहर की ओर भागता, फिर वहाँ से लौटकर आता। फिर भागता हुआ अपने बाप के कमरे में जाकर उल्याना से शव दफ़नाने और स्मारक-भोज के सम्बन्ध में रीति-रिवाजों और परम्पराओं की पूछताछ करता।

"ठहरो।" वह उत्तर देती और अलेक्सी हड़बड़ी और थकान की दशा में वहाँ से ग़ायब हो जाता। एक सहमी हुई सहानुभूति के भाव से नतालिया अन्दर जाती और अपनी माँ से कुछ खाने या एक प्याला चाय ही पी लेने का आग्रह करती। माँ चुपचाप सुनकर उत्तर देती—

"अभी ठहरो।"

जब तक अर्तामोनोव जीवित था, उस समय तक निकिता को कभी यह पता नहीं था कि वह अपने पिता से प्रेम करता है या नहीं। उसे भय ही लगा करता था—और इस भय से अछूते एक प्रशंसा के भाव का अनुभव किया था, जो इस व्यक्ति के उत्साहपूर्ण, कर्मठ जीवन के प्रति उसमें पैदा हुआ था। इस व्यक्ति ने निकिता के प्रति कभी स्नेह नहीं दिखाया। उसने वास्तव में शायद कभी यह भी नहीं जानना चाहा कि कुबड़ा ज़िन्दा है या मर गया। लेकिन अब निकिता को ऐसा लगा, जैसे केवल वह ही सच्चे हृदय और गहराई से अपने पिता से प्रेम करता हो। इस बलवान पुरुष की हठात् मृत्यु से उसके अन्दर एक हृदय को कचोटनेवाली एकरसता और निर्मम आघात की भावना ने ओत-प्रोत कर दिया था जिससे उसकी छाती के अन्दर कुछ ऐसी सिकुड़न सी पैदा होती जा रही थी कि उसे साँस भी लेना दूभर हो गया था। वह एक

कोने में सन्दूक़ पर बैठा प्रार्थनाएँ पढ़ने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहा था। प्रार्थना के परिचित शब्द मन्द गति से उसके मानस-पट पर चल रहे थे और उसकी आँखें कमरे में छाई गरम-गरम धुंध के बीच से उन सजीव, कम्पित पीले फूल के गुच्छों-जैसी जलती हुई मोमबत्तियों को घूर रही थीं। लम्बी मूँछों वाले चीनी आदमियों की आकृतियाँ कन्धों पर रक्खी बहँगियों में चाय के गठड़ों का सन्तुलन करते हुए लटकीं जादूगर की तरह दीवार से चिपकी हुई थीं। दीवार पर लगनेवाले काग़ज़ की हर पट्टी पर दो-दो की पाँत में अठारह चीनी थे। एक पंक्ति में वह ऊपर छत की ओर क़दम बढ़ाते हुए जा रहे थे, दूसरी में नीचे फ़र्श की तरफ़ आ रहे थे। दीवार पर एक जगह चाँदनी का स्निग्ध धब्बा-सा पड़ रहा था और यहाँ चीनी आदमी तेज़ी से ऊपर-नीचे क़दम बढ़ाते दिखाई दे रहे थे।

प्रार्थना के एकरस स्वर के बीच निकिता को अचानक एक धीमा, पर आकुल प्रश्न सुनाई दिया—

"क्या यह—सचमुच अब नहीं रहे, हे भगवान्!"

यह उल्याना की आवाज़ थी, जिसमें इतनी मार्मिक वेदना और पीड़ा थी कि नन ने पढ़ना छोड़कर जैसे माफ़ी माँगते हुए उत्तर दिया—

"वे अब नहीं रहे, प्यारी बहन, वे अब नहीं रहे। भगवान् की ऐसी ही इच्छा थी।"

यह बात बड़ी असह्य थी, निकिता उठा और अपने हृदय में नन के प्रति एक गहरे आक्रोश का भाव लिए बड़बड़ाता हुआ कमरे से बाहर चला गया।

तिखोन फाटक के पास एक बेंच पर बैठा था। वह एक लकड़ी के छिप्पड़ काट रहा था। एक-एक करके इन टुकड़ों को बालू में गाड़ता और पाँव से तब तक पीटता जब तक कि वह ग़ायब न हो जाते। निकिता चुपचाप उसके इस काम को देखता हुआ पास में बैठ गया। तिखोन के इस काम ने उसे बस्ती के एक डरावनी आकृतिवाले मूर्ख अन्तोनुश्का की याद दिला दी। वह साँवला, रूखे बालोंवाला एक नौजवान था, जिसका एक पाँव घुटने के पास टेढ़ा था और आँखें उल्लू-जैसी गोल थीं। अन्तोनुश्का एक छड़ी से बालू में घेरे बनाता और उन घेरों के अन्दर टहनियों और खपाचियों के छोटे-छोटे पिंजड़े बनाता।

उनको बनाने के बाद वह तुरन्त उन्हें अपने पाँव से कुचल देता और उन पर बालू फैलाते हुए नाकिया कर गाता जाता—

ओहो, ईसा जाग उठा, जाग उठा,
गाड़ी का पहिया खो गया खो गया।
बुतिर्मा, लोरी, वस्तरमा,
लोरी ईसा लोरी॥

"तो यह बात है, है न?" तिखोन ने पूछा। उसने अपनी गर्दन पर एक थप्पड़ जमाकर मच्छर मार डाला और घुटने से अपनी हथेली पोंछते हुए नदी के किनारे के विलो वृक्ष की एक डाली में उलझे चाँद पर एक दृष्टि डाली। फिर उसकी आँखें भट्टी के दैत्य आकार की ओर मुड़ गईं।

"इस साल मच्छर जल्दी पैदा हो गए।" वह शान्त भाव से कहता गया। "हाँ हाँ, मच्छर होते हैं और........।"

बात पूरी होने के पहले ही कुबड़े ने बाद की बात से आशंकित होकर उसे कठोर स्वर में स्मरण दिलाया—

"हाँ, लेकिन तुमने तो मच्छर को मार डाला।"

वह तेजी से उठकर जमादार के पास से चला गया। यह समझ में न आने पर कि वह क्या करे वह कुछ मिनटों के बाद ही वह फिर अपने बाप के कमरे में लौट आया और नन को पाठ से छुटकारा दे दिया। प्रार्थनाओं के शब्दों में अपने हृदय की समस्त व्यथा को उँड़ेलने में उसने नतालिया का कमरे में आना न सुना। अचानक नतालिया के स्वर की कोमल लहरी उसके पीछे गूँज उठी। वह जब कभी उसके निकट होती, तो वह हमेशा यह अनुभव करता कि वह कोई असाधारण बात कह या कर बैठेगा—सम्भवतः कोई भयानक बात। और इस गम्भीर और पुनीत अवसर पर भी उसे डर लगा कि कहीं उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके मुख से ऐसे शब्द न निकल जायँ। उसने अपना सिर इतना झुका लिया कि वह उसके कूबड़ की छाँह से ही छिप गया और जो स्वर उसके कण्ठ से यकायक फूट पड़ा था, उसे उसने दबाकर मन्द कर दिया। और तब उसे नवीं प्रार्थना के पाठ के समय दो अश्रु-मिश्रित कण्ठों के स्वर सुनाई दिये—

"देखो, मैंने उनका क्रॉस स्वयं धारण कर लिया है।"

"माँ, मेरी प्यारी माँ, मैं भी तो एकदम अकेली हूँ।"

निकिता ने इन अश्रुपूर्ण मन्द स्वरों को डुबाने के लिए प्रार्थनाओं का ज़ोर-ज़ोर से पाठ शुरू किया, लेकिन वह उन्हें सुनाई ही पड़ते रहे।

"भगवान् हमारे पापों को····।"

"एक विचित्र नीड़ में एकाकी, नितान्त एकाकी····।"

"मैं तुम्हारी दिव्य आत्मा से दूर कहाँ जाऊँ? या तुम्हारी दिव्य दृष्टि से भागकर कहाँ छिपूँ?"

निकिता पढ़ता गया, और भय और निराशा की इस पुकार के बीच उसकी स्मृति ने एक विषादपूर्ण कहावत याद दिला दी; 'प्रेम के बिना जीवन दुःख है, और जब प्रेम आता है तो दुःख दूना हो जाता है।' किञ्चित् शर्माते हुए उसे लगा कि नतालिया का दुःख उसके लिए सुख की आशा बन सकता है।

दूसरे दिन सुबह मेयर याकोव ज़ितीकिन के साथ गाड़ी में बैठकर बास्की बस्ती से बाहर चला गया। याकोव ज़ितीकिन की आँखें भावहीन थीं, और लोगों ने उसका नाम 'अधपका' रख दिया था। वह नाटे क़द का ऐसा गोल-मटोल और मुलायम-मुलायम-सा आदमी था जैसे सचमुच अधपके आटे का बना हो। लोग अर्तामोनोव के शव के सामने आकर अपना सिर झुकाते और उसके स्याह पड़ गये मुँह की ओर एक भयपूर्ण शंका की दृष्टि से देखते। स्पष्टतः उन्हें भी अर्तामोनोव की मृत्यु पर अचम्भा था। तब ज़ितीकिन ने अपने कटु तीखे स्वर में प्योत्र से कहा—

"लोग कहते हैं कि तुम अपने बाप को अपने क़ब्रिस्तान में दफ़नाने की सोच रहे हो—क्या यह सच है? इससे समूचे बस्ती का अपमान होगा, प्योत्र इलिच! गोया तुम हम लोगों से कोई सरोकार ही नहीं रखना चाहते, या हमारे साथ दोस्तों की तरह नहीं रहना चाहते—क्यों?"

अपने दाँत कटकटाते हुए अलेक्सी ने अपने भाई के कान में कहा—

"इन लोगों को पटक दो!"

"देखो बहन।" बास्की ने उल्याना पर कटाक्ष करते हुए कहा। "यह भी कोई तरीक़ा है? तुम हमें नाराज़ कर रही हो।"

ज़ितीकिन ने प्योत्र से प्रश्न पूछने शुरू कर दिये—

"हो सकता है, पादरी ग्लेब ने तुम्हें ऐसी ही सलाह दी हो, क्यों? नहीं-नहीं, इस बारे में अपना विचार बदल दो। तुम्हारे बाप इस इलाक़े में सबसे बड़े व्यवसायी थे। उन्होंने एक नये ढंग के उद्योग की नींव डाली थी, जिस पर आज सारी बस्ती को गर्व है। तुम्हारे फ़ैसले से तो स्प्रान्विक भी सहमत नहीं हो पाता। कहता है कि तुम सचमुच नास्तिक होगे, तभी तो ऐसा सोचते हो!"

वह बिना रुके ही और प्योत्र को अपनी बात कहने का कोई मौक़ा दिए बिना ही बकता गया। अन्त में जब प्योत्र ने किसी तरह अवसर पाकर उसे बताया कि यह उसके बाप की मर्ज़ी थी, तो ज़ितीकिन एकदम शान्त हो गया।

"जो भी हो, दफ़नाने के वक्त हम सभी लोग रहेंगे।"

और फिर सब लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि वह जो बातें कर रहा था, उनके लिए नहीं बल्कि किसी और उद्देश्य से वहाँ आया था। वह सरकता हुआ कमरे के उस कोने की ओर जा पहुँचा, जहाँ उल्याना को दीवार की ओर धकेलते हुए बास्कीं उसके कान में कुछ कह रहा था। लेकिन ज़ितीकिन के वहाँ पहुँचने से पहले ही उल्याना चिल्ला उठी—

"अरे भाई, तुम निरे अहमक़ हो! हटो, जाओ!"

उसके होंठ काँप रहे थे और उसकी भौंहें सिकुड़ रही थीं। गर्व से अपना सिर उठाकर वह प्योत्र से बोली—

"देखो, ये दोनों और पोमियालोव और वोरोपोनोव चाहते हैं कि मैं बात करके तुम भाइयों को इनके हाथ मिल बेचने के लिए राज़ी करूँ। इस मदद के लिए ये मुझे रिश्वत देने को तैयार हैं।"

"निकल जाओ....तुम लोग।" अलेक्सी ने दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा। ज़ितीकिन एक बनावटी ढंग से ही-ही हा-हा करता और बास्कीं को कोहनी से आगे धकेलता हुआ दरवाज़े से बाहर चला गया। बैमाकोवा धम् से सन्दूक़ पर बैठकर रोने लगी।

"ये लोग उनकी याद तक को मिटा देना चाहेंगे।"

अलेक्सी ने अपने बाप के मुख की ओर देखते हुए एक कटु गम्भीर स्वर में घोषणा की—

"मैं इन लोगों-जैसा होकर ज़िन्दा रहना नहीं चाहता। इससे तो मर जाना

ही अच्छा है।"

"सौदा पटाने का बड़ा अच्छा वक्त है।" प्योत्र बड़बड़ाया और उसने भी अपने बाप की ओर देखा।

नतालिया ने निकिता के पास आकर मृदु स्वर में पूछा—

"और तुम ? तुम क्यों कुछ नहीं कहते ?"

याद किया जाना कितना मधुर था! नतालिया से याद किये जाने में कितना मधुर आनन्द था! और वह अपने मृदु स्वर में ही उत्तर देते समय उल्लास की मुसकान छिपा न पाया—

"क्यों....तुम और मैं....!"

लेकिन विचारों में डूबी हुई वह सुनने से पहले ही दूसरी ओर मुड़ गई थी।

इलिया अर्तामोनोव के जनाज़े में बस्ती के सारे प्रमुख लोगों ने भाग लिया। दुर्बल और लम्बा, घुटी हुई ठोढ़ी और सफ़ेद कनपटियोंवाला स्प्रावनिक भी आया था। वह रेतीली सड़क पर प्योत्र के साथ शानदार ढंग से लँगड़ाकर चल रहा था। और उसने ठीक इन्हीं शब्दों में उससे दो बार कहा—

"श्रीमान् राजकुमार ज्योर्जी रान्स्की ने दिवंगत व्यक्ति की मुझसे बहुत अच्छी सिफ़ारिश की थी, और इसमें सन्देह नहीं कि उसका जीवन हर प्रकार से इस सिफ़ारिश के उपयुक्त था।"

लेकिन कुछ क्षणों बाद ही वह बोला—

"शव को उठाकर पहाड़ी पर ले जाना कठिन है!"

और वह भीड़ में से कराहता हुआ बाहर निकलकर एक देवदार की छाँह में खड़ा हो गया। उसके सफ़ाचट ओंठ सख़्ती से भिंचे हुए थे। नगर-निवासियों और मज़दूरों के समूह पर उसने इस तरह नज़र दौड़ाई, जैसे सैनिकों की परेड का निरीक्षण कर रहा हो।

आज का दिन उज्ज्वल था। चटकीली, हरी और पीली भूमि और मनुष्यों के रंगारंग जलूस पर, जो बालू के दो टीलों के बीच से धीरे-धीरे बढ़ता हुआ एक तीसरे टीले की ढलान पर चढ़ रहा था, सूरज बड़ी उदारता से अपनी जगमगाती किरणें बिखेर रहा था। इस जगह पहले से ही क्रॉस के अनेक चिह्न गड़े हुए थे। उनमें से कुछ की रेखाएँ स्वच्छ नीले आकाश की पृष्ठ-भूमि में स्पष्ट

उभर रही थीं और कुछ एक टेढ़े-मेढ़े पुराने देवदार की फैलती हुई शाखाओं के नीचे शरण ले रहे थे। लोगों के पैरों के नीचे खरखराकर बालू हीरों-सी जगमगा रही थी और पादरियों की प्रार्थनाओं के गम्भीर स्वर लोगों के सिर पर मँडराते हुए काँप रहे थे। सबसे पीछे मूर्ख अन्तोनुश्का उछलता और लड़खड़ाता चल रहा था। सफ़ाचट भौंहों के नीचे उसकी गोल-गोल आँखें ज़मीन पर टकटकी बाँधे हुए थीं। वह बार-बार सड़क के किनारे से सूखी टहनियाँ उठाने के लिए झुकता और उठाकर उन्हें अपनी कमीज़ के दामन में रखता जाता। वह भी तीखी आवाज़ में गा रहा था—

ओह, ईसा जाग उठा, जाग उठा
गाड़ी का पहिया खो गया, खो गया।

धर्मात्मा लोग अक्सर उसे यह गाना गाने पर मारते-पीटते। आज भी स्प्रान्विक ने उँगली उठाकर धमकाते हुए ज़ोर से कहा—

"चुप रह मूर्ख !"

बस्ती के लोग अन्तोनुश्का पर अपना स्नेह व्यर्थ ही न गँवाते, क्योंकि मोर्दोनी और चुवाशी होने के कारण उससे यह आशा नहीं की जाती थी कि वह सचमुच ईसामसीह के लिए अपने को यातना दे सकेगा। फिर भी वे सब उससे डरते। उनका विश्वास था कि वह दुर्भाग्य और अपशकुन का सूचक है और जब मृत्युभोज के समय वह अचानक ही अर्तामोनोव के आँगन में आ टपका और मेज़ों के बीच कूदता हुआ अर्थहीन चीत्कारें करने लगा—

"कुयातीर कुयातीर, घण्टाघर में शैतान घुसा है। ओहो, मेह बरसेगा, केयामास के काले आँसुओं से सब गीला हो जायगा !" तो वहाँ ऐसे भी लोग थे, जिन्होंने आपस में कानाफूसी की—

"अब तो निश्चय ही भाग्य अर्तामोनोव के परिवार का साथ न देगा।"

प्योत्र ने भी यह फुसफुसाहट सुनी। कुछ देर पश्चात् उसने देखा कि तिखोन व्यालोव ने उस मूर्ख को आँगन के कोने में पकड़ लिया है। उसने सुना कि जमादार उससे शान्त, पर कठोर स्वर में पूछ रहा है—

"केयामास क्या होता है ? तुम्हें नहीं मालूम ! अच्छा तो निकल जाओ यहाँ से ? जाओ, जाओ !"

....जिस तरह पहाड़ के ढलानों पर से पतझड़ की मटियाली नदियाँ तेज़ी से बहती हुई चली जाती हैं। वैसे ही एक वर्ष बीत गया। इस बीच उल्याना बैमाकोवा के बाल सफ़ेद हो गये और बुढ़ापे की उदास झुर्रियाँ उसकी कनपटी पर पड़ गईं। इसके सिवा और कोई महत्त्व की घटना नहीं हुई। अलेक्सी में भी बहुत प्रत्यक्ष परिवर्त्तन हो गया। उसका स्वभाव पहले से अधिक मृदु और कोमल हो गया, पर साथ ही उसके आचरण में एक अप्रिय ढंग की जल्दबाज़ी आ गई, जिससे लगता कि वह राह चलते लोगों को अपने उच्छृङ्खल परिहास और चुभते प्रश्नों से कोड़े लगाता जाता हो। व्यापार के प्रति उसके मुक्त और लापरवाही के भाव को देखकर प्योत्र को विशेष चिन्ता रहती। लगता जैसे वह कारख़ाने साथ उसी तरह खिलवाड़ कर रहा हो, जैसे कभी वह रीछ के साथ खिलवाड़ करता था और जिसे बाद में मार डाला था। उसके हृदय में ऐसी वस्तुओं के प्रति एक विचित्र कमज़ोरी थी जिनसे उच्च वर्ग के ज़मीन्दार अपने जीवन को अलंकृत करते थे। बैमाकोवा ने उसे जो घड़ी दी थी उसके अतिरिक्त उसने अपने कमरे में और अनेक बेकार की, पर देखने में आकर्षक, सजावट की चीज़ें जमा कर ली थीं। दीवार पर दाने गूँथकर काढ़ी हुई एक तस्वीर टँगी थी जिसमें एक घेरे में नाचती हुई लड़कियों का दृश्य था। अलेक्सी स्वभाव से मितव्ययी था, फिर क्यों उसने ऐसी बेकार चीज़ों पर पैसे गँवाए? इधर वह अधिक क़ीमती और शौकिया ढंग की पोशाक पहनने लगा था। वह अब अपनी काली नुकीली दाढ़ी की भी विशेष देख-भाल करने लगा था और अपने गालों को उस्तरे से साफ़ करता था जिससे वह दिन पर दिन किसान कम लगने लगा था। प्योत्र को अपने इस ममेरे भाई के आचरण में विदेशीपन और अस्पष्टता दिखाई पड़ने लगी। वह बढ़ते हुए अविश्वास से चुपचाप उसकी गति-विधि भाँपता रहता।

व्यापार के मामले में प्योत्र बहुत सावधानी से फूँक-फूँककर क़दम उठाता, जिस तरह वह और लोगों से व्यवहार करते समय हमेशा सावधान और सतर्क रहता। उसने अपनी चाल में जल्दबाज़ी की आदत डाली और वह अपनी भालू-जैसी आँखों को मटकाता हुआ इस तरह चोरी-चोरी काम पर जाता मानों उसे यह आशंका हो कि वह ग़ायब हो जायगा। कभी-कभी व्यापार की चिन्ताओं से थककर उसे महसूस होने लगता कि वह एक विचित्र उद्विग्न करनेवाले उतावले-

पन के उत्साहहीन बादलों में घिर गया हो। ऐसे क्षणों में उसे अपना कारखाना पत्थर के जन्तु-सा पर प्राणवान् दिखाई पड़ता। लगता कि यह जानवर झुका हुआ धरती से चिमटा हो। उसकी छाया ऐसी पड़ रही थी मानों वह उसके डैने हों और धुएँ के बादल उसकी झबरीली पूँछ हो। उसकी हिंस्र आकृति डरावनी लगती। दिन में कारखाने की खिड़कियाँ बर्फ़ीले दाँतों की तरह चमकतीं, जाड़ों की संध्या में ये दाँत तप्त लोहे के-से जान पड़ते, जो मानों क्रोध से लाल पड़ गये हों और तब लगता कि उस कारखाने का असली मन्तव्य और गुप्त उद्देश्य मीलों लम्बा लिनेन बुनना नहीं बल्कि कुछ और है, जो प्योत्र अर्तामोनोव के विरुद्ध है।

पिता की बरसी के दिन क़ब्र पर फूल चढ़ाने के बाद सारा परिवार अलेक्सी के खुले सुन्दर कमरे में एकत्र हुआ। किंचित घबराकर उसने बोलना शुरू किया—

"पिता की यह इच्छा थी कि हम लोग आपस में कभी लड़ें-झगड़ें नहीं और उनकी नसीहत ठीक थी। यहाँ हम युद्ध-बन्दियों की तरह हैं।"

निकिता ने देखा कि उसके पास बैठी नतालिया चौंक पड़ी और उसने अलेक्सी पर आश्चर्यभरी दृष्टि डाली है। अलेक्सी फिर भी मृदु स्वर में कहता गया—

"किन्तु अगर हमें झगड़ना नहीं है तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि हम एक-दूसरे के मार्ग में बाधा बनकर खड़े हों। यह व्यापार हम सबके लिये है पर हमारे जीवन हममें से प्रत्येक के लिए अपने-अपने हैं, ठीक है न?"

"कहे चलो।" प्योत्र ने अपने भाई के सिर के ऊपर किसी चीज़ की ओर घूरते हुए सावधानी से कहा—

"तुम सभी जानते हो कि मैं ओर्लोवा की लड़की के साथ रहता आया हूँ। अब मैं उससे शादी करना चाहता हूँ। निकिता तुम्हें याद है—जब तुम पानी में गिरे थे, उस समय केवल उसको ही इससे दुःख हुआ था?"

निकिता ने सिर हिलाकर हामी भरी। वह आज तक कभी नतालिया के इतने निकट नहीं बैठा था। उसे इतना सुखद लग रहा था कि वह न तो वहाँ से हिलना चाहता था और न दूसरों की बात ही सुनना चाहता था और जब किसी बात पर नतालिया चौंक पड़ी और उसकी कोहनी उसे छू गई तो वह मेज़ के नीचे नतालिया के घुटनों की ओर देखता हुआ मुस्करा दिया।

"मैं सोचता हूँ कि भाग्य ने उसे मेरे लिए ही बनाया है।" अलेक्सी ने कहा—"उसके साथ रहकर मैं अपने जीवन को कुछ और ही बना सकता हूँ। मैं उसे यहाँ रहने के लिए नहीं लाना चाहता। मुझे डर है कि तुम सब हिल-मिलकर नहीं रह सकोगे।"

अपनी दुःखभरी दृष्टि को ऊपर उठाते हुए उल्याना बैमाकोवा ने अलेक्सी का समर्थन किया—

"मैं उसे भलीभाँति जानती हूँ। कसीदा काढ़ने में वह अपना सानी नहीं रखती और फिर पढ़ी-लिखी भी है। बचपन से ही वह अपने शराबी बाप का पेट पालती आई है। पर वह अपनी ही मर्ज़ी पर चलना पसन्द करती है। मैं भी सोचती हूँ कि नतालिया से उसकी निभ न सकेगी।"

"मैं तो सबके साथ निभा लेती हूँ।" नतालिया बुरा मानकर बोली। उसके पति ने उसकी ओर देखते हुए अपने भाई से कहा—

"हाँ, यह तुम्हारा निजी मामला है।"

अलेक्सी ने बैमाकोवा से उसे अपना मकान बेच देने को कहा—

"तुम उसे काहे के लिए चाहते हो?"

प्योत्र ने अपने भाई का समर्थन करते हुए बैमाकोवा से कहा—

"तुम तो अब हमारे साथ ही रहोगी!"

"अच्छा तो, मैं जाकर ओल्गा से कह दूँ।" अलेक्सी ने कहा। जब वह चला गया तो प्योत्र ने निकिता का कन्धा हिलाते हुए पूछा—

"क्या सो रहे हो? कौन-सी बात सोच रहे हो?"

"अलेक्सी ठीक कर रहा है।"

"तुम्हारा भी यही ख़याल है? अच्छा देखेंगे! माँ, तुम क्या सोचती हो?"

"इसमें तो कोई शक नहीं कि उससे शादी करके वह उचित ही करेगा! वैसे तो यह कौन कह सकता है कि उनमें आपस में कैसी निभेगी? वह अजीब तरह की लड़की है—झक्की स्वभाव की।"

"ऐसी रिश्तेदार पाने के लिए धन्यवाद।" प्योत्र ने विकृत हँसी हँसकर उत्तर दिया।

"हो सकता है कि मैंने ग़लत शब्द का प्रयोग किया हो।" उल्याना ने धीमे

से कहा, मानों वह एक अँधेरे स्थान की ओर घूरकर देख रही हो, जहाँ हर चीज़ हलकोरे खाकर और एक दूसरे में विलीन होकर उसकी दृष्टि की पकड़ बचा जाती हो।

"वह बड़ी चालाक है। उसके बाप के पास बहुत-सी क़ीमती चीज़ें थीं और वह उन्हें छिपाने मेरे पास रख जाती थी कि उसका बाप उन्हें बेचकर शराब न पी डाले। रात में अल्योशा इन चीज़ों को मेरे पास ले आता और तब मैं उसे भेंट देने का बहाना करती। यहाँ पर यह जो तमाम चीज़ें हैं वह ओल्गा की ही हैं। यही उसका दहेज़ है। इनमें से कुछ चीज़ें क़ीमती हैं। वैसे सब मिलाकर कहना चाहिए कि मुझे वह बहुत अच्छी नहीं लगती—वह ज़रूरत से ज़्यादा हठी लड़की है।"

प्योत्र अपनी सास की ओर पीठ किए खिड़की के पास खड़ा था। बाहर बग़ीचे में स्टार्लिङ्ग चहचहा रही थीं। तिखोन के शब्द उसके मन में गूँज उठे—

"मुझे स्टार्लिङ्ग चिड़ियाँ पसन्द नहीं। इनकी सूरत शैतान से मिलती है।" यह तिखोन बड़ा ही मूर्ख है। वह इतना मूर्ख है कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

उसी धीमे उदासीन स्वर में प्रत्यक्षतः अपने विचारों में डूबी हुई बैमोकोवा ने ओल्गा ओर्लोवा की माँ की कहानी कह सुनाई, वह एक ज़मींदार की पत्नी थी—बेशर्म औरत, जो अपने पति के रहते ओर्लोवा के साथ भाग आई थी और उसके साथ पाँच साल तक रही थी।

"ओर्लोवा कारीगर था। वह कुर्सी-मेज़ बनाता, घड़ियों की मरम्मत करता और लकड़ी में आकृतियाँ खोदता। उनमें से एक मेरे घर भी रक्खी है—नंगी औरत की आकृति। ओल्गा का विचार है कि यह उसकी माँ की मूर्ति है। वे दोनों ही शराबी थे और जब ओल्गा की माँ का पहला पति मर गया तो इन दोनों ने शादी कर ली और उसी साल वह शराब के नशे में चूर नहाने गई और डूब मरी।"

"उसी को प्रेम कहते हैं।" नतालिया ने अचानक कहा। इन अशोभनीय शब्दों को सुनकर उल्याना ने अपनी पुत्री की ओर धिक्कार-भरी दृष्टि से देखा और प्योत्र ने एक संक्षिप्त हँसी हँसकर उत्तर दिया—

"हम नशाख़ोरी के बारे में बात कर रहे थे, प्रेम के बारे में नहीं!"

एक चुप्पी-सी छा गई। निकिता ने देखा कि माँ की कहानी ने नतालिया को उत्तेजित कर दिया है। उसकी उँगलियाँ ऐंठने लगी थीं और वह मेज़पोश की झालर को नोच रही थी। उसके सरल, दयालु मुख पर लाली दौड़ गई थी और उसकी मुद्रा से ऐसा आक्रोश टपक रहा था जैसा उसने पहले कभी न देखा था। रात को खाने के बाद नतालिया की खिड़की के नीचे लिलैक की झाड़ियों के बीच बैठे निकिता ने ऊपर के कमरे से आती हुई आवाज़ें सुनीं। प्योत्र गम्भीर स्वर में कह रहा था—

"अलेक्सी तेज़ आदमी है। वह होशियार है!"

हठात् नतालिया रो पड़ी, हृदयविदीर्ण करनेवाले स्वर में—

"तुम सब चालाक हो। अकेली मैं ही बेवकूफ़ हूँ। उसने ठीक ही कहा था— हम यहाँ युद्ध के वन्दियों की तरह हैं! मैं ही तुम्हारे घर में वन्दी हूँ।"

भय और करुणा से निकिता की साँस फूलने लगी। उसने दोनों हाथों से बेंच पकड़ ली क्योंकि कोई अज्ञात् शक्ति उसे उकसा रही थी, किसी अज्ञात् दिशा में खींचे लिए जा रही थी और ऊपर से तेज़ होते हुए स्वर में उस स्त्री का क्रन्दन जिसे वह प्यार करता था, आकर उसके अन्दर तप्त, उमड़ती हुई आशाओं के तूफ़ान उठा रहा था।

नतालिया उस समय अपने बाल बाँध रही थी, जब उसके पति के शब्दों ने अचानक उसके अन्दर आग की लपट भड़का दी थीं। वह दीवार के सहारे झुककर अपने हाथों को दबाने लगी जो मारने और नोचने के लिए खुजला रहे थे। सूखी सुबकियों में शब्द लुढ़कते निकल रहे थे। उसे होश नहीं था कि वह क्या बके जा रही थी और न उसे अपने हत्बुद्धि हो गये पति का क्रोध से भरा चीख़ना-चिल्लाना ही सुनाई पड़ रहा था। वह चिल्ला-चिल्लाकर कहती जा रही थी कि वह इस घर में उन लोगों के बीच बस एक अजनबी की तरह है, कोई उसे प्यार नहीं करता, वह घर में बाँदी-सी है।

"तुम मुझे प्यार नहीं करते। कभी किसी बारे में तुम मुझसे बात नहीं करते। तुम मेरे ऊपर हमेशा पत्थर की तरह बरस पड़ते हो—बस! तुम मुझे प्यार क्यों नहीं करते? मैं तुम्हारी पत्नी हूँ या नहीं? मेरे अन्दर कौन-सी बुराई है, मालूम तो हो! माँ तुम्हारे बाप को कैसा प्यार करती थी। कभी-कभी मेरा दिल ईर्षा से

फटने लगता है।"

"तो फिर तुम भी मुझसे उसी तरह प्यार करो।" प्योत्र ने कहा। वह खिड़की के दासे पर बैठा कमरे के अँधेरे कोने में खड़ी अपनी पत्नी की विकृत मुख-मुद्रा को देख रहा था। उसने सोचा कि नतालिया की बातें मूर्खतापूर्ण हैं, पर उसने आश्चर्य से अनुभव किया कि उसका दुःख उचित है—उसकी समझ में आ गया कि नतालिया की व्यथा मूर्खतापूर्ण नहीं है। और इस व्यथा में सबसे ख़राब बात यह थी कि इसमें यह डर छिपा हुआ था कि मनमुटाव की आग निरन्तर सुलगती रहेगी और उसे नई-नई चिन्ताओं और व्याधियों का सामना करना पड़ेगा, जब कि इस समय भी उसके सिर पर आवश्यकता से अधिक चिन्ताएँ सवार थीं।

रात के लबादे में उसकी पत्नी की श्वेत आकृति इस प्रकार हिल-डुल और काँप रही थी कि उसे लगा कि वह अवश्य ही पिघलकर बह जायेगी। उसका स्वर कभी उठता, कभी गिरता; वह कभी अस्फुट बड़बड़ाने लगती तो कभी ज़ोर-ज़ोर से चीखें मारने लगती, मानों वह झूले पर चढ़ी पेंगे मार रही हो—उड़कर आसमान में पहुँच जाती हो और फिर नीचे आ जाती हो।

"देखो तो अलेक्सी अपनी प्रेमिका से कितना प्यार करता है और फिर ख़ुद उससे प्यार करना भी तो स्वाभाविक है। उसका चेहरा सदा खिला रहता है और वह बड़े आदमियों जैसे कपड़े पहनता है, और तुम? किसी के लिए कभी एक भला शब्द नहीं। कभी तुम्हारे चेहरे पर हँसी की रेखा नहीं देखी। मैं अलेक्सी की अच्छी मित्र बन सकती थी, लेकिन उससे कुछ कहने का मुझे कभी साहस ही नहीं हुआ, क्योंकि तुमने जान-बूझकर उस बेहूदे, चालाक कुबड़े को मेरे ऊपर जासूस बनाकर छोड़ रखा था।"

इस आघात से मर्माहत निकिता उठकर सिर झुकाए बगीचे की ओर चल पड़ा। वृक्षों की टहनियाँ उसके कन्धों से अड़तीं लेकिन वह यन्त्रवत् उन्हें हटाता हुआ आगे बढ़ता गया।

प्योत्र भी उठ खड़ा हुआ। दर्प से आगे बढ़कर उसने अपनी पत्नी के बाल पकड़ लिये और एक झटके से उसका सिर झुकाकर वह उसकी आँखों में घूरने लगा।

"अलेक्सी से ?" उसने भारी पर धीमे स्वर में पूछा। अपनी पत्नी की बातें सुनकर वह इतना स्तम्भित हो गया था कि उस पर क्रोध करना संभव न रहा था और न उसे पीटने की इच्छा ही उसमें जग पाई। धीरे-धीरे उसके मन में यह बात स्पष्ट होती गई कि उसकी पत्नी के कहने में सचाई है कि उसका जीवन सचमुच उदास और नीरस है। उसे भलीभाँति मालूम था कि उदास जीवन कैसा होता है; किन्तु इस समय तो नतालिया को किसी न किसी तरह शान्त करना था और उसे चुप करने के लिए उसने उसका सिर दीवार से टकराते हुए मृदु स्वर में पूछा—

"क्या कहती थी, मूर्ख ? अलेक्सी से ?"

"छोड़ दो मुझे—छोड़ दो—नहीं तो चीख़ पड़ूँगी।"

अपने ख़ाली हाथ से प्योत्र ने नतालिया का गला पकड़ लिया और उसे दबाने लगा। नतालिया का चेहरा सुर्ख पड़ गया और उसका दम घुटने लगा।

"कञ्जरी कहीं की।" कहते हुए उसे दीवार की ओर धकेलकर प्योत्र चल दिया। नतालिया झूमकर उसके आगे से निकलकर पालने की ओर बढ़ी जहाँ उसकी बच्ची बड़ी देर से पड़ी रिरिया रही थी। प्योत्र को लगा जैसे वह उसकी छाती पर पाँव धरकर निकल गई हो। घने नीले आकाश का वह टुकड़ा जो खिड़की में से नज़र आ रहा था, उसकी आँखों के आगे थरथराने लगा और तारे उछलने-कूदने लगे। कनखियों से उसने देखा कि उसकी पत्नी पास में ही बैठी है। बिना अपनी जगह से हिले-डुले ही वह उसके तमाचा मार सकता था। वह जड़वत् गुमसुम बैठी थी, लेकिन आँखों से चुपचाप आँसू बहकर उसके गालों को भिगो रहे थे। अपनी नन्हीं बच्ची को दूध पिलाते हुए वह आँसुओं की झिल्ली में से कोने की ओर टकटकी बाँधे देख रही थी। उसे इस बात का पता भी न चला कि बच्ची को दूध पीने में कठिनाई हो रही है। उसके मुख में से स्तन बार-बार निकल जाता था और वह हवा में ओंठ चला रही थी और निरुपाय रिरिया रही थी। प्योत्र ने जैसे एक दुःस्वप्न से जागकर कहा—

"तुम बच्ची को अच्छी तरह दूध भी नहीं पिला सकतीं ?"

"मैं घर में एक मक्खी की तरह हूँ।" नतालिया बड़बड़ाई। "पंखहीन मक्खी-सी।"

"वैसे मैं भी तो अकेला हूँ। मेरे-जैसे दो प्योत्र अर्तामोनोव तो नहीं हो सकते।"

उसके मन में एक धुँधला-सा अनुभव हुआ कि वह जो कहना चाहता था वह यह नहीं था—इससे भी अधिक, उसके इस कथन में कुछ असत्य था। अपनी पत्नी को शान्त करने के लिए और अपने ऊपर छाये ख़तरे से बचने के लिए उसे चाहिए कि वह सत्य को उसके सामने रख दे— उस सरल और स्पष्ट सत्य को जो विवाद से परे है—ताकि वह उसे तुरन्त समझ जाय और उसे मान ले। रह-रहकर उसे अपनी मूर्खतापूर्ण शिकायतों और आँसुओं से तंग न किया करे, औरतों के उन ढंगों से जो इसके पहले उसमें कभी नहीं थे। पालने में बच्ची को सुलाती हुई नतालिया की लापरवाह भोंडी हरकतों को देखते हुए प्योत्र ने कहा—

"मुझे अपने कारोबार की चिन्ता करनी पड़ती है! एक कारख़ाना है—यह नाज बोना या आलू गाड़ना नहीं है, बड़ी चीज़ है। पर तुम्हें किस बात की परेशानी है?"

पहले तो उसका स्वर कठोर था, प्रभावपूर्ण, जिसके द्वारा वह इस मायावी सत्य को पकड़ लेना चाहता था, किन्तु वह उसके हाथ न आया और अन्त में उसका स्वर क्षीण, विनयपूर्ण हो गया।

"कारख़ाना कोई साधारण चीज़ नहीं है।" उसने फिर कहा। उसे लगा कि उसके पास शब्दों का टोटा पड़ गया है और अब कुछ कहने को नहीं रहा। उसकी पत्नी पालने को झुलाती हुई उसकी ओर पीठ किये शान्त खड़ी थी। उसको छुटकारा दिलाने के लिए इसी समय तिखोन व्यालोव ने धीमे शान्त स्वर में पुकारा—

"प्योत्र इलिच! अरे सुनो तो!"

"क्यों, क्या बात है?" उसने खिड़की के पास जाकर पूछा।

"ज़रा जल्दी बाहर तो आओ।" आदेशात्मक स्वर में कहा।

"जंगली!" प्योत्र बड़बड़ाया और अपनी पत्नी की ओर मुड़कर ताना कसते हुए बोला। "देखा! रात को भी चैन नहीं मिलता और तुम यहाँ खड़ी बिसूर रही हो।"

बरामदे में उसे तिखोन मिल गया। उसका सिर नंगा और आँखें जल्दी-जल्दी झपक रही थीं। चाँदनी फैले आँगन में चारों ओर एक नज़र फेंककर उसने अत्यन्त धीमे स्वर में कहा—

"निकिता इलिच ने अभी फाँसी लगाने की कोशिश की थी।"

"क्या ? क्या कहा तुमने ?"

और प्योत्र बरामदे की सीढ़ी पर धम् से बैठ गया, मानो उसके नीचे से ज़मीन खिसक गई हो।

"अरे तुम बैठ क्यों गये ? आओ, वह तुम्हें बुला रहा है।"

प्योत्र उठा नहीं, उसने केवल अस्फुट स्वर में पूछा—

"उसने ऐसा क्यों किया ?"

"उसे अब होश आ गया है। जब तक होश में न आया, तब तक मैं उसके सिर पर पानी छोड़ता रहा। चलो, चलें।"

तिखोन ने अपने मालिक को बाँह पकड़कर उठाया और उसे बग़ीचे में खींच ले गया।

"ग़ुस्लख़ाने के कपड़ा बदलनेवाले कमरे में उसने फाँसी लगाई थी। अटारी के शहतीर में रस्सी बाँध कर....।"

प्योत्र ने यकायक रुककर फिर कहा—

"ऐसा क्यों किया उसने ? क्या उसे बाप की याद सता रही थी या क्या बात थी ?"

तिखोन भी रुक गया।

"उसकी हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि उसने भावावेश में उसके कपड़े चूम लिये।"

"कौन से कपड़े ? क्या बक रहे हो ?"

अपने नंगे पाँवों को झाड़ते हुए प्योत्र ने तिखोन के कुत्ते की ओर घूरकर देखा जो झाड़ियों में से निकलकर पूँछ हिलाता हुआ उसकी ओर जिज्ञासा की दृष्टि से देख रहा था। प्योत्र को अपने भाई के पास जाने से डर लग रहा था। उसे लगा जैसे उसके अन्दर शून्य ही शून्य है। और उसकी समझ में न आया कि वह निकिता से क्या कहेगा।

"तुम तो अंधे हो।" तिखोन झल्लाया, प्योत्र उसकी बात सुनने के लिए ख़ामोश रहा।

"उसके कपड़े, नतालिया यव्सीयेव्ना के—जो दूसरे कपड़ों के साथ सूखने के लिए बाहर टँगे थे।"

"लेकिन उसने किया क्या....ठहरो!"

प्योत्र ने लात मारकर कुत्ते को भगा दिया। यकायक एक स्त्री का पेटी-कोट चूमते हुए अपने भाई की उकड़ूँ कुबड़ी आकृति उसकी आँखों में फिर गई। यह कल्पना हास्यास्पद थी, फिर भी उसे घृणा से थूकना पड़ा। फिर हठात् एक तीव्र वेदना पहुँचानेवाले विचार ने उसके हृदय पर आघात करके उसे विमूढ़ बना दिया। उसने तिखोन को कन्धों से पकड़ ज़ोर से झक-झोरते हुए दाँत पीसकर पूछा—

"क्या उसने चूमा? तुमने देखा उसे? बोलो!"

"मैं सब कुछ देखता हूँ। नतालिया यव्सीयेव्ना को इसका पता भी नहीं।"

"तुम झूठ बोलते हो!"

"मैं क्या झूठ बोलूँगा। मुझे तुमसे कुछ पाने की ख़्वाहिश नहीं है।"

और तब तिखोन ने संक्षेप में अपने मालिक को उसके भाई की पूरी शोक-कथा कह सुनाई। वह जैसे एक कुल्हाड़ी से धुंध काटकर खिड़की बना रहा हो। प्योत्र को लगा कि तिखोन सच बोल रहा है। सचमुच में अपने भाई की नीली आँखों की दीठ से, नतालिया के किसी काम आने की उत्सुकता से, उसके प्रति उसकी क्षुद्र, पर सतत उत्कण्ठा से उसे एक धुँधला-सा आभास तो पहले भी हुआ था।

"तो यह बात है।" सोचते हुए वह बड़बड़ाया। "मैं इतना काम में फँसा रहा कि इसका अनुमान भी न कर पाया।"

उसने तिखोन को आगे धकेलते हुए कहा—

"जल्दी चलो।"

वह नहीं चाहता था कि निकिता की पहली नज़र उस पर ही पड़े। स्नानगृह के नीचे दरवाज़े में से घुसते हुए, अँधेरे में अपने भाई को अभी बिना देख पाये ही उसने तिखोन के पीछे से काँपती आवाज़ में चिल्लाकर पूछा—

"तुम्हारे सिर पर यह कैसा भूत सवार हुआ, निकिता ?"

कुबड़े ने कोई उत्तर नहीं दिया। खिड़की के सहारे रखी बेंच पर वह लेटा हुआ था और कठिनाई से ही दिखाई पड़ रहा था। धुँधली रोशनी केवल उसकी टाँगों और पेडू पर पड़ रही थी। कुछ देर बाद प्योत्र को लगा कि निकिता उठकर दीवार के सहारे अपना कूबड़ लगाये सिर झुकाकर बैठा हुआ है। गर्दन से लेकर नीचे की सिलाई तक उसकी कमीज़ फटी थी, पसीने से तर वह उसके शरीर से चिपकी हुई थी। उसके बाल भी गीले थे और उसके गाल पर एक घने दाग़ से गीली किरणें फैल रही थीं।

"यह क्या है—ख़ून ? क्या गिर गये थे ?" प्योत्र ने आहिस्ता से पूछा।

"नहीं, घबड़ाहट में मुझसे यह चोट लग गयी।" तिखोन ने मूर्खों की तरह ज़ोर से उत्तर दिया और एक ओर को खिसक गया।

निकिता के पास जाने में प्योत्र को भय लगा। वहीं खड़े-खड़े अपने कान की लौर मलते हुए भर्त्सना और धिक्कारभरे शब्दों में वह बोलता रहा और स्वयं अपने ही शब्दों को ध्यान लगाकर सुनता रहा मानों कोई अजनबी बोल रहा हो—

"कितने शर्म की बात है, भाई ! तुमने पाप किया। यह भी कोई ढंग है !"

"जानता हूँ।" निकिता ने भारी स्वर में कहा। उसकी आवाज़ भी एक अजनबी की आवाज़ थी। "मैं यह बात सह नहीं सका। मुझे किसी मठ में चला जाने दो। मैं वहाँ साधना करूँगा। और सुनो ! अपने पूरे हृदय से तुमसे एक आग्रह करता हूँ...."

वह ज़ोर-ज़ोर से खाँसने लगा, फिर कुछ न बोला।

द्रवित होकर प्योत्र उसे फिर धिक्कारने लगा। इस बार उसका स्वर स्नेह-पूर्ण और कोमल था। अन्त में उसने कहा—

"रही नतालिया की बात, तो इसमें शक नहीं कि शैतान तुम्हें गुमराह कर रहा था।"

"हाय रे, तिखोन !" निकिता ने फूटकर कहा। "क्या मैंने तुम्हारे निहोरे नहीं किये थे तिखोन कि अपना मुँह बन्द रखना ! अब ईसा के नाम पर कम से कम नतालिया को तो यह न बताना ! वह मेरे ऊपर हँसेगी या कौन जाने

उसे बुरा लगे। मेरे ऊपर दया करो! ज़िन्दगी भर मैं तुम्हारे लिए भगवान् से दुआएँ माँगता रहूँगा। उससे न कहना, कभी न कहना। हाय रे तिखोन, यह सब तुम्हारी करनी है।"

वह प्रलाप करता गया। उसका निश्चल मुख अस्वाभाविक रूप से सीधा उठा हुआ था। यह दृश्य भी भयानक था। तिखोन ने कहा—

"अगर आज की यह घटना न होती तो मैं अपना मुँह बन्द ही रखता। नतालिया को मैं कुछ नहीं बताऊँगा।"

और अधिक द्रवित होकर और अपनी ही भावना से किंचित लजाकर प्योत्र ने दृढ़तापूर्वक वचन दिया—

"क्रॉस की शपथ लेकर वायदा करता हूँ कि वह कुछ न जान पायेगी।"

"धन्यवाद! और मैं अब मठ में चला जाऊँगा।"

निकिता मौन हो गया, मानों नींद की गोद में जा गिरा हो।

"क्या दर्द हो रहा है?" उसके भाई ने पूछा। कोई उत्तर न पाने पर उसने फिर कहा—

"तुम्हारी गर्दन में—क्या दर्द है?"

"नहीं, ठीक है।" निकिता ने भारी स्वर में उत्तर दिया। "अब तुम जाओ।"

"इसे छोड़ना मत।" द्वार की ओर जाते हुए प्योत्र ने कान में कहा।

किन्तु बगीचे में आकर जब उसने पसीजती धरती की गर्म सोंधी गन्ध की गहरी साँस ली तो उद्विग्न करनेवाले विचार का ज्वार उसके कोमल भावों को अपने वेग के साथ बहा ले गया। वह सँभाल-सँभाल कर पाँव रख रहा था ताकि पगडंडी की कंकरिया नीचे खरखर न करें। उसे अथाह शान्ति चाहिए थी, नहीं तो वह अपने इन विचारों को व्यवस्थित नहीं कर पायेगा। ये आक्रामक विचार जो अपनी अतिशयता के कारण ही भयावह लग रहे थे, उसके अन्तर से नहीं उठे थे, किन्तु रात्रि के उदासी भरे अन्धकार में उड़ते हुए चमगादड़ों की तरह बाहर से आक्रमण कर रहे थे। एक के बाद एक वह इतनी तेज़ी से उठते चले आ रहे थे कि प्योत्र उन्हें पकड़ न पाता, उन्हें शब्दों में बाँध न पाता, केवल उनकी जटिल शृंखला के फन्दों, गाँठों और आकृतियों पर ही दृष्टि डाल पाता था। उन्होंने एक पेचदार घेरे में उसे, नतालिया, अलेक्सी, निकिता,

तिखोन—इन सबको लपेटकर इतनी तेज़ी से चक्कर में घुमा रखा था कि किसी को भी पहचान लेना दुष्कर था। और वह स्वयं इस आवर्त्त के केन्द्र में फँसा था, अकेला। शब्दों में तो उसने अत्यन्त सरल रूप में ही सोचा—

"नतालिया की माँ को मुझे जल्द ही घर में बुलाकर रखना होगा और अलेक्सी को बाहर करना होगा। नतालिया के प्रति थोड़ा-सा मृदु होना पड़ेगा। 'इसी को तो प्रेम कहते हैं।' लेकिन उसने प्रेम के कारण तो फाँसी नहीं लगाई, वह तो कूबड़ के कारण थी। बड़ी अच्छी बात है कि वह भक्तिपथ की शपथ लेना चाहता है। हाँ, हाँ, यह बड़ी अच्छी बात है। तिखोन निरा मूर्ख है। उसे चाहिए था कि मुझे पहले ही बता देता।"

किन्तु इस बात का उन विचारों से क्या सम्बन्ध था जो अपनी शब्दहीन अवस्था में पकड़ में न आते थे और जिन्होंने उसे इतना उद्विग्न और भयभीत कर दिया था कि वह रात्रि के घने गीले अँधेरे में आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था? दूर पर मिल के मज़दूरों की बस्ती पर करुण गीत की क्षीण स्वर-लहरी बह रही थी। मच्छर भिनभिना रहे थे। प्योत्र अर्तामोनोव को एक बात, साफ़-साफ़ सुझाई दी कि उसे अपनी उद्विग्नता पर क़ाबू पा लेना चाहिए और जल्द ही। यकायक उसे पता चला कि वह अपने शयन-कक्ष की खिड़की के नीचे के लिलेक-कुंज में पहुँच गया है। वहाँ वह बेंच पर बड़ी देर तक अपने घुटनों पर कोहनी टेके और हाथों में मुँह छिपाये ज़मीन की काली मिट्टी की ओर नीचे टकटकी बाँधे बैठा रहा। उसे लगा कि ज़मीन साँस ले रही थी और विचलित हो रही थी मानो धँसने ही वाली है।

"निकिता ने बालू पर क़ाबू करके उसे किस तरह सरसब्ज़ बना दिया, यह सोचकर आश्चर्य होता है। शपथ लेने के बाद वह मठ के बग़ीचों में काम करेगा। वह स्वभाव से ही ऐसा है।"

उसने अपनी पत्नी को आते हुए नहीं देखा, इसलिए जब उसकी श्वेत आकृति उसकी दृष्टि में यकायक आ पड़ी तो वह घबराकर उछल पड़ा, मानो वह पृथ्वी के गर्भ से निकल पड़ी हो। लेकिन नतालिया के परिचित स्वर ने उसकी घबराहट एक सीमा तक दूर कर दी—

"भगवान् के लिए नाराज़ होने पर मुझे माफ़ कर दो।"

"आह, भगवान् स्वयं माफ़ कर देगा। मैं भी तो नाराज़ हुआ था।" उसने उदारतापूर्वक उत्तर दिया। यह देखकर उसे ख़ुशी थी कि उसकी पत्नी स्वयं उसके पास आई है और अब उसे कुछ देर पहले की लड़ाई से पैदा खाई को पाटने के लिए कोमल शब्दावली नहीं ढूँढ़ना पड़ेगी।

वह सीधा होकर बैठ गया और नतालिया सशंकित उसकी बग़ल में बैठ गई। हाँ, उसे अब नतालिया को आश्वस्त करने के लिए कुछ करना ही पड़ेगा। वह बोला—

"मुझे मालूम है कि यहाँ तुम्हारा मन नहीं लगता। हमारे घर में दिलचस्पी का कोई सामान भी तो नहीं। आये भी कहाँ से? पिता को अपने काम से ही दिलचस्पी थी। उनका विचार था कि न्यायी नाम की चीज़ होती ही नहीं। हम सब मज़दूर हैं, भिखमंगे—और भद्रवर्ग से अलग। हम सब काम के लिए ही जीते हैं और काम ही नज़र आता है, हम लोग नहीं।"

उसने चुन-चुनकर शब्दों का प्रयोग किया ताकि मुँह से कोई ऐसा शब्द न निकल जाय जो अवसर के अनुकूल न हो और अपने ही शब्दों को सुनकर उसने सोचा कि इस समय उसने एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, एक व्यवसायी और वास्तविक स्वामी की-सी बात की है। फिर भी उसे लगा कि ये सारे शब्द अवास्तविक थे, उसके विचारों के ऊपरी तल को छूकर ही फिसल रहे थे और उनको उद्घाटित करने या उनकी गहराई में प्रवेश करने में असमर्थ थे। और उसे लगा जैसे वह एक कगार पर बैठा है, जहाँ कोई और खड़ा है जो किसी भी क्षण धक्का मारकर उसे ढकेल सकता है—कोई ऐसा व्यक्ति जो उसकी बातें सुन रहा है और उसके कान में कह रहा है—

"यह सत्य नहीं है।"

इसी समय उसकी पत्नी ने उसके कन्धे पर सिर रखकर अस्फुट स्वर में कहा—

"जो भी हो, मुझे तो आजीवन तुम्हारे साथ ही रहना है। तुम यह क्यों नहीं समझ पाते?"

उसने तुरन्त नतालिया को अपने आलिंगन में बाँधकर अपने हृदय से चिपका लिया और उसके अस्फुट शब्दों को सुनने लगा—

"न समझना पाप है। तुम एक लड़की को ले आओ, वह तुम्हारे बच्चे जन्मे और फिर यह लगे जैसे तुम वहाँ हो ही नहीं—मेरे लिए तुम्हारे हृदय में स्थान ही नहीं है। यह पाप है, पेत्या! क्या मुझसे भी अधिक कोई तुम्हारे निकट है? दुर्दिन में तुम्हारा दुःख कौन बँटायेगा?"

प्योत्र को लगा जैसे उसकी पत्नी ने उसे उठाकर हवा में उछाल दिया है जिसने अपनी शीतलता में बोरकर उसके अंगों में एक सुखद प्रमाद भर दिया है। कृतज्ञता की भावना से ओतप्रोत हो वह बड़बड़ाया—

"मैंने उसे वचन दिया है कि मौन रहूँगा, पर अब मुझसे रहीं रहा जाता।"

और उसने शीघ्र ही वह सारी बातें कह सुनाईं जो निकिता के बारे में तिखोन ने उसे बतायी थीं।

"उसने आँगन में सूखते हुए तुम्हारे कपड़े चूमे—इतना आगे बढ़ गया है वह! तुम्हें नहीं पता? उसकी स्थिति का क्या तुम्हें कभी अनुमान भी नहीं हुआ?"

उसे लगा कि उसकी पत्नी ज़ोर से काँप उठी।

"उसके लिए दुखी हो रही हो?" प्योत्र को आश्चर्य हुआ, किन्तु नतालिया ने तुरत ग़ुस्से से कहा—

"मुझे तो इसका तनिक पता नहीं चला। ओफ़, कितना चुप्पा है! लोग सच कहते हैं कि कुबड़े बड़े चालाक होते हैं।"

"सचमुच घृणा से कह रही है या यह केवल नाटक है?" प्योत्र ने अपने-आप से ही पूछा। पर अपनी पत्नी से कहा—

"लेकिन तुम्हारे प्रति उसका बरताव तो सदा कोमल ही रहा।"

"तो, इससे क्या हुआ?" नतालिया ने अकड़कर कहा। "तुलुन भी तो मेरे प्रति कोमल है।"

"हाँ, लेकिन....तुलुन तो कुत्ता है।"

"और वह? तुमने उसे मेरे ऊपर जासूसी करने के लिए कुत्ते की तरह छोड़ रखा था ताकि वह पिता और अलेक्सी से मेरी रक्षा कर सके। मैं सब समझती थी। ओह! मेरे प्रति उसका व्यवहार कितना नीच और घृणित रहा है!"

निश्चय ही नतालिया अपने को अपमानित और क्रोधित अनुभव कर रही

थी। शरीर के कम्पन, उँगलियों के झटकने और अपने गाउन को नोंचने की क्रियाओं से यह प्रत्यक्ष था। लेकिन प्योत्र को उसका इतना कुपित होना अतिरंजित लगा और उस पर सन्देह करके उसने अन्तिम प्रहार किया--

"उसने फाँसी लगाने की कोशिश की थी। तिखोन को इसका पता लग गया। इस समय वह स्नान-घर में पड़ा हुआ है।"

उसकी पत्नी को जैसे काठ मार गया और वह भयभीत होकर चीखी---

"नहीं तो!....क्या कह रहे हो? हाय भगवान्!"

"तो यह झूठ बोल रही थी।" प्योत्र ने सोचा; किन्तु नतालिया ने इतने झटके से अपना सिर उठाया कि मानों किसी ने उसके माथे पर प्रहार किया हो और क्रोधभरे आँसुओं के बीच अस्फुट स्वर में बोली—

"अब क्या होगा? पिता की मौत ने लोगों का मुँह कुछ देर के लिए बन्द कर दिया था, पर अब फिर कानाफूसियाँ शुरू हो जायेंगी और लोगों की ज़बान खुल जायेगी—भगवान् जाने किन पापों के लिए?"

"एक भाई फाँसी लगाने की कोशिश करता है, दूसरा एक निकम्मी लड़की से शादी कर लेता है--अपनी रखेल से ही। यह भी कोई बातें हैं? हाय रे, निकिता इलिच, तुम ऐसे बेशर्म कैसे हो गये? तुम्हारे कोमल व्यवहार के लिए हज़ार-हज़ार धन्यवाद, पर तुम कितने हृदयहीन हो?"

प्योत्र के हृदय पर से जैसे बोझ उतर गया और वह सन्तोष की साँस लेते हुए नतालिया के कन्धे सहलाने लगा—

"चिन्ता न करो। इस बात की किसी के कान में भनक भी न पड़ेगी। तिखोन किसी से न कहेगा। निकिता से उसकी दोस्ती है, और फिर हमारा ही दिया तो खाता है। निकिता धर्मपथ की शपथ लेना चाहता है।"

"कब?"

"मुझे मालूम नहीं।"

"अच्छा हो कि वह शीघ्र ही शपथ ले लेता! मैं अब उसके सामने कैसे पड़ सकूँगी?"

कुछ देर की ख़ामोशी के बाद प्योत्र ने कहा—

"अच्छा हो, तुम जाकर उसे देख आओ।"

लेकिन वह चौंककर ऐसे पीछे हटी जैसे प्योत्र ने उसे मारा हो। रोती हुई वह बोली—

"न, न, मुझसे जाने को मत कहो—मैं नहीं जाऊँगी! मैं नहीं जा सकती! मुझे डर लगता है....।"

"किस बात से?" प्योत्र ने तुरन्त पूछा।

"आत्महत्याओं से। मैं नहीं जाऊँगी। मुझे इसकी परवाह नहीं कि उसे क्या हुआ है। मुझे डर लगता है।"

"अच्छा, तो सोने चलो।" खड़े होते हुए प्योत्र ने कहा। "आज मुसीबतों की हद हो गई।"

अपनी पत्नी की बग़ल में चलते हुए उसने अनुभव किया कि बुराई के साथ-साथ आज के दिन ने उसे बहुत कुछ मूल्यवान् वस्तु भी दी है; मानों आज तक उसे इसका ज्ञान ही न था कि वह, प्योत्र अर्तामोनोव बहुत चालाक और चुस्त आदमी है। और उसने अपने अन्तर में बैठे उस अज्ञात पुरुष को बेवकूफ़ बना दिया है जो इतनी देर से लगातार उसकी आत्मा को अव्यक्त विचारों से छेद रहा था।

"निश्चय ही तुम मेरे सबसे अधिक निकट हो।" उसने अपनी पत्नी से कहा। "तुमसे अधिक निकट और कौन हो सकता है? बस, इस बात की मन में गाँठ बाँध लो कि तुम्हीं सबसे ज़्यादा निकट हो। तब सब कुछ ठीक हो जायगा।"

इस रात के बारहवें दिन जब प्रभात की किरण फूटी तो उस समय निकिता अर्तामोनोव अपने हाथ में सोटा थामे और पीठ पर चमड़े की बोरी लादे पतली-सी बालू की पगडंडी पर, जो ओस से मलिन हो गई थी, लम्बी-लम्बी डगें भरता हुआ जा रहा था, मानो अपने परिवार से बिदा होते समय की स्मृतियों से जल्द पिण्ड छुड़ाकर आगे निकल जाना चाहता हो। रसोईघर के पड़ोस के भोजन के कमरे में परिवार के सारे लोग तन्द्रिल अवस्था में ही जमा हुए थे। वह सभी जड़ बैठे थे और बातें भी जड़ रूप से ही कर रहे थे, और यह स्पष्ट था कि निकिता से कहने को किसी के पास हार्दिक सहानुभूति का एक शब्द भी न था। प्योत्र स्नेहपूर्ण और सदा प्रसन्न रहता था, उस व्यक्ति की तरह जिसे अभी सफलता मिली हो। उसने दो-तीन बार कहा:

"अब हमारे घर में भी एक हमारे पापों की क्षमा के लिए अपना सन्त हो गया।"

विचारों में डूबी नतालिया ने अन्यमनस्क भाव से चाय ढाली। उसके नन्हें-नन्हें, चूहे-जैसे कान आवश्यकता से अधिक लाल हो रहे थे। वह उद्विग्न-सी दिखाई देती थी और बार-बार कमरे से बाहर चली जाती थी। उसकी माँ विचार-मग्न चुप्पी साधे बैठी थी और कभी-कभी जीभ से उँगली गीली करके अपनी कनपटी के सफ़ेद बालों को चिकना लेती थी। केवल अलेक्सी ही विचलित हो रहा था, जो उसके लिए एक अस्वाभाविक-सी बात थी। वह बार-बार कन्धे हिलाकर पूछता रहा—

"किस बात से तुमने यह किया, निकिता? इतनी जल्दी क्यों? मुझे तो अजीब-सा लगता है।"

उसकी बग़ल में दुबली-पतली-सी, तीखी नाकवाली ओर्लोवा बैठी थी। अपनी काली भौंहें ऊपर को उठाये वह निर्लज्ज भाव से हरेक की ओर घूर रही थी। निकिता को उसकी आँखें अच्छी न लगती थीं। उसके चेहरे के हिसाब से वे बहुत बड़ी थीं और एक लड़की के नाते बहुत पैनी थीं और अक्सर झपकती रहती थीं।

इन लोगों के बीच देर तक बैठे रहना उसे भार लग रहा था और यह चिन्ताजनक विचार उसके मन में बार-बार उठता था—

"मान लो कि प्योत्र सबको बता दे? काश, यह सब जल्द समाप्त हो जाय।"

प्योत्र ने विदाई का प्रारंभ किया। निकिता के पास आकर उसे गले लगाते हुए उसने ज़ोर से, भरे स्वर में कहा—

"अच्छा भाई, विदा....।"

लेकिन बैमाकोवा ने उसे बीच में ही रोक दिया।

"क्या समझ रहे हो? आओ, पहले हम सब बैठ जायें और कुछ देर तक बातें न करें। और तब जब प्रार्थना कर चुकें तभी विदा कह सकते हैं।"

यह सब शीघ्र ही समाप्त हो गया और प्योत्र यह कहते हुए एक बार पुनः उठकर निकिता के पास गया—

"हमें माफ़ करना। कितना चन्दा देना होगा, यह बता देना, हम तुरन्त

भेज देंगे। कठोर प्रायश्चित के लिए राज़ी न होना। अच्छा विदा। हमारे लिए प्रार्थना करते रहना।"

बैमाकोवा ने निकिता के सिर पर क्रॉस का चिह्न बनाकर उसका गाल और माथा चूमा। न जाने किस कारण वह रो पड़ी। अलेक्सी ने निकिता को ज़ोर से गले लगाया और उसकी आँखों में देखते हुए कहा—

"अच्छा, भगवान् तुम्हारा भला करे। हर व्यक्ति अपना रास्ता स्वयं चुनता है। पर जो भी हो, मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुमने यह फैसला यकायक किस कारण किया।"

सबसे बाद में नतालिया उसके पास गई, लेकिन उससे कुछ दूर रुककर ही हाथों को अपने वक्ष पर दबाते हुए उसने क्षीण स्वर में कहा—

"विदा, निकिता इलिच।"

उसके उरोज अब भी एक कुमारी जैसे उन्नत थे यद्यपि वह तीन बच्चों को दूध पिला चुकी थी।

तो, यह भी समाप्त हुआ। आह, अभी तो ओर्लोवा बच ही रही। उसने निकिता के हाथों में अपना गरम-गरम नन्हा-सा, काठ जैसा कड़ा हाथ डाल दिया। निकट से उसका मुँह और अधिक भद्दा लगता था। उसने मूर्खतापूर्वक पूछा—

"क्या तुम सचमुच भिक्षु बनने जा रहे हो?"

बाहर आँगन में पुराने जुलाहों में से तीस-चालीस कारीगर विदा कहने के लिए जमा हो गये थे। बूढ़े और बहरे बोरिस मोरोज़ोव ने ज़ोर से सिर हिलाते हुए चिल्लाकर कहा--

"सच बात तो यह है कि सैनिक और भिक्षु—ये समाज के प्रथम श्रेणी के सेवक होते हैं!"

क़ब्रिस्तान में पहुँचकर निकिता विदा कहने के लिए अपने पिता की क़ब्र पर गया। उस पर घुटने टेककर उसने प्रार्थना नहीं की, बल्कि विचारमग्न हो गया। जीवन ने कैसा मोड़ ले लिया! उसके पीछे से उदित होकर जब सूरज ने क़ब्र की ओस से गीली ढेरी पर एक चौड़ी वक्र छाया अंकित कर दी, जिसकी आकृति तुलुन के बाड़े से मिलती-जुलती थी, तो उस समय निकिता ने धरती पर सिर

झुकाकर कहा—

"मुझे क्षमा कर देना पिता।"

ऊषा के कोमल स्निग्ध वातावरण में उसका स्वर कर्कश और उदास-सा लगा। कुछ देर ठहरकर उसने फिर ज़ोर से कहा—

"मुझे क्षमा कर देना पिता।"

और वह रो पड़ा, एक स्त्री की तरह सुबक-सुबक कर, अपने स्पष्ट और गुञ्जार-भरे स्वर के खो जाने के असह्य दुःख से।

क़ब्रिस्तान से निकलकर वह अभी एक-दो फ़र्लांग आगे गया होगा कि उसने अचानक जमादार को देखा। अपने कन्धे पर फावड़ा रखे और कमर की पेटी में कुल्हाड़ी खोंसे हुए। सड़क के किनारे की झाड़ियों में तिखोन एक सन्तरी की तरह खड़ा था।

"जा रहे हो?" तिखोन ने पूछा।

"हाँ जा रहा हूँ, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मैंने सोचा कि अपनी खिड़की के नीचे लगाने के लिए रोवन का पौधा खोद ले जाऊँ।"

एक क्षण तक वे एक दूसरे की ओर मौन खड़े देखते रहे। तिखोन ने अपनी डबडबायी आँखें फेर लीं।

"चलो, मैं तुम्हें सड़क पर कुछ दूर तक छोड़ आऊँ।"

वे चुपचाप चलते गये। तिखोन ने मौन भंग किया।

"बहुत ज़ोर की ओस पड़ती है आजकल। यह बुरे लक्षण हैं। ऐसी ओस सूखे मौसम और बुरी फ़सल की निशानी है।"

"भगवान् न करे।"

तिखोन व्यालोव ने मुँह ही मुँह भुनभुनाकर कुछ उत्तर दिया।

"तुमने क्या कहा?" निकिता ने किंचित् भयभीत होकर पूछा; क्योंकि इस व्यक्ति से वह ऐसे शब्द सुनने की आशा करता था, जो किसी अन्य व्यक्ति से नहीं सुने जा सकते थे, ऐसे शब्द जो आत्मा को कचोट लेते हैं।

"मैंने कहा, शायद वह ऐसा न करे।"

लेकिन निकिता को विश्वास था कि चौकीदार ने कुछ और कहा था, जिसे

वह अब दुहराना न चाहता था।

"तुम भगवान् की दया पर विश्वास क्यों नहीं करते?" उसने भर्त्सना-भरे स्वर में पूछा।

"मैं क्यों करूँ?" तिखोन ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

"इस समय हमें वर्षा चाहिए। और यह ओस तो कुकुरमुत्तों तक के लिए बुरी है। मालिक अच्छा हो तो सब काम अपने समय पर होते चलते हैं।"

निकिता ने ठण्डी साँस लेकर सिर झुका लिया।

"सोचने का यह ढंग ठीक नहीं है, तिखोन।"

"बहुत ठीक है। मैं अपनी आँखों से नहीं सोचा करता।"

पचास क़दम और ख़ामोशी से गुज़र गये। निकिता की नज़रें ज़मीन पर अपनी छाया का पीछा करती रहीं। व्यालोव की उँगलियाँ क़दमों के साथ कुल्हाड़ी की मूठ पर ताल देती रहीं।

"एकाध वर्ष बाद मैं तुमसे मिलने आऊँगा, निकिता इलिच—आऊँ न?"

"अगर चाहो तो आओ। तुम्हारे अन्दर जिज्ञासा है।"

"यह तो सच है।"

रुककर उसने अपना टोप उतारा।

"अच्छा तो, विंदा, निकिता इलिच!" उसने कहा और अपने गाल को सहलाते हुए विचारमग्न होकर बोला—

"अपने विनयशील हृदय के कारण मुझे तुम पसन्द हो। तुम्हारे पिता के गुण उनके शरीर में थे, लेकिन तुम्हारे गुण तुम्हारे हृदय, तुम्हारी आत्मा में हैं।"

निकिता ने अपना सोंटा रख दिया, झटका देकर उसने अपनी पीठ की बोरी सँभाली। फिर ख़ामोशी से तिखोन को गले लगाया। तिखोन ने इस आलिंगन के उत्तर में निकिता को कसकर अपनी बाहों में भींच लिया और इस बीच ज़ोर-ज़ोर से दुहराता गया—

"तो मैं आऊँगा, ज़रूर।"

"धन्यवाद।"

उस तीखे मोड़ पर जहाँ से सड़क देवदार के जंगल में खो जाती थी निकिता ने रुककर पीछे की ओर देखा। तिखोन अब भी बीच सड़क पर

अपने फावड़े के सहारे, बग़ल में टोप दबाये इस तरह खड़ा था मानों किसी को उस सड़क से गुज़रने न देगा। प्रांतःकालीन समीर उसके कुरूप मस्तक पर बालों को अस्तव्यस्त कर रही थी।

इस दूरी से तिखोन को देखकर निकिता को न जाने कैसे मूर्ख अन्तोनुश्का की याद आ गई। उसने अपने क़दम तेज़ कर दिये। उसके विचार घूम-फिरकर फिर इसी रहस्यमय व्यक्ति पर जा टिकते और लगता जैसे रह-रहकर उसे सुनाई दे रहा है—

ओह ईसा जाग उठा, जाग उठा,
गाड़ी का पहिया खो गया, खो गया।

२

अपने बाप की नवीं बरसी तक अर्तामोनोव-परिवार के लोग गिरजाघर की इमारत को मुश्किल से पूरा कर पाये। जब गिरजा बनकर तैयार हो गया तो उसे सन्त एलिजा के नाम पर समर्पित किया गया। इसके बनने में सात वर्ष लगे थे। यह सुस्ती अलेक्सी के कारण रही।

"ख़ुदा इन्तज़ार कर सकता है, उसे जल्दी किस बात की है?"—वह अश्रद्धा से चिल्लाकर कहता और दो बार उसने गिरजे के लिये तैयार की गई ईंटों को दूसरे कामों में लगा दिया। एक बार तो कारख़ाने का तीसरा हिस्सा बनवाने के लिये और दूसरी बार एक अस्पताल बनाने के लिये।

उद्घाटन समाप्त करके और अपने बाप और बच्चों की क़ब्रों पर प्रार्थना के बाद अर्तामोनोव-परिवार के लोग भीड़ के छँट जाने तक क़ब्रिस्तान में ठहरे रहे, फिर चतुराई से उल्याना, बैमाकोवा की अवहेलना करते हुए, जो उस समय परिवार के लोगों के लिये बने हुए बाड़े में एक बर्च के नीचे बेंच पर बैठी थी, वे सब धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़े। घर पहुँचने की उन्हें विशेष जल्दी न थी, क्योंकि उन्होंने पादरियों, परिचितों और कर्मचारियों को दावत के लिये तीन बजे बुला रखा था।

उस दिन बदली छाई थी, आसमान के रंग-ढंग ऐसे थे मानों उसमें पतझर

का आक्रोश भरा हो और बारिश की उम्मीद दिलानेवाली सीली हवा सरो के वृक्षों की झूमती हुई चोटियों में थके हुए घोड़ों की तरह हिनहिना रही थी। लाल रंग की बालू की सड़क पर मनुष्यों की काली आकृतियाँ जैसे हलकोरे खाती हुई कारख़ाने की ओर सरक रही थी; ईंटों से बनी कारख़ाने की तीन बारकें एक वृत्त के तीन अर्ध-व्यासों पर बनाई गई थीं, वे ऐसी दिखाई देती थीं जैसे ज़मीन को तीन लाल उँगलियों में दबोचे हुए हों। अपना बेंत हिलाकर अलेक्सी ने कहा—

"हमने अपने काम में कितनी उन्नति की है, यह देखकर पिता ख़ुश होते!"

"ज़ार की हत्या का समाचार सुनकर उन्हें दुःख हुआ होता।" प्योत्र ने एक क्षण सोच कर कहा। वह अपने भाई की हर बात से सहमत न होना चाहता था।

"जो भी हो, उन्हें दुखी होना नहीं आता था। और वे अपनी अक़्ल से काम लेते थे, ज़ार की अक़्ल से नहीं।"

टोपी को अपने माथे पर खींचते हुए अलेक्सी एक क्षण रुका और मुड़कर उसने औरतों की ओर देखा, उसकी नाटी और दुबली पत्नी सीधी-सादी पोशाक में बालू पर हल्के-फुल्के क़दम रखती हुई और रुमाल से अपने चश्मे को पोंछती हुई आ रही थी। लम्बी और गोलमटोल नतालिया की बग़ल में, जो अपने कन्धों पर काले रेशम का लबादा ओढ़े हुई थी और अपने घने लाल बालों पर गहरे लाल रंग का रुमाल बाँधे थी, अलेक्सी की पत्नी एक स्कूल की मास्टरनी जैसी दिखाई देती थी।

"तुम्हारी पत्नी की सुन्दरता तो दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जाती है।"

प्योत्र चुप रहा। "इस साल भी बरसी के मौक़े पर निकिता नहीं आया। क्या वह हमसे नाराज़ है? या और कोई बात है?"

वर्षा में अलेक्सी की छाती और एक टाँग में दर्द होने लगता था, जिससे वह अपने बेंत के सहारे किंचित लँगड़ाकर चलता था। वह क़ब्रों पर की हुई प्रार्थना के रूखे प्रभाव और इस मेघाच्छादित दिन की उदासीनता से किसी तरह छुटकारा पाना चाहता था और इसीलिए अपनी दुराग्रही प्रवृत्ति के अनुसार इस समय भी अपने भाई को बातचीत में घसीटने की कोशिश में हठ-पूर्वक लगा रहा।

"तुम्हारी सास तो शोक मनाने के लिये पीछे ही रह गई। वे पिता को

भुला नहीं सकतीं। अच्छी, नेक, वृद्ध महिला हैं। मैं तिखोन के कान में कह आया था कि वह वहीं रुके और उन्हें घर पहुँचा आये। उनकी साँस फूल जाती है और चलने में बड़ा कष्ट होता है।"

धीमे स्वर में जैसे किसी मजबूरी के दबाव से बड़े भाई ने दोहराया—

"कष्ट।"

"क्या सो रहे हो? कष्ट क्या है?"

"तिखोन को नौकरी से अलग कर देना चाहिए।" प्योत्र ने पहाड़ी की ढलान के मर्मर करते हुए वर्च वृक्षों की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

"क्यों?" भाई ने आश्चर्य से पूछा—"वह आदमी तो बड़ा ईमानदार, काम में मुस्तैद, मेहनती....।"

"और मूर्ख है।" प्योत्र ने जोड़ा।

तब तक औरतें भी आ गईं। ओल्गा ने अपने पति से मधुर स्वर में कहा—

"इलिया को स्कूल भेजने के लिये मैं रास्ते भर नताशा को मनाती आई हूँ, लेकिन इन्हें डर लगता है।"

गर्भवती नतालिया हर क़दम पर झोंके-सी खाती मोटी बत्तख़-सी चल रही थी, वह धीमे और सानुनासिक स्वर में, बड़ी बूढ़ियों के अन्दाज़ से बोली—

"मुझे तो लगता है कि ये सारे स्कूल सनकी दिमाग़ों की उपज हैं। एलीना अपने पत्रों में ऐसे-ऐसे शब्द लिखती है कि कुछ पल्ले नहीं पड़ता कि आख़िर वह कहना क्या चाहती है।"

"स्कूल, स्कूल, सबके लिये स्कूल।" अलेक्सी ने अपने माथे का पसीना पोंछने के लिये टोपी उठाते हुए कठोर स्वर में कहा। समय से पहले ही उसका सिर गंजा होना शुरू हो गया था। उसकी कनपटियों से ऊपर के बाल इस तरह झड़े कि दोनों ओर तीखे-तीखे कोण निकल आये थे और उसका चेहरा बहुत लम्बा लगने लगा था।

नतालिया ने अपने पति को प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखते हुए दलील दी—

"पोमियालोव ठीक ही तो कहता है। पढ़-लिखकर लोग मनमाने हो जाते हैं।"

"हाँ।" प्योत्र ने कहा।

"देखा न !" नतालिया .खुशी से चिल्लाई। लेकिन उसके पति ने सोचते हुए कहा—

"स्कूल की पढ़ाई ज़रूरी है।"

उसका भाई और ओल्गा एकाएक हँस पड़े और नतालिया ने उन्हें झिड़कते हुए कहा—

"हँसते हुए शर्म नहीं आती? सोचो कि हम लोग कहाँ से लौट रहे हैं?"

उन्होंने उसकी बाँहें पकड़ लीं और तेज़ी से चलने लगे। लेकिन प्योत्र आहिस्ता पड़कर बोला—

"मैं माँ की प्रतीक्षा करूँगा।"

उस कम्बख्त तिखोन व्यालोव ने उसे उद्विग्न कर दिया था। क़ब्रों पर प्रार्थना से कुछ ही पहले क़ब्रिस्तान से कारख़ाने की ओर देखते हुए प्योत्र ने अपने आप से ही कहा था—किसी गर्वोक्ति के रूप में नहीं, बल्कि जो दिखाई दिया, उसके ही आधार पर—

"कारोबार बढ़ गया है।"

और उसी समय उसे अपनी पीठ पीछे से ख़न्दक खोदनेवाले का शान्त स्वर सुनाई पड़ा—

"तहख़ाने की गन्दगी की तरह कारोबार भी .खुद अपने ही बूते बढ़ता है।"

प्योत्र ने न एक शब्द कहा, न सिर घुमाकर ही देखा। लेकिन तिखोन के शब्दों की स्पष्ट, गुस्ताख़ी से भरी मूर्खता ने उसका मन खट्टा कर दिया। एक आदमी काम करता है; वह सैकड़ों को रोज़ी देता है। दिन और रात वह अपने कारोबार की चिन्ताओं में डूबा रहता है और उसकी देखभाल करने के लिये वह .खुद अपने आप को भूल जाता है और तब अचानक कोई अज्ञान, मूर्ख आकर घोषित करता है कि कारोबार तो अपने बूते से चलता है, अपने मालिक के दिमाग़ से नहीं। और फिर यह व्यक्ति जहाँ कहीं भी मिले वहाँ 'आत्मा' और 'पाप' जैसी चीज़ों के बारे में ही बड़बड़ाता सुनाई देता है।

प्योत्र अर्तामोनोव सड़क के किनारे एक पुराने देवदार के ठूँठ पर बैठ गया और अपने कान की लौर पकड़कर खींचने लगा। उसे याद आया कि किस तरह एक दिन उसने ओल्गा से कहा था—

"मुझे तो अपनी आत्मा के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता।" और उसने उससे एक विचित्र प्रश्न पूछा था—

"क्यों, क्या तुम्हारी आत्मा तुम से अलग रहती है?"

पहले तो उसने इन शब्दों को एक स्त्री का व्यंग्य मात्र समझा, लेकिन ओल्गा का चिड़ियों का-सा मुख गम्भीर था और उसकी काली आँखें ऐनक के अन्दर से स्नेहार्द्र चमक रही थीं।

"मैं समझा नहीं।" वह बोला।

"और जब लोग अपनी आत्मा के बारे में अपने से अलग करके ऐसे बात करते हैं, मानों वह कोई पड़ा पाया बच्चा हो, तो यह बात मैं भी नहीं समझ पाती।"

"मैं समझा नहीं।" प्योत्र ने दुहराया। और इस स्त्री के साथ वार्तालाप जारी रखने की उसकी इच्छा एकदम जाती रही। वह उसे एकदम विदेशी-सी, एक तरह से अनबूझ पहेली-सी उसे लगी। तो भी उसकी सरलता में आकर्षण था, यद्यपि उसे भय था कि कहीं यह सरलता दिखावटी न हो और चालाकी को छिपाने का पर्दा न हो।

रही तिखोन व्यालोव की बात, सो प्योत्र उससे हमेशा नफ़रत करता आया था। उसे तो इस आदमी की सूरत से ही चिढ़ थी। उसके धब्बेदार चेहरे, गाल की ऊँची हड्डियों, विचित्र आँखों, खोपड़ी से चिपके और उसके लाल बालों से अधढँके कानों, उसकी छितरी दाढ़ी और धीमी किन्तु नपी-तुली चाल और उसकी समग्र फूहड़ और हट्टी-कट्टी आकृति से ही प्योत्र को चिढ़ थी। तिखोन की शान्त मुद्रा से प्योत्र को चिढ़ के साथ-साथ स्पर्धा भी होती थी, यहाँ तक कि उसके परिश्रम से भी प्योत्र को जलन होती थी। तिखोन मशीन की तरह काम करता और शिकायत का मौक़ा बहुत कम आने देता। प्योत्र को इस बात से भी चिढ़ होती और प्योत्र के चिढ़ने का एक बड़ा कारण इस बात की चेतना थी कि हर साल के बीतने के साथ ही साथ वह व्यक्ति अपने आपको अर्तामोनोव परिवार के पहिये की एक अनिवार्य और अभिन्न तीली समझने लगा था। यह विचित्र बात थी कि कुत्तों और घोड़ों के साथ-साथ बच्चे भी उससे प्यार करते थे। भेड़िये की नस्ल का बूढ़ा कुत्ता तुलुन तो ज़ँजीर से बँधा रहने पर भी सिवाय

तिखोन के किसी और को नज़दीक नहीं फटकने देता था; और प्योत्र का सबसे बड़ा लड़का इलिया, जो अत्यन्त उद्दण्ड प्रकृति का बालक था, अपने माँ-बाप की अपेक्षा उसकी आज्ञा का पालन शीघ्रतापूर्वक करता।

व्यालोव को अपनी आँखों से दूर हटाने के लिये प्योत्र अर्तामोनोव ने उसे और कामों पर लगाना चाहा—गिरजे की चौकीदारी पर या जंगल की देख-भाल पर। तिखोन ने अपना भारी सिर हिलाकर 'ना' कर दी।

"ये काम मेरे बस के बाहर हैं। अगर तुम मुझसे तंग आ गये हो, तो कुछ दिन ठहरो, मुझे एक महीने की छुट्टी दे दो ताकि मैं जाकर निकिता इलिच से मिल आऊँ।"

और उसने ठीक यही कहा था, "कुछ दिन ठहरो।" इस बेवकूफ़ी और गुस्ताख़ी से भरे वाक्य के साथ-साथ प्योत्र को अपने उस ग़रीब भाई का ख़्याल आया, जो दलदल के पार के जंगल में बहुत दूरी पर एक ग़रीब मठ में रहता था। उसका मन एक सन्देह-भरी व्याकुलता से भर गया। इसके अलावा उसे वह कहानी भी याद आ गई जो तिखोन ने निकिता की आत्महत्या के विषय में उसे सुनाई थी। ज़रूर इसमें कोई लज्जाजनक रहस्य छिपा है, जो तिखोन को मालूम है। ऐसा लगता मानों वह किसी नई दुर्घटना की प्रतीक्षा कर रहा हो और उसकी टिमटिमाती आँखें प्योत्र को सलाह देतीं—

"ज़रा बच के रहो, तुम्हें मेरी ज़रूरत है।"

तिखोन पहले भी तीन बार मठ में हो आया था। अपनी पीठ पर गठरी लटकाकर और हाथ में छड़ी लेकर जब वह बिना किसी जल्दबाज़ी के बाहर निकलता, तो प्योत्र को ऐसा लगता जैसे वह ज़मीन पर दया से चल रहा है। दरअसल उसके हर काम से दया प्रकट होती थी।

लौटने पर निकिता के सम्बन्ध में पूछे गये प्रश्नों का वह धीमे स्वर से अस्पष्ट-सा उत्तर देता। हमेशा ऐसा लगता कि वह बहुत-सी बातें जानते हुए भी नहीं बताता।

"निकिता सकुशल है। सम्मान से रहता है। उसने आपके सन्देशों और उपहारों के लिये धन्यवाद भेजा है।"

"उसने क्या कहा है?" प्योत्र कुछ और जानने का प्रयत्न करते हुए पूछता।

"एक संन्यासी क्या कह सकता है ?"

"फिर भी—?" अलेक्सी अधीरता से पूछता।

"वह ईश्वर के सम्बन्ध में बातें करता है। मौसम में दिलचस्पी रखता है। कहता है कि वर्षा उस समय नहीं आती जब ज़रूरत होती है। मच्छरों के बारे में कहता है, वहाँ मच्छरों की फ़ौजें जमा हैं। वह आप सबके विषय में पूछता था।"

"क्या ?"

"वह आप लोगों पर दुखी है।"

"हम पर ? क्यों ?"

"क्योंकि आपकी ज़िन्दगी में दौड़-धूप है और उसकी ज़िन्दगी एक जगह पर खड़ी है, और इसलिये कि आपका चित्त स्थिर नहीं है।"

अलेक्सी चिढ़कर ऊँचे स्वर में कहता—,

"क्या बकवास है !"

तिखोन की पुतलियाँ सिकुड़ जातीं और उसकी आँखों में शून्यता भर जाती।

"दरअसल मैं नहीं जानता कि वह क्या सोचता है। मैंने तो केवल वही बातें आपको बताई हैं जो उसने कही थीं। मैं तो सीधा-सादा आदमी हूँ।"

"सचमुच तुम बहुत सीधे हो!" अलेक्सी विद्रूप-भरे स्वर में कहता। "ठीक मूर्ख एन्तन की तरह।"

उसी समय हवा का एक झोंका आया जिसने प्योत्र अर्तामोनोव को एक सुवासित गरमाहट से ढँक दिया। दिन और भी उज्ज्वल हो गया। बादलों में नीला गड्ढा-सा निकल आया जिसमें से सूरज अपनी असीम गहराइयों में से झाँकने लगा। प्योत्र ने सूरज की ओर नज़र दौड़ाई, उसकी आँखें चौंधिया गईं और वह फिर विचारों की गहराई में डूब गया।

यह बात एक तरह से मन पर चोट पहुँचाती थी कि निकिता ने मठ में एक हज़ार रूबल जमा करने के बाद, जिनसे उसे जीवनपर्यन्त एक सौ अस्सी रूबल की वार्षिक आय होती रहे, अपने हिस्से की सारी पैतृक जायदाद अपने भाइयों को छोड़ दी थी।

"कौन ऐसी सम्पत्ति छोड़ देता है ?" प्योत्र बड़बड़ाया; लेकिन अलेक्सी ख़ुश हुआ था।

"वह पैसा को लेकर आखिर करेगा क्या ? उन निठल्ले पादरियों को मोटा करने के लिये लेगा ? उसने ठीक ही किया । हम लोगों का कारबार है, बच्चे हैं।"

नतालिया तो सचमुच द्रवित हो उठी थी।

"तो उसने जो हमें चोट पहुँचाई थी वह भूला नहीं है।" उसने सन्तोष-जनक स्वर में अपने गुलाबी गालों पर ढलकते हुए आँसू को पोंछते हुए कहा। "इसे एलेना का दहेज समझ लो।"

भाई के इस काम ने प्योत्र के विचारों को ढँक लिया, क्योंकि निकिता के मठ में जाने के बारे में बस्ती वालों ने एक विद्वेष-भरी कहानी गढ़ ली थी, जिसमें अर्तामोनोव परिवार के प्रति आक्रोश प्रकट होता था।

रहा अलेक्सी, सो उसके साथ प्योत्र अच्छी तरह निभाता रहा, यद्यपि वह यह जानता था कि उसके तीक्ष्ण-बुद्धि भाई ने अपने लिये कारोबार का सबसे आसान काम चुन रखा था : निज़नी-नोवगोरोद के मेले की फेरी लगाना और साल में दो-एक बार मास्को तक चक्कर काट आना। इन यात्राओं से लौटकर अलेक्सी मास्को के उद्योगपतियों के वैभव की लम्बी-चौड़ी कहानियाँ सुनाता।

"वे लोग ऐसी शान शौकत से रहते हैं जो नवाबों से किसी तरह कम नहीं।"

"नवाबों की तरह रहना तो आसान है।" प्योत्र संकेत करता, लेकिन उसका भाई इस संकेत को न पकड़कर अपने ही आवेश में कहता जाता—

"जब कोई व्यापारी अपना मकान बनवाता है तो इतना आलीशान, जैसे बाक़ायदा गिरजाघर हो और वे अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।"

उसकी आयु ढलने लगी थी, फिर भी उसमें यौवन के प्रारम्भ की चपलता लौट आई थी और उसकी बाज़-जैसी आँखें सदा चमकती रहतीं।

"आखिर आदमी हर वक्त भौंह क्यों चढ़ाये रहे ?" वह अपने भाई से पूछता और फिर उसे उपदेश देता—"व्यापार के लिये ख़ुशमिज़ाजी की ज़रूरत है। तुनकमिज़ाजी और कुढ़ने से काम नहीं चलता।"

प्योत्र भलीभाँति समझता था कि अलेक्सी का स्वभाव बहुत-कुछ उनके पिता से मिलता-जुलता है लेकिन वह उसे ठीक तरह समझ न पाता।

"मैं तो एक बीमार आदमी हूँ।" अलेक्सी अब भी अपने परिवार को स्मरण दिलाता, किन्तु वह अपने स्वास्थ्य की तनिक परवाह न करता। डटकर

शराब पीता, रात-रातभर जमकर जुआ खेलता और औरतों के प्रति संयम बरतना तो उसे आता ही न था। आखिर उसके जीवन का आकर्षण-केन्द्र क्या था? प्रत्यक्ष में न तो वह स्वयं और न उसका घर। बहुत दिनों से बैमाकोवा के मकान में मरम्मत की सख्त ज़रूरत थी लेकिन अलेक्सी ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। उसके बच्चे बहुत कमज़ोर अवस्था में पैदा होते और पाँचवें साल तक पहुँचने से बहुत पहले ही मर जाते। केवल एक ही बचा — मिरौन — जो बड़ी-बड़ी हड्डियों का एक कुरूप ढाँचा मात्र था। वह इलिया से तीन बरस बड़ा था। अलेक्सी और उसकी पत्नी दोनों में व्यर्थ की चीज़ें संग्रह करने की हास्यास्पद हविस भरी हुई थी। नवाबों और ज़मींदारों से ख़रीदे हुए हर मेल के फ़र्नीचर से उनके कमरे गोदाम बने हुए थे और वे दोनों ही अपने इष्ट-मित्रों को इनमें से छाँट-छाँटकर उपहार देने में आनन्द लेते। उन्होंने नतालिया को कपड़े की एक विचित्र अल्मारी दी थी जिसके किनारे चीनी मिट्टी से मढ़े हुए थे और उसकी माँ को चमड़े की एक विशाल आरामकुर्सी और करेली बर्च का बना हुआ काँसे के काम से अलंकृत एक शानदार पलंग दिया था। ओल्गा जड़ाऊ चित्र बनाने में सिद्धहस्त थी फिर भी उसका पति अपनी यात्राओं से लौटते समय ठीक वैसे ही चित्र ख़रीद लाने से बाज़ न आता।

"तुम पर सनक सवार है।" प्योत्र ने कहा। जब उसके भाई ने उसे एक विशाल डेस्क भेंट की, जिस पर बेहद जटिल नक्काशी का काम था और जिसमें असंख्य दराज़ें बनी हुई थीं। लेकिन अलेक्सी ने डेस्क पर हाथ फेरते हुए आवेश में भरकर कहा—

"ग़ज़ब की ख़ूबसूरत है। अब ऐसी चीज़ें कहाँ बनती हैं? मास्कोवाले इस बात को जानते हैं।"

"तुम्हें चाँदी की चीज़ें ख़रीदनी चाहिए। रईसों के पास ढेरों चाँदी है।"

"देखते चलो, धीरे-धीरे मैं सब ख़रीद लूँगा! मास्को में तो....।"

अगर अलेक्सी पर विश्वास किया जाता तो लगता जैसे मास्को में सनकियों की ही भरमार है जो अपने व्यापार पर उतना ध्यान नहीं देते जितना कि ज़िन्दगी के साज़-सामान पर। इनमें से मानो हर कोई रईसों की तरह रहना चाहता है और इसके लिए वह ज़मींदारों द्वारा नीलाम किये हुए देहात के भवन से

लेकर चाय के प्यालों तक हर चीज़ ख़रीद डालता है।

प्योत्र जब भी अपने भाई से मिलने जाता तो उसे सदा एक पीड़ाजनक स्पर्धा का अनुभव होता। भाई के घर में उसे अपने घर से भी अधिक आराम मिलता। इस बात को समझना कठिन था और न वह यह समझ पाता कि उसे ओल्गा क्यों पसन्द है। नतालिया के मुक़ाबिले में वह नौकरानी-सी लगती; लेकिन उसे मिट्टी के तेल के लैम्पों से बेवक़ूफ़ों-सा डर नहीं लगता था और न उसका यह विश्वास ही था कि विद्यार्थीगण आत्महत्या करनेवाले लोगों की चरबी से मिट्टी का तेल बनाते हैं। उसकी आवाज़ धीमी और मधुर थी और उसकी सुन्दर आँखों की दयार्द्र ज्योति चश्मे के बावजूद भी जैसी की तैसी बनी रहती थी। लेकिन जब वह लोगों के विषय में या इधर-उधर की बातें करती तो ऐसा लगता मानो वह बच्चों-जैसी उत्तेजना से उन्हें दूर से देख रही हो। इस बात से प्योत्र चकरा जाता और खीझ उठता।

"क्या सचमुच तुम्हारे विचार में हर बात के लिए किसी को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता?" प्योत्र ताना देकर पूछता; और वह जवाब देती।

"निसन्देह लोगों का क़सूर होता है, लेकिन मैं किसी का न्याय करना नहीं चाहती।"

प्योत्र उस पर विश्वास न करता।

अपने पति के साथ वह ऐसे व्यवहार करती मानो उससे बड़ी हो और अपने को अधिक अक्लमन्द समझती हो। अलेक्सी इस बात पर कभी नाराज़ न होता। वह उसे 'मौसी' कहकर पुकारता और कभी-कभी तंग आकर कहता—

"मौसी बस करो। मैं थक गया हूँ। मैं बीमार आदमी हूँ और मुझे थोड़ा खिलाने में तुम्हारा कोई हर्ज नहीं होगा।"

"तुमने भरपूर खा लिया है।"

वह अपने पति को देखकर मुस्कराती। प्योत्र अपनी पत्नी के ओठों पर भी वही मुस्कराहट देखना चाहता था। नतालिया एक आदर्श पत्नी और कुशल गृहिणी थी। खीरों और कुकुरमुत्तों का अचार डालने में और मुरब्बे बनाने में वह अपना सानी नहीं रखती थी। उसके घर के नौकर घड़ी के पुर्ज़ों की तरह काम करते। नतालिया अपने पति को प्यार करते कभी न थकती और उसका प्यार

मलाई की तरह गाढ़ा और स्थिर था। वह हाथ रोककर ख़र्च करती।

"अब बैंक में हमारा कितना पैसा बाक़ी है।" वह पूछती और फिर आतुर होकर कहती—

"क्या तुम्हें पक्का भरोसा है कि यह बैंक अच्छा है और बैठ नहीं जायगा?"

रुपया-पैसा सँभालते समय उसके सलोने मुख की मुद्रा कठोर हो जाती। वह अपने रसभरी जैसे होठों को भींच लेती और उसकी आँखों में एक तीखा और चिकना प्रकाश भर जाता। गन्दे और रंग-बिरंगे नोटों को गिनकर वह अपनी गोलमटोल उँगलियों में सतर्कता से कसकर पकड़ लेती, मानो डरती हो कि कहीं मक्खियों की तरह उड़ न जायें।

"क्या तुम और अलेक्सी मुनाफ़े का बँटवारा ठीक तरह से करते हो?" रात को सोने से पहले प्योत्र को थपकियों से निहाल करके वह पूछती। "क्या तुम्हें पक्का भरोसा है कि वह तुम्हें धोका नहीं देगा? वह बड़ा चलता-पुरज़ा है! और वह और उसकी बीवी दोनों पक्के लालची हैं। वह सामने आयी हर चीज़ को हड़प लेना चाहते हैं, महज़ हड़पते जाना और हड़पते जाना!"

वह सोचती कि उसके चारों ओर धूर्त ही धूर्त हैं और कहती—

"मैं तिखोन के सिवा और किसी पर भी विश्वास नहीं कर सकती।"

"तब तुम एक मूर्ख पर विश्वास करती हो।" प्योत्र अन्यमनस्क भाव से बुदबुदाता।

"वह है तो मूर्ख, लेकिन उसका अन्तःकरण शुद्ध है।"

जब प्योत्र पहली बार उसे निज़नी-नोवगोरोद के मेले में ले गया तो रूसी बाज़ार की विशालता पर दंग होकर उसने अपनी पत्नी से पूछा—

"तुम्हें कैसा लगा?"

"बहुत अच्छा।" उसकी पत्नी ने जवाब दिया। "यहाँ सब चीज़ों के ढेर हैं और सब चीज़ें घर से सस्ती।"

और फिर उसने वे सब चीज़ें गिनानी शुरू कर दीं, जो उन्हें ख़रीदनी थीं।"

"पन्द्रह सेर साबुन, मोमबत्तियों का एक डिब्बा, मिश्री और एक बोरी दानेदार....।"

सरकस में कलाबाज़ी का खेल शुरू होने पर उसने अपनी आँखें बन्द कर

ली थीं।

"हाय, कितने बेहया हैं! अरे, यह तो आधे नंगे हैं! मेरे बच्चा होने को है। मुझे इनकी ओर नहीं देखना चाहिए। मुझे ऐसे भयानक स्थानों पर नहीं लाना चाहिए—कौन जाने मेरे पेट में लड़का ही हो!"

ऐसे अवसरों पर प्योत्र अर्तामोनोव का दम घुटने लगता और उसे ऐसी नीरसता का अनुभव होता जैसी वतरला नदी में जमी हरी कष्टदायक काई से होता है, जिसमें मोटी और भद्दी टैंच मछली के सिवा और कोई मछली ज़िन्दा नहीं रह सकती।

नतालिया अब भी सदा की भाँति उतनी ही देर तक तथा उसी तरह नियम-पूर्वक प्रार्थना करती। प्रार्थना के बाद वह बिस्तर में घुसकर बड़े यत्न से प्योत्र को अपने कोमल तथा गुदगुदे शरीर का उपभोग करने को उकसाती। उसकी त्वचा में से भण्डार-घर की गन्ध आती, जहाँ वह अपने अचार, सूखी मछलियाँ और सूअर का गोश्त रखती थी। प्योत्र को बार-बार यह अनुभव होता कि उसकी पत्नी में कामोत्तेजना अत्यधिक है, उसके आलिंगन उसे थका देते।

वह कहता—"मुझे छोड़ दो, मैं थक गया हूँ।"

"तो तुम फ़ौरन सो जाओ, ईश्वर तुम्हारा कल्याण करें।" वह कर्त्तव्य-परायणता से उत्तर देती और स्वयं भी गहरी निद्रा में खुर्राटे लेने लगती। नींद में उसकी भौंहें मानो आश्चर्य में झुकी रहतीं, उसके होंठ मुस्कराते, मानो उसकी बन्द आँखें किसी अपूर्व दृश्य की छटा देखने में मग्न हों।

ऐसे नीरस क्षणों में जब प्योत्र को नतालिया के प्रति घृणा का आभास विशेष और स्पष्ट रूप से होता, तो वह उस भयानक दिन का स्मरण करने को विवश हो जाता, जब उसके पहले पुत्र का जन्म हुआ था। अठारह घंटों की लम्बी यन्त्रणापूर्ण प्रतीक्षा के बाद उसकी सास उसे एक कमरे में ले गई जहाँ के वातावरण में एक विचित्र प्रकार का भारीपन था। उसकी पत्नी एक अस्त-व्यस्त बिस्तर पर लेटी हुई कराह रही थी। उसकी आँखें तीव्र पीड़ा के कारण ऊपर की ओर चढ़ी हुई थीं और भयानक लग रही थीं। उसके बाल बिखर गये थे, पसीना आ रहा था और उसकी सूरत देखकर उसे पहचानना भी कठिन हो गया था। उसने एक तेज़ चीख़ से प्योत्र का अभिवादन किया।

"पेत्या, विदा। मैं मर रही हूँ। यह लड़का पैदा होगा।....पेत्या, क्षमा....।"

"उसने अपने ओंठों को इतनी ज़ोर से काटा था कि वह सूज गये थे और मुश्किल से हिल सकते थे। वह जब बोलती तो ऐसा लगता, मानों आवाज़ गले के बजाय उसके नीचे तक लटकते हुए पेट से आ रही हो। उसका पेट भयानक रूप से अकड़ गया था, जैसे तुरत फटने को हो। उसका सुर्ख़ चेहरा फूल गया था। वह थके हुए कुत्ते की तरह हाँफ रही थी और उसकी सूजी हुई जीभ बाहर लटक रही थी। वह बार-बार अपने बालों को नोचती। सहसा वह तड़पकर चिल्लाई, मानों किसी ऐसे व्यक्ति को समझाने या पराजित करने का प्रयत्न कर रही हो जो उसकी इच्छा पूरी करने में अनिच्छुक या असमर्थ हो।"

"लड़....क....ा.... ।"

उस दिन तेज़ हवा चल रही थी। खिड़की के बाहर चेरी के वृक्ष में सरसराहट हुई और उससे खिड़की के शीशे पर छाया पड़ी। प्योत्र विकृत छाया देखकर और पत्तों का मर्मर सुनकर बौखला उठा और चिल्लाकर कहा—

"पर्दा गिरा दो! क्या अन्धे हो?"

और वह चीत्कारों से भयभीत होकर कमरे के बाहर चला गया। चीत्कार आते रहे।

"आ....ा....ा....ा....... ।"

क़रीब डेढ़ घण्टे के बाद उसकी सास आई। ख़ुशी और थकान से उसकी मुँह से बोली नहीं निकल रही थी, वह प्योत्र को दुबारा उसकी पत्नी के सिरहाने लिवा ले गई। नतालिया ने सिर उठाकर प्योत्र को बलिदान होनेवाले की आँखों में भरे अलौकिक विजय गर्व से देखा। फिर वह धीरे से ऐसे बोली जैसे नशे में हो—

"लड़का। बेटा।"

वह उसके ऊपर झुक गया और अपना कपोल उसके कन्धे से सटाकर धीरे से बोला—

"मैं जीवन भर इस क्षण को भूल नहीं सकता माता। विश्वास करो! धन्यवाद।"

पहली बार उसने नतालिया को "माता" पुकारा था। उसका सारा डर,

सारी ख़ुशी इसी शब्द में भरी हुई थी, आँखें मूँद कर वह अपने गोल और क्षीण हाथ से उसके सिर को सहलाने लगी।

"पूरा पहलवान है।" बड़ी नाक और चेचक के दागों भरे चेहरे वाली दाई अभिमान से बच्चे को दिखती हुई बोली, जैसे उसने ही उसे प्रसव किया हो। लेकिन प्योत्र ने अपने लड़के की ओर नहीं देखा। उसे अपनी पत्नी के मुर्दा चेहरे के अलावा, जहाँ आँखों के स्थान पर बड़े-बड़े गढ़े पड़े हुए थे और कुछ नहीं दीखता था।

"क्या यह नहीं बचेगी?"

"बको मत!" चेचक के दाग़ोंवाली दाई ने करारा उत्तर दिया।

"अगर लोग सन्तान प्रसव में ही मरने लगें, तो दुनिया में कोई दाई ही न रह पाती।"

अब वह 'पहलवान' नौ साल का हो गया था। वह एक स्वस्थ बालक था। उसका माथा ऊँचा और नाक थोड़ी ऊपर की ओर उठी हुई थी, उसका चेहरा साफ़ और गहरे नीले रंग की बड़ी और गम्भीर आँखों से कान्तिमान था। अलेक्सी की माँ और निकिता की आँखें ऐसी ही थीं। पहले लड़के इलिया के पैदा होने के एक साल बाद दूसरा लड़का याकोव पैदा हुआ, लेकिन पाँच साल तक पहुँचते-पहुँचते इलिया ने अपने आपको घर का सबसे अधिक महत्त्वशाली व्यक्त बना लिया था। सब लोगों का लाड़-प्यार पाने से वह किसी की भी आज्ञा न मानता और स्वच्छन्द-जीवन व्यतीत करता और आश्चर्यजनक रूप से हर बार अपने को कष्टकर और भयानक परिस्थितियों में डाल लेता। उसकी शरारतें भी असाधारण ढंग की थीं और इससे उसके पिता में गर्व की भावना जाग्रत हुई।

एक दिन प्योत्र ने देखा कि उसका बेटा ओसारे में बैठा एक पुरानी काठ की नाँद में ठेलागाड़ी का पहिया जोड़ रहा था।

"इसका क्या बनेगा?"

"जहाज़।"

"यह चलेगा नहीं।"

"मैं इसे चलाकर छोड़ूँगा।" उसके बेटे ने अपने दादा से तेज से कहा। उसकी सारी मेहनत व्यर्थ जायेगी, लड़के को यह समझा सकने के प्रयत्न में

असफल होकर प्योत्र सोचने लगा—

"ठीक अपने दादा की तरह निश्चय का पक्का है।"

इलिया अपने प्रयत्नों में डटा रहा। लेकिन तमाम कोशिश के बाद भी वह काठ की नाँद में दो पहिये जोड़कर जहाज़ न बना सका। तब उसने नाँद के दोनों ओर कोयले के पहिये बनाये और नदी की ओर घसीटकर ले गया। उस पर सवार होते ही वह कीचड़ में फँस गया। डरने के बजाय उसने कुछ औरतों को आवाज़ दी।

"अरी ओ भलीमानसो! मुझे निकालो नहीं तो मैं डूबा!"

नतालिया ने इलिया की ख़ूब मरम्मत की और नाँद को ईंधन के लिये टुकड़े-टुकड़े करवा डाला। उस दिन के बाद इलिया अपनी माँ का उतना भी ख्याल न करता जितना वह अपनी दो वर्ष की बहिन तान्या का करता। वह सदा कोई न कोई नई चीज़ बनाने में व्यस्त रहता। चीज़ों को इकट्ठा करता, छीलता, तोड़ता और जोड़ता। उसको देखकर उसके पिता ने सोचा—

"यह ज़रूर कुछ न कुछ बनेगा। शायद शिल्पी।"

कभी-कभी तो इलिया लगातार कई दिनों तक अपने पिता के प्रति उदासीन बना रहता। फिर अचानक ही दफ़्तर में घुसकर वह प्योत्र के घुटनों पर चढ़ बैठता और कहता—

"मुझे कोई कहानी सुनाओ।"

"मेरे पास फ़ालतू समय नहीं।"

"मेरे पास भी फ़ालतू समय नहीं।"

हँसकर प्योत्र अपने कागज़ों को एक ओर रख देता।

"अच्छी बात है। एक समय की बात है....।"

"मुझे एक समय की बात के बारे में सब पता है। मुझे कोई मज़ेदार-सी कहानी सुनाओ।"

प्योत्र को कोई मज़ेदार कहानी नहीं आती थी।

"तो तुम अपनी दादी के पास जाओ।"

"उसे जुकाम है।"

"तो माँ के पास जाओ।"

"वह मेरा मुँह धो देगी।"

प्योत्र अर्तामोनोव को हँसी आ गई, केवल उसका बेटा ही उसे इतनी आसानी से स्वाभाविक हँसी हँसा सकता था।

"तो फिर मैं तिखोन के पास जाऊँगा।" इलिया ने कहा और वह नीचे उतरने के लिये अपने पिता के घुटनों से सरकने लगा। प्योत्र ने उसे थाम लिया—

"तिखोन तुम्हें क्या बताता है?"

"सब कुछ।"

"फिर भी!"

"वह सब कुछ जानता है। वह वालाख्ना में रह चुका है, जहाँ लोग किश्तियें और बजरे बनाते हैं।"

जब इलिया कहीं से गिर पड़ता और उसके चेहरे पर चोट आ जाती तो उसकी माँ उसको ख़ूब पीटती।

"छतों के ऊपर मत चढ़ा करो, नहीं तो तुम अपाहिज और कुबड़े हो जाओगे।"

लड़का ग़ुस्से से लाल-पीला हो जाता लेकिन रोता नहीं, उल्टे माँ को धमकी देता—

"अगर तुमने मुझे फिर मारा, तो मैं मर जाऊँगा।"

माँ ने पिता को यह धमकी सुनाई। वह हँसने लगा—

"पीटो मत! उसे मेरे पास भेज दो।"

लड़का हाथ पीछे किये चौखट पर आकर खड़ा हो गया। प्योत्र की अन्य सब भावनाएँ कुतूहल और वात्सल्य में डूब गईं। उसने पूछा—

"तुम अपनी माँ से गुस्ताख़ी क्यों करते हो?"

"मैं मूर्ख नहीं हूँ।" लड़के ने गुस्से से उत्तर दिया।

"गुस्ताख़ होने का मतलब है मूर्ख होना।"

"वह मुझे मारती है। तिखोन कहता है कि केवल मूर्ख ही पिटते हैं।"

"तिखोन? तिखोन तो स्वयं.... ।"

परन्तु किसी कारण से प्योत्र तिखोन को मूर्ख कहने में हिचकिचाया। वह कमरे में टहलने लगा। वह दरवाज़े पर खड़े इलिया को ध्यान से देख रहा था, लेकिन उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे।

"तुमने अपने भाई याकोव को पीटा है।"

"वह मूर्ख है और फिर उसे चोट नहीं लगती। वह मोटा है।"

"अगर वह मोटा है, तो इसका मतलब है कि तुम उसे पीटा करो?"

"वह लालची है।"

प्योत्र को लगा कि वह अपने लड़के को क़ाबू में नहीं रख सकता और लड़का भी इस बात को जानता है। शायद उसके कान खींचने से लाभ होता और यह आसान होता, लेकिन वह उसके घुँघराले बालोंवाले प्यारे सिर की ओर हाथ नहीं उठा सकता था। उसकी नीली आँखों की स्थिर और आशाभरी दृष्टि के सामने सज़ा देने का विचार आते ही प्योत्र को घबराहट होती, इसमें धूप का भी हाथ था, क्योंकि अक्सर जिस रोज़ भी धूप छिटकती, इलिया की शरारतें ज़ोर पकड़ लेतीं। एक बार झिड़कियाँ देते-देते प्योत्र को उस ज़माने की याद आ गई जब उसे स्वयं वही शब्द सुनने पड़े थे, जिनका उसके दिल या दिमाग़ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, अधिक से अधिक वह उनसे ऊब जाता या कुछ समय के लिये डर जाता। लेकिन मार को आसानी से नहीं भुलाया जा सकता, चाहे वह कितनी ही वाजिब बात पर क्यों न पड़ी हो। इस बात को भी प्योत्र भलीभाँति जानता था।

दूसरा लड़का याकोव गोलमटोल था और उसके गाल गुलाबी थे। उसका चेहरा-मोहरा अपनी माँ से मिलता था। याकोव अक्सर रोता रहता और ऐसा लगता कि उसे इस काम में सचमुच आनन्द आता हो। आँसू बहने से पहले वह छींकता और गाल फुलाकर अपनी मुट्ठियों को आँखों पर भींचता। वह डरपोक था। ठूँसकर खाने के बाद जब उसका शरीर भारी हो जाता तो या तो सोता या शिकायत करता—

"माँ, मैं थक गया हूँ।"

बड़ी लड़की एलेना सिर्फ़ गर्मियों में घर पर रहती। वह एक तरुण महिला हो गई थी, दूर-दूर रहनेवाली परदेसिन।

सात वर्ष की आयु में इलिया ने पादरी ग्लब से पढ़ना शुरू किया था। यह देखकर कि मिल के मुन्शी का बेटा निकोनोव धर्म पुस्तक की बजाय तस्वीरों-वाली वर्णमाला की पुस्तक "हमारी अपनी बोली" पढ़ता है, उसने अपने

पिता से कहा—

"मैं अब आगे नहीं पढ़ूँगा। मेरी जीभ दुखती है!"

बहुत देर तक और सावधानी से पूछने पर ही उसने बताया—

"पाशा निकोनोव तो हमारी अपनी बोली सीख रहा है और मैं किसी और की बोली सीख रहा हूँ।"

लेकिन कभी-कभी मानो अपने अन्दर की किसी बाधा से रुद्ध होकर यह तेज़ तर्रार लड़का पहाड़ी पर किसी चीड़ के पेड़ के नीचे घन्टों अकेला बैठा रहता और वतरल्ला नदी के कीचड़भरे हरे पानी में नुकीले पत्थर फेंकता रहता।

"मालूम पड़ता है, ऊब गया है।" बाप सोचता। वह स्वयं अपने कारोबार और अन्य घटनाओं के चक्कर में हफ्तों और महीनों तक फँसे रहने के बाद अचानक धुँधले विचारों के घने कुहासे में डूब जाता। एक अनन्त श्रान्ति उसे घेर लेती और तब वह यह न समझ पाता कि आख़िर कौन-सी बला उसे अधिक संज्ञाशून्य बना देती है—उसकी व्यापार की चिन्ताएँ या इन नीरस चिन्ताओं से उत्पन्न उसकी मन की श्रान्ति! अक्सर ऐसे दिन वह सामने पड़नेवालों से जरा-ज़रा-सी बात पर घृणा करने लगता—किसी को कनखियों से देखने के कारण, तो दूसरे को कोई बेडौल शब्द बोलने के कारण। उस बदली से घिरे दिन भी वह तिखोन व्यालोव से लगभग नफ़रत ही करने लगा।

प्योत्र की सास को बाँह का सहारा देकर व्यालोव चला आ रहा था। प्योत्र ने उसे यह कहते हुए सुना—

"हम व्यालोवों का कुटुम्ब बहुत बड़ा है।"

'तो फिर तुम अपने नाते-रिश्तेदारों के साथ क्यों नहीं रहते?" प्योत्र ने उठकर बैमाकोवा की दूसरी बाँह को सहारा देते हुए पूछा। तिखोन चुप रह गया और वहाँ से चला गया। अर्तामोनोव बड़े कठोर और रूखे शब्दों में इस प्रश्न को दुहराता रहा। इस पर तिखोन ने अपनी वर्णहीन आँखों को सिकोड़कर उदासीन भाव से उत्तर दिया—

"क्योंकि उनमें से अब कोई नहीं बचा। वे सब ख़त्म कर दिये गये।"

"ख़त्म कर दिये गये? तुम्हारा मतलब? किसने उसे ख़त्म कर दिया?"

"मेरे दो भाई तो सेवेस्तापोल भेज दिये गये और वहाँ वे मार डाले गये

और सबसे बड़ा भाई विद्रोहियों से उन दिनों जा मिला जब अपनी मुक्ति के लिये किसान बौखला उठे थे। उनका बाप भी विद्रोह में शामिल था। जब लोगों को ज़बरदस्ती आलू खिलाये जाने लगे तो उसने साफ़ इन्कार कर दिया और जब उसे कोड़े से पीटने की बारी आई तो वह भाग निकला। उसके पैरों के नीचे की बर्फ़ टूट गई और वह डूब गया। मेरी माँ ने फिर मछुए व्यालोव से शादी कर ली, जिससे मैं और मेरा भाई सर्जी पैदा हुए।"

"और तुम्हारा भाई कहाँ है?" उल्याना ने आँखें झपकाते हुए पूछा। उसकी आँखें अब भी रोने के कारण सूजी हुई थीं।

"वह मारा गया।"

"ऐसा लगता है मानो तुम मरे हुए के लिये प्रार्थना करने भर को बच गये हो।" प्योत्र अर्तामोनोव ने चिढ़कर कहा।

"उल्याना इवानोव्ना मुझसे पूछ रही थीं। उनका मन उदास था, इस-लिये मैं.... ।"

उसने अपनी बात पूरी नहीं की। झुककर सड़क पर से उसने एक सूखी टहनी उठाकर एक ओर फेंक दी। एक या दो मिनट के लिये सब चुपचाप चलते गये।

"तुम्हारे भाई को किसने मारा?" अचानक ही अर्तामोनोव ने पूछा।

"उसे किसने मारा? आदमियों ने।" व्यालोव ने शान्ति से उत्तर दिया। बैमाकोवा ने ठंडी साँस लेकर कहा—

"वज्रपात से भी लोग मर जाते हैं।"

....पतझड़ के बीच मुसीबत के दिन आ गये। धुँधले पीले आकाश के नीचे पृथ्वी पर भून डालनेवाली गर्मी का आतंक छाया हुआ था। अक्सर सूखी लकड़ियों के ढेरों और जंगलों में आग लग जाती। ख़ुश्क और गर्म हवा के झोंके प्रचण्ड शक्ति से उठकर एक तेज़ सीटी की-सी आवाज़ के साथ पेड़ों पर से झड़ते हुए पत्तों को तोड़-मरोड़ डालते, पिछले साल की बची-खुची मटमैली चीड़ की टहनियों को बिखेर देते—रेतीले धूल के बादलों को, जिनमें लकड़ी का कूड़ा-कर्कट और मुर्ग़ियों के पर मिले होते, उड़ाते हुए यह झोंके लोगों से भिड़कर उनके कपड़ों को फाड़ डालने का यत्न करते और अन्त में जंगल में

छिप जाते, जिसके परिणामस्वरूप आग की लपटें और भी तेज़ी से ऊँची उठने लगतीं।

कारख़ाने में बीमारी फैली थी। तकलों के शोर और चरख़ियों की घुरघुराहट के बीच में अर्तामोनोव को ख़ुश्क गले से लगातार खाँसने की आवाज़ें सुनाई देतीं। करघों पर काम करनेवाले लोगों के चेहरे झुके हुए और क्षुब्ध होते, और मज़दूरों की चेष्टाएँ भी नीरस होतीं। उत्पादन में कमी आ गई जिससे कपड़े की क़िस्म पर भी काफ़ी प्रभाव पड़ा। काम से ग़ैरहाज़िर रहनेवालों की संख्या बहुत बढ़ गई; क्योंकि मर्दों ने ख़ूब शराब पीना शुरू कर दिया था और स्त्रियाँ घर पर रहकर बीमार बच्चों की देख-भाल करती थीं। हँसमुख स्वभाव और बच्चों के से गुलाबी चेहरेवाला बूढ़ा बढ़ई सेराफ़ीम आये दिन नन्हे कफ़न बनाने में व्यस्त रहता; अक्सर ऐसा भी होता कि जिन स्त्री-पुरुषों की इहलोक यात्रा समाप्त हो चुकतीं, उनके लिये भी उसे सरो के पीले तख़्तों को जोड़कर कफ़न तैयार करने पड़ते।

"हमें छुट्टी कर देना चाहिए।" अलेक्सी ने आग्रह किया। "ताकि हम लोगों का मन प्रसन्न कर उन्हें उत्साहित कर सकें।"

पत्नी के साथ मेले की ओर जाते हुए भी उसने अपनी सलाह को दोहराया :

"उन्हें छुट्टी दो, उनमें स्फूर्ति आ जायेगी। मैं सच कहता हूँ कि मन हल्का होने से सब रोग दूर हो जाते हैं।"

"इस काम को फ़ौरन कर डालो। प्योत्र ने अपनी पत्नी से कहा। "इसमें टालमटोल करना ठीक नहीं।"

नतालिया बड़बड़ाने लगी। प्योत्र ने क्रोधित स्वर में पूछा—

"क्या इरादा है ?"

नतालिया ने ज़ोर से क्षोभ जताते हुए अपने लबादे की कोर से नाक साफ़ की और जवाब दिया—

"बहुत अच्छा।"

फिर विशेष प्रार्थना का कार्यक्रम शुरू हुआ, जिसका नेतृत्व पादरी ग्लेब ने अति गम्भीरता से किया। पादरी बहुत दुबला होता जा रहा था। अपरिचित शब्दों का उच्चारण करते समय उसकी फटी हुई आवाज़ उसकी अन्तिम क्षीणप्राय

शक्ति के लिये मानो ऊँचे स्वर से याचना कर रही हो। तपेदिक के मारे जुलाहों के फीके चेहरों पर कठोरता और कुढ़न के चिह्न थे। वे श्रद्धापूर्वक अपने स्थान पर अविचलित बैठे रहे। अनेकों स्त्रियाँ ज़ोर-ज़ोर से सिसकियाँ भरकर रोने लगीं और जब पादरी ने अपनी उदास आँखें धुँधले आकाश की ओर उठाईं, तो लोग भी याचनाभरी दृष्टि से कुहासे के भीतर छिपे हुए रुण्ड-मुण्ड और कलछहे सूर्य को देखने लगे। शायद उनका ख़्याल था कि दीन पादरी ने स्वर्ग में किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो उसे जानता है और उसकी प्रार्थना सुन लेगा।

प्रार्थना के बाद औरतों ने सड़क पर मेज़ें लगा दीं और कारख़ाने के तमाम मज़दूर गोश्त के लबालब भरे कटोरों के आसपास बैठ गये। हरेक कटोरे के गिर्द दस व्यक्ति इकट्ठे होते और प्रत्येक मेज़ पर घर की बनी तेज़ बीयर शराब का बर्तन और बेंत के खोल में पड़ी वोद्का शराब की एक बोतल रहती। इससे क्षीण और मृतप्राय लोगों में भी जान आ गई। ज़मीन पर छाई घुटन और नीरसता इकट्ठी होकर दलदलों और जलते हुए जंगलों में चली गई। सारी की सारी बस्ती ख़ुशी के क़हक़हों से गूँज उठी—लकड़ी के चम्मचों की खटखटाहट, बच्चों की हँसी और औरतों की झिड़कियों, तथा नवयुवकों के मज़ाकों से सारे वातावरण में कोलाहल-सा छा जाता।

चूँकि उस रोज़ खाने की चीज़ें भरपूर मात्रा में थीं, इसलिये लोगों को खाना खाने में तीन घण्टे से भी अधिक समय लग गया। नशे में चूर पियक्कड़ों को थामकर उनके घर पहुँचाया गया और बहुत से छोकरे साफ़-सुथरे सेराफ़ीम बढ़ई को घेर कर बैठ गये। उसकी नीली सूती कमीज़ और पतलून का रंग बहुत बार धुलने के कारण फीका पड़ गया था। उसकी तीखी नाकवाला गुलाबी चेहरा ख़ुशी की उत्तेजना से हर समय दमकता रहता, विशेषकर आँखें झपकाते समय उसकी पुतलियाँ इतनी चंचल हो उठतीं कि उसके उत्साह से उसकी आयु का सही अनुमान लगाना कठिन हो जाता। इस हँसमुख कफ़न बनानेवाले व्यक्ति के चेहरे पर एक प्रकार की गुदगुदानेवाली फ़ुर्ती और अलौकिक प्रसन्नता छाई रहती, जो उसके नाम को पूर्णतः सार्थक करती थी। वह एक बेंच पर अपने सितार को घुटनों पर रखकर अपनी काली और चुकन्दर जैसी गाँठदार उँगलियों से तारों को बजा रहा था और अन्धे भिखारियों की तरह जान-बूझकर नाक में

झटके दे-देकर करुण स्वर में गा रहा था—

सहृदय मित्रो, यह कहानी तुम्हारे मनोरंजन के लिए है
तुम्हारे विवेक के अनुकूल है कि इसे सुनो और इसका रहस्य खोलो।

उसने लड़कियों की ओर देखकर आँख मारी। उसकी बेटी ज़िनेदा गरारी भरने का काम करती थी। वह बड़े रोब से उस झुण्ड में खड़ी थी। वह सुन्दर थी, उसका वक्ष उन्नत था और उसकी आँखों में ढिठाई भरी थी। सेराफ़ीम का स्वर और भी अधिक ऊँचा और नैराश्यपूर्ण हो गया—

हमारे दयालु स्वामी ईसामसीह, स्वर्ग की उज्ज्वल आभा,
सुरभित वातावरण और शीतलता के मध्य विराजते हैं,
एक लम्बे, सुनहले फूलोंभरे जँभीरी नीबू के वृक्ष के नीचे
वे नीबू की श्वेत छाल के सिंहासन पर राजसी मुद्रा में बैठे
लोगों में कान्तिमान सोना-चाँदी बाँटते हैं
अनुपम सौन्दर्यवाले हीरे-जवाहरात बाँटते हैं
और लोगों को उनके पुण्यों के लिए उपहार बाँटते हैं
इसके लिए कि धनवान इतने उदार हैं
कि ग़रीबों और अभागों पर दया करते हैं
और निर्धनों को अपना भाई समझकर प्यार करते हैं
और भूखों-नंगों को भोजन देते हैं

उसने फिर लड़कियों की ओर आँख मारी और अचानक नाच की धुन बजानी शुरू कर दी। उसकी बेटी पतली आवाज़ में कूककर आगे उछली। जिप्सियों की तरह उसके हाथ सिर के पीछे बँधे हुए थे और उसके विशाल उरोज कम्पित हो रहे थे। अपने पिता के गीत की स्पष्ट धुन और सारंगी की लय के साथ ताल मिलाते हुए उसने नाचना शुरू किया—

और वे जो चाँदी पाते हैं
वह उनकी बाँहों और टाँगों में पीड़ा भर देती है
और इच्छा का चमकीला सोना
उनके अंगो को आग और लपटों से झुलसा देता है!

मोती और लाल जिन्हें वे मूल्यवान् समझते हैं
वे उनकी आँखों में अन्धापन भर देते हैं !

लड़कों ने ज़ोर-ज़ोर से सीटियाँ बजाकर सारंगी की ध्वनि और सेराफीम के मधुर गीत का स्वर डुबा दिया। तब लड़कियों और औरतों ने नाच की द्रुत लय में गाना छेड़ा—

ओह, समुद्रों पर द्रुतगति से तैरते जहाज़ आते हैं
उन सुन्दर युवतियों के लिए उपहार लेकर जो यहाँ मौजूद हैं !

और ज़िनेदा ने अपने ऊँचे स्वर से मिसरा जोड़ा—

जवान पाश्का ने युवती पलाश्का को
कमीज़ों के लिए गज़ों बोरियाँ भेजी हैं
और तेरियोश्का ने मत्रियोश्का को
सुन्दर कर्णफूल भेजे हैं—बर्च की छाल के बने !

पवेल निकोनोव के साथ इलिया अर्तामोनोव लकड़ियों के ढेर पर बैठा हुआ था। वह हड्डियों का ढाचा-मात्र था। उसका सिर बूढ़ों का-सा और गंजा-सा दिखाई देता था, और वह अपनी लम्बी गर्दन रह-रहकर झटके से हिलाता रहता था। उसके चेहरे पर एक अस्वस्थ-सी चिकनाहट छाई रहती और उसकी अस्थिर, भूरी आँखों से भीरुता टपकती थी। नीले वस्त्रोंवाला बुड्ढा इलिया को बहुत भाया। उसे सारंगी की ध्वनि और सेराफीम का सुखद, उल्लास और विनोद से भरा गीत अच्छा लगा। पर चटकीले लाल रंग के ब्लाउज़वाली औरत यकायक उचककर उठी और चक्कर देकर नाचने लगी, जिससे सब कुछ गड़बड़ हो गया। इससे अनाप-शनाप सीटियाँ और चीख़-चीख़कर बेसुरा गाना शुरू हो गया। उसके मन में इस स्त्री के प्रति घृणा उबलने लगी। इसी समय निकोनोव ने अत्यन्त धीमे स्वर में कहा—

"ज़िनेदा की जवानी बड़ी अंधी है। वह हर किसी से राज़ी है। तुम्हारे बाप के साथ भी....मैंने ख़ुद उन्हें उसको दबाते हुए देखा है।"

"किसलिए ?" इलिया ने अज्ञानवश पूछा।

"अरे, तुम सब समझते हो !"

इलिया ने अपनी आँखें झुका लीं। वह जानता था कि लड़कियाँ क्यों दबायी

जाती हैं और उसे इस बात से अपने ऊपर झुँझलाहट हुई कि उसने अपने मित्र से ऐसी बात क्यों पूछी।

"तुम झूठ बोलते हो।" उसने ग्लानि से भरकर कहा और निकोनोव की अस्फुट टिप्पणियों को सुनने से मुँह फेर लिया। उसे यह रिरियाकर बात करने-वाला और कारख़ाने की लड़कियों की एक जैसी नीरस कहानियाँ सुननेवाला सुस्त और घामड़ बालक बुरा लगने लगा। लेकिन निकोनोव कबूतरों का पारखी था और इलिया को कबूतरों का शौक़ था। साथ ही उसे इस बात का भी गर्व था कि मज़दूरों की बस्ती के छोकरों से उसे अपने इस दुर्बल साथी की रक्षा करने का गौरव प्राप्त है। इसके अलावा निकोनोव की यह विशेषता थी कि वह जो भी देखता उसे एक दिलचस्प अन्दाज़ से बयान कर देता, यद्यपि उसे अप्रिय वस्तुओं के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं देता था और वह उनके बारे में उसी लहजे में बात करता जिस लहजे में इलिया का छोटा भाई याकोव बातें करता था, मानो दुनिया की हर चीज़ के विरुद्ध प्रतिवाद कर रहा हो।

इलिया कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा, फिर उठकर घर चला गया। बग़ीचे में धूल से भूरे पड़े वृक्षों की गरम छाँह में चाय सजाई जा चुकी थी। बड़ी मेज़ पर मेहमान भी बैठे थे। शान्त स्वभाववाले पादरी ग्लेब वहाँ मौजूद थे और जिप्सियों जैसी चौड़ी काठी और घुँघराले बालोंवाला मेकेनिक कोतीव और क्लर्क निकोनोव भी था जिसने अपने मुँह को इतना रगड़-रगड़कर साफ़ किया था कि उस पर अंकित भाव भी मिट गये थे, केवल नाक और छोटी-छोटी आँखों के नीचे के थुलथुल उभरी चमड़ी के बीच से एक मुस्कान टपकती दिखाई देती थी।

इलिया अपने पिता की बग़ल में जा बैठा। उसे विश्वास नहीं हुआ कि उसके बाप जैसा नीरस व्यक्ति उस बेहया, छबीली लड़की से कोई सम्बन्ध रख सकता है। पिता ने अपने बलिष्ट हाथों से उसके कन्धे को थपथपाया लेकिन कुछ बोला नहीं। वे सब गर्मी के मारे बेहाल हो रहे थे और उनके पसीने की धारें छूट रही थीं। मुँह खोलकर बात करने में भी दिक्क़त होती। सिर्फ़ कोसेव की ऊँची और साफ़ आवाज़ सुनाई पड़ी जैसे वह सर्दियों की रात में बोल रहा हो।

"क्या हम बस्ती की ओर जा रहे हैं?" माँ ने पूछा।

"हाँ, मैं जाकर अपनी टोपी लाता हूँ।" पिता ने कहा। वह उठकर घर की ओर चल दिया। थोड़ी देर बाद इलिया भी पीछे-पीछे चला और सहन में उससे मिल गया।

"क्या बात है?" पिता ने दुलार से कहा। बेटे ने आँखें मिलाते हुए पूछा—

"तुमने ज़िनेदा के साथ छेड़खानी की थी या नहीं?"

इलिया को लगा जैसे उसका पिता भयभीत-सा लग रहा है। उसे हैरानी नहीं हुई, क्योंकि वह अपने पिता को डरपोक समझता था, जो हरेक से डरता हो। शायद इसीलिये वह इतना कम बोलता था। इलिया को अक्सर लगता कि उसका पिता उस तक से डरता है। सचमुच इस समय भी वह डर गया था। उसे दिलासा देते हुए इलिया ने कहा—

"मुझे इस बात पर विश्वास नहीं। मैं तो सिर्फ़ पूछ रहा हूँ।"

पिता ने उसे बड़े कमरे के दरवाज़े के भीतर ढकेल दिया। अन्दर से कमरा बन्द करके वह एक कोने से दूसरे कोने में चक्कर काटने लगा। ग़ुस्से के मारे उसकी साँस फूल गई थी।

"इधर आओ।" बड़े अर्तामोनोव ने डेस्क के पास रुकते हुए कहा। छोटे अर्तामोनोव ने आज्ञा का पालन किया।

"तुमने क्या कहा था?"

"यह बात पावलुश्का ने कही थी, मैं उस पर विश्वास नहीं करता।"

"तुम उस पर विश्वास नहीं करते? ठीक।"

प्योत्र का ग़ुस्सा पिघल गया, जब उसने अपने बेटे के विशाल माथे तथा गम्भीर चेहरे की ओर देखा। वह अपना कान सहला कर कुछ सोचने लगा—इलिया ने अपने हमउम्र लड़के की बेहूदा बकवास पर विश्वास नहीं किया। यह बात अच्छी है या बुरी, उसने इस बात पर विश्वास नहीं किया और इसी अविश्वास से उसे सन्त्वना मिल रही है? उसे समझ नहीं आया कि वह अपने बेटे को क्या कहे और उसे पीटने में भी प्योत्र झिझकता था। लेकिन कुछ तो करना ही था, उसने फ़ैसला किया कि थप्पड़ मारना ही सरल और उचित होगा। अपने झिझकते हुए हाथों से उसने अपने लड़के के घुँघराले बालों को ज़ोर से झकझोरा और बुदबुदाया—

"मूर्खों की बात मत सुना करो। बिल्कुल नहीं।" फिर उसने लड़के को ढकेलते हुए डाटा।

"जाकर अपने कमरे में बैठो और.... हाँ, वहीं रहो।"

लड़का दरवाज़े से निकल गया। उसका सिर एक ओर झुका और अकड़ा हुआ था जैसे वह किसी और के धड़ से जुड़ा हो। उसे देखकर प्योत्र ने अपने आपको दिलासा दिया—

"वह रो नहीं रहा है। मैंने उसे पीटा नहीं।"

उसने अपने आप को तैश में लाने की कोशिश की।

"ज़रा सोचो तो सही! इस बात पर विश्वास नहीं हुआ! ख़ैर, मैंने उसे सीधा तो कर दिया है।"

लेकिन इससे अपने लड़के के प्रति दया और चोट पहुँचाने की भावना से अपने प्रति तीव्र असन्तोष दब न सके।

"मैंने उस पर पहली बार हाथ उठाया है।" उसने चिढ़कर अपने बालों से भरे लाल हाथ की ओर देखते हुए सोचा। "दस साल का होने से पहले मुझे ख़ुद सैकड़ों बार मार खानी पड़ी थी।"

लेकिन इससे भी उसे शान्ति न मिली। अर्तामोनोव ने खिड़की से झाँककर सूरज की ओर देखा जो मटमैले पानी पर पड़े चिकनाई के दाग़ जैसा लग रहा था। कुछ देर तक वह बस्ती से आते शोर-ग़ुल को सुनता रहा, फिर अनमना-सा मेले की ओर चल दिया। रास्ते में उसने धीमे से निकोनोव से कहा—

"तुम्हारा लड़का मेरे इलिया से तरह-तरह की बेहूदा बातें करता है।"

"मैं उसकी मरम्मत करूँगा।" मुंशी ने फ़ौरन जवाब दिया—उसके जवाब में प्रसन्नता की-सी झलक थी।

"उसे ज़बान सँभालकर बोलना सिखाओ।" प्योत्र ने जोड़ा। निकोनोव के फ़ीके चेहरे को कनखियों से देखते हुए उसने सान्त्वना के भाव से सोचा।

"इतनी सीधी-सी बात है।"

बस्ती में ज़ोर-शोर से मालिक का स्वागत हुआ। नशे में डूबे हुए चेहरे मुस्कराकर उसकी चापलूसी करने लगे। सेराफ़ीम ने अपने सबसे बढ़िया नये जूते पहने थे। उसके सफ़ेद मोज़े लाल फ़ीटे से ऐसे बँधे थे, जिस तरीक़े से मोर्दोवियन

लोग बाँधते हैं। वह अर्तामोनोव के सामने ठुमक-ठुमककर होसान्ना गीत गाने लगा—

कहो तो, कौन यहाँ आया है ?
वाह, ये तो हमारे मालिक हैं जिन पर हमें घमण्ड है !
उनके साथ बग़ल में चलनेवाली
हमारी प्रिय मालकिन हैं !

ईवान मोरोज़ोव ने, जो अपनी सफ़ेद दाढ़ी और लम्बे बालों के कारण पादरी-सा लगता था, धीमे गम्भीर स्वर में कहा—

"आपके आने से हम बड़े .खुश हैं। बहुत .खुश।"

एक और बूढ़े मामाईव ने झूमते हुए कहा—

"अर्तामोनोव अपने लोगों का रईसों की तरह ध्यान रखते हैं।"

निकोनोव ने सबको सुनाई पड़नेवाले ऊँचे स्वर में कोप्तेव से कहा—

"ये सब कितने कृतज्ञ लोग हैं। वे जानते हैं कि अपने उपकारी का किस तरह सम्मान करना चाहिए।"

"माँ, ये मुझे धक्के दे रही हैं।" याकोव ने शिकायत की। वह गुलाबी रेशमी पोशाक पहने गेंद की तरह गोलमटोल दीख रहा था। उसकी माँ उसकी उँगली थामे हुए थी। स्त्रियों की ओर एक कृपापूर्ण मुस्कान फेंकते हुए उसने याकोव से कहा—

"देखो बूढ़ा कैसे नाच रहा है।"

बढ़ई बिना थके लट्टू की तरह घूम और उछल रहा था। उसके मुँह से एक के बाद एक मज़ाकिया गीत निकल रहा था—

अख़, क़दम उठाओ, और क़दम उठाओ !
अख़, और और तेज़ी से क़दम उठाओ
चमड़े के जूते छाल से भारी होते हैं
एक औरत कुमारी युवती से मधुर होती है !

अर्तामोनोव के लिये प्रशंसा पाना कोई नई बात नहीं थी। वह उन लोगों की सच्चाई पर शक करता था। फिर भी .खुशी से पुलकित होकर उसने कहा—

"ख़ैर, धन्यवाद-धन्यवाद—एक दूसरे से अच्छी निभ रही है क्यों ?"

और मन ही मन उसने सोचा—

"कितनी शर्म की बात है कि इलिया यहाँ नहीं है, नहीं तो वह देखता कि उसके पिता को कितना सम्मान मिलता है।"

उसे इच्छा होती कि वह लोगों पर कोई कृपा करे। किसी ढंग से उनकी सहायता करने के लिये अपने कान की लौर को खुजलाकर उसने कुछ सोचा और घोषणा की—

"बच्चों के अस्पताल को दुगना बड़ा बनाना होगा।"

सेराफ़ीम ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और उछलकर कहा—

"आप लोगों ने सुना? मालिक की जय हो!"

लोगों ने समान स्वर से न सही, पर ज़ोर से जयकार की। औरतों के झुण्ड में बैठी हुई नतालिया बड़ी प्रसन्न हुई। वह मिनमिनाकर बुदबुदाई—

"कोई जाकर बीयर के तीन पीपे और ले आओ। तिखोन दे देगा, जाओ!"

औरतें इस बात से और भी पुलकित हो उठीं। निकोनोव ने सिर हिलाते हुए उत्साहपूर्वक कहा—

"आज का उत्सव तो लाट-पादरी के उत्सव जैसा है!"

"माँ, मुझे गर्मी लग रही है।" याकोव कुनमुनाया।

इसी समय थोड़ा रंग में भंग पड़ गया। भट्ठी झोंकनेवाला वोलकोव दौड़ता हुआ नतालिया के पास पहुँचा। उसकी दाढ़ी काली तथा आँखें जंगली बेर जैसी बड़ी थीं। वह एक तिनके-सी सूखी-दुबली, फुंसियों से भरी लड़की को जो गर्मी के मारे बदहवास हो रही थी, गोद से चिपकाए हुए था। उसने विक्षिप्त स्वर में नतालिया से कहा—

"हाय मैं क्या करूँ! मेरी घरवाली गर्मी से मर गई। मेरी मदद करो! वह इसे छोड़ गई है। अब मैं क्या करूँ?"

उसकी पागल जैसी आँखों में से पीले रंग के बड़े-बड़े आँसू बहने लगे। औरतों ने धक्का देकर उसे नतालिया से परे हटाने की कोशिश की; मानों वे उससे क्षमा माँग रही हों।

"आप इसकी बातें मत सुनिये। यह तो पागल है। इसकी घरवाली कुलटा थी। तपेदिक़ की मारी। यह भी बीमार है।"

"कोई इसका बच्चा सँभालो।" अर्तामोनोव ने भारी आवाज़ में कहा और

फ़ौरन ही कई हाथ लुढ़कते हुए बच्चे को थामने के लिये आगे बढ़े, लेकिन वोल्कोव गालियाँ बकता हुआ वहाँ से भाग गया।

वैसे तो चारों ओर छुट्टी के दिन-सा ख़ुशी का वातावरण था, मज़दूरों में नये लोगों को देखकर अर्तामोनोव को गर्व-सा अनुभव हुआ। उसने सोचा—

"हमारी संख्या बढ़ रही है। अगर पिता होते....।"

अचानक उसकी पत्नी ने खेदपूर्ण स्वर में कहा—

"तुमने इलिया को सज़ा देने के लिये ग़लत मौक़ा ढूँढ़ा है। वह नहीं देख पाया कि लोग तुम्हें कितना प्यार करते हैं!"

अर्तामोनोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह कनखियों से ज़िनेदा की ओर देखने लगा। ज़िनेदा क़रीब दर्जन भर लड़कियों के आगे मटकती हुई कानों को बुरी लगनेवाली आवाज़ में धीरे-धीरे गा रही थी—

मुझसे देह रगड़ता वह गुज़रता है
मुझे देखकर हँसता-मुस्कराता है
अरे उसकी हालत ऐसी होती जाती है
कि वह मुझसे प्यार ही करने लगेगा!

"कंजरी कहीं की।" उसने सोचा। "यह गाना भी कितना सड़ियल है।"

उसने जेब से घड़ी निकालकर देखा और न मालूम क्यों अपनी पत्नी से झूठमूठ कहा—

"मैं एक मिनट के लिये घर जा रहा हूँ। अलेक्सी का तार आनेवाला है।"

वह जल्द ही वहाँ से खिसक आया। यह विचार आने पर कि वह अपने बेटे से क्या कहेगा, उसने कठोर किन्तु प्यारभरे कुछ वाक्य सोच लिये। लेकिन जब वह धीमे से द्वार खोलकर इलिया के कमरे में दाख़िल हुआ तो उसे वह सब भूल गया। लड़का घुटनों के बल एक कुर्सी पर बैठा था, उसकी कोहनियाँ खिड़की पर झुकी हुई थीं और वह धुँधले लाल आसमान की ओर देख रहा था। ढलती हुई साँझ के झुटपुटे ने उस छोटे से कमरे को भूरे-मटमैले रंग की धूल से भर दिया था। दीवार से लटकते हुए बड़े पिंजरे में मैना अपनी पीली चोंच को खरोंचकर सोने की तैयारी कर रही थी।

"क्यों! अभी तक यहीं बैठे हो?"

इलिया ने चौंककर पीछे देखा। वह धीरे से कुर्सी से नीचे उतर गया।

"अच्छा! वहाँ खड़े-खड़े तुम लोगों की बकवास सुन रहे थे!"

लड़का चुपचाप सिर नीचा किये खड़ा रहा। प्योत्र समझ गया कि यह याद दिलाने के लिये कि उसे सज़ा दी गई है, वह जानबूझकर ऐसा कर रहा है।

"तुम झुककर क्यों खड़े हो? अपनी गर्दन सीधी करो।"

इलिया ने आँखें ऊपर उठाईं लेकिन अपने पिता की ओर नहीं देखा। पिंजड़े में मैना ने फुदक-फुदककर चहचहाना शुरू कर दिया था।

"यह गुस्से में है।" अर्तामोनोव ने सोचा। वह इलिया के बिस्तर पर बैठ गया और तकिये में उँगली गड़ाते हुए बोला—"तुम्हें लोगों की बकवास नहीं सुननी चाहिये।" इलिया ने कहा—

"लेकिन लोग बातें जो करते हैं।"

उसके गम्भीर न्यायसंगत स्वर से पिता को सन्तोष हुआ। प्योत्र ने अधिक नर्मी से हिम्मत बाँध कर कहा—

"यह तो उनका काम है। लेकिन तुम उनकी बातों पर ध्यान न दिया करो। उनकी बातों को भूल जाओ। जहाँ भी बेहूदा बात सुनो, उसे भुला दो।"

"क्या आप भुला देते हैं?"

"बिलकुल! अगर मैं ऐसा न करूँ, तो तुम ही सोचो कि गुज़ारा कैसे चले?"

वह धीमे स्वर में सावधानी से चुने हुए सादे शब्दों का प्रयोग कर रहा था और उसे यह बात स्पष्ट रूप से मालूम थी कि इस समय शब्दों की कोई आवश्यकता न थी। जल्द ही वह सरल शब्दों की जटिल बुद्धिमत्ता से ऊब गया और लम्बी साँस लेकर बोला—

"मेरे पास आओ।"

इलिया सतर्कतापूर्वक उसके पास आया। पिता ने लड़के को गोद में बिठा कर उसके चौड़े माथे पर हाथ फेरा और आहिस्ता से उसके सिर को ऊपर उठाने की कोशिश की। लेकिन इलिया ने सिर ऊपर नहीं उठाया, इस पर पिता ने बुरा माना।

"तुम किस बात पर कुढ़ रहे हो? ज़रा मेरी ओर देखो।"

इलिया ने पिता की आँखों में आँखें डालकर देखा, लेकिन इससे बात और

बिगड़ गई, क्योंकि उसने पूछा—

"आपने मुझे मारा क्यों ? मैंने आपसे कह दिया था कि मैं पावलुश्का पर विश्वास नहीं करता।"

बड़े अर्तामोनोव ने तत्काल कोई उत्तर नहीं दिया। उसे ऐसा लगा, जैसे उसका बेटा किसी चमत्कार से उसके साथ बराबरी कर रहा हो। उसे स्वयं इस बात पर हैरानी हुई। लड़के का महत्त्व बालिग़ों जैसा हो गया था या शायद उसने अपने बालिग़ पिता का स्तर घटाकर अपने जैसा बना लिया था।

"अपनी उम्र के लिहाज़ से इसका हृदय बहुत ही कोमल है।" प्योत्र ने सोचा, फिर बेटे से जल्द ही समझौता कर लेने की आतुरता में उसने उठकर कहा—

"मैंने तुम्हें मारा नहीं। बच्चों को सिखाना पड़ता है। तुम्हें मालूम नहीं कि मेरे पिता मुझे कितना पीटते थे और मेरी माँ भी। इसके साथ ही साईस, मुंशी और जर्मन चौकीदार भी पीटते थे। अगर माँ-बाप तुम्हें पीटें तो इतनी बुरी बात नहीं। हाँ, अगर बाहर के लोग पीटें, तो चोट लगती है। माता-पिता की मार तो प्यार के कारण फूलों के समान होती है।"

वह कमरे में इधर-उधर चक्कर काटने लगा। दरवाज़े से लेकर खिड़की तक वह छः क़दम चला। वह अपनी बात को जल्दी ही समाप्त करना चाहता था। उसे डर था कि उसका बेटा कोई और नया सवाल न पूछ बैठे।

"तुम्हें कारख़ाने में हर क़िस्म की ऐसी चीज़ें देखने को मिलती हैं जो तुम्हें न देखना चाहिए।" उसने बेटे पर से आँखें हटाते हुए कहा, जो बिस्तर के पैताने से सटकर खड़ा था। "अब तो तुम्हें पढ़ने के लिये शहर के स्कूल में भेजना ही पड़ेगा। क्यों, क्या ख़्याल है ?"

"हाँ—।"

"अच्छा तो फिर....।"

उसने बेटे को दुलारना चाहा, लेकिन रुक गया। उसे ठीक याद न था—"क्या उसके माँ-बाप भी दिलपर चोट पहुँचाने के बाद उसे कभी दुलारते थे ?"

"अच्छा जाओ, बाहर जाकर खेलो। मैं सिर्फ़ इतना ही चाहता हूँ कि तुम पाशा से अधिक मिला-जुला न करो।"

"उसे तो कोई भी पसन्द नहीं करता।"

"करे भी क्यों—आखिर उस बीमार पिल्ले में धरा ही क्या है?"

अपने कमरे में लौटकर अर्तामोनोव खिड़की खोलकर खड़ा हो गया। वह सोच रहा था कि बेटे के साथ उस तरह बातचीत नहीं हुई जैसी होनी चाहिए थी।

"मैंने उसे बिगाड़ दिया है। वह मुझसे डरता ही नहीं।"

बस्ती से शोर-ग़ुल की आवाज़ आई। लड़कियों के हँसने-गाने तथा ऊँचे स्वर में बातें करने की। बाजा बज रहा था। इतने में फाटक पर से तिखोन की आवाज़ सुनाई पड़ी—

"बच्चे! घर में क्यों घुसे बैठे हो? आज छुट्टी के दिन भी स्कूल जा रहे हो? वाह! वाह! कहते हैं कि अनपढ़ आदमी न-जन्मे के बराबर होता है। पर तुम्हारे बिना मुझे यहाँ सूना लगेगा।"

अर्तामोनोव ने चिल्लाना चाहा—

"तुम झूठ बकते हो! सूनापन तो मुझे लगेगा!" उसने घृणापूर्वक सोचा: "धोखेबाज़, कमीना! मालिक के बेटे की ख़ुशामद कर रहा है!"

पादरी ग्लेब के भाई से पढ़ने के लिये जब लड़का शहर चला गया तो प्योत्र को लगा जैसे उसका दिल सूना हो गया है—घर काटने को दौड़ता था। उसे रह-रहकर बेचैनी होती। ठीक वैसी बेचैनी, जैसी कभी सोने के कमरे की बत्ती बुझ जाने पर होती थी। प्योत्र उस नन्हीं नीली लौ का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि उसके बुझने पर वह पूरी रात आँखों में ही काट देता।

जाने से पहले इलिया ने ऐसी बुरी हरकतें कीं, मानो वह जान-बूझकर अपनी दुःखद स्मृतियाँ पीछे छोड़ जाना चाहता हो। उसने अपनी गुस्ताख़ी से माँ को रुला दिया। पिंजरा खोलकर उसने याकोव के सारे पक्षियों को उड़ा दिया। एक बार उसने याकोव को मैना देने का वायदा किया था, लेकिन याकोव को न देकर वह उसने निकोनोव को दे दी।

"तुम्हारे सिर पर क्या भूत सवार हुआ है?" प्योत्र ने पूछा, पर जवाब देने के बजाय इलिया ने दूसरी ओर मुँह फेर लिया। प्योत्र को लगा कि उसका बेटा उसका अपमान करके उन स्मृतियों को बरबस ताज़ा कर रहा हो, जिन्हें वह भूल जाना चाहता था। इस नन्हें व्यक्ति ने उसके दिल में कितनी जगह

कर ली थी। यह सोचकर प्योत्र को आश्चर्य होता।

"क्या मेरे पिता कभी मेरे लिए इतने परेशान हुए थे ?"

स्मृतियों ने विश्वास दिलाया कि न तो कभी पिता ने पुत्र के प्रति स्नेह दिखाया था, न पुत्र ने पिता के प्रति। वह कड़ाई से काम भर लेता था। पिता का सारा लाड़-प्यार अलेक्सी के लिए था।

"आख़िर बात क्या है ? क्या मैं अपने पिता से अधिक दयालु हूँ ?" अर्तामोनोव ने अपने से पूछा और उलझन में पड़ गया। वह अपने बारे में ठीक से नहीं बता सकता था कि वह अच्छा है या बुरा। अचानक ही बेमौक़े ऐसे विचार आकर उसे परेशान कर डालते। काम करना दूभर हो जाता। उधर कारोबार तेज़ी से बढ़ रहा था। हज़ारों आँखें मालिक की ओर लगी थीं और कारोबार में निरन्तर और अनथक ध्यान देने की आवश्यकता थी। इस पर हालत यह थी कि इलिया का ध्यान आते ही कारोबार-सम्बन्धी विचारों का ताना-बाना एक झटके में टूट जाता और प्योत्र बड़ी मुश्किल से उसे फिर जोड़ पाता। उसने इलिया की अनुपस्थिति की कमी को याकोव पर अधिक ध्यान देकर पूरा करना चाहा, लेकिन उसे यह बात जानकर गहरी निराशा हुई कि याकोव से उसे कोई सान्त्वना नहीं मिल सकती।

"पिताजी, मुझे एक बकरा ले दो।" याकोव ने गिड़गिड़ाकर कहा। वह हमेशा किसी न किसी चीज़ के लिए गिड़गिड़ाता रहता था।

"बकरा किसलिए ?"

"सवारी के लिए।"

"कितनी बेहूदी बात है ! बकरे की सवारी तो डाइनें ही करती हैं !"

"एलेना ने मुझे एक तस्वीरों की किताब दी थी। उसमें तो एक छोटा-सा लड़का बकरी पर सवार है।"

बाप सोचने लगा—

"इलिया कभी तस्वीर की बात सच्ची न मान लेता। वह तो डाइनों की बातें सुने बग़ैर मेरा पीछा ही न छोड़ता।"

याकोव कारख़ाने के बच्चों से छेड़ख़ानी करता और बाद में शिकायत करता कि वे उसे मारते हैं। प्योत्र को यह आदत नापसन्द थी।

इलिया भी तो लड़ता-भिड़ता था, झगड़ालू था; बस्ती के लड़कों से मार-पीट करते समय उसे अक्सर चोटें लग जाती थीं, लेकिन उसने कभी शिकायत नहीं की। छोटा लड़का डरपोक और आलसी था। वह हर समय कुछ न कुछ चूसता-चबाता रहता। कभी-कभी तो याकोव के व्यवहार को समझना कठिन हो जाता। एक रोज़ प्याले में दूध डालते समय उसकी माँ की आस्तीन से उलझकर चाय का गिलास उस पर ढुलक गया और गरम पानी से छाले पड़ गये।

"मैं जानता था कि तुम गिलास लुढ़का दोगी।" याकोव ने दाँत निपोरते हुए डींग मारी।

"देखकर भी तुमने कुछ नहीं कहा। यह क्या तरीक़ा है ?" प्योत्र ने कहा, "देखो तुम्हारी माँ की टाँगों पर छाले पड़ गये हैं।"

याकोव टुकुर-टुकुर ताकने लगा। उसका मुँह पहले की तरह लगातार चल रहा था, गाल फूले हुए थे। कुछ रोज़ बाद प्योत्र ने आँगन में उसका शोरो-ग़ुल सुना—

"मैं जानता था कि वह हमला करेगा। वह लुक-छिपकर पास सरकता आया, सरकता आया और दे मारा !"

अर्तामोनोव ने खिड़की से झाँककर देखा कि उसका बेटा आवेशपूर्ण ढंग से उस निकम्मे छोकरे पावलुश्का निकोनोव से घुल-घुलकर बातें कर रहा था। उसने याकोव को बुलाया और निकोनोव से मिलने-जुलने की मनाही कर दी। वह कुछ और कहनेवाला था, लेकिन लड़के की आँखें देखकर उसने ठंडी साँस ली और उसे धक्का देकर एक ओर हटा दिया—लड़के की आँखों में अजब-सा सूनापन था—पुतलियाँ सफ़ेद थीं।

"फटी आँखोंवाला। भाग जा यहाँ से।"

याकोव फूँक-फूँककर क़दम रखता हुआ चल दिया, मानो उसके पाँवों-तले बर्फ़ बिछी हो। उसकी कोहनियाँ दोनों ओर चिपकी हुई थीं और हाथ आगे बढ़े हुए थे, मानो भारी बोझ उठाये हुए हो।

"फूहड़—बेवकूफ़।" प्योत्र ने सोचा।

उसकी लम्बी गुमसुम लड़की में भी याकोव-जैसी नीरसता थी। उसे लेटकर पढ़ना पसन्द था। चाय के साथ वह ढेर-सा मुरब्बा खाती और खाने के समय

बड़े नाज़ो-नखरे से रोटी तोड़ती। वह अपनी नाजुक, लचीली उँगलियों से इस तरह चम्मच पकड़ती जैसे शोरबे में मक्खी गिर गई हो। अपने लाल, भरे होंठों को सदा भींचे रखती। कभी-कभी माँ से छोटे मुँह बड़ी बात करती—

"आजकल इसका रिवाज नहीं है, यह फ़ैशन तो बहुत पुराना हो चुका।"

जब प्योत्र ने पूछा—

"अच्छा विदुषी देवीजी, आप कारख़ाने में जाकर यह क्यों नहीं देखतीं कि आपके कपड़े कैसे बनते हैं?" तो उसने जवाब दिया—

"बहुत अच्छा।"

उसने बढ़िया-से कपड़े पहने और अपने चचा अलेक्सी से भेंट में पाये छाते को लेकर चुपचाप पिता के पीछे-पीछे चल पड़ी। वह अपने कपड़ों को बड़ी सावधानी से पकड़े हुए थी कि कहीं उलझ न जायें। उसे कई बार छींकें आईं, लेकिन जब मज़दूरों ने उसका अभिवादन किया तो बिना किसी शब्द या मुस्कराहट के उसने घमण्ड से केवल सिर हिला दिया। प्योत्र ने कपड़ा बनाने की विधियाँ समझाना शुरू किया, लेकिन यह देखकर कि उसका ध्यान मशीनों की बजाय फ़र्श पर है, वह चुप हो गया। इतने महत्वपूर्ण कारोबार के प्रति बेटी की उपेक्षा उसे बहुत अखरी। फिर भी करघों के कमरे से बाहर निकलते समय उसने पूछा—

"तुम्हें कारख़ाना कैसा लगा?"

"वहाँ बड़ी मिट्टी थी।" वह अपने कपड़ों को उलट-पलटकर देख रही थी कि कहीं फट तो नहीं गये।

"तुमने कुछ विशेष तो देखा नहीं।" प्योत्र ने ओंठों को चबाते हुए मुस्कराने की कोशिश की और उपेक्षा के स्वर में कहा:

"तुम अपने घाघरे को क्यों उठा रही हो? आँगन साफ़-सुथरा है और तुम्हारा घाघरा तो वैसे भी ऊँचा है।"

उसने चौंककर घाघरे को छोड़ दिया और खेदपूर्ण ढंग से कहा—

"तेल की सख़्त बू आ रही है।"

उसकी उँगलियों और अँगूठे को हिलता देखकर प्योत्र चिढ़ गया—

"इन दो उँगलियों में तुम जीवन से कुछ नहीं पकड़ सकोगी।"

बरसात के मौसम में एक दिन वह कोच पर लेटी एक किताब पढ़ने में तल्लीन थी। प्योत्र ने पास बैठते हुए पूछा कि क्या पढ़ रही है।

"एक डाक्टर के बारे में।"

"हूँ—शायद विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तक।"

लेकिन किताब पर नज़र दौड़ाते ही वह आगबबूला हो गया—

"झूठ क्यों बोलती हो? यह तो कविता है। क्या विज्ञान की पुस्तकें कविता में लिखी जाती हैं?"

उसने घबराते हुए पिता को कहानी सुनाई कि कैसे ईश्वर ने शैतान को आज्ञा दी कि वह एक जर्मन डाक्टर को पथभ्रष्ट करे, और कैसे शैतान ने अपने एक दूत को भेजा। अर्तामोनोव ने कान सहलाते हुए शुद्ध अन्तःकरण से इस कहानी का अर्थ समझने की चेष्टा की, लेकिन लड़की का ढंग इतना उपदेशात्मक और हास्यास्पद था कि कहानी का सिर-पैर समझ में नहीं आया। प्योत्र खीझ उठा—

"यह डाक्टर क्या पियक्कड़ था?"

उसने देखा एलेना उसके प्रश्न को सुनकर घबरा गई। उसकी बातों पर कोई ध्यान न देते हुए उसने ग़ुस्से से कहा—

"यह सब ऊलजलूल है, मनगढ़न्त किस्सा। तुमने यह किताब कहाँ से पाई?"

"मिस्त्री ने मुझे दी थी।"

एलेना जब भी गम्भीर होती तो उसकी बिल्ली-जैसी भूरी आँखों में शून्यता आ जाती। प्योत्र को लगा कि लड़की को चेतावनी दे दे—

"कोतेव तुम्हारी बराबरी का नहीं हो सकता। उससे अधिक मेल-जोल ठीक नहीं।"

हाँ, एलेना और याकोव इलिया के मुक़ाबिले में मूर्ख और नीरस थे। यह प्योत्र स्पष्ट देख रहा था। यहाँ तक कि अपने पुत्र के प्रति स्नेह का स्थान पवेल के प्रति घृणा ने ले लिया था—यह परिवर्तन इतनी धीमी गति से हुआ कि स्वयं प्योत्र को भी इसका पता न चला। जब भी वह उस रुग्ण बालक को देखता, तो मन ही मन सोचता—

"इस सड़े हुए····की वजह से।"

उसे इस लड़के से एक शारीरिक घृणा अनुभव होती। निकोनोव कन्धों को झुकाकर चलता। उसकी पतली गर्दन पर उसका सिर बेचैनी से हिलता-डुलता रहता। यहाँ तक कि दौड़ते समय भी अर्तामोनोव को वह कायर और शैतान प्रतीत होता। वह जी-तोड़कर मेहनत करता। बाप के जूतों पर पालिश करना, कपड़ों पर ब्रश फेरना, लकड़ी काटना, पानी ढोना, रसोई के जूठे बर्तन बाहर लाना आदि सब काम उसके ज़िम्मे थे। गन्दे और फटेहाल वह गौरैय्या की तरह काम में जुटा रहता और गिड़गिड़ाहट भरी उकसानेवाली मुस्कुराहट से हर किसी का अभिवादन करता। अर्तामोनोव को मीलों दूर से देखते ही उसकी मुर्गाबी-जैसी गर्दन झुककर छाती से लग जाती। यह देखकर कि लड़का बारिश में भीग रहा है, या सर्दी के दिन लकड़ी काटते हुए अपनी सुन्न उँगलियों को मुँह की भाप से गरमाने की कोशिश कर रहा है—विशेषकर जब एक टाँग पर खड़ा होकर अपने पैरों को रोकता है और उसके चिथड़ेनुमा जूतों के तले अलग हो जाते हैं, तो अर्तामोनोव को आनन्द-सा प्राप्त होता। खाँसने से उसके समूचे शरीर में पीड़ा होती और अपने छोटे-छोटे सुन्न नीले हाथों से वह अपनी छाती थाम लेता।

यह सुनकर कि निकोनोव ने ग़ुसलखाने के ऊपर के कमरे में दो कबूतरों के जोड़े बन्द कर रखे हैं, अर्तामोनोव ने तिखोन को फ़ौरन कबूतरों को छोड़ देने की आज्ञा दी। साथ ही लड़के का ऊपर जाना भी बन्द कर दिया गया।

"कहीं छत से गिरकर चोट खा जाय! इतना कमज़ोर तो है!"

एक रोज़ शाम के समय दफ़्तर में आकर प्योत्र ने देखा कि लड़का फ़र्श पर गिरी स्याही को चाकू से खुरचकर गीले चिथड़े से रगड़कर साफ़ कर रहा है।

"यह किसने गिराई?"

"पिताजी ने।"

"तुमने नहीं?"

"मैंने नहीं गिराई! ईश्वर की सौगन्ध!"

"फिर तुम रो क्यों रहे थे?"

पवेल सिर झुकाकर घुटनों के बल बैठ गया मानो मार खाने की प्रतीक्षा कर रहा हो, अर्तामोनोव ने घूरा और लड़का डर के मारे काँपने लगा। प्योत्र

को सन्तोष हुआ—

"तुम इसी क़ाबिल हो।"

अचानक ही उस तुच्छ जीव के प्रति अपनी बच्चों की-सी हास्यास्पद घृणा का विचार आते ही वह मन ही मन मुस्कुरा उठा।

"मैं इन ख़ुराफ़ातों में अपना समय नष्ट करता हूँ!" उसने लापरवाही से सोचा और फ़र्श पर पाँच कोपेक का भारी ताँबे का सिक्का फेंकते हुए बोला—

"यह लो! जाकर मिठाई खा लेना।"

लड़के ने सिक्के की ओर सावधानी से हाथ फैलाये—मानो उसे डर हो कि कहीं सिक्का उसकी गंदी गाँठदार उँगलियों को काट न खाये।

"क्या तुम्हारा बाप तुम्हें पीटता है?"

"हाँ।"

"तो फिर क्या किया जाय? कभी न कभी तो सब पर मार पड़ती है।" अर्तामोनोव ने दिलासा देते हुए कहा। कुछ दिनों बाद जब याकोव ने पावलुश्का की शिकायत की तो अपने बेटे की बात पर विश्वास न होते हुए भी उसने आदत से लाचार होकर मुंशी को बुलाकर कहा—

"ज़रा अपने बेटे की मरम्मत करो।"

"मैं तो उसकी वैसे भी अच्छी मरम्मत करता रहता हूँ।" निकोनोव ने सादर उत्तर दिया।

गर्मी की छुट्टियों में इलिया घर आया। उसने अजब-से कपड़े पहने थे और बाल छोटे कटे होने के कारण उसका माथा और भी अधिक चौड़ा नज़र आता था। पवेल के प्रति अर्तामोनोव की घृणा और भी भड़क उठी, क्योंकि इलिया उस आवारा छोकरे से दोस्ती जारी रखने पर अड़ा रहा। इलिया स्वयं तो इतना नम्र हो गया था कि उसकी नम्रता कभी-कभी अखरती थी। माँ-बाप को वह शिष्टाचार से "वी"* कहकर सम्बोधित करता। जेबों में हाथ डालकर घर में इस तरह घूमता जैसे कोई मेहमान हो; फिर भी भाई को तंग करके रुला डालता

---

*व्यक्तिवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, बहुवचन। प्रचलित मध्यम पुरुष एकवचन (ती) की अपेक्षा इसका प्रयोग अधिक आदर-सूचक है—अनु०।

और बहन को इतना चिढ़ाता कि वह अपनी किताबें उस पर फेंकने लगती। साधारणरूप से उसका व्यवहार घिनौना था।

"मैं तो पहले ही कहती थी।" नतालिया ने पति से शिकायत की। "सब लोग कहते हैं कि स्कूल में लिखाने-पढ़ाने से उद्दण्डता आ जाती है।"

अर्तामोनोव चुप रहता, पर अपने बेटे की हरकतों को ग़ौर से देखता। ऐसा लगता था कि इलिया इच्छा न होते हुए भी जान-बूझकर शरारतें करता है। ग़ुसलख़ाने की छत की मुण्डेर पर फिर कबूतर गुटरगूँ करते हुए दीखने लगे। इलिया और पवेल या तो पक्षियों को उड़ाते या फिर घंटों चिमनी के पास बैठकर बातें करते रहते। एक बार इलिया के आने के बाद ही प्योत्र ने पूछा—

"ज़रा बताओ तो स्कूल कैसा होता है। मैंने तुम्हें बीसियों कहानियाँ सुनाईं थीं। अब तुम्हारी बारी है।"

बड़ी जल्दबाज़ी और संक्षेप में इलिया ने एक नीरस कहानी सुनाई कि किस प्रकार लड़के अध्यापकों की आँखों में धूल झोंकते हैं।

"तुम लोग ऐसी हरकतें क्यों करते हो?"

"वे हमें परेशान करते हैं।" इलिया बोला।

"अच्छा। मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगीं। क्या तुम्हारी पढ़ाई बहुत कठिन है?"

"नहीं। आसान है।"

"सचमुच?"

"आप मेरी रिपोर्ट पढ़ लें।" इलिया ने कन्धे को झटका देकर जवाब दिया। उसकी आँखें बग़ीचे के पार आकाश पर लगी थीं। पिता ने पूछा—

"क्या देख रहे हो?"

"बाज़।"

अर्तामोनोव ने ठंडी साँस भरी।

"अच्छा, तुम बाहर जाकर खेलो। ऐसा लगता है कि मेरे साथ तुम ऊब जाते हो।"

अकेला रह जाने पर उसे याद आया कि बचपन में अपने पिता के साथ बातें करने में वह हमेशा डरता था—या ऊब जाता था।

"ये लड़के अपने अध्यापकों की आँखों में धूल झोंकते हैं। जब गिरजे का मुंशी कोड़ा हाथ में लेकर मुझे पढ़ाता था, मेरे दिमाग़ में तब ऐसी बात नहीं आई। लगता है आजकल बच्चे मौज उड़ाते हैं।"

स्कूल वापिस जाने से पहले इलिया ने पिता से केवल एक प्रार्थना की—

"पिताजी, पवेल को ग़ुसलख़ाने के ऊपर के कमरे में कबूतर रखने दो!"

"तुम हर किसी की तकलीफ़ दूर नहीं कर सकते।"

"तो फिर वह कबूतर रख ले।" बेटे ने परिणाम निकाला। "मैं जाकर उससे कहे देता हूँ। वह बड़ा ख़ुश होगा।"

बाप के दिल को चोट लगी। उसका बेटा उस ऐरे-ग़ैरे मनहूस छोकरे को ख़ुश करने के लिये कितना उत्सुक है? लेकिन उसने कभी अपने बाप की ज़िन्दगी में ख़ुशी लाने की कोशिश नहीं की—उसे परवाह ही नहीं। इलिया के जाने के बाद मुंशी के बेटे के प्रति उसकी घृणा और भी तीव्र हो उठी। यहाँ तक कि घर में, कारख़ाने में या बस्ती में अगर कोई भी गड़बड़ होती तो अर्तामोनोव के सामने अनायास ही इस गंदे, फटेहाल बच्चे की सूरत आ जाती और वह एकदम खीझ उठता। उसे लगता कि उसके सारे कटु विचारों और दुर्भावनाओं को दूर करने के लिये वह बच्चा अपने दुर्बल अंगों को समर्पित कर रहा है। भुरभुरी मट्टी और शाम की परछाइयों की तरह लड़का प्योत्र के विचारों में बढ़ता आता था। नन्हें प्रेत की भाँति वह रह-रहकर प्रगट होता था।

सुहावनी गर्मियों के मौसम में एक रोज़ अर्तामोनोव बाग़ीचे में गया। वह थका और ग़ुस्से में था। शाम झुक रही थी और पतझड़ का थका सूरज आँधी और बारिश से धुले-पुते हरे रङ्ग के आकाश में बिना किसी गर्मी के सीझ-सा रहा था। तिखोन व्यालोव बाग़ीचे के एक कोने में गिरे-सड़े पत्तों की ढेरी बना रहा था। उनकी हल्की, उदासीभरी चरमराहट पेड़ों के झुरमुट में समाई हुई थी। बाग़ीचे के पीछे कारख़ाने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी, मटमैले रंग का धुँआ मन्दगति से ऊपर उठकर वायु-मंडल की स्वच्छता को दूषित कर रहा था। कहीं तिखोन से सामना होने पर कुछ बोलना न पड़े, यह सोचकर अर्तामोनोव बाग़ीचे के दूसरे कोने में चला गया, जहाँ गुसलख़ाना बना था। उसने देखा कि गुसलख़ाने का दरवाज़ा चौपट खुला है।

"वह छोकरा अन्दर होगा।"

उसने कनखियों से शृङ्गार कक्ष में झाँककर देखा। उसका दुश्मन एक अँधेरे कोने में एक बेंच के ऊपर पाँव पसारकर लेटा था। उसका सिर पीछे की ओर झुका था, दोनों टाँगें चौड़ी फैली हुई थीं और वह हस्तमैथुन करने में तल्लीन था। क्षणभर के लिये अर्तामोनोव को ख़ुशी-सी हुई। लेकिन फिर याकोव और इलिया का विचार आते ही वह भय और घृणा से चिल्ला उठा—

"सूअर के बच्चे! यह क्या हो रहा है?"

पवेल की बाँहें सुन्न होकर लटक गईं। उसका सारा शरीर बेंच पर सिमट गया। एक हल्की-सी चीख़ के साथ वह एक सख़्त गेंद की तरह दरवाज़े की ओर लुढ़क कर गिरा, जहाँ प्योत्र खड़ा था। प्योत्र ने जान-बूझकर उसकी छाती पर अपने दाहिने पैर से ठोकर मारी। ऐसा करने में उसे एक अज्ञात प्रसन्नता मिली। कुछ कड़कड़ाहट-सी आवाज़ हुई और बालक एक क्षीण आह के साथ फ़र्श पर लुढ़क गया।

क्षणभर के लिये अर्तामोनोव को लगा कि इस ठोकर से उसके मन का सारा बोझ हल्का हो गया है। दूसरे ही क्षण उसने कान लगाकर बाग़ीचे की ओर देखा। फिर दरवाज़ा बन्द करके पवेल पर झुका और धीमे स्वर में बोला—

"झटपट खड़े हो जाओ। यहाँ से चलें।"

लड़के की एक बाँह आगे की ओर फैली थी और दूसरे हाथ से वह अपने घुटने को पकड़े हुए था। एक टाँग दूसरी की अपेक्षा छोटी लग रही थी। प्योत्र को लगा कि लड़का चुपके से उसकी ओर रेंगता हुआ बढ़ रहा है। आगे की फैली हुई बाँह बड़ी लम्बी और भयानक थी। अर्तामोनोव ने उछलकर दरवाज़े का सहारा लिया। टोपी उतारकर उसके अस्तर से माथा पोंछा—पसीने की धारें फूट निकली थीं।

"खड़े हो जाओ। मैं किसी से नहीं कहूँगा।" वह फुसफुसाया; लेकिन उसे मालूम हो चुका था कि उसने लड़के को मार डाला है। वह लड़के के मुँह से फ़र्श पर टपकती हुई ख़ून की गहरी धार को पहले ही देख चुका था।

प्योत्र ने सोचा "मर गया।" और इस सीधे-सादे शब्द से उसके शरीर में सनसनाहट फैल गई। उसने टोपी को कोट की जेब में ठूँसकर जल्दी से शरीर

पर क्रास का चिह्न बनाया। वह मूर्खतापूर्ण ढंग से मुँह बाये उस ऐंठे हुए नन्हें शरीर को देखता रहा। उसका मस्तिष्क भय की भावना से धड़कने लगा।

"मैं कहूँगा कि यह एक दुर्घटना थी। मैंने दरवाज़ा खोला कि उसे धक्का लग गया। हाँ, दरवाज़े से टकरा गया। काफ़ी भारी दरवाज़ा है।"

उसने चारों तरफ़ देखा और धम्म से बेंच पर गिर पड़ा—हाथ में झाड़ू लिये तिखोनोव ठीक उसके पीछे खड़ा था। उसकी सजल आँखें निकोनोव पर लगी थीं। उसने अपनी उँगलियों से लड़के के सर्द गालों को छुआ और सोच में डूब गया।

"देखो।" अर्तामोनोव ने दोनों हाथों से बेंच को पकड़कर ज़ोर से बोलना शुरू किया, लेकिन तिखोन ने बीच में ही टोक दिया। सिर हिलाते हुए उसने कहा—

"कमज़ोर, फूहड़ छोकरा। मैंने कितनी बार इसे मना किया कि ऊपर मत चढ़ा करो!"

"क्या बात है?" प्योत्र ने डर का अभिनय किया। उसकी कुछ जान में जान आई।

"मैंने उसे समझाया, किसी दिन अपनी गर्दन तोड़ बैठोगे। तुम्हें याद है न प्योत्र इलिच, तुमने भी यही कहा था? ऐसी शरारतों के लिये फुर्ती चाहिए। क्या यह बेहोश हो गया है?"

फिर पालथी मारकर चौकीदार ने पवेल की नाड़ी टटोली। कलाई, छाती, गाल सब देख डाले। फिर उसने कुरते से उँगली रगड़ी, मानों दियासलाई की तीली जला रहा हो—

"लगता है कि काम तमाम हो गया। इस बीमार प्राणी को मरने में भला कितनी देर लगती।"

तिखोन का स्वर, हरकतें और चेहरा पहले की तरह ही शान्त था। फिर भी उसका मालिक संदिग्ध मन से भर्त्सना-भरे तीव्र शब्दों की प्रतीक्षा कर रहा था। तिखोन ने छत के चौकोर छेद को देखा। कुछ देर तक कबूतरों की गुटरगूँ सुनने के बाद उसने पहले की-सी सरलता और शान्ति से कहा—

"वह हमेशा दरवाज़े से ऊपर चढ़ता था। बेंच पर खड़े होकर दरवाज़े की

सिटकनी पर पैर जमाता और छेद को पकड़कर ऊपर लटक जाता। सिर्फ़ बाँहों में ताक़त न होने की वजह से उसका हाथ छूट गया होगा, और ज़रूर दरवाज़े के कोने से इसका दिल टकराया होगा।"

"मैंने तो देखा नहीं।" प्योत्र ने कहा। आत्म-रक्षा की भावना से उसके मन में कई प्रकार के सन्देह पैदा हुए—

"क्या यह झूठ बोल रहा है? मक्कर तो नहीं कर रहा? शायद जाल बिछा रहा हो, ताकि उसमें फँसकर मैं इसकी मुट्ठी में आ सकूँ या यह मूर्ख सच-मुच ही कुछ नहीं समझता?"

प्योत्र को अन्तिम सम्भावना अधिक जँची। तिखोन मूर्खों-जैसा व्यवहार कर रहा था। सिर हिला-हिलाकर मानो किसी का मज़ाक उड़ा रहा था। ठंडी साँस भरकर उसने कहा—

"मिट्टी का लोंदा! हूँ! ऐसे प्राणी भला दुनिया में आते ही किसलिए हैं? मैं जाकर इसकी माँ को बताऊँगा। मेरा अनुमान है कि उसके बाप को विशेष दुःख नहीं होगा। उसके लिए तो लड़का फ़ालतू बोझ ही था।"

अर्तामोनोव सन्दिग्ध मन से जमादार की बातें सुन रहा था, वह इस ताक में था कि कहीं पाखण्ड का कोई संकेत मिले; लेकिन सदा की भाँति तिखोन कुतूहल से अप्रभावित होकर बात कर रहा था।

"सुनो!" उसने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं और कुछ सुनने लगा। बाहर एक स्त्री ग़ुस्से में पुकार रही थी—

"पाश्का! पाश्का—आ-आ!"

तिखोन ने अपना गाल सहलाया।

"क्या कहने पाश्का के! आँसू बहाने के लिए तैयार हो जाओ।"

"यह आदमी अव्वल दर्ज़े का बेवकूफ़ है।" अर्तामोनोव ने सोचा और बाहर बग़ीचे में चला गया। उसने जेब से टोपी निकाली और उसके टूटे ऊपरी भाग को उलट-पलटकर देखने लगा।

दो-तीन सप्ताह तक उसका मन एक लगातार बढ़ते हुए अज्ञात डर से डावाँडोल रहा, उसे रोज़ लगता जैसे कोई मुसीबत टूटनेवाली है। उसे लगता कि अगले ही क्षण दरवाज़ा खोलकर तिखोन अन्दर आ जायगा और कहेगा—

"अच्छा, यह बात है, मुझे सब कुछ मालूम है....।"

वैसे तो कोई गड़बड़ नहीं हुई। जन्म और मरण के आदी होने के कारण लोगों ने लड़के की मृत्यु को स्वाभाविक घटना-मात्र समझा। निकोनोव ने अपनी पीली गर्दन पर काली टाई बाँधी। उसके फीके चेहरे पर विनय का भाव था, मानो उसे लम्बी प्रतीक्षा के बाद कोई पुरस्कार मिला हो। मृत लड़के की माँ, जो एक लम्बी, गठीली, घोड़े के-से मुँहवाली स्त्री थी, बिना आँसू बहाये चुपचाप अपने बेटे के दफ़नाये जाने की राह देख रही थी। अर्तामोनोव को लगा जैसे वह इसके संस्कार के जल्द समाप्त होने के लिए उत्सुक हो। वह बार-बार कभी कफ़न के सिरहाने लगी हुई झालर की सिलवटें ठीक करती, कभी काग़ज़ की बनी सन्तों की मूर्तियों को लड़के के नीले माथे पर रखती, कभी लड़के की आँखों पर ढँके हुए ताँबे के नये चमकीले सिक्कों को धीरे से दबाती। वह भद्दे ढंग से जल्दी-जल्दी अपने शरीर पर क्रॉस का चिह्न बनाती जा रही थी। अन्त्येष्टि-क्रिया के दौरान में प्योत्र ने देखा कि क्रॉस का चिह्न बनाने के लिए उसकी बाँहें उठीं और उसी समय शिथिल होकर नीचे गिर गईं, मानो हड्डी चटख़ गई हो—बेचारी इतनी थक गई थी।

यहाँ तक तो इस कार्य में किसी प्रकार का विघ्न नहीं पड़ा। निकोनोव दम्पति ने अन्त्येष्टि-संस्कार के लिए पाये चन्दे के लिए धन्यवाद दे-देकर अर्तामोनोव का दिमाग़ चाट डाला। बहुत खुले दिल से चन्दा देने पर कहीं तिखोन को सन्देह न हो, इस डर से उसने थोड़ी-सी रकम ही दी थी। अर्तामोनोव को तिखोन की मूढ़ता पर अभी तक विश्वास न आता था। ग़ुसलख़ाने को घटना के साथ-साथ ही यह व्यक्ति प्योत्र के विचारों में दिन-प्रतिदिन गहरा धँसता गया। कई बार तो अर्तामोनोव ने सोचा कि वह ग़ुसलख़ाने को आग लगा दे या ईंधन के लिए कटवा डाले। वैसे भी सर्दी बढ़ रही थी और लकड़ी के तख़्ते गलने लगे थे। बाग़ीचे में किसी और जगह नया ग़ुसलख़ाना बन सकता है।

उसने ध्यान से देखा, तिखोन की ज़िन्दगी में कोई अन्तर नहीं आया था। हमेशा की तरह वह अपने अस्तित्व के प्रति विनयशील था जैसे अपनी इच्छा के विरुद्ध केवल सहृदयता के कारण जी रहा हो। वही हमेशा की-सी चुप्पी। कारख़ाने के मज़दूरों के साथ वह पुलिस के सिपाहियों की-सी सख़्ती से पेश

आता, औरतों के प्रति उसके उजड्डपन को देखकर मत खिन्नता से भर उठता। लेकिन नतालिया के सामने आते ही वह कुछ और हो जाता—ऐसे बातें करता मानो वह मालकिन न होकर उसकी कोई अपनी सगी मौसी या बड़ी बहन हो।

"तुम तिखोन से कैसे इतना घुल-मिल जाती हो?" प्योत्र कई बार अपनी पत्नी से पूछ चुका था; वह सदा उत्तर देती—

"मैं इसकी आदी हो गई हूँ।"

अगर तिखोन के दोस्त होते या वह लोगों से मिलने कहीं आता-जाता तो कुछ बात भी थी। लेकिन सिवा सेराफ़ीम बढ़ई के तिखोन का कोई दोस्त भी न था; उसे गिरजे में जाना अच्छा लगता था, वहाँ वह अत्यन्त श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करता, हालाँकि प्रार्थना के समय वह अपना मुँह बड़े भद्दे ढंग से खोलता, मानो अभी चिल्लायेगा। कभी-कभी तो तिखोन की बुझी हुई आँखों को देखकर प्योत्र के चेहरे पर गम्भीरता छा जाती; ऐसा लगता कि उन आँखों की सजल गहराइयों में कोई चेतावनी छिपी हुई है। अर्तामोनोव की इच्छा होती कि उसकी गर्दन पकड़कर झकझोर दे और चिल्लाकर कहे—

"कुछ तो बोलो!"

लेकिन तिखोन की आँखों की पुतलियाँ सिकुड़कर निर्जीव हो जातीं और चेहरे की कठोर शान्तिपूर्ण मुद्रा को देखकर प्योत्र का सन्देह दूर हो जाता। मूर्ख ऐन्तन, जब ज़िन्दा था, तब वह अक्सर चपरासी के घर आया करता या शाम के समय फाटक के पास बेंच पर बैठ जाता। तिखोन ने अनेक बार उस बुद्धू से पूछने की कोशिश की।

"बकवास मत करो। ज़रा सोचकर बताओ कि कुऐत्र कौन है?"

"कयामास।" ऐन्तन पुलकित होकर चीख़ता और गाना शुरू कर देता—

"हाँ! ईसा जाग उठा, हाँ, जाग उठा।"

"चुपो!"

"गाड़ी का पहिया खो गया, खो गया!"

"आख़िर तुम्हारा मतलब क्या है?" अर्तामोनोव ने खीझ कर पूछा। उसे स्वयं अपनी खीझ का कारण ज्ञात नहीं था।

"इसके इन विचित्र शब्दों का अर्थ ?"

"लेकिन ये तो एक मूर्ख के शब्द हैं।"

"ख़ैर, मूर्ख की भी कुछ अपनी बुद्धि तो होती ही है।" तिखोन ने भोंदूपन से कहा था।

सबसे अच्छी बात तो यह थी कि उससे बिलकुल बात ही न की जाय। एक रात को प्योत्र को तूफान के कारण नींद नहीं आई। उसे लगा कि आत्मा पर पड़ा यह भारी बोझ अब असह्य हो चला है। उसने पत्नी को जगाकर उस निकोनोव छोकरे की घटना सुनाई।

नतालिया ने नींद से झँपती आँखों से उसकी बातें सुनीं और जमुहाई लेकर बोली—

"मुझे तो सपने कभी याद नहीं रहते।"

फिर अचानक वह डर से चौंक उठी।

"हाय! मुझे बड़ा डर लग रहा है, कहीं याशा भी वैसा ही न करने लगे।"

"वैसा ही क्या ?"

और जब नतालिया ने स्पष्ट बताया कि 'वैसा ही' से उसका मतलब क्या है तो प्योत्र ने खेदपूर्वक कान की लौर सहलाते हुए सोचा—

"इसे बताना बेकार था।"

उस रात बर्फ़ीले तूफ़ान की गड़गड़ाहट और चीख़ों में अपने अकेलेपन की तीव्र भावना के साथ ही उसे एक ऐसी चीज़ की प्राप्ति हुई, जिसने उसके द्वारा की गई हत्या को स्पष्ट ढंग से व्यक्त कर दिया। उसने सोचा कि उसने इलिया को इस ख़तरनाक हमजोली की बुरी संगत से बचाने के लिये ही उस दुष्ट छोकरे की हत्या की। पुत्र के प्रति वात्सल्य से प्रेरित होकर। इस विचार से उसे कुछ शान्ति मिली। साथ ही निकोनोव छोकरे के प्रति उसकी ज़हरीली घृणा को तर्क-संगत आधार भी मिला। लेकिन वह समूचे पाप का बोझ किसी दूसरे के मत्थे मढ़कर स्वयं उससे पूर्ण मुक्ति पाना चाहता था। उसने पादरी ग्लेब को बुलवा भेजा, ताकि अन्य साधारण पापों के साथ लगे हाथ इस जघन्य पाप को भी कह लिया जाय।

दुबला-पतला पादरी, जिसके कन्धे झुके हुए थे, शाम को आया और चुप-

चाप एक कोने में बैठ गया। किसी सीले अन्धेरे कोने में दुबककर बैठ जाना उसकी हमेशा से आदत थी, मानों वह किसी पाप को छिपा रहा हो। उसके चोगे की काली सलवटें आरामकुर्सी के काले चमड़े से बहुत कुछ मिलती-जुलती थीं और इस उदास पृष्ठभूमि में केवल उसका चेहरा धुँधला-सा दिखाई पड़ता था। पिघली बर्फ़ की बूँदें उसके माथे के ऊपर बालों में शीशे की तरह चमक रही थीं। वह अपनी छरहरी लम्बी दाढ़ी को सदा की भाँति सहला रहा था।

सीधे बात करने का हौसला न रहने से अर्तामोनोव ने लोगों का पतन की ओर तेज़ी से बढ़ने, उनकी गुस्ताख़ी, नशेबाज़ी और व्यभिचार की बात शुरू की; लेकिन जल्द ही इस चर्चा से ऊबकर वह चुपचाप कमरे में टहलने लगा। और तब अंधेरे कोने से पादरी की आवाज़ आई, उसकी बोली में शिकायत का-सा स्वर था।

"साधारण लोगों की आध्यात्मिक आवश्यकताओं का कुछ विचार नहीं किया जाता, और स्वयं तो वे इसके आदी ही नहीं। उन्हें मालूम ही नहीं। पढ़े-लिखे लोग........ख़ैर, मुझे न्याय करने का क्या अधिकार है? तो भी, हममें से ऐसे बहुत कम लोग हैं। और आप जानते हैं, ऐसा लगता है कि वे हमारी रोज़-मर्रा की ज़िन्दगी में लोगों में खप नहीं सकते। वे प्रयत्नशील हैं; ठीक है, लेकिन अनावश्यक चीज़ों के लिये लोग विद्रोह करते हैं और सरकार उन्हें कठोर दण्ड देती है। पता नहीं चारों ओर ऐसी गड़बड़ क्यों है? कुछ समझ में नहीं आता। इस निरर्थक शोर-गुल में केवल एक स्पष्ट आवाज़ मानव आत्मा को जागरण की प्रेरणा देती है। वह आवाज़ है काउण्ट तॉल्स्तॉय नाम के एक दार्शनिक और साहित्यक की। ग़ज़ब का व्यक्ति है वह; उसकी निर्भीकता तो धृष्टता की सीमा भी पार कर जाती है। लेकिन जहाँ तक प्राचीन ईसाई धर्म का सवाल है....आप जानते है....!"

वह काफ़ी समय तक तॉल्स्तॉय की बातें करता रहा। अर्तामोनोव यद्यपि उसकी बातें पूरी तौर से नहीं समझा था पर अँधेरे में से मृदुल लहरियों की तरह निकलते पादरी के मन्द स्वर ने और इस असाधारण व्यक्ति के अलौकिक चित्रण ने उसे अपने विचारों से अलग कर दिया। वह यह नहीं भूला था कि उसने पादरी को किसलिए बुला भेजा है, पर प्योत्र को लगा कि वह उस पर

दया से द्रवित होता जा रहा है। उसे मालूम था कि गाँव के लोग पादरी ग्लेब्र को सनकी समझते हैं, क्योंकि वह लालची नहीं था और हर किसी से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता था; सब संस्कारों को, विशेषकर अन्त्येष्टि संस्कार को बड़े मार्मिक ढंग से निभाता था, अर्तामोनोव को यह सब स्वाभाविक लगा। पादरी का पेशा ही ऐसा है! प्योत्र के लिए पादरी में दिलचस्पी लेने का कारण यह भी था कि द्रियोमोव दल के पादरी और शहर के संभ्रान्त लोग पादरी ग्लेब्र को नापसन्द करते थे। लोगों की आत्माओं के पादरी को कठोर होना चाहिए। विशेष प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना उसका कर्तव्य है। हृदयवेधी और चुभनेवाले वाक्यों के जादू से वह लोगों में पाप के प्रति डर और घृणा उकसाता है। अर्तामोनोव जानता था कि ग्लेब के पास यह जादू नहीं था। पादरी कुछ असमंजस के स्वर में बोल रहा था। उसकी आवाज़ जैसे किसी का दिल दुखाने के डर से काँप रही थी। कुछ देर चुप रहने के बाद प्योत्र ने कहा—

"पिता ग्लेब! मैंने यह बताने के लिये आपको कष्ट दिया है कि इस वर्ष मैं धर्मसंस्कार में शामिल न हो सकूँगा।"

"क्यों?" पादरी ने अनमने ढंग से पूछा; और कोई उत्तर न पाकर बोला—"तुम स्वयं अपनी आत्मा के सम्मुख उत्तरदायी हो।" अर्तामोनोव को लगा कि पादरी भी तिखोन की-सी निर्मम उदासीनता दिखा रहा है। ग़रीबी के कारण पादरी जूतों के ऊपर रबर का खोल नहीं ख़रीद सकता था, इसलिए उसके भारी-भरकम देहाती जूतों पर जमी हुई बर्फ़ पिघल-पिघलकर फ़र्श को गन्दा कर रही थी। पादरी इस पानी में पैरों को हिलाता हुआ भर्त्सना के स्थान पर खेद प्रकट कर रहा था—

"इस परिस्थिति में मन को सान्त्वना देने का एक ही उपाय है—आयु के साथ-साथ जीवन के पाप भी एक जगह इकट्ठे होते जाते हैं और उनसे छुटकारा पाने में आसानी होती है। मैंने देखा है कि हमेशा ही ऐसा होता है। पहले पाप का बीज प्रकट होता है, फिर तकली के ऊपर लिपटे सूत की तरह दिन प्रतिदिन पाप बढ़ता जाता है। अलग-अलग उसपर क़ाबू पाना कठिन है; लेकिन एक होकर न्याय की तलवार के एक झटके से ही....।"

ये शब्द अर्तामोनोव के स्मृतिपटल पर अंकित हो गये, उसे कुछ सान्त्वना

मिली। पवेल—वही तो बीज है! क्या अर्तामोनोव के सारे विचार उसी छोकरे की ओर चुम्बक की तरह नहीं खिंच रहे थे? उसने सोचा कि उसके पाप में उसका बेटा भी साझीदार है। फिर चैन की एक गहरी साँस लेकर उसने पादरी को चाय पीने का निमन्त्रण दिया।

भोजन का कमरा उजला और आनन्ददायी था। सुखद गर्म हवा में मसालेदार भोजन की सुगन्ध फैल रही थी। मेज़ पर समावार में पानी खौल रहा था और भाप की आनन्ददायी फुहारें निकल रही थीं। प्योत्र की सास आरामकुर्सी पर बैठकर अपनी चार वर्ष की नातिन को गाकर लोरी सुना रही थी—

"प्रकाश की पवित्र देवी ने
जैसा उपयुक्त समझा, अपनी विभूतियों को बाँट दिया
पैग़म्बर पीटर को उमस भरे गर्म दिनों का धुँआ,
संत निकोला को ज्वार भाटा;
पैग़म्बर और संत एलिजा को उसने आज्ञा दी,
एक सुनहरी भाला गढ़ने को"

"काफ़िरों का गीत" कुर्सी खींचते हुए पादरी ने क्षमापूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा।

शयनकक्ष में प्योत्र की पत्नी ने उसे बताया—"अलेक्सी लौट आया है। मैंने उसे देखा था। वह जब भी मास्को का चक्कर लगाता है, तब उसके सिर पर कोई न कोई भूत सवार हो जाता है। मुझे डर है कि कहीं....।"

इस साल गर्मियों में नतालिया की दूध-सी सफ़ेद गर्दन और नर्म गालों पर कुछ लाल-से दाने निकल आये। देखने में वे सूई की नोक से बराबर थे, लेकिन नतालिया बहुत परेशान थी और सप्ताह में दो बार सोने से पहले वह शहद के रंग का एक मरहम अपने शरीर पर मलती थी। इस समय वह शीशे के सामने बैठी थी, चोली के भीतर से झाँकते हुए उसके पयोधर दो टीलों के समान दिखाई दे रहे थे और वह बार-बार अपनी नंगी बाहों से मुँह पर मालिश कर रही थी। प्योत्र सिर के नीचे बाँहें रखे बिस्तर पर लेटा था और उसकी नुकीली दाढ़ी छत की ओर उठी हुई थी। उसने कनखियों से पत्नी की ओर देखते हुए सोचा कि वह एक मशीन से कितनी मिलती-जुलती है और उसका मरहम उबली

हुई शार्क मछली-जैसा बदबू कर रहा है। शान्त धीमे स्वर में रात की प्रार्थना के बाद जब नतालिया ने अपने स्वस्थ शरीर के आदेश-पालन में अपने आपको पति के सामने समर्पित किया, तो प्योत्र ने सोने का अभिनय किया।

"बीज!" उसने सोचा। और मैं भी तो एक तकुआ हूँ। घूँ-घूँ करके चक्कर काटता रहता हूँ। पर हम दोनों में से कातता कौन है? तिखोन कहता है—आदमी कातता है और शैतान उससे टाट बुनता है। मूर्खों का सरदार तिखोन।

अलेक्सी का कारोबार, जिसमें वह जी-जान से जुटा हुआ था, नदी पार की रेतीली पहाड़ियों तक फैल गया। पहाड़ियों की सुनहरी आभा नष्ट हो गई। अबरक की चाँदी की-सी चमक न जाने कहाँ चली गई और बिल्लौरी पत्थर फीके पड़ गये। चंचल रेत पैरों से दब गयी थी। प्रतिवर्ष बसन्त के मौसम में चारों ओर हरियाली दिखाई देने लगी। सड़क के दोनों ओर केले और मुड़े पत्तोंवाले बर्डोक के वृक्ष उग आये। मिल के आस-पास सेवों के सघन कुञ्ज शोभायमान होने लगे। पतझड़ की सड़ी-गली पत्तियाँ गिरकर रेत के टीलों में खाद बन गयीं। कारख़ाने की चिल्ल-पों और भी तेज़ हो गयी, और समूचे वातावरण में आशंका और चिन्ता फैल गई। सुबह से शाम तक सैकड़ों तकले घरघराते, सैकड़ों करघे खटखटाते और बीसियों मशीनें हाँफ उठतीं। कारख़ाने में हर समय कुछ न कुछ होता रहता। अपने आपको इस सारे व्यापार का स्वामी जानकर एक सुखद अनुभव होता—विचित्र-सी गुदगुदी होती, गर्व से छाती फूल उठती।

लेकिन आजकल अक्सर ही अर्तामोनोव थककर चूर हो जाता। उसे गाँव की याद आ जाती, जहाँ उसने अपना बचपन गुज़ारा था। रैट नदी की शान्त, निर्मल धारा, क्षितिज तक फैले हुए खेत और किसानों का सीधा-सादा जीवन। उसे ऐसा लगता मानो किसी अदृश्य शक्तिशाली शिकंजे ने उसे जकड़ लिया है, वह विवश होकर छटपटा रहा है। दिन भर की इस खचखच के बाद उसका दिमाग़ सुन्न हो जाता है और वह कारोबार से सम्बन्धित बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं सोच पाता। कारख़ाने की चिमनियों से उठनेवाले छल्लेदार धुएँ ने सारे वातावरण को एक अजब निराशा और थकावट से ढँक लिया है।

ऐसे समय में कारख़ाने के मज़दूरों का ख़्याल आते ही वह असाधारण रूप से उद्विग्न हो उठता। उसे लगता कि धीरे-धीरे उनकी शक्ति क्षीण हो रही है।

किसानों का धैर्य खो रहा है और वे बात-बात पर औरतों की तरह खीझ उठते हैं—हद से ज़्यादा तुनकमिजाज़ और बोलने में ढीठ हो गये हैं। उनमें फ़िज़ूलख़र्ची और अस्थिरता की नई आदत आ गई है। जिन दिनों में प्योत्र के पिता जीवित थे, ये लोग कितने शान्त रहते थे। तब कोई भी इतनी शराब नहीं पीता था और न इतनी बेहयाई थी। अब हर चीज़ उलझ गयी थी। मज़दूरों के दिल और दिमाग़ शायद पहले से अधिक चुस्त हो गये हैं; लेकिन अब काम के प्रति लापरवाही बढ़ गई है और एक दूसरे के साथ स्नेह-सम्बन्ध भी उतने गहरे नहीं रहे। सबके सब प्योत्र की ओर इस तरह कनखियों से देखते थे, मानो उसे नाप-तौल रहे हों। छोकरे तो विशेष रूप से मनमाने और उद्दण्ड होते जा रहे थे। कारख़ाने ने थोड़े ही समय में इन छोकरों के देहाती गुणों का सत्यानाश कर दिया था।

भट्ठी में कोयला झोंकनेवाले वोल्कोव को सरकारी पागलख़ाने में भेजना पड़ा था। पाँच साल पहले जब वह कारख़ाने में नौकरी करने आया था तब वह एक कड़ियल जवान था। आग में घर-बार स्वाहा हो जाने के कारण उसे गाँव छोड़कर भागना पड़ा था। यहाँ आकर उसकी सुन्दर बीवी पास-पड़ोस के लोगों से आँखें लड़ाने लगी और वोल्कोव ने उसे मारना-पीटना शुरू कर दिया था। एक साल के भीतर ही उस बेचारी को तपेदिक़ ने आ घेरा, अब दोनों का सत्यानाश हो चुका था। अर्तामोनोव ने ऐसे कई लोगों को तबाह होते देखा था। पाँच वर्ष के भीतर चार हत्याएँ हुई थीं—दो शराब के नशे में, एक बदले के रूप में और एक ईर्ष्या के कारण। एक अधेड़ जुलाहे ने गरारी भरनेवाली एक लड़की को छुरा भोंक दिया था। मार-पीट और ख़ून-ख़च्चर तो आये दिन ही देखने में आता था।

शायद अलेक्सी पर इन सब बातों का कोई असर नहीं पड़ता था। दिन-प्रतिदिन उसे समझना मुश्किल होता जा रहा था। उसे देखकर चुस्त मसख़रे बढ़ई की याद आ जाती थी, जो बड़े प्रेम से मज़दूरों के बच्चों के लिए सीटियाँ और तीर कमान तैयार करता था और उतने ही प्रेम से उनके लिए कफ़न बनाता था। अलेक्सी को विश्वास था कि सब मामला ठीक चल रहा है और आगे भी वैसे ही चलता रहेगा। उसकी बाज़ की-सी आँखें आश्वासन से चमकती रहती थीं। उसके

परिवार के तीन प्राणी तो पहले ही क़ब्रिस्तान में पहुँच चुके थे। केवल एक बेटा मिरोन जीवन को मज़बूती से पकड़े हुए था। प्रकृति ने बड़े फूहड़ ढंग से उसके अस्थिपिंजर पर मांस का खोल चढ़ाया था। उसको देखकर ऐसा लगता था मानों हर जोड़ अभी खुल पड़ेगा। वह बार-बार अपनी उँगलियों को ज़ोरों से चटख़ाता रहता। तेरह वर्ष की उम्र में ही उसे चश्मा लगाना पड़ गया था। जिससे उसकी सुग्गे जैसी नाक की नोक कुछ छोटी लगती थी और आँखों का भद्दा हल्का रंग भी कुछ छिप जाता था। वह जहाँ भी जाता, कोई न कोई पुस्तक हमेशा उसके हाथों में लगी रहती। पृष्ठ को याद रखने के लिए वह ऐसे ढंग से उसमें उँगली रखता मानों उसका हाथ पुस्तक के साथ ही लगा हुआ है। माँ-बाप के सामने वह बराबरवालों की तरह बात ही नहीं, बहस भी करता और वे भी अपने बेटे की इस बात पर फूले न समाते। प्योत्र ताड़ गया था कि उसका भतीजा उसे पसन्द नहीं करता, सो वह भी उसी ढंग से पेश आता।

अलेक्सी के यहाँ किसी तरह का भी नियम-क़ायदा न था। बड़े अर्तामोनोव को अपने और अपने भाई में वही अन्तर दिखाई देता जो एक गिरजे और मेले में सजी दुकान में होता है। अलेक्सी और उसकी पत्नी के मित्रों में से कोई भी शहरी न था; लेकिन फ़र्नीचर से कबाड़ख़ाने-जैसे दिखाई देनेवाले उनके कमरे छुट्टी के दिन सन्देहजनक लोगों से भर जाते। सोने के दाँतोंवाला ईर्षालु, दुष्ट, याकोवलेव; मिस्त्री कोतेव जो एक नम्बर का शराबी, जुआरी और बकवासी था, मिरोन का अध्यापक जिसकी पढ़ाई पुलिस ने बन्द करवा दी थी, और उसकी बीवी जो धुँआधार सिगरेट फूँकती और गितार (एक वाद्य यन्त्र) बजाती थी; इनके अतिरिक्त कई और ऐरे-ग़ैरे नत्थू-ख़ैरे जमा होते। सबके सब पादरियों और सरकारी अफ़सरों को पानी पी-पीकर कोसते। हर कोई अपने-आपको अक़्ल का ठेकेदार समझता। अर्तामोनोव इन लोगों की नस-नस पहचानता था। उसे मालूम था कि सब दिल के खोटे हैं। वह सोचता; उसका भाई इतने बड़े कारोबार का आधा मालिक होकर क्यों इन लोगों को मुँह लगाता है? उनके शोर-ग़ुल को सुनकर उसे याद आता कि पादरी को भी यही शिकायत थी—

"ये लोग मृग-तृष्णा के शिकार हैं—व्यर्थ की बातों के पीछे भागते

फिरते हैं।"

उसके मन में यह सवाल नहीं उठा—"तो फिर तत्त्व की बात कौन-सी है ? तत्त्व किस बात में है ? निस्सन्देह व्यापार में।"

उसका भाई तो उस ऊधमी जिप्सी कोसेव के पीछे दीवाना था। और वह कम्बख्त मिस्त्री भी पियक्कड़ों की तरह झूमता रहता था। उसके अन्दर एक विचित्र शक्ति भरी थी, शायद वह अक्लमन्द भी था। वह रह-रहकर बड़बड़ा उठता—

"कोरी फ़िलासफ़ी, सब बकवास है। कारख़ाने, मशीनें! असली चीज़ें तो यही हैं!"

लेकिन बड़े अर्तामोनोव को हमेशा यही शक होता कि कोसेव एक नास्तिक विध्वंसकारी जीव है।

"यह आदमी ख़तरनाक है।" उसने अपने भाई से कहा। अलेक्सी को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"कौन कोसेव ? ख़ूब कहा आपने! वह तो ग़ज़ब का आदमी है—चुस्त, मेहनती, होशियार! हमें तो ऐसे हज़ारों आदमियों की ज़रूरत है!"

फिर उसने मटकते हुए कहा—

"अगर मेरी कोई बेटी होती तो मैं उसे अपना दामाद बनाकर यहीं रखता!"

प्योत्र खिन्न होकर वहाँ से चल दिया। ताश बन्द होने पर वह अपनी प्यारी, बिस्तर की तरह चौड़ी और मुलायम आरामकुर्सी पर बैठकर कान कुरेदता और उन लोगों की बातें सुनता। वह किसी की भी बातों से सहमत न था और हर एक से बहस करना चाहता। इसका कारण सिर्फ़ यही नहीं था कि वे उसकी अवहेलना करते थे, हालाँकि वह कारोबार में बड़ा साझीदार था, पर उसकी बहस करने की इच्छा न थी। इसके और भी कई कारण थे। वह उन्हें बता नहीं सकता था, यहाँ तक कि अपने-आपको भी नहीं। लेकिन वह बातूनी नहीं था, सिर्फ़ बीच-बीच में वह एक-आध शब्द बोलता।

"उस रोज़ पादरी ग्लेब किसी काउण्ट की बात सुना रहा था....।"

और फ़ौरन ही कोसेव भूँक उठता—

"वह काउण्ट तुम्हारा क्या लगता है ? तुम्हारा, तुम्हारा ? कृषक रूस की

अन्तिम आह का ।"

साथ ही चिल्लाकर वह बड़ी गुस्ताख़ी से प्योत्र की तरफ़ उँगली से इशारा करता और सब के सब कोतेव की तरह बे-घरबार ख़ानाबदोश लोगों की तरह लगते ।

"कीड़े ।" प्योत्र सोचता । "जोंकें कहीं की ।" एक रोज़ उसने कहा—

"यह कहावत ग़लत है कि 'व्यापार कोई रीछ तो नहीं होता जो जंगल में भाग जायेगा ?' व्यापार रीछ तो है ही, लेकिन भागे क्यों ? उसने हमें कसकर दबोच लिया है। भगवान् और मालिक, व्यापार का आदमी से यही नाता है ।"

"शाबाश ! जीते रहो !" कोतेव फिर भूँका, "भला ऐसी अक्लमन्दी की बात कहाँ सुनने को मिलेगी ? अब हमें ख़तरे का पता चल गया !"

और अलेक्सी ने ताना मारते हुए पूछा—

"तुमने भला ये सब .ख़ुराफ़ात कहाँ से सीखीं ?—तिखोन से ?"

प्योत्र को बहुत बुरा लगा । घर आकर उसने अपनी पत्नी से कहा—

"ज़रा एलेना का ध्यान रखा करो । वह कंजड़ कोतेव हर दम उसके गिर्द चक्कर काटता है और अलेक्सी उस दुष्ट का पक्षपात करता है । कहाँ एलेना और कहाँ वह कंजड़ ? ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। एलेना के लिए कोई लड़का तलाश करो ।"

"यहाँ तो कोई अच्छा लड़का मिलना कठिन है ।" नतालिया ने गम्भीर स्वर में कहा । "उसके लिये तो शहर जाना पड़ेगा, लेकिन इतनी जल्दी क्या पड़ी है ?"

"अच्छा, इस बात का ध्यान रखना कि कहीं वे तुम्हारी लापरवाही से ग़लत फ़ायदा न उठायें ।" अर्तामोनोव ने चुटकी ली, उसकी बीवी खिलखिलाकर हँस पड़ी ।

क्षण भर के लिये जब कभी वह कारोबार की चिन्ताओं के संकुचित घेरे से निकलने की कोशिश करता तो फ़ौरन् वह अपने आप को घृणा और असन्तोष के घने कुहरे में डूबा पाता । उसे अपने आस-पास के लोगों से नफ़रत थी और अपने प्रति भी तीव्र असन्तोष था । इस अँधेरे में रोशनी की एक ही किरण थी—अपने बेटे के प्रति उसका मोह; लेकिन यह किरण भी निकोनोव की छाया

से ग्रस्त थी और रह-रहकर हत्या के पाप के बोझ से वह छिन्न-भिन्न हो जाती थी। कभी-कभी उसके मन में आता कि इलिया को साफ़-साफ़ बता दे--

"देखो तो, मैंने तुम्हारे लिये क्या कर डाला है।"

लेकिन उसे ठीक याद था कि अपने बेटे का ख़्याल तो हत्या के सिर्फ़ एक क्षण पहले ही आया था। प्योत्र जानता था कि पाप की भावना से मुक्ति पाने के लिये सान्त्वना का मार्ग केवल यही है। तो भी इलिया की उपस्थिति में उसे निकोनोव का नाम लेते भी डर लगता—कहीं उसके मुँह से अपने पाप का कोई संकेत न निकल जाये—वह तो इस पाप को अपने शौर्य का प्रतीक समझकर अपने मन को तसल्ली देना चाहता था।

प्योत्र ने देखा कि इलिया तेज़ी से बढ़ रहा है, लेकिन एक अनोखी दिशा में। उसकी बातचीत में संयम आ गया था। वह माँ से अत्यधिक नम्रता से बात करता, यहाँ तक कि उसने याकोव से भी, जो अब स्कूल में पढ़ता था, छेड़ख़ानी करना छोड़ दिया था; अब उसे अपनी छोटी बहन तात्याना के साथ उछल-कूद मचाना अधिक पसन्द था, एलेना के साथ तो वह हल्के विनोद से आगे कभी न बढ़ता। लेकिन उसके हर व्यवहार में व्यस्तता और विरक्ति दिखाई देती। पवेल निकोनोव का स्थान मिरोन ने ले लिया था। दोनों चचेरे भाई हर समय इकट्ठे रहते। उन्हें कारख़ाने के मज़दूरों से बातें करने में बड़ा आनन्द आता। दोनों बाग़ीचे के ग्रीष्मगृह में बैठकर पढ़ते-लिखते। इलिया तो शायद ही कभी घर पर रहता। सुबह जल्दी से चाय पीने के बाद वह अपने चाचा के घर या शहर की ओर चल देता या मिरोन और घुँघराले बालों वाले बलिष्ठ गोरीत्सवेतोव के साथ जङ्गल में ग़ायब हो जाता। गोरीत्सवेतोव नाटे क़द का तेज़, चुस्त व्यक्ति था। वह मटक-मटककर चलता, उसकी टेढ़ी-मेढ़ी आँखें देखने में ऐंची-तानी लगतीं।

तुम उस यहूदे के साथ क्यों चिपके रहते हो?

नतालिया ने तंग आकर पूछा। प्योत्र ने देखा कि लड़के की सुन्दर बरौनियाँ सिकुड़ गई हैं।

माँ, 'यहूदा' शब्द अपमानजनक है। तुम अच्छी तरह जानती हो कि अलक्ज़ेण्डर पादरी ग्लेब का भतीजा है। आख़िर वह भी तो रूसी है। क्लास

में वह सबसे आगे रहता है।"

माँ ने घृणा से मुँह बिचकाकर कहा—"यहूदे हमेशा आगे रहते हैं।"

"तुम्हें क्या पता है ? सारे शहर में कुल चार यहूदी हैं और सिवा दवा-फ़रोश के, बाकी तीनों ग़रीब हैं।" बेटे ने विरोध किया।

"यहाँ चालीस यहूदे हैं, मुए कहीं के। और अगर वोरगोरोद जाओ, तो वहाँ यहूदे ही यहूदे हैं। मेले में तो उनकी भरमार है।"

इलिया ने चिढ़कर फिर दुहराया—

" 'यहूदा' बुरा शब्द है।"

माँ ने अपनी तश्तरी में चम्मच ज़ोर से दे मारा। ग़ुस्से से उसका मुँह लाल हो गया था—

"तुम मुझे शिक्षा देना चाहते हो ? मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ। आख़िर मैं अन्धी तो नहीं हूँ। भला मुझे नहीं दिखाई देता कि वह थूक चाटनेवाला यहूदा किस तरह हर किसी के सामने दुम हिलाता है; यहाँ तक कि तिखोन के सामने भी। मैं कहती हूँ ये यहूदे बड़े ख़तरनाक होते हैं—मैं भी एक ऐसे मुँह के मीठे आदमी को जानती थी.... ।"

"बस, बहुत हो चुका !" प्योत्र ने सख्ती से कहा। नतालिया रुआसी होकर बोली—

"यह क्या बात है, प्योत्र इलिच ? भला कोई अपनी ज़बान पर ताला लगा दे ?"

इलिया भौंहें चढ़ाये चुप बैठा था। उसकी माँ बोली—

"मैंने तुम्हें पैदा किया है।"

"धन्यवाद।" इलिया ने ख़ाली प्याले को एक ओर सरकाते हुए कहा। पिता ने कनखियों से बेटे की ओर देखा, फिर कुछ मुस्कराकर अपना कान सहलाने लगा।

पत्नी के रुख़ से प्योत्र समझ गया था कि वह अपने बेटे से डरती है, ठीक उसी तरह जैसे कुछ समय पहले उसे मिट्टी के तेल के लैम्पों से डर लगता था। आजकल उसे ओल्गा द्वारा दिये गये बढ़िया काफ़ी के बर्तन से डर लगता है—किसी न किसी दिन वह बर्तन टूट के रहेगा। प्योत्र भी इस हास्यास्पद डर में

पत्नी का साझीदार था। इलिया को समझना कठिन हो रहा था। वैसे तो तीनों बच्चे मनमाने थे। उन्हें तिखोन-जैसे आदमी से न जाने क्या मनोरंजन प्राप्त होता था। वे तिखोन के साथ फाटक के सामने बैठे रहते। एक रोज़ अर्तामोनोव ने सुना, तिखोन ऊँची आवाज़ से उपदेश कर रहा था—

"यह ठीक है। तुम्हारे पास जितनी कम चीज़ें होंगी, उतने ही हल्के रहोगे। लेकिन कोनों-ओनों की बात कोरी गप्प है। भला आसमान में कोने कहाँ से आये, वहाँ दीवारें थोड़े ही हैं!"

बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े। इलिया की हँसी स्निग्ध लेकिन संक्षिप्त थी। मिरोन की ख़ुश्क और तीखी, गोरीत्स्वेतोव औरों की अपेक्षा कम हँसता; वह हमेशा औरों से अलग रहता—

"ख़ामोश! इसमें हँसने की कोई बात नहीं है।"

और फिर तिखोन की रहस्यमयी प्रतिभा नीरस ढँग से उमड़ पड़ती।

"तुम लोगों को मनुष्य के बारे में अधिक जानना चाहिए। आख़िर मनुष्य है क्या? कौन सा काम उपयुक्त है और मनुष्य का भाग्य क्या है? इन्हीं बातों पर तुम्हें सोच-विचार करना चाहिए। और फिर शब्द भी तो हैं। उन्हें अच्छी तरह समझना चाहिए। मिसाल के लिये 'प्रयत्न' शब्द को देखो। कितना सुन्दर, कोमल शब्द है। तुम सब इसका इस्तेमाल करते हो। अगर तुम सोचना-विचारना छोड़ दो तो न जाने क्या हो जाय। कभी कुछ समझ में ही न आये!"

और फिर तिखोन अपनी प्रिय कहावत को, जिससे प्योत्र अच्छी तरह परिचित था, दुहराता—

"आदमी सूत कातता है और शैतान ताना-बाना बुनता है। आदिकाल से यही होता आया है।"

बच्चे फिर खिलखिलाकर हँस पड़ते और तिखोन भी हँसी में उनका साथ देता। फिर वह ठंडी साँस लेकर कहता—

"आह, चमकीली आँखें! अक्लमन्द, लेकिन देखने में कितनी छोटी!"

साँझ के झुटपुटे में बच्चे दिन की अपेक्षा छोटे दिखाई देते और तिखोन मानो और भी चौड़ा हो जाता, दिन की अपेक्षा उसकी बकवास भी दुगुनी और मूर्खतापूर्ण हो जाती।

तिखोन के साथ इलिया के मेल-जोल ने प्योत्र के दिल में घृणा की तीव्र आग सुलगा दी थी, साथ ही उसे एक अज्ञात, विचित्र भय का अनुभव होने लगा। उसने अपने बेटे से पूछा—

"तिखोन में कौन-सा सुर्ख़ाब का पर लगा है, ज़रा सुनूँ तो?"

"वह दिलचस्प आदमी है।"

"भला दिलचस्पी की कौन-सी बात है? उसकी मूर्खता?"

इलिया ने शान्ति से उत्तर दिया—

"मूर्खता को भी समझना आवश्यक है।"

अर्तामोनोव इस उत्तर से प्रसन्न हुआ है।

"यह सच है। दुनिया मूर्खों से भरी पड़ी है।" अगले ही क्षण उसे याद आया।

"यह तो तिखोन के ही शब्द हैं।"

बेटे को देखकर उसके मन में विशेष प्रकार की आशाएँ अंकुरित होतीं। जब इलिया अपनी जेबों में दोनों हाथ डाले खिड़की के पास हल्की-सी सीटी बजाता हुआ मज़दूरों को देखता; अथवा करघोंवाले कमरे में धीमे कदम रखते हुए चलता और जब फुदकता हुआ मज़दूरों की बस्ती की ओर जाता, तो पिता को एक विचित्र सन्तोष का अनुभव होता।

"यह कठोर मालिक साबित होगा। यह ही कारोबार में भी सफल और होशियार साबित होगा—मेरी तरह नहीं।"

लेकिन लड़के की चुप्पी को देखकर बड़ी निराशा होती थी। वह जब भी बोलता, तो उसके नपे-तुले, नीरस शब्दों को सुनकर बातचीत जारी रखने की सारी इच्छा धूल में मिल जाती।

"कुछ रूखे स्वभाव का है।" अर्तामोनोव इसी विचार से कि इल्या बाकी लड़कों से निराला है, अपने मन को तसल्ली देता—इलिया और उस बातूनी गोरीत्स्वेतोव में; सुस्त, आलसी याकोव में और इलिया के चचेरे भाई मिरोन में कितना ज़मीन-आसमान का अन्तर है? मिरोन में किशोरावस्था की सारी बातें ग़ायब हो रही थीं। वह किताबी ढंग से बातें करता और उसकी गुस्ताख़ी तो किसी स्वेच्छाचारी अफ़सर की-सी थी, जिसके सम्मुख किताबों में लिखी बातों का

मूल्य इतना अधिक था कि बड़ी से बड़ी मुसीबत में भी उनकी अवहेलना करना वह क्षम्य न समझता था।

देखते-देखते छुट्टियाँ भी गुज़र गईं और सब लड़के वापस लौटने की तैयारियाँ करने लगे। संयोगवश ऐसा हुआ कि बिदाई के समय नतालिया ने याकोव को नसीहतों से लाद दिया और पिता ने भी जो कहना चाहता था वह न कहकर जो अनाप-शनाप मुँह में आया इलिया से कह डाला। वह कैसे कहता कि उसकी ज़िन्दगी नीरस है, कारोबार की चिन्ताएँ मच्छरों के झुंड की तरह उसे घेरे हुए हैं? भला लड़कों से भी कहीं ऐसी बातें की जाती हैं?

अर्तामोनोव की आत्मा दैनिक जीवन से ऊपर किसी नये अनुभव के लिये तड़प रही थी। ऐसा अनुभव जो हिमपात, वर्षा, कीचड़, गर्मी और धूल की तरह अवश्यम्भावी हो, जो जीवन की अथक साधना का फल हो। उयेज़्द के सुदूर जंगली प्रदेश में यात्रा करते हुए उसे एक बार भयानक वर्षा और ओलों का सामना करना पड़ा था। बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक से मानो सारा आकाश फटा जाता था। तंग पहाड़ी रास्ते पर गंदे पानी के परनाले बह निकले। घोड़ों के पैरों से रौंदी हुई कीचड़ उछलकर गाड़ी के पहियों से चिपक रही थी। रह-रहकर बिजली चमक उठती थी, जिसकी नीली रोशनी में वर्षा की निर्मल बूँदें और आस-पास के वृक्ष काँपते हुए नज़र आते थे। अचानक ही घोड़े हिनहिनाकर रुक गये। उनके काँपते पैरों से पानी टपक रहा था। मोटे, नम्र कोचवान याकीम ने उन्हें प्यार से पुचकारा। कुछ देर बाद ओलों की धड़धड़ बन्द हो गई; लेकिन इतने में ही मानो आस-पास के वृक्षों को चाबुक से मारती हुई वर्षा की अनगिनत बूँदों ने जंगल के अन्धकार को एक क्रोधभरी हुंकार से गुँजा दिया।

"हमें पोपोव के यहाँ तक जाना है।" याकीम ने कहा।

और इस तरह, जैसे एक स्वप्न में अर्तामोनोव ने अपने को सूखे कपड़े पहने, जो उसके अंगों को अकड़ा रहे थे, एक मेज़ के किनारे बैठा हुआ पाया। उस गरम कमरे के ख़ुशनुमा झुटपुटे उजाले में बैठा वह इतना लजा रहा था कि उसके लिए हाथ-पाँव डुलाना तक दूभर हो गया था। क़लई किया हुआ चाय का बर्तन मेज़ पर रखा उबल रहा था और चुन्नटदार काली पोशाक पहने

एक लम्बे छरहरे शरीर की स्त्री चाय ढाल रही थी। ललछौंहें बालों के नीचे सुन्दर भूरी आँखें उसके पीले मुख को आलोकित-सा कर रही थीं। अत्यन्त सरल और तटस्थ भाव से, जिसमें शिकायत का नाम भी न था; वह अपने पति की अकाल मृत्यु पर और अब अपनी जायदाद को बेचकर नगर में प्राइवेट स्कूल खोलने के बारे में मधुर कंठ से बातें करती रही।

"तुम्हारे भाई की ऐसी ही सलाह है। वे बड़े दिलचस्प आदमी हैं। इतने उत्साही और मौलिक.... ।"

प्योत्र ने कमरे में चारों ओर दृष्टि फिराते हुए ईर्षा से हुंकारी भरी। अपने पिता के साथ यौवनकाल में सरकारी जागीर के बीच यात्रा करते समय वह कुलीन ज़मीन्दारों के घरों में भी आया-गया था, लेकिन वहाँ उसे कभी कोई विशेष आकर्षण की चीज़ न दिखाई दी थी। उनमें रहनेवाले लोगों और सजावट की चीजों को देखकर उसके मन में हमेशा एक पीड़ाजनक कुंठा का भाव ही पैदा हुआ था। किन्तु इस घर में मन को पीड़ा देनेवाली कोई चीज़ न थी। यहाँ का वातावरण सौजन्यता और सत्य से परिपूर्ण था। एक बड़ा लैम्प, जिसमें दूधिया शेड लगा था, मेज़ पर रखी तश्तरियों और चाँदी के बर्तनों पर दुग्ध-धवल प्रकाश डाल रहा था। इसका कोमल आलोक आँखों पर हरी पट्टी बाँधे, चित्र बनानेवाली कापी पर तन्मयता से झुकी हुई एक नन्हीं सी बालिका के चिकने काले बालों को जैसे प्यार से सहला रहा था। वह नन्हीं लड़की अपनी महीन नुकीली पेन्सिल से कापी में चित्र खींच रही थी और इतने कोमल अस्फुट स्वर से कुछ गुनगुना रही थी कि उससे माँ के शान्त वार्तालाप में विक्षेप न होता था। कमरा बड़ा नहीं था और उसमें फर्नीचर भरा हुआ था। किन्तु फिर भी हर वस्तु कमरे का अभिन्न अंग-सी दीखती थी और साथ ही इतनी सजीव लगती थी, जैसे स्वयं अपने को अभिव्यक्त कर रही हो। दीवार पर लगे तीन चमकीले चित्रों का भी यही हाल था। प्योत्र के सामनेवाली तस्वीर में परियों की किसी कथा के एक श्वेत घोड़े का चित्र था, जिसकी गर्व से उठी गर्दन गोलाई में हो रही थी और जिसके अयाल इतने लम्बे थे कि भूमि को छू लेते थे। सारा वातावरण सुखद और शान्तिपूर्ण था, जिसमें गृह-स्वामिनी का मधुर स्वर प्योत्र के कानों में एक दूर से आते विश्राम-गीत की तरह तिरता हुआ आ

रहा था। ऐसे वातावरण में एक आदमी बिना किसी भय और आशंका के सारा जीवन बिता सकता है और पाप से सर्वथा दूर रह सकता है। यदि ऐसी स्त्री अपनी पत्नी हो तो उसका आदर किया जा सकता है और उससे सब कुछ कहा जा सकता है।

बरामदे के दरवाज़े के रंगीन शीशों के बाहर बादलों से घिरे हुए आकाश को रह-रहकर अब भी नीला कौंधा लपककर प्रकाश से थरथरा देता।

पौ फटते ही अर्तामोनोव वहाँ से अपने मन में सुख और शान्ति की स्मृतियों का भंडार लेकर और इस सुख-शान्ति की निर्माता भूरी आँखोंवाली, शान्त-चित्त और अपार्थिव सौन्दर्य की प्रतिमा स्त्री का मानस-पट पर चित्र अंकित करके चल पड़ा। उसकी गाड़ी पानी के गढ़ों पर से फिसलती हुई बढ़ रही थी, जिनमें सूरज की सुनहली आभा और वायु से छितराए बादलों की कालिमा समान रूप से प्रतिबिम्बित हो रही थी। उसने उस समय ईर्षाजन्य उदासी से सोचा—

"कुछ लोगों का जीवन ऐसा भी होता है।"

जो भी कारण हो, उसने न अपनी पत्नी को और न अपने भाई अलेक्सी को ही इस नये परिचय की सूचना दी। इसलिए कुछ सप्ताह बाद जब एक दिन अपने भाई के कमरे में जाने पर उसने पोपोवा को ओल्गा की बग़ल में सोफ़ा पर बैठे देखा, तो वह सकपका गया। अलेक्सी ने उसे आगे ढकेलते हुए कहा—

"मेरे भाई से मिलिए, वीरा निकोलाईव्ना।"

मुस्कराते हुए उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

"हम दोनों पहले से ही परिचित हैं।"

"सो कैसे?" अलेक्सी चिल्लाया। "कब से? मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

भाई ने जिस ढंग से आश्चर्य प्रकट किया था, उसमें छिपे लांछन के संकेत को पहचानकर प्योत्र ने अपनी दाढ़ी की जड़ों में एक विचित्र-सी सरसराहट का अनुभव किया। अपने कान की लौर को खींचते हुए उसने उत्तर दिया—

"मैं....भूल गया था।"

अलेक्सी ने निर्लज्जतापूर्वक प्योत्र की ओर इशारा करते हुए चीख़कर कहा:

"देखो, देखो—ये तो शर्म से गड़े जाते हैं! कैसा चतुराई से भरा उत्तर है, निरे अबोध बालक हैं! एक बार देख लेने के बाद ऐसी महिला को भला कौन भुला सकता है? देखो तो, इनके कानों में खुजली पड़ गई—अब वे बढ़ने भी लगे!"

पोपोवा मुस्करा दी, लेकिन उसकी मुस्कान में लेशमात्र भी आक्रोश की भावना न थी।

उन्होंने शीशे के अठपहलू गिलासों में बरफ़ पड़ी शहद की मदिरा पी। शहद की मदिरा, जो इस स्त्री की ओर से ओल्गा को भेंट में मिली थी, सुनहरे पीले रंग की थी और जीभ को एक सुखद कटुता से छेदती थी। इसको पीते ही प्योत्र के मस्तिष्क में अनेक चमत्कारपूर्ण उक्तियाँ उछल-कूद मचाने लगीं, लेकिन उसे उनको व्यक्त करने का अवसर ही न मिला, क्योंकि उसका भाई लगातार बोले जा रहा था—

"नहीं, नहीं, वीरा निकोलाईव्ना! अपनी सम्पत्ति को बेचने में जल्दी न कीजिए। आपके स्थान को तो ऐसे ख़रीदार की ज़रूरत है जो शान्ति और विश्राम की टोह में हो। वह जगह तो हृदय की सुख-शान्ति पाने के लिए है। हमारे-जैसे लोग उस स्थान का भला क्या मूल्य दे सकेंगे? हमारी दृष्टि से आपके पास है ही क्या? न ज़मीन है, न जंगल है और जितना कुछ है वह बुरा है। और फिर इस प्रदेश में चूहों को छोड़कर जंगल की ज़रूरत भी और किसे है?"

प्योत्र बोला—

"आपको बेचना नहीं चाहिए।"

"क्यों नहीं बेचना चाहिए?" पोपोवा ने उदासीन भाव से मदिरा का घूँट पीते हुए पूछा। फिर एक निःश्वास भरकर बोली—"मुझे बेचना ही पड़ेगा।"

ओल्गा उसे जिस दृष्टि से देख रही थी या अपनी मुस्कराहट को दबाने के लिए जिस तरह ओठों को भींच रही थी, वह प्योत्र को प्रिय नहीं लगा। पोपोवा को उत्तर दिए बिना ही वह उदास मन से मदिरा पीने में लग गया।

दो दिनों के बाद अलेक्सी ने दफ़्तर में घोषणा की कि वह पोपोवा को उसके फ़र्नीचर के लिए कुछ रक़म पेशगी देना चाहता है।

"उसकी ज़मीन तो कौड़ी मोल की भी नहीं है, लेकिन उसकी चीज़ें क़ीमती हैं....।"

"मत ख़रीदो।" प्योत्र ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

"क्यों नहीं? मैं चीज़ों का मूल्य और महत्व समझता हूँ।"

"फिर भी नहीं।"

"आख़िर क्यों?" अलेक्सी चिल्लाया। "मैं अपने साथ किसी विशेषज्ञ को वहाँ ले जाऊँगा और हर चीज़ की क़ीमत तै कर आऊँगा।"

प्योत्र ने हठपूर्वक अपना सिर हिला दिया। वह पूरे ज़ोर से अपने भाई को यह क़र्ज़ देने से रोकना चाहता था, लेकिन उसे इसके विरुद्ध कोई तर्क नहीं सूझ पड़ा। इसके बजाय उसने हठात् प्रस्ताव किया—

"चलो, आधा-आधा कर लें। आधा क़र्ज़ तुम दो और आधा मैं दूँ।"

उसकी ओर घूरते हुए अलेक्सी हँस पड़ा।

"क्या मूर्खों-जैसी बातें करते हो?"

"अगर मैं मूर्ख हूँ तो समय आ गया है कि इसका पता चल जाय।" प्योत्र अर्तामोनोव ने ज़ोर से कहा।

"अपनी ख़ैर मनाओ—वह आसानी से क़ाबू में आनेवाली औरत नहीं।" उसके भाई ने चेतावनी दी। "मैं देख चुका हूँ। वह बड़ी चालाक है।"

पोपोवा से दो-तीन बार और भेंट करने के बाद प्योत्र उसके बारे में सपने गूँथने लग गया। वह कल्पना करने लगता कि यह स्त्री उसके साथ है और तुरन्त ही उसके मन की आँखों के आगे आश्चर्यजनक सुख और शान्तिमय जीवन के सीमाहीन क्षितिज खुल जाते, जो आँखों को सुन्दर और हृदय को सुखद-शान्ति से परिपूर्ण लगते। उस जीवन में उसे दिन-प्रतिदिन उन दर्जनों सुस्त और निकम्मे लोगों के सम्पर्क में आने से छुट्टी मिल जाती, जो सदा ही असन्तुष्ट बने रहते हैं, जो सदा ही चीख़ते-चिल्लाते, झूठ बोलते और धोका देते रहते हैं और जो उसे अपनी झूठी ख़ुशामद से घेरे रहते हैं—जिनकी ख़ुशामद उतना ही क्लेश पहुँचाती है जितनी उनकी छिपी और निरन्तर बढ़ती हुई दुर्भावना। इन सब क्षुद्रताओं से मुक्त जीवन की कल्पना—ऐसे जीवन की कल्पना कर लेना जो अपना जाल फैलाये जानेवाली कारख़ाने की उस विशाल लाल

मकड़ी से कोसों दूर हो, बहुत आसान होता। कल्पना से वह अपने को एक बड़े पालतू बिल्ले के रूप में देखता, जिसे सुरक्षित स्थान में आश्रय दिया जाता है, जिसे गृह-स्वामिनी अपना प्यार और दुलार देती है और जिसे इससे अधिक और कुछ पाने की इच्छा नहीं होती। कुछ भी नहीं।

जिस तरह कुछ दिनों पहले निकोनोव का बालक हर प्रकार के कटु और अप्रिय विचारों का केन्द्र बना हुआ था, उसी तरह पोपोवा अब एक ऐसा चुम्बक बन गई थी जो अनायास ही केवल प्रकाश, प्रिय और सुखद विचारों और संकल्पों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी।

उसने अपने भाई के साथ पोपोवा की जायदाद पर जाने से इन्कार कर दिया। अलेक्सी अपने साथ चश्मा लगानेवाले एक चतुर बूढ़े को लेकर गया, जिसे पोपोवा की चीज़ों का मूल्य निर्धारित करने के लिए नियुक्त किया गया था; किन्तु जब सौदा पटा करके अलेक्सी वापस लौटा तो प्योत्र ने कहा—

"इस रेहन को मुझे बेच दो।"

अलेक्सी को एक अप्रिय आश्चर्य हुआ। उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी—क्यों और किसलिए, और अन्त में बोला—

"सुनो, यह रेहन मेरे किसी क़ाम की नहीं है! वह इसे छुड़ाने के लिए कभी पैसे नहीं जुटा पायेगी, पर उसकी चीज़ें क़ीमती हैं—समझे? इसलिए तुम्हें कुछ रक़म और जोड़नी होगी।"

सौदा पट गया। दाँत भींचकर अलेक्सी ने कहा—

"मेरी शुभकामनाएँ लो। यह काम काफ़ी अच्छा है।"

प्योत्र को भी लगा कि उसने अच्छा ही किया है। उसने अपने लिए विश्राम का स्वर्ग खोज लिया है।

"तुम्हारी पत्नी का क्या होगा? क्या मैं इस बारे में चुप रहूँ?" भाई ने आँख मारते हुए पूछा।

"यह तुम जानो।"

अलेक्सी ने उसकी ओर मर्मभेदी दृष्टि से ताकते हुए कहा—

"ओल्गा सोचती है कि तुम पोपोवा से प्रेम करते हो।"

"और यह मेरी अपनी बात है।"

"मुझसे इस तरह भूँककर मत बोलो। हमारी उम्र में अधिकांश पुरुष अपने मनोरंजन के लिए पास-पड़ोस में चक्कर काटते ही हैं।"

प्योत्र ने किंचित रोष और रूखेपन से उत्तर दिया—

"मुझे अकेला छोड़ दो।"

कुछ ही दिनों में उसने देखा कि उसके प्रति ओल्गा के स्वर में यद्यपि पहले से अधिक आत्मीयता आ गई थी, पर साथ ही किंचित दया-भाव का भी संकेत मिलने लगा था, जो उसे अच्छा न लगता था। पतझर की एक संध्या को उसके कमरे में बैठे प्योत्र ने पूछा—

"क्या अलेक्सी तुमसे पोपोवा के बारे में कुछ ख़ुराफ़ात बकता रहा है?"

उसकी बालदार उँगलियों को अपनी हल्की उँगलियों से एक आत्मीय की तरह छूते हुए ओल्गा बोली—

"यह बात आगे नहीं बढ़ेगी।"

"यह बात कहीं बढ़ेगी ही नहीं।" प्योत्र ने अपने घुटने पर बंद मुट्ठी मारते हुए कहा—"यह बात मेरे हृदय में ही बंद रहेगी। यह तुम्हारे समझने की बात नहीं है। तुम पोपोवा से कुछ न कहना।"

पोपोवा के प्रति उसके हृदय में वासना नहीं थी। वह उस स्त्री को अपनी काम-लिप्सा शान्त करने के लिए नहीं चाहता था, बल्कि उसे अपने घर के आत्मीय और सुखद वातावरण में एक अनिवार्य तत्त्व के रूप में देखता था जो उपयुक्त और सुखी जीवन का अभिन्न अंग है। यह स्त्री जब नगर में आकर बस गई तो वह उससे अलेक्सी के घर पर ही अक्सर मिलने लगा; और तब एक ऐसा क्षण आया कि वह अपने को बस में न रख पाया। एक दिन आकर उसने देखा कि ओल्गा की तबियत अच्छी नहीं है। पोपोवा पलँग के सिरहाने खड़ी थी। वह अपने ब्लाउज़ की बाहें चढ़ाये पानी के तसले में तौलिया भिगो रही थी। वह पानी पर झुकी, फिर सीधी खड़ी हो गई। उसके शरीर की गठन अद्भुत रूप से सुन्दर थी और उसकी कुमारियों जैसे छोटे-छोटे कुच बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। अर्तामोनोव दरवाज़े पर ही रुककर चुपचाप अपनी विस्फारित आँखों से उसकी गोरी बाहों, उसकी सुगठित पिंडलियों, उसके नितम्बों को घूरता रहा और यकायक उसके मन में इस स्त्री का आलिंगन प्राप्त

करने की इच्छा इतने प्रबल वेग से उठी कि वह मूर्छित-सा हो गया। पोपोवा के अभिवादन का उत्तर देने के लिए भरसक प्रयत्न करके उसने सिर हिलाया और कमरे में घुसकर खिड़की के पास कुर्सी पर धम से बैठ गया। नीरस स्वर में उसने पूछा—

"तुम्हें क्या हो गया, ओल्गा! इस तरह बीमार न पड़ जाया करो।"

जीवन में पहले कभी किसी स्त्री ने उसे इतने प्रबल रूप में प्रभावित न किया था, कोई उसके मन पर इस तरह पूरी तरह न छा सकी थी। इससे वह भयभीत हो गया। उसके मन में विपत्ति की धुँधली आशंकाएँ उठने लगीं। उसने डॉक्टर लाने के लिए अपनी गाड़ी भेज दी और स्वयं जल्दी में पैदल ही कारखाने की ओर लौट पड़ा।

यह फरवरी के अन्तिम दिनों की बात है। मौसम में उमस आ गयी थी। यह आनेवाले तूफ़ानों और हिमपात की भूमिका थी। समूचे आकाश को आच्छादित करनेवाले भूरे बादलों का वितान-सा तन गया था जिसने चारों ओर से दिशाओं को घेरकर जैसे अर्तामोनोव पर एक विशाल प्याला उलट दिया हो। सीली, शीत रज धीरे-धीरे गिर रही थी और मूँछों और दाढ़ी पर प्रचुर मात्रा में जमा होकर श्वास लेना दूभर कर रही थी। मुलायम बरफ़ के ऊपर से लम्बी डगें भरकर आगे बढ़ते हुए अर्तामोनोव ने अनुभव किया जैसे वह परास्त हो गया है, चूर-चूर हो गया है। ऐसा ही अनुभव उसने उस रात को भी किया था जब निकिता ने फाँसी लगा ली थी या उस दिन भी जब पवेल निकोनोव की उसने हत्या की थी। इन दोनों अनुभवों में अपनी गंभीरता की दृष्टि से एक अंतरंग सम्बन्ध है, यह उस पर प्रत्यक्ष था। और इसी कारण यह तीसरा अनुभव उसे और भी भयावह लगा। यह प्रत्यक्ष था कि वह कभी भी इस स्त्री को अपनी रखेल न बना सकेगा और उसे लगा कि पोपोवा के प्रति उसके हृदय में अकस्मात ही लालसा का जो ज्वार उठा था वह उसके हृदय की पुनीत और प्रियतम भावना को कलुषित करके इस स्त्री को उसके निकट साधारण स्त्रियों की कोटि में ढकेल रहा है। पत्नी क्या होती है, यह तो वह भलीभाँलि जानता था और उसके पास ऐसा सोचने का कोई कारण न था कि एक रखेल किसी भी रूप में पत्नी से अच्छी ही होगी, जिसकी कामुक चेष्टाएँ और बरबस आलिंगन उसके हृदय में

कामना की चिनगारी सुलगाने में बिलकुल असफल रहते।

"तुम चाहते क्या हो?" उसने अपने आपसे ही प्रश्न किया। "व्यभिचार? इसके लिए तो पत्नी है ही!"

अर्तामोनोव का स्वभाव ही ऐसा था कि आशंका के समय वह शीघ्र-से-शीघ्र उस विपत्ति से बचकर निकल जाने और फिर मुड़कर कभी उस दिशा में न देखने के लिए कष्टप्रद चिन्ताओं से ग्रस्त हो जाता। विपत्ति के सामने पड़ जाने का अर्थ था रात के अँधेरे में गहरी नदी के किनारे बसन्त के फिसलने-खरखरे बरफ़ पर खड़ा होना। अपनी किशोरावस्था में उसने इस प्रकार का दारुण अनुभव किया था और आज उसकी स्मृतिमात्र से उसकी सारी देह भय से काँप जाती थी।

कुछ दिन इसी चिन्ता और दुःख में बीत गये। तब एक दिन सुबह के झुटपुटे में निद्राहीन रात बिताने के कारण बाहर आँगन में निकलते ही उसने देखा कि उसका कुत्ता तुलुन बरफ़ पर रक्त के कुंड में डूबा पड़ा है। झुटपुटे अंधेरे में रक्त एकदम काला दिखाई दे रहा था। उसने कुत्ते का शव अपने पाँव से छूकर देखा। कुत्ते का फटा हुआ मुँह बरफ़ में मुड़ा और बाहर को निकली पड़ी एक आँख उसके पाँव के अँगूठे को घूरने लगी। अर्तामोनोव भय से काँप गया। उसने चौकीदार की कोठरी का द्वार खोलकर दहलीज़ से ही पुकारकर पूछा—

"कुत्ते को किसने मारा?"

"मैंने।" तिखोन ने उत्तर दिया जो दोनों हाथों की उँगलियों पर सम्हालकर टिकी तश्तरी में चाय पी रहा था।

"क्यों?"

"वह फिर आने-जानेवालों को काटने लगा था।"

"इस बार किसको काटा?"

"सेराफ़ीम की बेटी ज़ेनेदा को।"

एक क्षण की विचारमग्न ख़ामोशी के बाद प्योत्र बोला—

"कितने दुःख की बात है।"

"वह तो है ही। जब यह नन्हा पिल्ला था, तब से ही मैंने इस कुत्ते को पाला-

पोसा है। लेकिन इधर कुछ दिनों से वह मेरे ऊपर भी ग़ुर्राने लगा था। ज़ंजीर में बाँधकर रखने पर तो आदमी भी कुछ दिनों में पागल हो जायगा, वह तो जानवर था।"

"यह सच है।" अर्तामोनोव ने उत्तर दिया। अपने पीछे दरवाज़े को सावधानी से बंद करके वह चला आया और उसने सोचा—

"कभी-कभी तो यह आदमी भी बुद्धिमानी की बात कर देता है।"

वह कुछ देर तक आँगन में खड़ा कारख़ाने से आनेवाले शोर-ग़ुल को सुनता रहा। दूर के कोने में घुड़साल की दीवार के सहारे बनी सेराफ़ीम की कुटिया की खिड़की से पीली रोशनी आ रही थी। अर्तामोनोव ने वहाँ जाकर खिड़की में से अन्दर झाँककर देखा। मेज़ पर लैम्प रखा था और ज़ेनेदा सिर्फ़ पेटीकोट और चोली बाँधे अपनी सिलाई में लगी थी। जब वह कमरे में घुसा तो उसने अपना सिर उठाये बिना ही पूछा—

"तुम लौटकर वापस क्यों आ गये?"

किन्तु जब उसने दृष्टि उठाकर द्वार की ओर देखा तो वह अपनी सिलाई वहीं पटककर उछलकर खड़ी हो गई और मुस्कराती हुई चिल्लाई—

"हे भगवान्! मैं तो समझी थी कि बापू हैं।"

"मैंने सुना है कि तुमको तुलुन ने काटा है।"

"काटा नहीं तो और क्या?" वह बोली, मानो इस बात पर उसे गर्व हो रहा हो। पास पड़ी कुरसी पर अपना पाँव रखकर उसने पेटीकोट ऊपर सरकाकर दिखाया, "लो देखो!"

अर्तामोनोव ने उसकी गोरी-गोरी टाँग को देखा जिस पर घुटने के नीचे पट्टी बँधी हुई थी। लड़की के निकट आकर वह नीरस स्वर में बोला—

"इतने सबेरे तुम आँगन में क्या करने गई थीं, क्यों?"

ज़ेनेदा ने उसकी आँखों में आँख डालकर देखा और अर्थ समझकर खिल-खिला पड़ी। उसने तुरंत ज़ोर की फूँक मारकर लैम्प बुझा दिया और बोली—

"दरवाज़े पर ताला डालना होगा।"

आध घण्टे बाद एक सुखद शैथिल्य से थका अर्तामोनोव मन्द गति से कारख़ाने की ओर चल पड़ा और अपने कान की लौर खींचते हुए वह इस

ललछौंहें बालोंवाली लड़की के निर्लज्ज आलिंगन-चुम्बनों का हैरानी से स्मरण करता जाता था। एक-दो बार मन-ही-मन यह सोचकर कि उसने बड़ी चतुरता से अभी किसी को उल्लू बनाया है, और उस पर अपना अधिकार जमाया है, वह गद्‌गद् कंठ से हँसा।

कारख़ाने में काम करनेवाली लड़कियों के व्यभिचार-वासनामय जीवन में वह इस तरह धड़ल्ले से टूट पड़ा जैसे मधुमक्खियों के छत्ते पर रीछ टूटता है। उसने जो कुछ सुना था, उन लड़कियों का जीवन उससे कहीं बढ़-चढ़कर था। सबसे पहले तो वह उनके शब्दों और भावनाओं की उल्लासमयी अश्लीलता, उनकी निर्बन्ध उच्छृङ्खलता और उद्धत निर्लज्जता को देखकर चकित रह गया; जिसमें कहीं कोई दुराव-छिपाव न था। वे इसी निर्लज्जता के गीत गाती थीं और उस पर आँसू बहाती थीं। ज़ेनेदा और उसकी सखियाँ इसे 'प्रेम' कहकर पुकारतीं और इसमें शराब के नशे से भी अधिक तीखापन था।

अर्तामोनोव को मालूम था कि मिल के क्लर्क सेराफ़ीम की छोटी-सी कुटिया को 'चूहेदानी' और ज़ेनेदा को चूहे फाँसनेवाला 'काँटा' कहकर पुकारते हैं। सेराफ़ीम स्वयं अपने घर को 'सन्यासिनियों का मठ' कहकर पुकारता। अँगीठी के पास बेंच पर बैठे और कढ़ी हुई तौलिया में लिपटी सारंगी को अपने कन्धे पर डाले वह अपने घुँघराले बालोंवाले सिर को ऊपर फेंककर अपनी गुलाबी आकृति को सिकोड़कर सब लोगों को आँख मारता हुआ चिल्लाता—

"सन्यासिनी बालाओ! आनन्द लूटो! प्योत्र इलिच, ये सब सन्यासिनी बालाएँ ही तो हैं—देखते नहीं? इन्होंने आनन्द के दानव के आगे शपथ ली है और मैं इनका पुरोहित हूँ, एक तरह का पादरी, ट्रा-टा-टा! जिन्दगी को उल्लासपूर्ण बनाने के लिए एक रूबल तो दो!"

रूबल लेकर वह अपनी पिंडलियों में बँधी पट्टियों में खोंस लेता और अपनी सारंगी के तारों को झंकारते हुए पूरे जोश से गाने लगता—

एक युवती ने, नरक की ज्वालाओं में भुनते हुए
ख़ुश्क बरफ़ के लिए विनती की— भगवान् के नाम पर!
किन्तु शैतान के अग्नि-दूतों ने
उस निरीह मूर्ख को अंगारे डाल-डालकर ठंडा कर दिया!

"मालूम होता है, तुम्हें दुनिया भर के गीत और चुटकुले याद हैं!" उसका मालिक हैरान होकर कहता; बूढ़ा घमण्ड में भरकर बकने लगता—

"छलनी, मैं तो छलनी हूँ! चाहे जितना छान लो मुझे, लेकिन फिर भी मैं अपने लिए गीत छान ही लूँगा। मैं कुछ ऐसा ही आदमी हूँ—छलनी की तरह।"

एक बार उसने कहा था—

"कुलीन लोगों ने मुझे यह सब सिखाया है। कुटुज़ोव भी ऐसे ही कुलीन थे। यापूश्किन भी कौन-सा कम था! पियक्कड़ भी ख़ूब था वह! ख़ानाबदोशों की तरह पीठ पर बोझा लादकर देहातों में फेरी लगाता फिरता था। जो बात देखता या सुनता, झट से लिख लेता, वह लिखता गया और अन्त में ज़ार के पास जाकर बोला। "देखिये ग़रीबपरवर! हमारे किसान क्या सोचते हैं!" ज़ार ने सारी बातें पढ़ीं और उसे बहुत बुरा लगा। उसने फ़ौरन किसानों की स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और आज्ञा दी कि मास्को में यापुश्किन की ताँबे की मूर्ति बनायी जाय। यापुश्किन को सुज़दल भेज दिया गया, उसे सरकारी ख़र्च पर शराब दी गई। चाहे जितनी पी लो। आपको पता है, उसने लोगों के सारे भेद लिख लिये थे। लेकिन उसमें ज़ार के विरुद्ध बातें थीं, इसलिये मामले को वहीं दबा दिया गया। यापुश्किन शराब पी-पीकर मौत की गोद में लुढ़क गया और उसकी कृतियों को सरकार ने चुरा लिया।

"यह सब झूठ है।" अर्तामोनोवने कहा।

"ज़िन्दगी में मैंने छोकरियों के सिवा किसी से झूठ नहीं बोला। यह मेरा काम नहीं है "बूढ़े ने गम्भीरता से उत्तर दिया। यह बताना मुश्किल था कि वह सच बोल रहा है या मज़ाक कर रहा है।

"जो लोग सच्ची बात जानते हैं, वही झूठ बोलते हैं।" मुझे तो सचाई का पता ही नहीं, मैं भला झूठ कैसे बोल सकता हूँ? लेकिन एक बात बता दूँ, मैंने ज़िन्दगी में सत्य देखा है, मेरा विश्वास है कि नयी औरत की तरह झूठ भी नया-नवा ही अच्छा लगता है।"

उसे सत्य का ज्ञान था या नहीं, लेकिन उसे कुलीन ज़मीदारों के मनोरंजन की, मुसीबतों की, क्रूरता की और धन-दौलत की अनगिनत कहानियाँ याद थीं।

इन क़िस्सों को सुनाने के बाद वह अफ़सोस की एक ठंडी साँस लेकर कहता—

"हाँ, लेकिन वे भी अब नहीं रहे। वह केन्द्र से अलग जा पड़े हैं, रास्ता नहीं पा रहे हैं। घेरे को छूती लकीर की तरह।"

और झट वह हाथ से एक घेरा ऊपर और एक ज़मीन पर खींचकर दिखाता।

"वे लोग बड़े ठाठ से रहते थे।" उसने आँख मारी और गाना शुरू कर दिया—

> एक समय कुछ कुलीन
> निष्क्रिय-विलास में पलते थे
> पर उन्होंने ख़ूब लुटायी
> अपने पुरखों की सम्पति सारी

सेराफ़ीम ने लुटेरों और जादूगरनियों की, किसान विद्रोहों की, दुःखान्त प्रेम की, त्रस्त विधवाओं के प्रेमी सर्पों की अनेक कहानियाँ सुनाईं। उसकी शैली इतनी दिलचस्प थी कि उसकी उद्दण्ड बेटी भी अवाक् होकर बच्चों की-सी जिज्ञासा से सुनती रहती।

ज़ेनेदा के व्यक्तित्व में भयङ्कर लम्पटता और क्रियात्मक व्यवसायिकता के सम्मिश्रण को देखकर अर्तामोनोव को ग्लानि होती। उसे कई बार पवेल निकोनोव की भविष्यवाणी याद आती, जो अब सच्ची सिद्ध हो गई थी।

"मैंने इस छोकरी को क्यों चुना?"

वह अपने आप से पूछता। "एक से एक बढ़-चढ़कर सुन्दर छोकरियाँ हैं। मान लो इलिया को पता चल जाय तो मेरी क्या गति होगी?"

उसने अनुभव किया कि ज़ेनेदा और उसकी सहेलियाँ इस प्रकार की काम-क्रीड़ाओं में एक अनिवार्य आपद्धर्म निभाने के लिए ही भाग लेती थीं, जैसे काम पर तैनात सैनिक को अपना धर्म निभाना होता है। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि उनकी इतनी नग्न निर्लज्जता जैसे अपने आपको और दूसरों को धोका देने की चेष्टा का ही परिणाम थी। कुछ ही दिनों में पैसों के प्रति ज़ेनेदा के लालच और समय-कुसमय भीख-सी माँगते रहने की आदत से अर्तामोनोव में उसके प्रति विरक्ति पैदा हो गई। ज़ेनेदा में पैसों का लालच अपने बाप से भी ज़्यादा था। सेराफ़ीम बेचारा तो जो भी मिलता वह सब का सब मीठी टेनेरिव

शराब पर, जिसे वह किसी कारण से 'शलजम की शराब' कहकर पुकारता था, और अपने प्रिय नारंगी के मुरब्बे, मीठी टिकिया और मांस के लहसुन मिले अचार पर ख़र्च कर देता था।

अर्तामोनोव को यह रंगीला आदमी बहुत पसन्द था। वह अपने काम में भी होशियार था और बातें करने में तो उसे कमाल हासिल था। सब लोग सेराफ़ीम को चाहते थे। कारख़ाने में उसे 'सान्त्वना देनेवाला' कहकर पुकारते थे। इस नाम में व्यंग की अपेक्षा सचाई की मात्रा अधिक थी—प्योत्र यह जानता था। यहाँ तक कि व्यङ्ग भी स्नेहपूर्ण था।

इसीलिए सेराफ़ीम और तिखोन की मित्रता का रहस्य अर्तामोनोव की समझ में न आता। विशेषकर जब तिखोन जान-बूझकर मालिक की घृणा का पात्र बनने का प्रयत्न करता रहता था। तिखोन को उसके यहाँ नौकरी करते बीस वर्ष होने को आये थे, इसलिए नतालिया ने इस दिवस को धूमधाम से मनाने का आयोजन किया।

उसने अपने पति से कहा, "जीवन में ऐसे लोग बहुत बिरले होते हैं। ज़रा सोचो तो कि बीस वर्ष के लम्बे अरसे में उसने हमें कभी तंग नहीं किया। उसका स्वभाव कितना शान्त और स्थिर है—बढ़िया मोमबत्ती की लौ की तरह।"

जमादार का विशेष रूप से सम्मान करने के लिए प्योत्र स्वयं उपहार ख़रीद कर लाया। सेराफ़ीम भी अपनी सबसे बढ़िया पोशाक में वहाँ मौजूद था। तिखोन सिर झुकाए मालिक के पैरों की ओर देख रहा था।

"यह घड़ी मेरी ओर से तुम्हें भेंट है और यह चादर मालकिन ने दी है। और यह लो कुछ पैसे।"

"पैसों की कोई ज़रूरत नहीं।" तिखोन फुसफुसाया। फिर कुछ देर रुककर वह बोला—

"धन्यवाद।"

उसने मालिक से सेराफ़ीम की दी हुई मीठी टेनेरिफ़ शराब पीने का आग्रह किया। बढ़ई ने तुरन्त चहकना शुरू कर दिया—

"प्योत्र इलिच, आप हम लोगों की क़द्र करना जानते हैं और हमें आपकी क़द्र मालूम है। हमार विश्वास है कि रीछ को शहद पसन्द है, पर लुहार लोहे

से चीज़ें तैयार करता है। पुराने ज़मीन्दार हमारे लिए रीछों के समान थे, लेकिन आप लुहार हैं। हम जानते हैं कि आपका कारोबार कितना बड़ा है और उसके लिए आप कितना परिश्रम करते हैं।"

तिखोन ब्यालोव की उँगलियाँ चाँदी की घड़ी से खेल रही थीं। उसकी ओर देखते हुए वह बोला—

"कारोबार....एक सीढ़ी है। आदमी का सहारा है। सीढ़ी के चारों ओर एक गढ़ा है।"

"शाबास!" सेराफ़ीम ने समर्थन किया। "बिलकुल ठीक! नहीं तो हम गढ़े में गिर पड़ें।"

"इसकी चिन्ता तुम्हें नहीं करनी चाहिए।" अर्तामोनोव ने कहा, "क्योंकि तुम किसी कारोबार के मालिक नहीं हो। तुम इन सब बातों को समझ भी नहीं सकते।"

उसने कठोर शब्दों का प्रयोग करना चाहा, लेकिन उसे सफलता न मिली। तिखोन के शब्दों से उसके शरीर में आग लग गई थी। पहले भी कई बार वह अपने दुराग्रही और रहस्यपूर्ण विचारों को ऐसे ही गूढ़ ढंग से व्यक्त कर चुका था। प्योत्र का गुस्सा दिन-प्रतिदिन बढ़ता आया था। प्योत्र अपनी कान की लौर सहलाते हुए जमादार के ऊबड़-खाबड़ सिर की ओर देखने लगा। वह परेशान था कि किस तरह तिखोन को कुचला जाये।

"इसमें कोई शक नहीं कि कारोबार भी दो प्रकार का होता है। अच्छा और बुरा....।" सेराफ़ीम ने चापलूसी करते हुए कहा।

"बढ़िया से बढ़िया छुरी भी तुम्हारी गर्दन को छूकर कुंद हो जायेगी।" तिखोन बड़बड़ाया।

प्योत्र की इच्छा हुई कि उसे पेट भरकर गालियाँ दे, लेकिन तिखोन के सम्मान का दिवस था। प्योत्र ने सख़्ती से पूछा—

"तुम्हें हो क्या गया है—हर समय कारोबार सम्बन्धी कोई न कोई बकवास किया करते हो! मैं हैरान हूँ।"

तिख़ोन ने नज़र नीचे करके उत्तर दिया—

"सचमुच यह हैरानी की बात है।"

बढ़ई ने फिर टोका—

"प्योत्र इलिच, तिखोन के कहने का अभिप्राय यह है कि दुनिया में सिर्फ़ अच्छी क़िस्म का कारोबार होना चाहिए।"

"तुम चुप रहो सेराफ़ीम—उसे ख़ुद बोलने दो!" अर्तामोनोव ने उसे डाँट दिया।

तब तिखोन अविचलित रहकर नीचा सिर किये अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरते हुए एक निःश्वास लेकर बोला—

"व्यापार वही तो है, जो शैतान ने क़ाबील को सिखाया था।"

"सुनते हैं, कैसी बुद्धिमानी की बातें करता है!" सेराफ़ीम ने चिल्लाकर कहा।

अर्तामोनोव उठ खड़ा हुआ और क्रोध में भरकर चौकीदार से बोला—

"जिस बात को समझ नहीं सकते उसके बारे में तुमको नहीं बोलना चाहिए, समझे।"

वह ग़ुस्से में भरा जमादार की कोठरी से निकला और सोचने लगा कि तिखोन को अब बर्ख़ास्त कर देना चाहिए। वह उसे कल ही नौकरी से अलग कर देगा। नहीं, कल नहीं, अगले सप्ताह। दफ्तर पहुँचकर उसने देखा कि पोपोवा उसकी प्रतीक्षा में बैठी है। उसने एक अजनबी की तरह उदासीन भाव से प्योत्र का अभिवादन किया। बैठकर उसने अपने छाते से फ़र्श ठोका और अपनी गिरवी रखी हुई जायदाद के सूद के बारे में बातें करने लगी। उसने बताया कि वह तुरत सूद चुकाने में असमर्थ है।

"न सही, इसमें चिन्ता की कौन-सी बात है।" प्योत्र ने शान्त-भाव से उसकी ओर बिना देखे ही कहा। पोपोवा बोली—

"आप अगर मियाद बढ़ाने को राज़ी न हों, तो इन्कार करने का आपको पूरा अधिकार है।"

कुपित स्वर में यह कहकर उसने एक बार ज़मीन पर पाँव पटका और इतनी तेज़ी से तीर की तरह सनसनाती हुई कमरे से बाहर निकल गई कि प्योत्र ने जब तक सिर उठाया तब तक पोपोवा कमरे का द्वार बन्द कर चुकी थी।

"ज़रूर नाराज़ है, पर आश्चर्य है, न जाने किस बात से?" प्योत्र ने सोचा।

एक घण्टे बाद ओल्गा के कमरे में बैठा वह अपनी बात में ज़ोर लाने के लिए बार-बार सोफ़ा पर अपनी टोपी पटक रहा था—

"तुम उसे साफ़-साफ़ बता दो कि उससे न मुझे सूद चाहिए और न क़र्ज़ का रुपया ही। जैसे यह बहुत बड़ी रक़म हो! और उसे क़तई चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है, समझीं?"

"मैं तो ख़ूब समझती हूँ, लेकिन वह भी समझेगी, इसमें मुझे शक है।"

"अच्छा, तो उसे समझा दो। तुम्हारे समझने से मेरा क्या?"

"धन्यवाद" ओल्गा ने कहा। ऊपर आँखें उठाने पर ऐनक में से उसकी मुस्कान झलक गई जिससे प्योत्र चिढ़ गया—

"इसमें मज़ाक की क्या बात है?" उसने रूखे ढंग से कहा, "मैं उसके बाग़ में अपनी जड़ जमाने की नहीं सोच रहा। मैं इसके पीछे नहीं पड़ गया हूँ। ऐसा कभी सोचना भी मत!"

"हाय, तुम पुरुष सब एक-से होते हो।" ओल्गा ने निःश्वास भरकर सन्देह से सिर हिलाते हुए कहा।

प्योत्र चिल्लाया—

"मेरा विश्वास करो! मुझे मालूम है कि मैं जो कह रहा हूँ उसका क्या मतलब है।"

"हाय, पर क्या सच तुम्हें मालूम है?"

उसने एक लम्बी सहानुभूतिपूर्ण साँस ली। आर्तामोनोव इस बात को जानता था। चश्मे के भीतर से चमकती हुई आँखें सजल तथा दयार्द्र थीं, लेकिन यह देखकर प्योत्र का मिज़ाज और भी बिगड़ गया....वह खिड़की के पास बैठकर बेगोनिया फूलों के सुन्दर कुंज को देखने लगा, जिनके मोटे पत्ते जानवर के कानों की तरह दिखाई दे रहे थे। वह नतालिया से कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसकी समझ में न आया कि उससे क्या कहे, अन्त में वह बोला—

"मुझे उसके घर को देखकर दया आती है। बड़ी अद्भुत जगह है। वह वहीं पर पैदा हुई थी।"

"उसका जन्म तो रियाज़ान में हुआ था।"

"ख़ैर, वह तो वहीं रहती थी! वहीं मेरी आत्मा पहली बार शान्त निद्रा में

सोई थी ।"

"तुम्हारा मतलब है जागी थी !" ओल्गा ने कहा ।

"एक ही बात है । आत्मा का जागना या सोना ।"

"जो भी कहो ।"

वह न जाने क्या अंट-संट बकता रहा । ओल्गा ठुड्डी पर हाथ रखे उसकी बातें सुनती रही । आख़िर तंग आकर जब प्योत्र चुप हुआ तो ओल्गा ने कहा—

"अब मेरी बात सुनो ।"

उसने बताया कि नतालिया भी ज़िनेदा के साथ उसके सारे क़िस्से से परिचित है; वह बहुत दुखी है और रो-रोकर शिकायत करती है—लेकिन इस बात से अर्तामोनोव का हृदय नहीं पसीजा ।

"मक्कार !" प्योत्र ने शुष्क-सी मुस्कराहट से कहा—"उसने मुझे तो कभी नहीं बताया और तुमसे आकर शिकायत की ? और इस पर ख़ूबी यह कि वह तुम्हें पसन्द नहीं करती ।"

कुछ देर रुककर उसने कहा—

"लोग ज़ेनेदा को 'पम्प' कहते हैं, ठीक है । उसने मेरा सब कीचड़ खींच लिया है ।"

"कितनी गंदी बात है ।" ओल्गा ने ठंडी साँस लेते हुए कहा । "मुझे याद है, मैंने तुम्हें एक बार कहा था कि तुम अपनी आत्मा से अवैध शिशु की तरह व्यवहार करते हो । प्योत्र यही बात है, तुम्हें अपने आप से डर लगता है, मानो तुम अपने सबसे बड़े दुश्मन हो ।"

प्योत्र को यह बात बुरी लगी ।

"तुम भी हद पार कर जाती हो, आखिर मैं छोकरा तो हूँ नहीं ! ज़रा क्षणभर के लिये तो सोचकर देखो; मैं यहाँ बैठा तुमसे बातें कर रहा हूँ । मेरी आत्मा के द्वार खुले हैं ।"

भला और किसी से मैं इतना खुलकर बातें कर सकता हूँ ? नतालिया से बात-चीत करना असम्भव है । कभी-कभी तो मेरा मन उसे थप्पड़ मारने को करता है । और तुम कहती हो कि....हाय, स्त्री जाति !"

अचानक उसका गला रुँध गया । उसने सिर पर टोपी रखी और चल

दिया। रह-रहकर उसे अपनी पत्नी का ख़्याल आ रहा था। चिरकाल से वह उसकी उपेक्षा करता आया था, यहाँ तक कि उसे आँख उठाकर देखता भी न था। वह बेचारी प्रतिदिन रात को प्रार्थना करने के बाद स्नेह-भाव से उसके पास आ लेटती।

"यह जानते हुए भी वह मुझे तंग करती है, सूअर की बच्ची!" उसे इस बात पर ग़ुस्सा आ रहा था।

प्योत्र के लिए उसकी पत्नी एक चिरपरिचित मार्ग की तरह थी जिस पर आँखें मूँद कर भी चला जा सकता है। वह उसके बारे में सोचना तक न चाहता था, लेकिन उसे अपनी सास का सूजा हुआ लाल चेहरा याद आया, जो आराम कुर्सी में लेटी अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही थी। उसके अंग-प्रत्यंग में मानो दानवी प्रवृत्तियाँ छिपी बैठी थीं। वह प्योत्र से कितनी नफ़रत करती थी। उसकी आँखों से आँसू की धार बहती रहती थी। उसका विकृत और धुँधला चेहरा किसी समय अवश्य सुन्दर रहा होगा। उसके सिकुड़े होंठ कुछ हिले, लेकिन वह बोलने में असमर्थ थी। बोलने की चेष्टा में उसकी जीभ बाहर लटक आई थी। बेचारी ने अपने बायें हाथ से, जिसे लक़वा मार गया था, अपना मुँह बन्द करने की कोशिश की।

"यह भी इन्सान है।" प्योत्र को दया आ गई।

उसने सोचा कि वह ज़ेनेदा से सम्बन्धित लज्जाजनक घटनाएँ भविष्य में न दुहरायेगा, लेकिन ऐसा करना असम्भव था। उस आवारा छोकरी की स्मृतियाँ रह-रहकर उसे सताने लगीं। उसे लगा कि एक नये प्योत्र ने जन्म लिया है जो छाया की तरह पहले प्योत्र का पीछा करता है। उसने एक नयी व्यथा और यन्त्रणा का अनुभव किया, जो वास्तविक प्योत्र की इच्छाओं के मार्ग में बाधा डालती थी। मानसिक चिन्ताओं के उतार-चढ़ाव में उसके विचार और भी मर्मान्तक हो उठे।

"तुम घोड़े की तरह मेहनत करते हो। किसलिए? तुम्हारे पास इतना धन है जिससे सारी ज़िन्दगी मज़े में कट सकती है। अब तुम्हारे बेटे के मेहनत करने का समय है। तुम अपने बेटे से प्यार करते हो—इसीलिए तुमने एक निर्दोष बालक की हत्या कर डाली। किसी सुन्दरी पर तुम्हारी आँखें टिकीं कि

तुम पागल हो गये।"

इन विचारों के बाद ज़िन्दगी और भी नीरस और अन्धकारपूर्ण दिखाई देती।

इलिया कब इतना बड़ा हो गया, इस बात पर उसने ध्यान ही न दिया था। उसे यह भी न पता था कि नतालिया ने कब और कैसे एलेना की शादी सरकारी जागीर के एक धनी जौहरी के लड़के से कर दी थी और उसका दामाद काली मूँछोंवाला एक शोख़ नौजवान है। उसे यह भी याद न था कि उसकी सास जून के महीने में एक दिन तूफ़ान से पहले की उमस के बीच चल बसी थी। उसे कफ़न में लपेटते समय बिजली कड़की थी।

"दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द कर दो।" नतालिया ने चिल्लाकर कहा था और अपने हाथ से माँ का सूजा हुआ पैर छोड़कर हाथों से कान बन्द कर लिये थे। सूजी एँड़ी धम् से गिर पड़ी थी। इलिया दफ़्तर में दाखिल हुआ था। एक क्षण के लिये प्योत्र को ऐसा लगा था कि वह उस लम्बे, गठीले नवयुवक से अपरिचित है, जो वास्तव में उसका पुत्र है। इलिया ने भूरे रंग का सूट पहन रखा था। उसका जैतूनी चेहरा पहले से पतला हो गया था और ऊपरवाले होंठ की कोरों पर मूछों की रेख उभरने लगी थी। मोटा-थल्ला याकोव अभी तक स्कूल की वर्दी पहने हुए था। सारे परिवार में उसे केवल वही परिचित लगा। लड़कों ने पिता का सादर अभिवादन किया।

"हाँ, तो तुम्हारी नानी चल बसीं?" प्योत्र ने कमरे में टहलते हुए कहा।

इलिया चुप रहा। वह सिगरेट सुलगा रहा था। याकोव ने एक नये अपरिचित से स्वर में कहा—

"अच्छा हुआ नानी ने मरने के लिये छुट्टियों का समय चुना, नहीं तो मेरा आना न हो सकता।"

प्योत्र ने छोटे बेटे की इस बेहूदा बात पर कोई ध्यान न दिया। उसका ध्यान तो बड़े बेटे पर था। इलिया की आकृति पहले से बहुत बदल गई थी। उसके बल और चरित्र में विकास हो रहा था। उसके बाल भी बचपन की अपेक्षा अधिक काले और घने हो गये थे, जिससे उसका मस्तक कम चौड़ा दिखने लगा था। प्योत्र को याद आया कि उसने कभी इस बढ़िया सूटवाले व्यक्ति को बाल पकड़कर खींचा था। उसे सहसा इस घटना पर विश्वास न

हुआ। रहा याकोव, सो वह लम्बा तो ख़ूब हो गया था, लेकिन उसका गोल-मटोल शरीर, लालच भरी आँखें और बचकाना मुँह पहले जैसा ही था।

"इलिया तुम बड़े हो गये हो। अभी से कारोबार में मन लगाओ तो तीन-चार साल में उसे सँभालने योग्य हो जाओगे।"

इलिया ने पिता की ओर देखा। वह लकड़ी के सिगरेट-केस से खेल रहा था, जिसके कोने की चिप्पड़ बुरी तौर से उखड़ गयी थी।

"नहीं, मेरा इरादा आगे पढ़ने का है।"

"कब तक?"

"अभी चार-पाँच साल और।"

"ठीक, ठीक! क्या पढ़ोगे?"

"इतिहास।"

बेटे को सिगरेट पीते देख अर्तामोनोव को बुरा लगा और वह सिगरेट-केस रद्दी था। न जाने क्यों उसने अच्छा सिगरेट-केस नहीं ख़रीदा। सबसे ज़्यादा ग़ुस्सा तो उसे इस बात पर था कि इलिया ने घर में क़दम रखते ही पढ़ाई जारी रखने का फ़ैसला सुना दिया था। खिड़की से कारख़ाने की छत की ओर इशारा करते हुए, जहाँ एक तंग पाइप से भाप की नन्हीं फुहारें निकल कर मज़दूरों के श्रम से ताल मिला रही थीं, प्योत्र ने गम्भीर किन्तु कोमल स्वर में कहा—

"भाप की फुहारों में भी एक इतिहास है, जिसका अध्ययन तुम्हें करना चाहिए। हमारा पेशा लिनेन का कपड़ा बुनना है। न कि इतिहास पढ़ना। मैं पचास का हो चला, अब मुझे छुट्टी मिलनी चाहिए।"

"मिरोन और याकोव आपका काम सँभालेंगे। मिरोन तो इंजीनीयर बनने जा रहा है।" इलिया ने खिड़की के बाहर सिगरेट की राख झाड़ते हुए उत्तर दिया। पिता ने कहा—

"मिरोन मेरा भतीजा है, बेटा नहीं। ख़ैर, यह सब बातें बाद में करेंगे।"

लड़के उठकर बाहर चले गये। पिता उन दोनों की ओर आश्चर्य और वेदना भरी विस्फारित आँखों से देखता रहा। क्या इन लड़कों को उससे कुछ नहीं कहना था? वे उसके दफ़्तर में कुल पाँच मिनट बैठे थे। उनमें से एक तो अपनी मूर्खतापूर्ण बात करके बैठा जमुँहाई लेता रहा था। दूसरे ने सारे कमरे

में तमाखू का धूँआ भर दिया था और अपने रंग-ढंग से उसे विचलित कर दिया था। अब वे दोनों आँगन में थे। उसे इलिया के शब्द स्पष्ट सुनाई दे रहे थे—

"चलो न, एक बार नदी देख आयें।"

"नहीं, मैं तो सफ़र से थक गया हूँ।"

"ख़ैर, नदी तो कल भी जहाँ है वहीं होगी। उधर माँ नानी की मृत्यु से शोकमग्न है और अन्त्येष्टि का इन्तज़ाम करते-करते चूर-चूर हो गई है।"

अप्रिय प्रसंग को जल्द से जल्द ख़त्म कर देने की आदत से विवश होने के कारण, ताकि किसी तरह जल्द बला टले और पिण्ड छूटे, प्योत्र ने अपने बेटे को केवल एक सप्ताह का समय दिया। इस एक सप्ताह में उसने देखा कि मज़दूरों से बात करते समय वह 'आप' जैसे शिष्टाचारी शब्दों का प्रयोग करता है और सन्ध्या के समय फाटक के पास की बेंच पर बैठकर घंटों तक तिखोन और सेराफ़ीम से बातें करता रहता है। एक दिन अपनी खिड़की से प्योत्र ने उनकी बातचीत के कुछ अंश भी सुन लिए। तिखोन अपने मरियल स्वर में मूर्खतापूर्वक बके जा रहा था—

"अच्छा, तो यह बात है! वे उन्हें भिखारी और मंगता कहकर पुकारते हैं। सुधार—मेरे बस में तो नहीं है! पर वे क्यों नहीं सुधार सकते? यह सच है, इलिया पेत्रोविच, कि अगर लोग अपना लालच छोड़ दें तो किसी को किसी चीज़ की कमी न रहे?"

और सेराफ़ीम ने ख़ुशी से चहक कर कहा—

"हाँ, मैं जानता हूँ! कितने ही दिन पहले मैंने यह बात सुनी थी।"

याकोव का व्यवहार अधिक समझ में आनेवाला था। वह कारख़ाने की इमारत के इर्द-गिर्द मँडराता रहता, लड़कियों से आँखें लड़ाता फिरता और जब दोपहर को खाने के समय औरतें नहाने के लिए नदी पर जातीं तो वह घुड़साल की छत पर चढ़कर उन्हें घूरता रहता।

"लगता है, निरा अल्हड़ साँड़ है।" पिता ने किंचित उदास होकर सोचा, "सेराफ़ीम से कहना होगा कि इस लड़के पर नज़र रखे। उसे कहीं फँसने न दे।'

मंगल का दिन उदास और शान्त था। सुबह-सुबह लगभग एक घंटे तक

बूँदा-बाँदी होती रही थी, और मेंह की अलसाई-सी फ़ुहारें पृथ्वी का आँचल भिगोती रहीं। दोपहर के बाद सूरज ने फिर बादलों में से झाँककर कारख़ाने और नदियों के संगम की ओर एक अनमनी-सी दृष्टि डाली और जैसे रात को सोने से पहले नतालिया अपने गुलाबी गालों को परदार तकियों में छिपा लेती थी, ठीक उसी तरह सूरज ने भी ऊदे-ऊदे बादलों में अपना मुँह छिपा लिया।

शाम की चाय के समय अर्तामोनोव ने याकोव से पूछा--

"तुम्हारा भाई कहाँ है ?"

"पता नहीं, कुछ देर हुई पहाड़ी पर चीड़ के पेड़ के नीचे बैठा था।"

"उसे बुला लाओ। अच्छा, जाने दो। मुझे बताओ कि तुम दोनो की कैसी पटती है ?"

उसे लगा कि याकोव के होठों पर एक अर्थपूर्ण मुस्कान दौड़ गई है।

"ख़ूब अच्छी पटती है। आपस में कभी लड़ाई नहीं होती।"

"बस, इतना ही ? मैं सचाई जानना चाहता हूँ।"

याकोव आँखें झुकाकर सोचने लगा—

"विचारों में हम एक दूसरे से भिन्न हैं।"

"कौन से विचार ?"

"हर प्रकार के विचार।"

"हाँ, तो तुम्हारा मतभेद क्या है ?"

"वह हमेशा किताबी बातें करता है और मैं अपनी बुद्धि के अनुसार चलता हूँ--सिर्फ़ अपनी बुद्धि के अनुसार।"

"हूँ, यह बात है।" पिता ने कहा। इससे आगे और कैसे जाने यह उसे नहीं मालूम था।

प्योत्र ने कन्धे पर बरसाती डाली और अपनी छड़ी उठाई, जिसकी चाँदी की मूँठ पर एक पक्षी अपने पंजे में गेंद दबोचे बैठा था। यह छड़ी उसे अलेक्सी ने भेंट की थी।

फाटक से बाहर आकर उसने माथे पर हाथ रखकर चारों ओर नज़र दौड़ाई। इलिया सफ़ेद कमीज़ पहने नदी किनारे के वृक्षों के नीचे लेटा था।

आज रेत भी सीली है। उसे सरदी न लग जाय। बड़ा लापरवाह है।

वह जाकर अपने पुत्र से क्या कहेगा, इसका एक-एक शब्द तोलकर प्योत्र ने कण्ठस्थ कर लिया था। उसके पाँव के नीचे भूरी घास कच से दब रही थी। इलिया मुँह नीचा किये एक भारी-भरकम पुस्तक के पन्ने उलट रहा था और जहाँ-तहाँ पेन्सिल से निशान लगाता जाता था। क़दमों की आहट सुनकर उसने गर्दन मोड़कर देखा तो पिता को सामने खड़ा पाया। बीच में पेन्सिल रखकर उसने तुरन्त किताब बन्द कर दी और उठकर वृक्ष के तने से टेक लगाकर बैठ गया। उसकी आँखों में मैत्री-भाव छलक रहा था। पहाड़ी पर चढ़ने के कारण पिता की साँस फूल गई थी। वृक्ष की जड़ के पास बैठकर वह सोचने लगा—अभी कारोबार की बात नहीं करूँगा। इसके लिए बहुत समय पड़ा है। हम और चीज़ों के बारे में गप-शप करेंगे।

लेकिन इलिया ने अपने घुटनों को बाँहों में बाँधते हुए शान्त-भाव से कहा:

"पिताजी, मैंने अपना जीवन विज्ञान को समर्पित करने का निश्चय किया है।"

"समर्पित करने का।" पिता ने उसके शब्दों को दुहराते हुए कहा। "मानो यह भी कोई सन्यास-व्रत हो।" इच्छा के विपरीत उसके शब्द उग्र रूप धारण करते गये। अपने आपसे चिढ़कर प्योत्र ने ज़ोर से छड़ी को ज़मीन पर पटका। इसके बाद एक अप्रत्याशित और अनचाही घटना घटी। इलिया की आँखों का नीला रंग और भी गहरा हो गया, और उसके माथे पर त्यौरियाँ पड़ गईं। माथे की लटों को पीछे की ओर फेंककर उसने अवज्ञापूर्ण दुराग्रह से कहा—

"मैं उद्योगपति नहीं बनना चाहता। मैं इसके लिए बना ही नहीं।"

"यह सब तिखोन के विचार हैं।" प्योत्र ने घृणा से कहा।

पिता के टोकने की रत्तीभर परवाह न कर इलिया दस मिनटों तक प्योत्र को समझाता रहा कि वह व्यापारी नहीं बनना चाहता। इसी बीच प्योत्र ने कई बार अनुभव किया कि इलिया की बातों में सच्चाई की ऐसी अस्पष्ट झलक है जो उसके अपने अपूर्ण विचारों से मेल खाती है। लेकिन समग्र रूप से देखने पर इलिया की बातें असंगत और बचकानी जान पड़ीं।

"चुप रहो।" उसने रेत में छड़ी गाड़ते हुए कहा, "यह सब बकवास है। किसी को तो बड़ा मानना पड़ेगा। इसके बिना लोगों की कोई गति नहीं। अपना

लाभ सोचे बगैर कोई किसी काम में नहीं पड़ता। हर कोई यही पूछता है—'इसमें मेरा फ़ायदा क्या है?' हम सब उसी तकुए पर कते हैं। बड़े-बूढ़ों का भी यही कहना है कि 'अगर उसकी आत्मा लाभ के लिए न छटपटाती तो वह एड़ी से चोटी तक पूरा सन्त होता!' 'यहाँ तक कि सन्त भी फ़ायदे के लिए प्रार्थना करते हैं।' या 'आत्मा से शून्य होने पर भी मशीन तेल के बिना नहीं चलती!"

प्योत्र का स्वर गम्भीर और शान्त था। उसे रह-रहकर पुरानी कहावतें याद आ रही थीं और वह अपनी बात में इन कहावतों में निहित विवेक और बुद्धिमत्ता का भरपूर प्रयोग कर रहा था। बिना किसी यत्न या कठिनाई के शब्दों का प्रवाह अबाध गति से जारी था। प्योत्र को विश्वास था कि उसकी बातों का वांछित प्रभाव पड़ेगा। इलिया चुपचाप सारी बातें सुनता रहा। उसकी उँगलियाँ लगातार रेत में छिपी चीड़ की सुईनुमा पत्तियों से खेल रही थीं। वह उनको हथेली पर रखकर फूँक से उड़ा देता। पर अकस्मात् अपने पिता की तरह ही दृढ़ता से वह बोला—.

"इन सब बातों का मेरे मन पर कोई असर नहीं पड़ता। ऐसे दक़ियानूसी सिद्धान्तों से अब काम न चलेगा।"

पिता अपनी छड़ी के सहारे खड़ा हो गया। पुत्र ने पिता की कोई सहायता न की।

"अच्छा, तो तुम्हारे पिता की बातें झूठ हैं?"

"नहीं, सत्य का एक दूसरा पहलू भी है।"

"यह सरासर झूठ है। सत्य का एक ही पहलू होता है।" फिर मिल की ओर छड़ी घुमाते हुए प्योत्र ने कहा—

"देखो, हमारा सत्य वह रहा! तुम्हारे दादा ने इसकी नींव डाली थी। मैंने सारी ज़िन्दगी इसमें खपा दी है। अब तुम्हारी बारी है। कितनी सीधी बात है। इसके अलावा और तुम्हें क्या चाहिए? हमने अपना ख़ून-पसीना एक किया, फिर तुम भला गुलछर्रे क्यों उड़ाओ? तुम दूसरों के कन्धे पर बैठकर संत बनना चाहते हो! ख़ूब, विचार तो बुरा नहीं! इतिहास—उसे भूल जाओ। इतिहास कोई छोकरी तो नहीं, तुम उससे शादी तो नहीं कर सकते! क्या करोगे

इस कम्बख्त इतिहास को लेकर? इससे क्या लाभ होगा? मैं तुम्हें आवारा नहीं बनने दूँगा।"

अर्तामोनोव को लगा कि उसका स्वर आवश्यकता से अधिक कठोर हो गया है। उसने बात बदलते हुए कहा—

"मुझे लगता है कि तुम मास्को में रहना चाहते हो। वहाँ ज़िन्दगी में रंगीनी और लुत्फ़ है। अलेक्सी भी....।"

इलिया ने किताब उठाकर जिल्द पर पड़ी रेत को झाड़ते हुए कहा—

"मुझे आगे पढ़ने की आज्ञा दीजिए।"

"नहीं।" पिता ने छड़ी को और गहरा गाड़ते हुए कहा, "और फिर यह बात कभी न कहना।"

इलिया भी उठ खड़ा हुआ। उसकी नीली आँखों का रंग फीका पड़ गया था। पिता के कन्धों से परे क्षितिज की ओर देखते हुए उसने शान्त स्वर में कहा—

"अच्छी बात है। अब मुझे आज्ञा के बिना ही अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगना होगा।"

"अगर हिम्मत हो तो....।"

"अपने मनचाहे ढंग से जीवन बिताने से कोई व्यक्ति किसी को रोक नहीं सकता।" इलिया ने अपना सिर तानते हुए कहा।

"एक व्यक्ति को न? पर तुम तो मेरे बेटे हो, व्यक्ति नहीं हो। तुम भी कोई व्यक्ति हो? तुम्हारे शरीर का एक चिथड़ा भी तो तुम्हारा नहीं, मेरा दिया हुआ है।"

यह बात जैसे अपने आप कंठ से फूट पड़ी। अच्छा होता यदि वह ऐसा न कहता। और प्योत्र ने धिक्कार से सिर हिलाते हुए किंचित कोमल शब्दों में अपनी बात जारी रखी—

"मैंने पाल पोसकर तुम्हें बड़ा किया, सो उसका बदला तुम इस तरह चुका रहे हो? एँ, कितने बेवकूफ़ हो।"

इलिया के कपोल लाल हो गये और उसके हाथ काँपने लगे। उसने अपने हाथों को जेब में डालकर छिपाना चाहा, लेकिन यह करना भी उसके बस में

न रहा। और अर्तामोनोव, इस डर से कि उसका बेटा कहीं सीमाओं का उल्लंघन करने पर न तुल जाय या वह स्वयं कोई ऐसी बात न कह बैठे जिसे वापस लेना असंभव हो जाय, जल्दी से बोला—

"सिर्फ़ तुम्हारी ख़ातिर ही मैंने यह इन्सान की ज़िन्दगी निभाई....नहीं तो, सम्भव है।"

"नहीं तो सम्भव है"—इन शब्दों का उच्चारण करते ही अर्तामोनोव ने सोचा कि इन परिस्थितियों में जब कि उसका पुत्र कोई बात समझना ही नहीं चाहता, उसे ये शब्द नहीं कहना चाहिए थे।

"अब वह पूछ बैठेगा, किसकी ज़िन्दगी।" उसने सोचा और वह तेज़ी से पहाड़ी से नीचे उतरने लगा।

किन्तु उसके बेटे ने पीछे से पुकारा। वह शब्द बहरा कर देनेवाले थे।

"सिर्फ़ एक ज़िन्दगी ही नहीं। देखो—उधर कारख़ाने के शिकार मज़दूरों से पूरा क़ब्रिस्तान भर गया है।"

अर्तामोनोव ने पीछे मुड़कर देखा। इलिया खड़ा हाथ उठाकर अपनी किताब से उन क्रास चिह्नों की ओर इशारा कर रहा था जो क्षितिज पर अनेक पंक्तियों में फैले हुए थे। अर्तामोनोव के पाँव के नीचे की बालू किरकिराई। अभी कुछ देर पहले कारख़ाने और क़ब्रिस्तान के बारे में आक्रोश भरी जो बातें सुनी थीं, उनको उसने एक बार फिर मन में दोहराया। साथ ही उसके मुँह से जो बातें बरबस निकल गई थीं, वह चाहता था कि उसके पुत्र की स्मृति से वे मिट जायँ और तेज़ी से क़दम उठाते हुए वह बालू की तरह पहाड़ी पर चढ़ने लगा। इस आशा से कि उसका बेटा डर जायगा, वह अपनी छड़ी को हवा में घुमाते हुए डपटकर चिल्लाया—

"क्या कहा तुमने, कुत्ता कहीं का?"

इलिया उछलकर पेड़ के पीछे जा छिपा।

"ठहरो! क्या तुम पागल हो गये हो?"

बाप ने पूरे ज़ोर से घुमाकर पेड़ के तने में छड़ी दे मारी। छड़ी टूट गई और उसने हाथ में बचे टुकड़े को बेटे के पाँव की ओर फेंक दिया। वह थर-थराती हुई बालू में घुस गई। उसकी हरी नोक तिरछी होकर उसकी ही ओर थी।

उसने क्रोधपूर्वक कहा—

"मैं तुम्हारे लिए साफ़ कमरे बनवा दूँगा!"

और वह लड़खड़ाता फिसलता हुआ तेज़ी से पहाड़ी से नीचे उतर आया। उसके मन में एक तूफ़ान उठ रहा था और वह खेद और क्रोधभरे असम्बद्ध शब्दों के बीच उलझे हुए जाल में फँसी चिड़िया की तरह टक्करें मारता फिर रहा था।

"मैं इस छोकरे को घर से निकाल बाहर करूँगा। ज़रूरत उसे फिर वापस ले आयेगी और कमरे! मैं ऐसी बेहूदा बातें बर्दाश्त नहीं कर सकता!"—इस तरह के फुटकर विचार उस जाल में से धक्का खाकर सनसनाते हुए उसके मन में आये और इसके साथ ही एक दूसरी दिशा से अन्य विचार भी आये, जिन्होंने यह धुँधला-सा संकेत दिया कि उसने उचित काम नहीं किया कि वह सीमा का अतिक्रमण कर गया और उसने व्यर्थ ही इतना बुरा माना।

ओका नदी के किनारे पहुँचकर वह रेतीली मिट्टी पर कुछ देर सुस्ताने बैठ गया। उसके चेहरे पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं, उसने उन्हें हाथ से पोंछ-कर साफ़ किया। अचानक उसकी दृष्टि नदी पर पड़ी, डेस मछलियों का झुण्ड छोटी-छोटी सुइयों की भाँति पानी को छेद रहा था। इतने में एक बड़ी रोहू मछली अपने सुन्दर परों को फैलाये हुए आई। कुछ देर इधर-उधर डुबकी लगाने के बाद उसने अपनी लाल आँख से सूखे हुए बादलों की ओर देखा और उसके मुँह से बुलबुलों का झरना निकल पड़ा, जो पानी के भीतर से सफ़ेद धुएँ की तरह दिखाई देता था।

अर्तामोनोव ने उस मछली की ओर उँगली उठाकर धमकाते हुए कहा—

"मैं तुम्हें जीना सिखाऊँगा!"

उसने पीछे मुड़कर देखा; उसकी धमकी निरर्थक सिद्ध हुई थी। नदी के अबाध, कलकल प्रवाह में उसका सारा क्रोध बह गया था। मटमैले, अलसाए वातावरण में न जाने कितने अप्रत्याशित विचार उमड़ आये, सबसे अधिक आश्चर्य तो इस बात का था कि उसका प्यारा बेटा, जिसके लिए वह पिछले बीस वर्षों से उत्सुक एवं चिन्तित रहा था, आज अचानक ही उसके जीवन को वेदनामय बनाकर छोड़ गया था। इन बीस वर्षों में अर्तामोनोव अपने एकलौते

पुत्र के उज्ज्वल भविष्य की सुखद कल्पनाओं में डूबा रहा था, उसे अपने बेटे से बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं।

"दियासलाई की तरह वह भभक उठा! पर क्यों?"

मटमैले आकाश पर एक धुँधली-सी लाली छा गई। एक कोने में किसी फटे पुराने कपड़े की आभा-सरीखी कोई रोशनी दिखाई दी। इतने में कटी फाँक के आकार का चाँद बादलों के बाहर झाँकने लगा। हवा में ठण्डक आ गई और नदी का पानी कुहरे से ढँक गया।

घर आकर प्योत्र ने देखा कि उसकी पत्नी नग्न होकर अपने बाएँ पैर की उँगलियों के नाखून काट रही है। पति की ओर देखते हुए उसने पूछा—

"तुमने इलिया को कहाँ भेज दिया?"

"जहन्नुम में" प्योत्र ने कपड़े उतारते हुए कहा।

"तुम हमेशा बिगड़े रहते हो।" नतालिया ने एक लम्बी ठंडी साँस ली। प्योत्र चुप रहा। वह जान-बूझकर लम्बी साँस लेकर निद्रा का उपक्रम कर रहा था। इतने में खिड़कियों के शीशों पर वर्षा की फुहार पड़ने लगी और सारे बाग़ीचे में हवा की सरसराहट फैल गई।

"इलिया मनमाना हो गया है। पढ़ाने का यही फल है।"

"उसके पल्ले बेवकूफ़ माँ जो पड़ी है।"

माँ ने नाक-भौं सिकोड़ी। फिर शरीर पर क्रॉस का निशान बनाती हुई वह बिस्तर में घुस गई। प्योत्र अभी कपड़े उतार रहा था। उसने पाशविक आनन्द से पत्नी को ताना मारा—

"तुम हो किस काम की? तुम्हारे बच्चे तुम्हारा आदर नहीं करते। तुमने उन्हें क्या सिखाया है? तुम्हें तो सिर्फ़ खाना और सोना आता है....अपना मुँह काला करना।"

पत्नी तकिये में भुनभुनाई—

"उसे स्कूल किसने भेजा था, मैंने तो तुम्हें लाख समझाया....।"

"चुप रहो!"

प्योत्र भी चुप हो गया। वह ध्यानपूर्वक चेरी की पत्तियों पर पड़ती वर्षा की निरन्तर गूँज को सुन रहा था। चेरी का यह वृक्ष निकिता ने अपने हाथों से

लगाया था।

"कुबड़ा भी मौज उड़ाता है। न बाल-बच्चे, न कारोबार की चिन्ता। मधुमक्खियों का शौकीन है। मैं मक्खियों में नहीं पड़ता जिसे शहद की ज़रूरत हो वह स्वयं ले ले।"

नतालिया ने करवट बदली, मानो वह बर्फ़ की सिल पर लेटी हो। पति के कन्धे पर अपना गर्म गाल छुआकर वह बोली—

"क्या इलिया से कोई कहा-सुनी हो गई थी?"

पहाड़ीवाली घटना की याद से प्योत्र झेंप उठा।

"तुम्हारी तो बच्चों से कहा-सुनी नहीं होती! तुम उन्हें उकसाती जो हो।"

"वह शहर भाग गया है।"

"लौट आयेगा। रोटी पेड़ों पर तो नहीं फलती। बिना पैसे के उसे ज़िन्दगी का स्वाद जल्दी मालूम हो जायेगा—डरो मत, वह लौट आयेगा। मुझे तंग मत करो, चुपचाप सो जाओ।"

कुछ देर ठहर कर वह बोला—

"याकोव की पढ़ाई आज से बन्द!" फिर कुछ क्षण रुककर—

"परसों मैं मेले में जा रहा हूँ। सुनती हो?"

"हाँ।"

"क्यों? आख़िर ऐसा क्यों?" प्योत्र झुँझला उठा। उसने आँखें मूँद लीं, लेकिन उसकी आँखों के सामने अब भी उस छोकरे का चेहरा नाच रहा था। चौड़ा माथा, चमकती हुई आँखें, जिन्होंने पिता के मन को चकाचौंध कर डाला था।

"उसने अपने पिता के साथ ऐसा बर्ताव किया जैसा कोई अपने भाड़े के नौकर को बर्ख़ास्त करते समय करता है। बदमाश कहीं का! मानो किसी भिख-मंगे को फटकार रहा हो।"

क्षणभर में ही यह घटना कैसे हो गई, प्योत्र को इसी बात पर आश्चर्य हो रहा था। ऐसा लगता था कि इलिया ने पहले से ही नाता तोड़ने का फ़ैसला कर लिया था। लेकिन उसने ऐसा क्यों किया? बेटे के कठोर भर्त्सना से भरे शब्दों की याद आते ही प्योत्र गहरे सोच में डूब गया।

"मिरोन ने उसे यह शिक्षा दी है। गलीज़ कुत्ता! और 'कारोबार से मानवता नष्ट हो जाती है' आदि बकवास तिखोन की है, मूर्ख! पागल! उसने विश्वास भी कैसे आदमी पर किया? वह स्कूल भी गया तो वहाँ से क्या सीख पाया? मज़दूरों के लिये उसके दिल में अगाध करुणा है, पिता के लिये उसका शतांश भी नहीं। आया है न्याय ओर धर्म का पुछल्ला बनकर!"

इस पर मानो उसके ज़ख्मों पर किसी ने नमक छिड़क दिया—

"नहीं! तुम इससे बच नहीं सकते।" उसे निकिता की याद आई जो इन सब बखेड़ों से बचकर स्वर्ग की-सी शान्ति के वातावरण में पलायन कर गया था।

"सब के सब मेरे कन्धों पर बोझ डालकर भाग जाते हैं।"

अचानक प्योत्र के मन में खलबली मची। इस बात में सचाई नहीं थी। अलेक्सी ने कारोबार कब छोड़ा था? उसे अपने पिता की तरह कारोबार से प्रेम था; वह लालची था, घोर लालची। और उसे दुनिया की सब वस्तुएँ प्राप्त थीं, बिना हाथ पैर डुलाये। प्योत्र को याद आया, एक दिन कारखाने में मज़दूर शराब पीकर दंगा करने लगे। उसने अलेक्सी से कहा था—

"मज़दूर बिगड़ रहे हैं।"

"सो तो दीख रहा है।" अलेक्सी ने हामी भरी।

"ये सब हर बात पर झुँझलाये रहते हैं। सबकी आँखों में एक-सा भाव झलकता है।"

अलेक्सी ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा—

"यह भी ठीक है। मुझे याद है, तुम्हारी शादी से लौटते समय रास्ते में जब पिताजी सिपाहियों से कुश्ती कर रहे थे, तो तिखोन के चेहरे पर वही भाव था, फिर वह स्वयं कुश्ती के लिये तैयार हो गया था। याद है?"

"तिखोन की बातें छोड़ो। वह तो पागल है।" फिर अलेक्सी गंभीर होकर बोलने लगा—

"मैंने अक्सर तुम्हें ऐसी बातें करते सुना है कि लोगों का चरित्र गिर रहा है, उनकी आदतें बुरी होती जा रही हैं। आखिर इन सब बातों से हमें क्या मतलब? इन बातों से मगज़पच्ची करने का काम तो पादरियों और अध्यापकों का है। हाँ, ठीक तो है। या अधिक से अधिक यह काम हर किस्म के डॉक्टरों

और सरकारी अफ़सरों का है। यह देखना उन्हीं का काम है कि लोगों की आदतें न बिगड़ें। उनके पास यही सामान बेचने को है, और तुम और हम उनके ख़रीदार हैं। समय के साथ दुनिया में हर चीज़ बिगड़ जाती है। उदाहरण के लिए तुम बूढ़े होते जा रहे हो और मैं भी। लेकिन तुम किसी नौजवान छोकरी से यह तो नहीं कहोगे कि वह मौज करना छोड़ दे, क्योंकि एक दिन उसकी जवानी ढल जायेगी।"

"यह आदमी कितना होशियार है।" बड़े भाई ने सोचा, "शैतान की तरह होशयार है।"

उसे अपने भाई के उत्साही स्वभाव और नये ढंग के व्यंग और विनोद से भरी वाक्पटुता से ईर्षा हुई। फिर उसे निकिता की याद आई। पिता की अन्तिम इच्छा थी कि निकिता उन सबकी आत्मा को सान्त्वना दे, लेकिन वह स्वयं एक स्त्री के मुख पर लट्टू होकर मूर्खतापूर्ण कार्य कर बैठा और फिर घर छोड़कर चला गया।

वर्षा की उस रात को प्योत्र अर्तामोनोव अपनी अनेक पुरानी स्मृतियों को उलटता-पुलटता रहा। उसकी कटु स्मृतियों में से जैसे धुँए की तरह उन विपरीत अनजाने विचारों का झुण्ड का झुण्ड उठकर उसके मन पर छा गया, जो मानो अँधेरे में रिमझिम करते हुए मेह के साथ कानाफूसी कर रहे हों और उसके आत्म-औचित्य के बीच बाधक बन रहे हों।

"पर मैंने कौन-सा बुरा काम किया है?" उसने इन विपरीत विचारों से पूछा और यद्यपि इसका उसे कोई उत्तर नहीं मिला, फिर भी उसे लगा, जैसे इसका उत्तर कहीं न कहीं मौजूद है। पौ फट रही थी, और उसने यकायक निश्चय किया कि वह मठ में जाकर अपने भाई से मिलेगा। वहाँ शायद एकाकी, सांसारिक प्रलोभनों और भयों से मुक्त आत्मा में उसको भी सान्त्वना और कोई मार्ग मिल जायगा।

"एक कोने में आसन जमा के पड़े रहना अधिक अच्छा है। ज़रा खुले में दौड़ लगाकर देखो! अचार को भंडार में रख दो तो कभी न सड़ेगा, लेकिन घाम में बड़ी जल्दी बिगड़ जायगा।"

उसने अपने भाई को वर्षों से न देखा था, और उनकी आख़िरी मुलाक़ात

उत्साहहीन शिष्टाचारी ढंग की थी। प्योत्र को लगा था कि उसके आने से कुबड़ा हड़बड़ी और संकोच में पड़ गया है। वह सकुच कर अपने अन्दर ही अन्दर हो बैठा था, जैसे घोंघा अपने खोल में घुस जाता है। किंचित खीझे स्वर में उसने बातें की थीं, भगवान् के बारे में नहीं, अपने या परिवार के बारे भी नहीं, बल्कि मठ की आवश्यकताओं के बारे में, यात्रियों के बारे में और लोगों की सामान्य ग़रीबी के बारे में। वह जैसे चेष्टा करके हिचकिचा-हिचकिचा करके बोल रहा था। प्योत्र ने जब उसे कुछ धन देना चाहा तो उसने शान्त उदासीनता से उत्तर दिया था—

"बड़े पादरी को दे दो। मुझे उसकी ज़रूरत नहीं।"

यह स्पष्ट था कि बड़े पादरी भिक्षु निकोदिम के परम भक्त थे। सब उसका मुँह जोहते रहते और यह भीमकाय, मोटी हड्डियोंवाला, एक कान से बहरा बड़ा पादरी गिरजाघर की पोशाक पहने जंगल के भूत जैसा दिखाई देता था। उसने प्योत्र के मुख की ओर अपनी काली आँखों से घूरते हुए अनावश्यक रूप से ऊँचे स्वर में कहा था—

"पादरी निकोदिम इस कुटिया की शोभा बढ़ाने को पधारे हैं।"

भिक्षुओं का यह मठ एक नीची-सी पहाड़ी पर देवदार के वृक्षों की घनी पाँत के बीच स्थित था। सन्ध्या की प्रार्थना के लिए बुलावा देनेवाली घण्टियों की मन्द टनटन ने अर्तामोनोव का स्वागत किया। द्वार खोलते समय एक लम्बे, अकड़े से दरबान ने, जिसके बाँस जैसे शरीर पर एक बच्चे जैसा छोटा-सा सिर था और मैली-सी टोपी लगी थी, हकलाते हुए पूछा—

"ह....ह....ह....वा....।"

फिर लम्बी साँस लेकर कहा—

"ग....त।"

मठ के ऊपर आकाश में एक भूरे बादल ने आधे आसमान को ढँक लिया था। ताँबे की घंटियों की टन-टन ध्वनि भी इस नीरस, सीले, नैराश्यपूर्ण वातावरण को दूर न कर पायी।

"ओह, यह बहुत भारी है।" प्योत्र ने अतिथि-गृह में आते ही कहा। वह एक सन्दूक में निकिता के लिये उपहार लाया था। तंग आकर उसने भारी

भरकम सन्दूक को वहीं पटक दिया।

प्योत्र थकावट से चकनाचूर और कीचड़ में लथपथ था, वह बाग़ीचे की ओर चल पड़ा, जहाँ सेब और चेरी के वृक्षों के झुरमुट के बीच उसके भाई की सफ़ेद कुटिया थी। उसे खेद हो रहा था कि वह यहाँ क्यों आया। मेले में जाना अधिक अच्छा था। जंगल की ऊबड़-खाबड़ पथरीली सड़क ने उसके नैराश्य-पूर्ण विचारों में गड़बड़ पैदा कर दी थी। उसे एक कड़वी वेदना का अनुभव हो रहा था। उसका मन शान्ति तथा विश्राम के लिये आकुल होने लगा।

"मुझे थोड़े से नाच-रंग की ज़रूरत है।"

प्योत्र ने देखा, उसका भाई नीबू के वृक्षों के झुरमुट में बैठा था और उसके आस-पास तीर्थयात्रियों का झुण्ड था। प्योत्र को एक परिचित चित्र की याद आई। झुण्ड में काली दाढ़ीवाला एक व्यापारी था, जिसने एक पाँव पर चिथड़े लपेटकर ऊपर रबर का जूता पहना था; एक मोटा-सा बूढ़ा जो देखने में हिजड़ा महाजन लगता था और पास ही में सिपाही का लबादा पहने एक नवयुवक बैठा था जिसके बाल लम्बे, गाल नुकीले और आँखें गिद्ध की-सी थीं। द्रियोमोव का तन्दूरवाला मुरज़िन, जो अव्वल दर्जे का पियक्कड़ और लड़ाका था, बाँस की तरह तनकर खड़ा फटे गले से कुछ बोल रहा था। ऐसा लगता था, जैसे कोई चोर न्यायाधीश के सामने खड़ा हो। वह कह रहा था—

"यह सच है। ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बहुत लम्बा है।"

निकिता का ध्यान उन लोगों की बातों में नहीं था। वह अपनी सफ़ेद छड़ी की नोक से सख़्त ज़मीन में कोई ख़ाका खींच रहा था। उसने भर्त्सना के स्वर में कहा—

"पतित व्यक्ति के लिये ईश्वर बहुत दूर हो जाता है—इसका कारण हमारे पापों की सड़ाँद है।"

"ख़ूब—अपने मन को सान्त्वना देना बुरा नहीं।" प्योत्र मन ही मन प्रसन्न हुआ।

"हमारे विश्वास की अर्थहीनता को ईश्वर जानता है। बिना व्यवहार के विश्वास से क्या लाभ? क्या हम अपने भाई-बन्धुओं की सहायता करते हैं? आपस में स्नेह है? हम प्रार्थना किसलिए करते हैं? छोटी-छोटी चीज़ों के लिये।

प्रार्थना तो करना ही चाहिए, पर....।"

कुबड़े ने आँखें ऊपर उठाईं। वह कुछ क्षण के लिए चुप रहा और भाई को ध्यान से देखने लगा। फिर धीमे से उसने अपनी छड़ी उठाई, मानो किसी पर प्रहार करना चाहता हो। वह लड़खड़ाकर उठा, उसने अपने शरीर पर क्रॉस का चिह्न बनाया और प्रार्थना करने के बजाय सिर्फ़ इतना ही कहा—

"लो!—मेरा भाई मुझे मिलने आया है।"

मोटे, गंजे बूढ़े ने मुड़कर प्योत्र की ओर देखा। उसकी ताम्रवर्ण की आँखों में दुष्टता कूट-कूटकर भरी थी। उसने भी अपने शरीर पर क्रॉस का चिह्न बनाया।

"शान्तिपूर्वक यहाँ से चले जाइये।" निकिता ने कहा।

चरागाह से खदेड़ कर भगाये पशुओं की तरह वे तितर-बितर होकर वहाँ से चल पड़े। बूढ़े ने घायल पाँव वाले व्यापारी की एक बाँह थामी। डबल रोटी बनानेवाले मुरज़िन ने उसकी दूसरी बाँह थामी।

"अच्छा, तो आपका आशीर्वाद।"

अपने काले लबादे में ढँकी लम्बी बाँह से जैसे पंख चलाकर पादरी निकोदिम ने उसके भाई के जुड़े हाथों को एक ओर हटा दिया। फिर ख़ुशी का कोई चिह्न प्रकट किए बिना ही वह शान्त भाव से बोला—

"मुझे तुम्हारे आने की आशा न थी।"

उसने अपने डंडे से अपनी कोठरी की ओर इशारा किया और फिर मार्ग दिखाता हुआ उधर चल पड़ा। वह जैसे झटके दे-देकर चल रहा था और अपनी टाँगों को फैला-फैलाकर रख रहा था। उसका एक हाथ हृदय से लगा था।

"तुम अब बूढ़े हो चले।" प्योत्र ने संकोचपूर्वक कहा।

"हमारे भाग्य में यही लिखा है। मेरी टाँगों में दर्द रहता है। यहाँ सीलन है।"

लगता था निकिता पहले से भी अधिक कुबड़ा हो गया है। उसका दाहिना कंधा और उसके कूबड़ का कोण और ऊपर को उठ गया था जिससे उसकी कमर पृथ्वी की ओर और भी अधिक झुक गई थी और वह पहले से क़द में अधिक छोटा और चौड़ा दीखता था। वह एक सिरकटे मकड़े जैसा नज़र आता था, जो अंध भाव से टेढ़ा हो-होकर मार्ग की करकर करती रेत पर रेंग रहा हो।

साफ़-सुथरी, पर तंग कोठरी में बैठा निकोदिम अपेक्षाकृत बड़ा और भयानक लग रहा था। उसने सिर पर से टोपी सरकाई तो उसकी चमचमाती हुई गंजी खोपड़ी दिखाई दी। उसके कानों के पीछे सफ़ेद बालों की जटायें लटक रही थीं। उसका रंग हाथी-दाँत का-सा पीला था और शरीर पर गोश्त का नामो-निशान न था। आँखें बुझी हुई थीं। ऐसा लगता था मानो उसकी दृष्टि उसकी बड़ी चपटी नाक पर जमी है। नीचे दो गहरी लकीरों की तरह होंठ अस्पष्ट स्वर में फड़क रहे थे। उसका मुँह पहले की अपेक्षा अधिक बड़ा लगता था—चेहरे को दो हिस्सों में बाँटनेवाला गढ़ा-सा। उसकी सफ़ेद मूछें तो विशेष रूप से भद्दी थीं।

भिक्षु ने धीमी आवाज़ में अपने गोल-मटोल चेहरेवाले सहकारी को आदेश दिया। ऐसा लगता था मानो वह कोई बात याद कर रहा हो।

"समावार, रोटी और शहद।"

"आप कितना धीमा बोलते हैं!"

"मेरे दाँत टूट गये हैं।"

भिक्षु एक सफ़ेद आराम-कुर्सी सरकारकर मेज़ के सामने बैठ गया।

"कैसे हो?"

"अच्छा ही हूँ।"

"तिखोन अब भी ज़िन्दा है?"

"बिल्कुल—उसे हो भी क्या सकता है?"

"बहुत दिन से वह मुझसे मिलने नहीं आया।"

दोनों चुप थे। निकिता कुछ हिला। उसके चोगे से सर-सर की आवाज आयी। उसकी मेढक जैसी आवाज़ को सुनकर प्योत्र और भी अशान्त हो उठा।

"मैं तुम्हारे लिए कुछ चीज़ें लाया हूँ। सन्दूक़ यहाँ मँगवा लो। थोड़ी शराब भी है। यहाँ शराब पीने की इजाज़त है?"

एक ठंडी साँस लेकर भाई ने उत्तर दिया—

"ऐसी मनाही भी नहीं। भीड़भाड़ में कुछ शराबी भी यहाँ आ धमकते हैं। क्या करें। दुनिया की हवा में ज़हर है। लेकिन हर किसी को साँस लेनी पड़ती है। भिक्षु भी आख़िर मनुष्य हैं।"

"मैंने सुना है—बहुत से लोग तुम्हारे दर्शनों के लिए आते हैं।"

"हाँ—क्योंकि वे मूर्ख हैं। इधर-उधर मटरगश्ती करते हैं। वे चाहते हैं कि कोई महात्मा उन्हें जीना सिखाए। वे अबतक जैसे-तैसे ज़िन्दा रहते आये हैं। अब ज़िन्दगी बर्दाश्त नहीं होती।"

इन शब्दों को सुनकर प्योत्र की बेचैनी और अधिक बढ़ गई। उसने शिकायत के स्वर में कहा—

"मूर्खता—उन लोगों ने गुलामी बर्दाश्त की, पर आज़ादी नहीं बर्दाश्त कर सकते। इन लोगों को तो कड़ा शासन चाहिए।"

निकिता चुप रहा।

"ज़मीन्दारों के समय में लोग मटरगश्ती में समय नष्ट नहीं करते थे।"

कुबड़े ने प्योत्र की ओर देखा और आँखें नीची कर लीं।

दोनों ओर से ताने, फबतियाँ चलती रहीं। इतने में गंजा सहकारी, समावार, नीबू मिश्रित सुगन्धित शहद, और ताज़ी गर्म रोटी लेकर आ गया। दोनों भाई चुपचाप बैठे उसकी फूहड़ हरकतों को देखते रहे। उसने सन्दूक़ का ढक्कन खोलकर अन्दर झाँका। प्योत्र ने मेज़ पर ताज़ी नमकीन तली मछलियों का डिब्बा और दो बोतलें रख दीं।

'पोर्ट' निकिता ने बोतल पर चिपके लेबल को पढ़कर कहा—"छोटे पादरी को यह शराब बहुत पसन्द है। होशियार आदमी है, बहुत-सी बातें समझता है।"

"भई! मेरे जैसे लोग तो बुद्धू होते हैं।" प्योत्र ने तनकर स्वीकार किया।

"जो बातें तुम्हें समझनी चाहिएँ वे तुम समझते हो। ज़्यादा समझने से क्या लाभ? जितना समझना चाहिये उससे ज़्यादा समझना बुरा है।"

भिक्षु ने ठंडी साँस ली। प्योत्र उसके शब्दों में छिपी कटुता का अनुभव कर रहा था। रोशनी के झुटपुटे में उसका चोग़ा चमक रहा था। कोठरी के एक कोने में लगी मूर्तियों के पास एक छोटी-सी मोमबत्ती जल रही थी। मेज़ पर पीली चिमनीवाला सस्ता-सा लैम्प टिमटिमा रहा था। भाई के मडीरा (स्पेन की शराब) पीने के लालची ढंग को देखकर प्योत्र ने मन ही मन सोचा—

"शराबों का कैसा पारखी है।"

हर गिलास के बाद निकिता अपनी सूखी उँगलियों से रोटी का एक टुकड़ा

तोड़कर शहद में डुबोकर अहिस्ता-अहिस्ता खाता। खाने के समय उसकी छोटी सफ़ेद दाढ़ी हिलती। अभी तक उसे नशा नहीं चढ़ा था, लेकिन उसकी मटमैली आँखें सजीव हो उठी थीं। प्योत्र भाई की अपेक्षा थोड़ी शराब पी रहा था, उसने सोचा—

"यह नतालिया की बात क्यों नहीं करता? पिछली बार भी चुप था। इसे शरम लगती होगी, तभी तो किसी के बारे में कोई सवाल नहीं किया। हम तो सांसारिक लोग हैं। यह सन्त ठहरा। लोग इसके दर्शन करने आते हैं।"

उसने क्रोध से अपना सिर हिलाया और उसकी दाढ़ी वास्कट में रगड़ गई। कान की लौर को मलते हुए प्योत्र ने कहा—

"तुम अच्छी जगह आ छिपे हो। बुद्धिमानी का काम किया है।"

"पहले तो अच्छा था। अब इन यात्रियों के मारे मुसीबत है। रोज़ नये स्वागत....।"

"स्वागत!" प्योत्र हँसा। "लगता है जैसे कोई दाँतों की दूकान हो।"

"मैं कहीं दूर जाना चाहता हूँ।" भिक्षु ने ध्यानपूर्वक शराब उँडेलते हुए कहा।

"जहाँ तुम्हें अधिक मानसिक शक्ति मिले।" प्योत्र ने हँसकर कहा। निकिता चुपचाप शराब के घूँट भरता रहा। उसने अपनी काली जीभ ओठों पर फेरी और गंजे सिर को हिलाकर कहा—

"अधिकाधिक लोग मन की शान्ति खो रहे हैं। तुम उनकी बढ़ती संख्या देख सकते हो। लोग चिन्ताओं से भागकर छिपना चाहते हैं।

"मुझे तो नहीं दिखाई पड़ता।" प्योत्र ने खीझकर कहा। वह मन ही मन जानता था कि वह झूठ बोल रहा है। "तुम ही छिपा रहे हो।" वह कहना चाहता था।

"और चिन्ताएँ परछाईं की तरह उनके पीछे लगी रहती हैं।"

भाई को झिड़कने के लिए प्योत्र के ओंठ फड़क उठे। वह ग़ुस्से में आकर निकिता को जी भरकर कोसना चाहता था। बेटे की याद ने उसके शब्दों को और कड़ुवा बना दिया।

"लोग अपने आप चिन्ताओं को खोजते-फिरते हैं। मुसीबतें उनकी इच्छा

से आती हैं। चुपचाप अपना काम करो, अधिक बकबक मत करो तो जीवन में शान्ति ही शान्ति है।"

पर निकिता अपने विचारों में डूबा था। उसने प्योत्र की किसी बात पर ध्यान न दिया। अचानक उसका नुकीला चेहरा हिला, मानो गहरी नींद से उठा हो। उसके चोगे की सिलवटें लहरों की तरह हिलने लगीं। उसके ओंठ कड़वाहट से टेढ़े हो रहे थे।

"वे यहाँ उपदेश लेने आते हैं। मैं क्या जानता हूँ ? उन्हें क्या सिखा सकता हूँ ? मेरे पास बुद्धि नहीं। छोटे पादरी ने यह सारा बखेड़ा खड़ा किया है। मैं कुछ नहीं जानता। एक निर्दोष क़ैदी की तरह मुझे लोगों को उपदेश देने की सज़ा सुनाई गई है। किस जुर्म में ?"

"यह संकेत कर रहा है—शिकायत करना चाहता है।" प्योत्र ने सोचा।

वह जानता था कि निकिता को भाग्य के विरुद्ध उचित शिकायत है। उसे पिछली बार भी यही आशा थी। उसने कान की लौर को सहलाते हुए गम्भीर स्वर में कहा—

"भाग्य के विरुद्ध बहुत से लोगों को शिकायत है। लेकिन उससे क्या फ़ायदा ?"

"सच है। शान्ति बड़ी मुश्किल से मिलती है।" कुबड़े की आँखें कोने की ओर घूम गयीं, जहाँ मूर्तियों के नीचे प्रकाश हो रहा था।

"तुम्हारे बारे में पिता की इच्छा थी—ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दें—कि तुम हमें सान्त्वना देनेवाले बनो।"

निकिता के ओठों पर एक विद्रूप भरी मुस्कान खेल उठी। उसने अपनी दाढ़ी को मरोड़कर मुस्कान छिपा ली। अन्धेरे में कहे जानेवाले शब्दों से प्योत्र को ठेस पहुँची और उसकी उद्विग्नता बढ़ गई। उसे आनेवाली विपत्ति का आभास होने लगा।

"यहाँ लोग इस बात का भरसक प्रयत्न करते हैं कि मैं अपने आपको बुद्धिमान् समझूँ और दुनिया को भी यही दिखाऊँ। यात्रियों को इकट्ठा करना मठ के लाभ के लिए है। लेकिन मेरा काम तो बड़ा कठिन है। मैं कैसे सान्त्वना दूँ ! बताओ भला ! मैं कहता हूँ, दुःखों को सहन करो। लेकिन देखता हूँ कि

लोग सहते-सहते तंग आ चुके हैं। मैं कहता हूँ आशा पर जीवित रहो—किस बात की आशा पर? ईश्वर की? इससे उन्हें कोई सान्त्वना नहीं मिलती। यहाँ एक तन्दूरवाला अक्सर आता है।"

"अरे हाँ—मुरज़िन, वह हमारे शहर का रहनेवाला है। भारी पियक्कड़ है।" प्योत्र ने मानो किसी अज्ञात भावना से पिण्ड छुड़ाते हुए कहा।

"वह ऐसी जगह पहुँच चुका है, जहाँ से वह ईश्वर को परखने का दम भरता है। ईश्वर उसके लिए सर्वशक्तिमान नहीं रहा—आजकल के लोग बेहया और बकवासी हैं। एक और आदमी है, जिसके दाढ़ी नहीं है। तुमने उसे देखा? उसे सारी दुनिया से दुश्मनी है। ईर्ष्यालु कहीं का। ऐसे लोग आकर मेरा मग़ज़ चाटते हैं। मैं उन्हें क्या बताऊँ? वे मेरी मानसिक शान्ति नष्ट करने के लिए आते हैं।"

भिक्षु की आवाज़ तेज़ होती जा रही थी। प्योत्र को ख़्याल आया कि निकिता पहले की तरह आँखें नीची नहीं रखता। पिछली बार कुबड़े की अपराधी भावना को देखकर प्योत्र के मन को अपार सन्तोष मिला था—अपराधियों को शिकायत करने का अधिकार नहीं। लेकिन आज निकिता शिकायत कर रहा है, मानो उसके साथ भारी अन्याय किया गया हो। प्योत्र को डर था, कहीं उसका भाई यह न कह बैठे—

"यह सारी करतूत तुम्हारी है।"

घड़ी को चेन से खोलते हुए वह आत्मरक्षा के लिए शब्द तलाश करने लगा।

"हाँ।" कुबड़े को अपनी शिकायत की बातों में बड़ा आनन्द मिल रहा था। "लोग दिन-प्रतिदिन क़ाबू से बाहर होते जा रहे हैं। उनके दिमाग़ों में अजब फ़ितूर भर गया है। कुछ दिन की बात है कि एक विद्यार्थी कुछ दिनों हमारे साथ रहा। किशोरावस्था में ही उसका दिमाग़ फिर गया था। मठाधीश का आदेश था, "इसे शक्ति प्रदान करो। अपने सरल ढंग से उसे यह बात समझाओ, वह बात समझाओ" आदि। लेकिन मेरी स्मरणशक्ति भी ऐसी नहीं कि मैं लोगों की सब बातें याद रख सकूँ। उस विद्यार्थी ने मेरी नाक में दम कर दिया। हर वक़्त बोलता रहता था। विचारों तक पहुँचना तो दूर रहा, मुझे

उसके शब्दों का अर्थ भी समझ में न आता था। वह कहता था, "यह विचार ग़लत है कि शैतान हमारी इन्द्रियों का स्वामी है—इसका मतलब है कि हम दो प्रभुओं की पूजा करते हैं—बाईबल में लिखा है—"अमरत्व के झरने से ईसा का शरीर स्वीकार करो।" कैसा कुफ़ बकता था, एक बार कहने लगा, "मुझे एक ईश्वर चाहिए, चाहे वह सींगोंवाला ही क्यों न हो, वरना ज़िन्दगी काटनी दूभर है।" वह रोज़ मुझे तंग करता था। मैं पादरी फ्योदोर का आदेश तो भूल गया और उसे डाँटा, "तुम्हारी नस-नस में परिवर्तन भरा है और तुम्हारी आत्मा के अणु-अणु में विनाश समाया है।" बाद में मठाधीश ने मुझे डाँटा, "तुम्हें हो क्या गया है—कैसी नास्तिक बकवास तुमने की? इसमें कोई शक नहीं।"

प्योत्र को सारी बात निरर्थक लगी, लेकिन भाई की दुर्गति का हाल सुनकर उसे सान्त्वना मिली।

"ईश्वर की बातें करना कठिन है।" वह बुदबुदाया।

"सचमुच बहुत कठिन है।" भिक्षु निकोदिम ने समर्थन किया और तीखे व्यंग से कहा, "याद है पिता क्या कहते थे? हम सीधे-सादे श्रमजीवी हैं। लम्बी-चौड़ी बातें हमारी बुद्धि से परे हैं।"

"हाँ, याद है।"

"पादरी फ्योदोर का आदेश है—पुस्तकें पढ़ो। लेकिन दूर जंगलों में सरसराती वायु को देखना भी उतना ही अच्छा है। आज की दुनिया में पुस्तकों का कोई स्थान नहीं। आज की समस्याओं का उत्तर देने में पुस्तकें असमर्थ हैं। चारों ओर कट्टरपन्थियों का बोलबाला है। लोग इस तरह बात करते हैं जैसे सुबह होने पर शराबी रात में देखे सपनों का हाल सुनाते हैं। उस मुरज़िन को ही देखो....।"

भिक्षु ने शराब का एक घूँट पीकर रोटी का टुकड़ा चबाया। उसने रोटी का कौर तोड़कर एक गोला बनाया और मेज़ पर रखकर लुढ़काने और बात करने लगा।

"पादरी फ्योदोर का कहना है कि मन ही सारे झगड़ों की जड़ है। मन एक कमीने, लालची कुत्ते की तरह है। शैतान उसे भड़काता है और कुत्ता अकारण ही भूँकने लगता है। यह बात शायद सच हो। लेकिन यहाँ एक

डाक्टर रहता है—बड़ा ही सीधा-सादा और हँसमुख। उसका विचार है कि मन एक बच्चे की तरह है जो हर खिलौने को देखकर मचल उठता है। बच्चा इस बात को जानने के लिए उत्सुक रहता है कि चीज़ें कैसे बनती हैं, उनके अन्दर क्या है, और इसी में वह चीज़ें तोड़-फोड़ देता है....।"

"मैं सोचता हूँ कि यह बातें बड़ी ख़तरनाक हैं।" प्योत्र ने अपनी राय दी। निकिता की बातें तीर की तरह उसके दिल में चुभ रही थीं। उसको ठेस पहुँचा रही थीं। उसके हर शब्द में अप्रत्याशित संकट और अप्रिय संकेत थे। उसके मन में फिर उठा कि वह निकिता को पीसकर रख दे, उसका अपमान करे।

"शायद अधिक शराब पी गया है।" उसने अपने मन को स्थिर करने के लिये सोचा।

कोठरी में दम घुट रहा था। समावार के कोयलों तथा टिमटिमाते लैम्प में से खटास भरी दुर्गन्धि फैल रही थी। उनसे प्योत्र का मन भारी हो गया। लोहे के बेलबूटों के समान किसी पौधे के पत्ते खिड़की में से निश्चल झाँक रहे थे। उसका भाई मकड़े की तरह धैर्यपूर्वक शब्दों का नरम ताना-बाना बुनता जा रहा था।

"वैसे तो सभी विचार ख़तरनाक होते हैं, विशेष कर सीधे-सादे विचार; तिखोन को ही देखो।"

"वह आधा पागल है।"

"नहीं, उसकी बुद्धि सही-सलामत है। बड़े कठोर स्वभाव का आदमी है। पहले-पहल मुझे उससे बात करने में डर लगता था। लेकिन पिता की मृत्यु के बाद तिखोन ने मुझे जीत लिया। तुम पिता को मेरे जितना प्यार नहीं करते थे। तुम्हें और अलेक्सी को पिता की मृत्यु पर इतना दुःख भी न हुआ था। लेकिन तिखोन बहुत दुखी हुआ था। मुझे उस दिन पादरिन की मूर्खता पर उतना क्रोध नहीं आया था जितना ईश्वर पर। तिखोन इस बात को भाँप गया। उसने कहा, 'ठीक है। मच्छर जीते हैं और आदमी....'।"

"तुम्हारा तो सिर फिर गया है। तुमने बहुत शराब पी ली है। किस पादरिन की बातें कर रहे हो?"

लेकिन निकिता अपनी बात कहता ही रहा।

"तिखोन का कहना है कि यदि ईश्वर ही संसार का मालिक है तो वह ठीक समय पर पानी क्यों नहीं बरसाता ? जंगलों पर गाज क्यों गिरती है ? मानवजाति को मर्त्य बनाने के लिये क़ाबील ने पाप क्यों किया ? ईश्वर को विकृत अंगवालों से प्रेम क्यों है ? उदाहरण के लिये उसे कुबड़ों की क्या ज़रूरत है ?"

"ओहो ! तो यह बात है !" प्योत्र मन ही मन मुस्करा दिया। भिक्षु को परिवार के लोगों से कोई शिकायत नहीं है, वह तो ईश्वर को ही कोस रहा है !

"क़ाबील ने क्या किया—यह मैं नहीं जानता। लेकिन तिखोन ने मेरा मन जीत लिया। पिता की मृत्यु से लेकर सन्यास की प्रतिज्ञा लेने के बाद तक भी तिखोन के विचार मेरे मन में चक्कर काटते रहे।"

"पहले तो तुम कभी ऐसी बातें नहीं करते थे।"

"बहुत सी बातें पहले से नहीं की जातीं। मैं शायद जीवन भर चुप रहता लेकिन यात्रियों ने आकर मेरी आत्मा में अशान्ति पैदा कर दी। मान लो उपदेश देते समय तिखोन के शब्द उमड़ पड़ें, तो ? तुम चाहे जो कहो, पर है वह बुद्धिमान आदमी, यद्यपि शायद मैं भी उसे पसन्द नहीं करता। वह तुम्हारे बारे में भी बातें करता है। उसका कहना है कि तुमने जीवनभर अपने बच्चों के लिये परिश्रम किया है, लेकिन तुम्हारे बच्चे तुम्हारे ही लिये अजनबी के समान हैं।"

"क्या ख़ुराफ़ात बक रहे हो ? उसे क्या पता ?" प्योत्र ने ग़ुस्से से पूछा।

"उसे सब मालूम है। उसका कहना है कि व्यापार एक मज़ाक़ है।"

"मैंने भी उसकी बातें सुनी हैं। उसे बर्ख़ास्त कर देना चाहिए। मुसीबत तो यह है कि उस कम्बख़्त को हमारे परिवार के बारे में सब मालूम है।"

प्योत्र ने यह बात निकिता को उस अभागी रात की याद दिलाने के लिये जान-बूझकर कही थी, ताकि उसे अपनी आत्महत्या का स्मरण हो आये, लेकिन प्योत्र स्वयं निकोनोव के छोकरे की बात सोचने लगा था।

निकिता ने संकेत नहीं पहचाना। उसने शराब का एक घूँट पीकर ओंठ चाटते हुए कहा—

"कभी किसी ने तिखोन के मन को चोट पहुँचाई थी। तभी से वह एक दिवालिये की तरह सबसे अलग रहता है।"

"इस प्रसंग को बदलना ज़रूरी है।" यह सोचकर प्योत्र ने कहा—

"अच्छा, तो इस सारी बहस से नतीजा क्या निकला? क्या ईश्वर पर तुम्हारा विश्वास उठ गया है?" प्योत्र ने जान-बूझकर अपने स्वर में कटुता लाने की चेष्टा की थी, किन्तु न जाने क्यों वह इसमें सफल न हो सका।

"आजकल ईश्वर में कौन विश्वास रखता है, कौन नहीं, यह बताना कठिन है।" निकिता ने कुछ क्षण रुककर उत्तर दिया। "सभी लोग सोचने में व्यस्त रहते हैं। विश्वास कहीं दिखाई नहीं देता। विश्वास हो तो सोचने की ज़रूरत नहीं होती। सींगोंवाले ईश्वर की चर्चा करनेवाला विद्यार्थी.... ।"

"बस भी करो।" प्योत्र ने सिर घुमाकर भाई की ओर कनखियों से देखते हुए कहा। "यह सारी बातें निठल्लेपन का सबूत हैं। लोगों को लोहे के से मज़बूत जूए में जोतने की ज़रूरत है।"

"नहीं। तुम एक साथ दो बातों में विश्वास कैसे कर सकते हो?" भिक्षु निकोदिम ने ज़ोर देकर कहा।

इतने में घंटे की आवाज़ सुनाई दी। उसकी नपी-तुली ध्वनियाँ रह-रहकर खिड़की के धुँधले शीशे से टकराती थीं। प्योत्र ने पूछा—

"तुम प्रार्थना के लिये जा रहे हो?"

"नहीं। मेरे पैरों में दर्द होता है, मैं खड़ा नहीं रह सकता।"

"तुम हमारे लिये प्रार्थना करते हो?"

निकिता चुप रहा।

"अच्छा, चलने में मैं बहुत थक गया हूँ। चलूँ सो रहूँ।"

निकिता फिर चुप रहा। कुर्सी के हत्थे के सहारे उसने अपने टेढ़े-मेढ़े शरीर को उठाया और आवाज़ दी—

"मित्या! ओ मित्या!"

फिर कुर्सी पर बैठते हुए उसने याचना भरे स्वर में कहा, "मुझसे भूल हो गई। मेरा नौकर अतिथि-गृह में सोने के लिये चला गया है। मैं दिल खोलकर बातें करना चाहता था, इसलिये उसे वहाँ भेज दिया। यहाँ सब चुग़लख़ोर हैं।"

फिर अनावश्यक रूप से लम्बे ढंग से उसने अतिथि गृह का मार्ग समझाया। बाहर शीत वर्षा हो रही थी। प्योत्र ने सोचा—

"वह नहीं चाहता था कि मैं उठकर आऊँ। उसकी तबियत बातें करने की थी।"

अचानक प्योत्र के मन का चिरपरिचित भय जाग उठा। उसे लगा कि वह एक गहरी खड के किनारे चल रहा है और किसी भी क्षण गिरकर चकनाचूर हो सकता है। उसके क़दम तेज़ी से उठ रहे थे। वर्षा ने रात्रि के अंधकार को और भी भयानक बना दिया था। प्योत्र की आँखें अतिथि-गृह की खिड़की से आती हुई रोशनी के धुँधले चिह्न पर लगी हुई थीं।

"नहीं।" उसने लड़खड़ाते-हुए जल्दी से सोचा, "यह स्थान मेरे जैसों के लिए नहीं है। मैं कल यहाँ से चल पड़ूँगा। यह स्थान मेरे जैसों के लिए नहीं है। आख़िर, बिगड़ा क्या है? इलिया लौट तो आयेगा ही। मुझे ज़िन्दगी पर अपनी पकड़ मज़बूत रखनी चाहिए। अलेक्सी को देखो, कैसे उत्साह से आगे बढ़ता जाता है। किसी दिन वह ज़रूर मुझे धक्का देकर अलग कर देगा।"

निकिता और तिखोन को मन से हटाने के लिए ज़बरदस्ती अलेक्सी की बात सोची गयी थी। लेकिन अतिथि-गृह की कठोर खाट पर लेटते ही प्योत्र के मन को भिक्षु और तिखोन ने फिर आ घेरा। "यह तिखोन भी कैसा व्यक्ति है? आस-पास की कोई चीज़ उसकी छाया से अछूती नहीं। इलिया की बाल-सुलभ बातों में उसके शब्दो की गूँज मिलती है और निकिता पर तो मानो उसने जादू कर रखा है।"

"सान्त्वना देनेवाला!" उसने निकिता के विषय में सोचा, सीधा-सादा बढ़ई सेराफ़ीम जानता है कि सान्त्वना कैसे दी जाती है।"

उसे नींद नहीं आई। मच्छर काट रहे थे। पास के कमरे से बातचीत की आवाज़ आ रही थी। प्योत्र को लगा कि तन्दूरवाला मुरज़िन, लँगड़ा व्यापारी और हिजड़ा दिखाई देनेवाला आदमी––ये तीनों बातें कर रहे हैं।

"ज़रूर ही सबके सब पी रहे हैं!"

थोड़ी-थोड़ी देर के बाद मठ का जमादार लोहे का टुकड़ा बजाता। फिर अचानक प्रातःकाल की प्रार्थना के लिए घंटियाँ बज उठीं। वे बज ही रही थीं कि प्योत्र को नींद आ गई।

सबेरे उसने देखा कि उसका भाई सामने खड़ा है। ठीक वैसा ही जैसा प्योत्र ने उसे उस दिन बग़ीचे में देखा था। आँखों में वही शत्रुता का भाव

अब भी झलक रहा था। प्योत्र ने जल्दी हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदले और निकिता के सहायक को पड़ोस के घोड़े बदलने की जगह तक जाने के लिए घोड़ा लाने का आदेश दिया।

"इतनी जल्दी क्यों?" भिक्षु ने विशेष आश्चर्य प्रकट किए बिना ही पूछा। "मैं तो सोचता था कि तुम अभी कुछ देर यहाँ ठहरोगे।"

"बहुत-सा ज़रूरी काम निबटाना है।"

वे चाय पीने बैठ गये। बड़ी देर तक प्योत्र को अपने भाई से कहने के लिये कुछ न सूझा। अन्त में याद आने पर वह बोला—

"तो तुम इस मठ को छोड़ देने की सोच रहे हो?"

"मेरी तो इच्छा है। पर ये लोग मुझे नहीं जाने देते।"

"उन्हें क्या मतलब है?"

"मेरे रहने से उन्हें आर्थिक लाभ होता है।" मैं उनके लिये काफ़ी उपयोगी हूँ।"

"अच्छा, यह बात है। वैसे तुम जाना कहाँ चाहते हो?"

"शायद मैं घूमता ही फिरूँ।"

"अपनी बीमार टाँगों से?"

"जिनके टाँगें नहीं होतीं, वे भी तो किसी न किसी तरह घूमते-फिरते हैं।"

"हाँ, घूमते तो हैं।" प्योत्र ने स्वीकार किया।

कुछ देर तक शान्ति रही। फिर निकिता बोला—

"तिखोन को मेरा स्नेह देना।"

"और किसे?"

"हर किसी को।"

"ज़रूर कह दूँगा; लेकिन तुमने यह नहीं पूछा कि अलेक्सी कैसा है?"

"इसमें पूछने की बात ही क्या है? मुझे मालूम है कि उसे ज़िन्दगी बसर करना खूब आता है। मैं शायद जल्दी ही यहाँ से चलता बनूँ।"

"सरदियों में तो तुम कहीं नहीं जा सकोगे।"

"क्यों नहीं। लोग सरदियों में भी तो आते-जाते हैं।"

"हाँ, हाँ, सो तो ठीक है।" प्योत्र ने पुनः स्वीकार किया। उसने अपने

भाई को कुछ रुपये देने चाहे।

"अच्छी बात है। इससे आटे की चक्की की मरम्मत हो जायगी। क्या मठाधीश से मिलकर न जाओगे?"

"नहीं, अब समय नहीं है। घोड़ा खड़ा है।"

विदा होते समय दोनों भाई गले मिले। निकिता को गले लगाना असुविधा का काम था। उसने अपने भाई को दुआ नहीं दी। उसका दाहिना हाथ लबादे की आस्तीन में फँस गया था और प्योत्र को लगा कि जैसे यह जान-बूझकर किया गया था। उसका कूबड़ प्योत्र के पेट से लग रहा था। निकिता ने निर्विकार भाव से याचना की—

"कल मेरे मुँह से अगर कोई ऐसी बात निकल गई हो, जो नहीं कहनी चाहिए, तो क्षमा करना।"

"भूल भी जाओ। हम दोनों भाई हैं।"

"तुम रात-रात भर सोचते रहते हो, रात रात भर....।"

"हाँ, हाँ। अच्छा, नमस्कार।"

मठ के फाटक से बाहर निकलकर प्योत्र ने एक बार पीछे मुड़कर देखा। अतिथि-गृह की दीवार के सामने उसके भाई की आकृति एक शिलाखण्ड की तरह अंकित थी।

"नमस्कार।" वह बुदबुदाया और उसने अपनी टोपी उतार ली। उसका नंगा सिर क्षण भर में ही मेह की फुहारों से भीग गया। सड़क देवदार के जंगल के बीच से जाती थी। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। केवल देवदार की नुकीली पत्तियाँ ही वर्षा की बूँदों से बज उठती थीं। कोचवान की सीट पर एक भिक्षु बैठा ऊपर-नीचे हलकोरे खा रहा था। घोड़ा बादामी रंग का था, जिसके कानों पर बाल न थे।

"लोगों को बातें करने के लिए क्या-क्या मसाला नहीं मिल जाता।" प्योत्र सोच रहा था। "भगवान् ग़लत समय पर मेह बरसाता है। यह सब बातें मन में भरे द्वेष और ईर्षा और शरीर की विकृति के कारण दिमाग़ में चक्कर काटती हैं। यह निष्क्रिय और चिन्तारहित जीवन का फल है। चिन्ताओं के बिना एक आदमी की ज़िन्दगी-स्वामीहीन कुत्ते के समान होती है।"

ठंड से काँपते हुए प्योत्र ने पीछे मुड़कर देखा। यह वर्षा तो उसे लगा कि असमय ही हो रही है। उसके अवसाद-भरे विचारों ने उसे पुनः जैसे घने बादलों के बीच ढँक लिया। उनसे पिण्ड छुड़ाने के लिए वह हर घोड़े बदलने की जगह पर वोद्का शराब पीता गया।

सन्ध्या के समय जब धुंध में लिपटा नगर दिखाई देने लगा, तब फक-फक करती हुई रेलगाड़ी सड़क को बीच से काटती हुई जा रही थी। इञ्जन ने सीटी दी, एक फूत्कार के साथ भाप उगली और खोह के अर्द्ध वृत्ताकार मुख में घुसकर एक क्षण में ही पृथ्वी के गर्भ में अन्तर्धान हो गया।

३

मेले में बिताये उच्छृङ्खल दिनों की याद करते ही प्योत्र के हृदय में रीढ़ को झनझना देनेवाले विमूढ़ भय का अनुभव हुआ। उसे विश्वास ही न आया कि स्मृति ने जिन घटनाओं को पुनः ताज़ा कर दिया है, वे सचमुच हुई भी थीं कि पागलों की तरह उन्मत्त अन्य औरतों और मर्दों की तरह वह भी पत्थर की विशाल नाँद के गिर्द होनेवाले शोर-ग़ुल, आह्लादपूर्ण संगीत, चीख़-पुकार और गायन में मदिरा के उन्माद और आत्म-पीड़ा से भरी हृदयविदारक करुण चीत्कारों के साथ सम्मिलित हुआ था। इन सब लोगों को फ्रॉक-कोट और टोप पहने, घुँघराले बालोंवाले एक भीमकाय आदमी ने, जिसके सफ़ाचट हजामत किये नीले मुख पर उल्लू-जैसी गोल आँखें बाहर को निकली पड़ती थीं, उत्तेजित और प्रेरित कर दिया था। वह आदमी अपने ओंठ चाटते हुए अर्तामोनोव को भुजाओं में बाँधकर चिल्लाया था—

"अरे मूर्ख, ख़ामोश रह! रूस का बपतिस्मा, समझे? वोल्गा और ओका के तट पर होनेवाला रूस का वार्षिक बपतिस्मा!"

उसकी मुखाकृति एक बावर्ची-जैसी थी और वह उन मशाल लिए लोगों की-सी पोशाक पहने था, जिन्हें धना लोग क़ब्रिस्तान तक जनाज़े के साथ चलने के लिए भाड़े पर बुलाया करते हैं। इस व्यक्ति से कुश्ती लड़ने की स्मृति प्योत्र के अन्दर धुँधली हो गई थी। कुश्ती के बाद दोनों ने आइसक्रीम मिलाकर

कोन्यक शराब पी थी और इस आदमी ने ज़ोरों से सुबककर कहा था—

"रूसी आत्मा की चीत्कार सुनते हो! मेरा बाप पादरी था और मैं एक लफंगा हूँ।"

उसका गहन स्वर स्फीत किन्तु मधुर था। उसने एक अद्भुत शब्दावली की झड़ी लगाकर सब पर सम्मोहन-सा कर दिया था और उसके शब्द आत्मा को विचलित कर अपने बस में कर लेते थे।

"शरीर का भ्रष्टाचार!" वह गरजा। "शैतान से युद्ध! उसे उसकी गन्दी ख़िराज दे दो, सुअर! शरीर के विद्रोह को दबा दो, पेत्या! अगर तुम पाप न करोगे तो पश्चात्ताप नहीं कर सकोगे और अगर पश्चात्ताप न करोगे तो तुम्हारी आत्मा का उद्धार नहीं हो सकेगा। अपनी आत्मा को स्नान कराओ! अपने शरीरों को धोने के लिए क्या हम भाप से स्नान करने नहीं जाते? फिर आत्मा का क्या किया जाय? आत्मा भी स्नान करने के लिए चीत्कार कर रही है। रूसी आत्मा के लिए स्थान ख़ाली करो, इस संगीतमय, पुनीत और विशाल आत्मा के लिए!"

इन शब्दों के आवेग में बहकर प्योत्र भी रोया और बुदबुदाया—

"हमारी आत्मा, वह तो अनाथ है, जैसे कहीं पड़ी पायी हुई विस्मृत और उपेक्षित।"

और उपस्थित लोगों ने एक स्वर से चिल्लाया—

"बिल्कुल ठीक! सच है!"

एक गोलमटोल पर फ़ुर्तीला लाल दाढ़ीवाला गंजा आदमी, जिसके गाल और कान लाल हो रहे थे, औरतों की तरह विक्षिप्त भाव से चीख़ता हुआ चारों ओर एक लट्टू की तरह घूमकर नाचने लगा—

"स्त्योपा—यह सच है! मैं तुम पर मोहित हूँ। तुम पर मरता हूँ। तीन चीज़ों को—तुम्हें, अचार और सत्य को अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करता हूँ। आत्मा-सम्बन्धी सत्य को!"

और फिर वह रोते हुए भी गाने लगा—

"मौत ही मौत को जीतती है....।"

प्योत्र ने मूर्ख एएटन के शब्द गुनगुनाकर दुहराये—

"छकड़े का पहिया खो गया, खो गया।"

उसे भी लगा, जैसे वह भी उस भूरे स्त्योपा से प्रेम करता है और उसने एकाग्र मन से उसके चीख़ने को सुना और यद्यपि बीच-बीच में अद्भुत शब्द डरावने लगे, फिर भी अधिक शब्द ऐसे थे जिनसे उनका हृदय बहुत अधिक और मधुरता से भर उठता था। ऐसा लगता था कि अँधेरे और शोर-ग़ुल में भरी जगह को एक द्वार खोलकर उल्लासपूर्ण शान्ति में बदल दिया हो। सबसे अधिक उसे 'गाती हुई आत्मा' का शब्द पसन्द आया। इसमें कुछ चीज़ बहुत अधिक थी और विनती के किसी स्मरणीय दृश्य के उपयुक्त था—द्रियोमोव की एक गन्दी गली में उमस से भरे दिन एक लम्बा, सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा आदमी जा रहा है। उसकी मुखमुद्रा मृत्यु जैसी ही भावहीन, गम्भीर है। वह थके हाथों सारंगी की खूँटियाँ उमेठता है और सलवटें पड़े हुए नीले कपड़े पहने एक बारह-तेरह वर्ष की बालिका ऊपर को मुँह उठाये और आँखें बन्द किये दर्द-भरे स्वर में गाती है, ऐसे स्वर में जिसमें थकान कूट-कूटकर भरी है—

सुख और आश्चर्य के भंडार में से जो नहीं यदि कुछ मिले
तो चाहती हूँ, बस मुझे नींद की गोद और आज़ादी मिले

उस नन्हीं बालिका की याद ने प्योत्र को उस लाल कानोंवाले आदमी से कहने को विवश कर दिया—

"संगीतमयी आत्मा! वह उसने पकड़ ली है!"

"किसने, स्त्योपा ने?" लाल दाढ़ीवाले ने शोर मचाया। "स्त्योपा सब कुछ जानता है। उसके पास हम सब की आत्माओं की खूँटियाँ हैं।"

उसकी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। उसने चिल्लाकर कहा—

"मानवता के बन्धु स्त्योपा, आओ! वकील परादिसोव, हमें विषमता की गुफ़ा में ले चलो।"

मानवता का मित्र उद्योगपतियों की इस पियक्कड़ मंडली का प्रेरक और निर्देशक था। उसके साथ दर्जनों लोग झूमते हुए चलते, संगीत के रव से आसमान फट जाता। कभी रुलानेवाले निराशा-भरे गीत और कभी हँसी से लोट-पोट कर देनेवाली उल्लास-भरी तानें होतीं, जिनकी लय पर लोग पागल होकर नाचते। लेकिन प्योत्र की स्मृति में बड़े ढोल की नीरस कड़-कड़ ध्वनि और

बाँसुरी की दुर्दमनीय स्वरलहरी के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह गया था। नैराश्यपूर्ण गीतों के धीमे स्वर को सुनकर प्योत्र को लगता कि सराय की दीवारों की ईंटें सिकुड़ रही हैं और उसका दम घुट जाता। उल्लासपूर्ण गीत के साथ जब भड़कीले कपड़े पहनकर नर्तक-नर्तकियाँ उछल-कूद मचाते तो ऐसा लगता, मानो किसी अज्ञात हवा के झोंके दीवारों को धक्का देकर बाहर की ओर को सरका रहे हैं। एक मनोदशा से दूसरी मनोदशा के बीच झटके खाते हुए, उल्लास से निराशा के गर्त में गिरते हुए अर्तामोनोव कभी-कभी भावावेश से पागल हो जाता। उसका मन कोई असाधारण और महान् कार्य करने के लिए तड़प उठता। उसकी इच्छा होती कि किसी की हत्या कर डाले और उसके बाद घुटने टेककर सब लोगों के सामने कहे—

"मेरा न्याय करो। मुझे कोई भयानक दंड दो!"

वह चक्र में बैठे थे, जो एक विचित्र ढंग की सराय थी। उसका फ़र्श चक्करदार था। मेज़-कुर्सियाँ, गाहक, नौकर-चाकर सभी इसमें धीरे-धीरे अविराम गति से चक्कर खाते रहते थे। किसी नरम तकिये के पंखों की तरह इस सराय में हर समय लोग भरे रहते थे। हर समय शोर-गुल मचा रहता। फ़र्श के घूमते ही, क्रमशः बाजेवालों की मण्डली, गानेवाले, बालों में फूल लगाये सतरंगी नर्तकियाँ और शराब की बोतलों और प्लेटों से भरी आलमारियाँ दिखाई देतीं। चौथे कोने में आने-जाने का दरवाज़ा था, जिसमें हर समय धक्कम-धुक्का होती रहती। चक्करदार फ़र्श से उठकर बाहर निकलते ही लोग पागलों-जैसा अट्टहास करते और लड़खड़ाकर गिरते-पड़ते।

मानवता के बन्धु स्त्योपा ने प्योत्र को समझाया—

"कैसी मूर्खतापूर्ण चीज़ है। लेकिन है अपने ढंग की निराली ही! यह फ़र्श नीचे से लकड़ी की थूनियों पर टिका है, जैसे कोई फैली उँगलियों पर तश्तरी को थाम ले। यह थूनियाँ बीच के एक ही मोटे-से खम्भे के निचले भाग से शाखों की तरह चारों ओर को फूटती हैं। नीचे उस खम्भे में लकड़ी के दो धुरे लगे हुए हैं, जिनमें घोड़े जोते जाते हैं। ये घोड़े कोल्हू या रहँट के बैलों की तरह दिन-रात अपने गोल दायरे में चक्कर काटते रहते हैं और बड़ा खम्भा अपनी कीली पर लगातार घूमता रहता है, जिससे ऊपर का फ़र्श भी घूमता जाता है। है न

सरल तरकीब ! लेकिन याद रखो, इसका अपना अर्थ है ।' पेत्या, दुर्भाग्य से हर चीज़ का अपना अर्थ होता है !"

उसने ऊपर छत की ओर इशारा किया और उसकी उँगली पर एक हरे रंग का पत्थर भेड़िए की आँख की तरह चमक उठा। एक चौड़ी छाती और कुत्ते-जैसी मुखाकृतिवाले व्यापारी ने पीछे से आकर अर्तामोनोव की आस्तीन थाम ली और एक मुर्दे की-सी पथराई आँखों से उसकी ओर घूरने लगा। बहरे आदमी की तरह ऊँचे स्वर में चिल्लाकर उसने पूछा—

"दुनिया क्या कहेगी, ऐं ? तुम कौन हो ?"

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही उसने मुड़कर किसी और को जा पकड़ा और उससे भी पूछा—

"तुम कौन हो ? दुनिया से मैं क्या कहूँ ? ऐं ?"

फिर अपने को कुर्सी में फेंकते हुए बड़बड़ाया—

"उफ़, शैतान !"

और क्रोध से चिल्लाकर बोला—

"चलो, और किसी जगह चलें !"

फिर वह एक गाड़ी में कोचवान की जगह बैठ गया। उनमें दो भूरे रंग के घोड़े जुते थे। वह व्यक्ति सड़क पर चलनेवाले राहगीरों से गरजते हुए चिल्ला-चिल्लाकर कहता जाता—

"हम सब पाउला के यहाँ जा रहे हैं ! आओ, चले आओ !"

वर्षा हो रही थी। गाड़ी में पाँच व्यक्ति थे। उनमें से एक अर्तामोनोव के पाँवों पर लेटा बड़बड़ा रहा था—

"उसने मुझे उल्लू बनाया, मैं उसको उल्लू बनाऊँगा। उसने मुझे मार डाला, मैं उसे मार डालूँगा।"

एक पहाड़ी के नीचे चौराहे पर, जो एक विशाल गोल रोटी जैसा दीखता था, घोड़ागाड़ी उलट गई। प्योत्र के सिर और कोहनी में चोट आ गई। गीली दूब पर बैठकर वह लाल दाढ़ी और गुलाबी कानोंवाले आदमी की ओर देखता रहा, जो पहाड़ी के नीचे की मसजिद की दिशा में घुटनों के बल रेंगता हुआ चिल्लाता जा रहा था—

"दूर हटो! मैं तातार बनना चाहता हूँ! मैं मुहम्मद बनना चाहता हूँ! मुझे जाने दो!"

भूरे स्त्योपा ने टाँगें पकड़कर उसे पहाड़ी के नीचे खींच लिया और उसे एक ओर ले चला। ईरानी, तातार, बुखारावासी सबके सब दुकानों और सराय से उठकर दौड़े आए। पीला कोट पहने और हरी पगड़ी बाँधे एक बूढ़े ने प्योत्र पर दर्प से अपना डंडा घुमाते हुए कहा—

"रूसी, शैतान!"

एक ताँबे के रंग के चेहरे के पुलिस के सिपाही ने प्योत्र को उठाकर खड़ा करते हुए कहा—

"बस, अब शोर बंद करो।"

घोड़ागाड़ियाँ आ गईं, और व्यापारियों को उठाकर उनमें डाल दिया गया और वे चलती बनीं। मानवता का बन्धु सबसे अगली गाड़ी में खड़ा अपनी मुट्ठी बाँधे कुछ चिल्लाता रहा, जैसे वह भोंपू हो। वर्षा थम गई थी, लेकिन आकाश वैसा ही काले मेघों से घिरा और कुपित बना रहा। अँधेरे की दीवार में आग की दरारें डालती हुई बिजली सराय की विशाल इमारत पर ज़ोर से चमकी। बेताँकूर नहर के काठ के पुल पर जब घोड़ों के सुम एक पोली ध्वनि से बजने लगे तो लोगों के हृदय भय से काँप उठे। अर्तामोनोव को कोई सन्देह न रहा कि पुल टूट जायगा और वे सब नीचे के स्थिर, अविचल, काले पानी में डूबकर मर जायेंगे।

इन दृश्यों की सपनों की-सी उखड़ी-उखड़ी याद में अर्तामोनोव ने शराब के नशे में चूर इन लोगों के बीच अपने को एक नितान्त अपरिचित और अजनबी के रूप में पाया। वह—यह अजनबी—भयंकर उत्साह से शराब पीता जा रहा था। उसके मन में रह-रहकर यह आशा जग रही थी कि बस किसी भी क्षण कोई असाधारण घटना घटित हो जायगी, जो उसके जीवन में सबसे विलक्षण, सबसे आश्चर्यजनक घटना होगी और वह या तो निराशा और अवसाद के अतल गर्त में गिर जायगा या फिर सदा के लिए आनन्द और सुख के उत्तुंग सीमाहीन शिखरों पर उठता चला जायगा।

चकाचौंध उत्पन्न करनेवाली सबसे अद्भुत स्मृति तो उस स्त्री पाउला मेनोत्ती की थी। वह एक बड़े ख़ाली कमरे में था, जिसकी दीवारों पर परदे या तस्वीरें

कुछ न थे। कमरे का एक तिहाई हिस्सा एक विशाल मेज़ ने घेर रखा था, जिस पर बोतलें, तरह-तरह के रंगों के शराब पीनेवाले काँच के गिलास, फलों से भरे कटोरे और फूलों के गुलदस्ते, और नमकीन तली हुई मछलियां और बरफ़ पड़ी शेम्पेन शराब से भरे चाँदी के बर्तन रखे थे। लाल बालोंवाले, गंजे सिरवाले, सफ़ेद बालोंवाले दस-बारह आदमी मेज़ के चारों ओर बैठे बेसब्री से उद्विग्न हो रहे थे। कई कुर्सियाँ अभी भी ख़ाली पड़ी थीं, जिनमें से एक फूलों से सजी हुई थी।

कमरे के मध्य में खड़े होकर स्त्योपा एक मोमबत्ती की तरह अपनी सोने की मूँठवाली छड़ी उठाकर चिल्लाया—

"ओ सुअरो! भोजन पर टूट पड़ने से पहले ज़रा इन्तज़ार भी नहीं कर सकते?"

किसी ने रूखे ढंग से कहा—

"भूँकना बंद करो।"

"चुप रहो!" मानवता के बन्धु ने डाँटा। "यहाँ का मालिक मैं हूँ!"

और न जाने कैसे अचानक कमरे में अँधेरा-सा छा गया। बाहर से नगाड़ा बजने की धीमी-धीमी आवाज़ें आने लगीं और स्त्योपा ने दरवाज़ा खोल दिया। एक मोटा-सा आदमी पेट से नगाड़ा बाँधे अन्दर दाख़िल हुआ। वह लड़खड़ाती हंस-चाल से क़दम उठाता आया और अपने नगाड़े को पूरे ज़ोर से पीटने लगा—

"ढम ढमा ढम....।"

फिर पाँच आदमी और दाख़िल हुए। वे भी उतने ही गम्भीर और शालीन दीख रहे थे। जुते हुए घोड़ों की तरह कमर से दुहरे होकर वे तौलियों से पाये बाँधकर एक पियानों खींचकर अन्दर ले आये। पियानों के चमकते हुए काले ढक्कन पर एक स्त्री नंगी लेटी थी। वह इतनी श्वेत वर्ण थी कि देखकर आँखें चकाचौंध हो जाती थीं और वह अपनी नग्नता की निर्लज्जता में भयावह दीख रही थी। वह पीठ के बल बाँहों का तकिया लगाये चित लेटी थी। उसके खुले, घने, काले केश पियानो के चमकते काले ढक्कन पर फैले हुए थे, जैसे उसमें ही जाकर घुल गये हों। वह जैसे-जैसे निकट आती गई, उसके शरीर की गोलाई की रेखाएँ वैसे-वैसे उभरती गईं और हरेक की विस्फारित आँखें उतनी

ही एकाग्रता से उसके बग़ल और पेट के नीचे के बालों के गुच्छों पर गड़ती गई।

पियानो के ताँबे के पहिए जैसे पीड़ा से कराहे और कमरे का फ़र्श चर-मराया। नगाड़ा और भी ज़ोर से धमाधम करके बजने लगा। इस विशाल रथ से जुते हुए आदमी रुके और अपनी कमर सीधी करके खड़े हो गये। अर्ता-मोनोव को आशा हुई कि सब लोग एक साथ हँस पड़ेंगे। शायद ऐसा होने से यह सब कुछ समझने में आसानी होती। लेकिन मेज़ के सहारे बैठे सारे लोग चुपचाप उठकर खड़े हो गये और उस स्त्री को एक सुस्त अन्दाज़ में उठते और पियानो के ढक्कन से अलग होते हुए एकटक देखते रहे। ऐसा लगता था जैसे वह अभी निद्रा त्याग कर उठी हो और उसके नीचे मानो रात्रि का एक अंश पत्थर की तरह जमकर अभी भी पड़ा हो। सारा दृश्य परियों की कहानी-सा था। खड़े होकर उस स्त्री ने अपने लम्बे काले बालों को सिर फटकारकर अपने कन्धों के पीछे फेंक दिया और अपने पाँव से एक ठोकर मारकर ढक्कन की चमकदार कालिमा के जैसे अभ्यन्तर तक को कँपा दिया। ढक्कन पर उसके पाँवों के पड़ने के साथ-साथ पियानो के तार बज उठते।

दो व्यक्ति और अन्दर आये—एक सफ़ेद बालोंवाली चश्मा लगाए बूढ़ी औरत और सन्ध्या की पोशाक पहने एक पुरुष। बुढ़िया बैठकर पियानो के हाथी-दाँत से मढ़े काले और सफ़ेद परदों के हिलने के साथ-साथ अपने पीले दाँत निपोरने लगी। सन्ध्या की पोशाक पहने पुरुष ने वायलिन उठाकर कन्धे से लगाई, एक ललछौंही आँख इस तरह मींची जैसे निशाना लगा रहा हो और तार पर धनुही चलाकर वह पियानो की ध्वनि में वायलिन के कोमल स्वर को प्रक्षेपित करने लगा। नंगी स्त्री लहराती, बल खाती हुई अँगड़ाई लेकर सीधी खड़ी हो गई। उसने अपना सिर झटकारा और बाल उसके उन्नत उरोजों को ढँकते हुए आगे आ पड़े। हिलती हुई वह सानुनासिक स्वर में धीरे-धीरे गाने लगी। उसका धीमा स्वर जैसे स्वप्निल और उदासीन हो।

वे सब मुँह उठाए चुपचाप बैठे उसे देखते रहे। सबके मुखों पर एक ही मुद्रा थी। उनकी आँखें जैसे अन्धी लगती थीं। वह स्त्री अनिच्छापूर्वक गा रही थी, जैसे अभी आधी नींद में हो। उसके भरे ओंठ शब्दों की आकृति गढ़ रहे थे, जो किसी की समझ में न आते थे। उसकी आँखें, जिनपर एक पतली झिल्ली-

सी पड़ी थी, लोगों के सिरों के ऊपर लगी हुई थीं। अर्तामोनोव ने कभी कल्पना भी न की थी कि एक स्त्री के शरीर की गठन इतनी सुकुमार, सुन्दर, इतनी आकर्षक और मनोहर भी हो सकती है। अपने सिर को लगातार झटकारते हुए वह अपने उरोजों और नितम्बों पर हाथ फेरती रही। धीरे-धीरे लगा कि उसके केश बढ़ते जा रहे हैं, वह समूची बढ़ती जा रही है, यहाँ तक कि और सब वस्तुएँ आँख से ओझल होती जा रही हैं और बस केवल वह ही दृष्टि के ओर छोर में व्याप्त है, जैसे उसके अतिरिक्त और किसी का अस्तित्व ही नहीं रहा। अर्तामोनोव को स्पष्ट याद आया कि उसके मन में उस स्त्री ने एक क्षण के लिए भी तो उसे प्राप्त करने की वासना नहीं जगाई थी। उसको देखकर मन में केवल भय ही उठा था और हृदय में एक पीड़ाजनक संकोचन-सा उसने अनुभव किया था। उससे छलना और जादूगरनी की भयावहता ही टपकती थी। पर साथ ही उसे लगा कि यह स्त्री अगर कहे तो वह उसके पीछे-पीछे कहीं भी चला जायेगा, वह जो चाहेगी उसके लिए करेगा। दूसरों की ओर देखकर उसे इस बात पर और भी दृढ़ विश्वास हो गया था।

"ये सभी ऐसा ही करेंगे।"

उसका नशा उतर रहा था और उसकी इच्छा हुई कि वह उठकर चुपचाप वहाँ से चलता बने—यह इच्छा उस समय एक दृढ़ निश्चय के रूप में परिणत हो गई, जब किसी ने ज़ोर से फुसफुसाकर कहा—

"चारूशा! क़ुदरत का जाल! समझे! चारूशा।"

चारूशा! अर्तामोव को इसका अर्थ मालूम था—एक दलदली या बँसाऊ जंगल में हरियाली उगा मनोरम स्थान; हरियाली उगा ऐसा स्थान जहाँ की घास विशेष रूप से सुन्दर और सघन होती है, विशेष रूप से हरी और रेशमी; परन्तु उस पर जिसका भी पाँव पड़ता है उसे अतल दलदल अपने भीतर सोख लेती है। किन्तु फिर भी वह उस स्त्री की जादू-भरी नग्नता की दुर्जेय शक्ति से अवसन्न हो मंत्रमुग्ध-सा बैठा उसे देखता रहा था, और जब कभी उसकी तैलाक्त आँखों की बोझिल दृष्टि उस पर पड़ती तो उस समय वह उद्विग्नतापूर्वक अपने कन्धों और गर्दन को मोड़कर अपने मुख को दूसरी दिशा में फेरने लगता। तब उसे दूसरों के चेहरे दिखाई देते—भयानक, शराब में आधे चूर चेहरे, जो

भौंचक्के होकर विमूढ़ भाव से नग्न स्त्री की ओर आँखें फाड़-फाड़कर घूर रहे थे। द्रियोमोव के नगरवासी भी एक दिन इसी तरह आँखें फाड़-फाड़कर देखते रहे थे, जब गिरजे की छत से गिरकर एक चित्रकार मर गया था।

घुँघराले बालोंवाला काला स्त्योपा खिड़की के दासे पर बैठा था। उसके मोटे ओंठ खुले हुए थे और वह अपने काँपते हाथों से माथा रगड़ रहा था। उसे देखकर लगता था जैसे अगले क्षण ही वह फर्श पर सिर के बल गिर पड़ेगा। उसकी आस्तीन का एक कफ़ लटक रहा था। न जाने क्यों उसने अचानक वह कफ़ फाड़कर एक कोने में फेंक दिया।

उस स्त्री के अंग-संचालन की गति अधिक तीव्र होती गई। वह अपने शरीर को ऐसे मरोड़ और ऐंठ रही थी मानो पियानो से कूद पड़ना चाहती हो, पर किसी कारण कूद न पाती हो। उसकी रुँधी हुई चीत्कारें और अधिक सानुनासिक हो गईं, और उसका स्वर और भी तीक्ष्ण होता गया। उसकी टाँगों की लहरियादार भंगिमा, सिर की तीखी झटकार और उसके घने बालों का कंधों पर से पंखों की तरह तिरकर उरोजों और पीठ पर किसी जानवर की खाल के समान गिरने का दृश्य भयावह था।

हठात् संगीत बंद हो गया और स्त्री कूदकर फर्श पर आ गई। स्त्योपा ने जल्दी से उसे एक सुनहरा-पीला लबादा ओढ़ा दिया और वह उसे कमरे से बाहर खींच ले गया। लोग ज़ोर-ज़ोर से चीख़ने-चिल्लाने और तालियाँ पीटने लगे, और धक्कम-धुक्का शुरू हो गया। कफ़न से ढँके शवों की तरह सफ़ेद पड़ गये नौकर कभी बाहर जाते, कभी अन्दर आते। गिलास खनखनाने लगे। सभी लोग जैसे गरमी और उमस के दिन की प्यास से शराब पीने लगे। वे सब भद्दे और बेहूदे ढंग से अनाप-शनाप खा-पी रहे थे। उनके मेज़ पर झुके हुए सिरों को देखकर उबकाई-सी आती थी, मानो तमाम सूअर अपनी नाँद में थूथन गड़ाए हों।

ख़ानाबदोशों का एक गिरोह वहाँ आ पहुँचा। उनके नाच-गानों से ये लोग नाराज़ हुए, और उन पर खीरे के टुकड़े और रूमाल फेंकने लगे, जिससे ख़ानाबदोश वहाँ से चलते बने। उनके स्थान पर स्त्योपा शोर-ग़ुल मचाती हुई औरतों के एक झुण्ड को गड़रिये की तरह हाँकता हुआ दाखिल हुआ।

इनमें एक गोल-मटोल नाटे कद की लड़की, जो लाल पोशाक में सजी थी, प्योत्र के घुटनों पर आ धमकी और उसने शैम्पेन का गिलास उठाकर उसके ओठों से लगा दिया। फिर अपने गिलास को प्योत्र के गिलास से खनका कर वह ज़ोर से चिल्लाई—

"पियो, लाल सिरवाले मित्या की सेहत के लिये पियो!"

वह एक तितली की तरह हल्की थी और उसका नाम पशूता था। उसने बड़े सुन्दर ढंग से गितार बजाते हुए मार्मिक स्वर में गाना शुरू किया—

'उज्ज्वल अमन्द गगन में फैले प्रभात के सपनों में खो गई, मैं खो गई'
'हूँ खो चुकी जिस अबोध बालापन को उसकी स्मृतियों में खो गई, मैं खो गई'

और फिर उसकी स्पष्ट कंठध्वनि इस पंक्ति को गाकर करुणासिक्त हो गई :

मैंने उज्ज्वल प्रभात का स्वप्न देखा, स्वच्छ नीलवर्ण

अर्तामोनोव ने उनके हृदयावेग को शान्त करने के लिये उसके सिर को मित्र और पिता के ढंग से थपथपाया।

"रोओ मत। अभी तो बच्चा हो। तुम्हें किसी चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं।"

रात को उसे अपने आलिंगन में बाँधकर उसने अपनी आँखें ज़ोर से भींच लीं ताकि वह उस पाउला मिनोत्ती को अपने स्मृति-पटल पर देख सके।

अपनी गंभीरता के किसी विरल क्षण में उसने आश्चर्यचकित होकर अनुभव किया कि यह पशूता तो उसे बहुत ही अधिक मँहगी पड़ी है और उसने अपने मन ही मन सोचा—

"नन्हीं तितली!"

मेले में ये औरतें पुरुषों की जेब से कितनी होशियारी से ढेर के ढेर पैसे निकाल लेती हैं और शराब और व्यभिचार के आकांक्षी पुरुष भी किस तरह अपनी मेहनत की कमाई को इन औरतों पर पानी की तरह लुटाते हैं, यह बात उसे आश्चर्यजनक लगी। किसी ने उसे बताया था कि उस कुत्ते-जैसे मुँहवाले समूर के बड़े व्यापारी ने पाउला मिनोत्ती पर दसियों हज़ार रूबल खर्च कर दिये थे—वह उसे प्रत्येक नग्न प्रदर्शन के लिये तीन हज़ार रूबल देता है। गुलाबी कानोंवाले व्यक्ति ने तो अपना सिगार जलाने के लिये मोमबत्ती की लौ में सौ

रूबल का नोट लगा दिया था और स्त्रियों के उरोजों में नोटों की भारी-भारी गड्डियाँ खोंस दी थीं।

"यह लो रानी, मेरे पास बहुत हैं।"

वह हर औरत को 'रानी' कहकर पुकारता था। अर्तामोनोव हर स्त्री में घने बालोंवाली पाउला मिनोत्ती की नग्न निर्लज्जता के ही दर्शन करने लगा था। उसे लगा कि हर औरत, वह चाहे चालाक हो या मूर्ख, मौन रहनेवाली हो या उद्धत स्वभाव की, उसे शत्रु भाव से ही देखती है। उसे स्मरण हो आया कि उसकी पत्नी में भी उसके प्रति इस प्रकार की एक दबी हुई वैमनस्य-भावना है।

"तितलियाँ!" उसने सोचा, और उसकी स्मृति में जीवन में आईं जवान और रंगीन स्त्रियों के समुदाय का चित्र निखरकर साफ़ उभर आया।

इस सबका क्या अर्थ है, यह उसकी समझ में न आ सका। ऐसा क्योंकर होता है? अपने व्यापार या काम की बेड़ियों में बँधकर, समूचे संसार से आँखें फेरकर केवल धन कमाने—अधिक से अधिक धन कमाने के उद्देश्य से लोग जीतोड़ परिश्रम करते हैं और फिर उस धन को जला देते हैं, व्यभिचारिणी औरतों के चरणों में उसे मुट्ठियाँ भर-भर के न्योछावर कर देते हैं, और ये सब लोग वज़नदार आदमी थे, समाज में उनका ऊँचा दरजा है, वे पति और पिता हैं, बड़े-बड़े कारख़ानों और मिलों के स्वामी हैं।

"पिता यदि जीवित होते तो वे भी ऐसा ही करते।" उसने नतीजा निकाला। हाँ, हाँ, इसमें सन्देह करना व्यर्थ है। प्योत्र स्वयं अपने को इस प्रकार के जीवन, इस शराबख़ोरी और कामुक-प्रदर्शनों में सक्रिय भाग लेनेवाले के रूप में न देखता था, बल्कि सोचता था कि वह तो मात्र एक तटस्थ द्रष्टा है, जो संयोगवश वहाँ आ फँसा है। बस, इन विचारों में यही कसर थी कि वे शराब से भी ज़्यादा नशीले थे, और शराब ही उनके नशे को मार सकती थी और वह तीन सप्ताह तक शराबख़ोरी के दुःस्वप्न में डूबा रहा। अलेक्सी ने आकर उसे इससे उबारा।

प्योत्र अर्तामोनोव फ़र्श पर बिछी एक पतली, पत्थर-सी सख़्त चटाई पर पड़ा था। उसके पास बरफ़ से भरा एक बर्तन, क्वास शराब की कुछ बोतलें, तले हुए बन्दगोभी से भरी एक तश्तरी रखी हुई थी। सोफ़े पर नतालिया की तरह

भौंहें उठाये और मुँह खोले पशूता लेटी थी। एक सफ़ेद टाँग, जिसमें नीली शिराएँ थीं और अँगूठे के नाखून मछली के परतों की तरह चमकदार थे, सोफ़े की एक बग़ल से नीचे लटक रही थी। खिड़की से बाहर अपने चिर अतृप्त कंठों से अखिल-रूसी मेला गरज रहा था।

शराब के कारण सिर में होती हुई सनसनाहट और शरीर में फैले विष की पीड़ा में अर्तामोनोव बीती रात की घटनाओं और क्रीड़ा-कौतुकों पर उदास भाव से विचार कर रहा था कि अचानक अलेक्सी अन्दर दाख़िल हुआ, मानो दीवार फाड़कर प्रकट हुआ हो। वह लँगड़ाकर चल रहा था जिससे उसकी छड़ी बार-बार फ़र्श पर खट-खट करके बज उठती थी। नीचे पड़े प्योत्र की ओर देखकर वह बड़बड़ा उठा—

"बस, बिलट गये? चित होकर पड़े हो? मैंने कल सारे दिन तुम्हारी तलाश की, फिर सारी रात तलाश की और सुबह होते-होते मेरा भी यही हाल हुआ।"

उसने इशारे से एक नौकर को बुलाया और उसे लेमोनेड, कोन्यक शराब और बरफ़ लाने का आदेश दिया। सोफ़े पर झपाक से बैठते हुए उसने पशूता के कन्धे पर एक थाप दी।

"उठ जवान छोकरी!"

जवान छोकरी आँखें खोले बिना ही बड़बड़ाई—

"जहन्नुम में जाओ! मुझे मत छेड़ो।"

"आहा! जहन्नुम में तो तुम्हें जाना है।" अलेक्सी ने सौजन्यतापूर्वक उत्तर दिया। उसने उसके कन्धे थाम लिये और उठाकर बैठा दिया। फिर उसे झकझोरकर उसने दरवाज़े की ओर इशारा किया—

"निकल जा!"

"उसे मत छेड़ो।" प्योत्र ने कहा। पर उसके भाई ने हँसकर आश्वासन दिया—

"कोई बात नहीं। जब इसे बुलायेंगे, तब फिर आ जायगी।"

"शैतानों!" वह औरत बोली, किन्तु साथ ही वह अन्यमनस्क भाव से अपने कपड़े पहनने लग गई।

अलेक्सी बिलकुल डाक्टर की तरह आदेश दे रहा था—

"उठो प्योत्र ! अपनी कमीज़ उतारो और अपने शरीर पर बरफ़ मलो ।"

पशूता ने फ़र्श पर से अपना दबा-कुचला हैट उठाकर अपने बिखरे हुए बालों पर रख लिया। फिर भी सोफ़े के पीछे के शीशे में अपना मुख देखते हुए उसने कहा—

"कैसी रानी-सी सुन्दर !"

और नींद में भरी जमुहाई लेते हुए उसने हैट उतारकर फेंक दिया।

"अच्छा, नमस्कार मित्या ! याद रखना, मैं सिमान्स्की के होटल में १३ नम्बर के कमरे में ठहरी हूँ !"

प्योत्र को उसके जाने से खेद हुआ। चटाई पर से बिना हिले-डुले ही उसने अपने भाई से कहा—

"इसे कुछ दे दो।"

"कितना ?"

"ऐं—पचास।"

"यह तो बहुत ज़्यादा है।"

अलेक्सी ने उस स्त्री के हाथ में कुछ रक़म पकड़ा दी और उसे कमरे से बाहर कर दरवाज़ा ज़ोर से बन्द कर दिया।

"तुम बड़े लालची हो।" प्योत्र ने ताना मारते हुए कहा। "इससे ज़्यादा तो कल उसने एक हैट पर ही ख़र्च कर दिये थे।"

अलेक्सी एक आरामकुर्सी पर बैठ गया। उसके दोनों हाथ अपनी छड़ी की मूँठ पर थे और ठोढ़ी हाथों पर थी। सूखे शासन के स्वर में उसने पूछा—

"तुम सोचते हो कि क्या कर रहे हो ?"

"पी रहा हूँ।" बड़े भाई ने उत्फुल्ल मन से कहा। वह उठ बैठा और नाक फुफकारते हुए अपने शरीर से बरफ़ मलने लगा।

"पीओ, पी-पीकर चाहे मर जाओ; लेकिन सिर्फ़ अपना होश मत खोओ। और तुम क्या करते हो ?"

"हाँ, और क्या ?"

अलेक्सी प्योत्र को घूरता हुआ उसके निकट बढ़ आया, मानो वह कोई अजनबी हो और उसने कठोर स्वर में पूछा—

"तो तुम्हें याद नहीं ? तुम्हारे ऊपर एक अभियोग लगाया गया है। तुमने एक वकील के जबड़े पर घूँसा जमाया है और एक पुलिसवाले को नहर में ढकेल दिया है और....।"

उसने इतने अपराधों की सूची गिना दी कि प्योत्र ने सोचा—

"यह झूठ बोल रहा है। मुझे डराना चाहता है।"

और उसने पूछा—

"किस वकील को ? बेकार मत बको।"

"मैं बेकार नहीं बक रहा हूँ। वह कलूटा-सा आदमी—उस कम्बख़्त का नाम ही भूल गया।"

"हम दोनों में कुछ झड़प ज़रूर हुई थीं।" प्योत्र ने होश में आते हुए कहा। लेकिन अलेक्सी और भी कठोर स्वर में कहता गया—

"और तुमने सम्मानित व्यक्तियों को गालियाँ क्यों बकीं? यहाँ तक कि अपने परिवार तक को ले घसीटा !"

"मैंने ?"

"हाँ, तुमने तुमने! अपनी बीवी को गालियाँ दी, और तिखोन को, और मुझे भी और तुम किसी बालक के बारे में बड़बड़ाते हुए चिल्ला उठे थे। 'अब्राहम, इसाक़, मेंढ़ा !' इसके क्या मतलब हैं ?"

प्योत्र के मन में डर समा गया। वह एक कुर्सी पर धम् से गिर पड़ा।

"मुझे नहीं मालूम। मैं नशे में था।"

"यह तो कोई सफ़ाई नहीं है।" अलेक्सी ने वस्तुतः चिल्लाकर और अपनी कुर्सी में इस तरह अपने शरीर को झटके दे-देकर कहा, मानो लँगड़े घोड़े पर सवार हो। "इसके पीछे ज़रूर कोई बात है। अपनी शुद्ध-बुद्ध अवस्था में आदमी जो सोचता है, नशे की हालत में वही बक डालता है—इसके पीछे यही बात है। घर के मामलों के बारे में बकवाद करने के लिए सराय कोई उपयुक्त स्थान नहीं है। इससे तुम्हारा मतलब क्या है—'अब्राहम, .क़ुर्बानी, हाँ, इन बेहूदा बातों से ? तुम्हें क्या इतना भी नहीं दीखता कि इस तरह तुम हमारे व्यापार को ख़तरे में डाल रहे हो और मेरे नाम पर भी बट्टा लगाते हो ? तुम क्या सोचते हो कि कहाँ हो—स्नान-गृह में कि अपने को बिलकुल नंगा करके

पड़ रहो ? यह तो कहो भाग्य से मेरा दोस्त लोक्तीव यहाँ था। उसमें इतनी बुद्धिमानी थी कि उसने तुम्हें कान्यक पिला-पिलाकर बेहोश कर दिया और मुझे तुरन्त आने के लिए तार भेज दिया। यह सब बातें उसने ही बतायी हैं। उसका कहना है कि तुम्हारी अंट-संट बकवास को सुनकर पहले तो लोग हँसते रहे, लेकिन फिर ध्यान से कान लगाकर सुनने लगे। "आख़िर यह आदमी किस बात के बारे में चिल्ला-चिल्लाकर बके जा रहा है ?"

"वे सभी तो चिल्ला रहे थे।" प्योत्र ने हताश होकर धीमे से कहा। उसके भाई के शब्द उसके दिमाग़ में फिर से एक नशा-सा भरते जा रहे थे; किन्तु अलेक्सी कहता गया, उसका स्वर धीमा होकर अस्फुट हो गया—

"वे सब तो केवल एक बात के बारे में ही चिल्ला रहे थे, लेकिन तुमसे तो कोई बात नहीं छूटी ! अपने भाग्य को सराहो कि लोक्तीव में इतनी सहज बुद्धि थी कि उसने शराब का एक दौर और चलवा दिया जिससे सबी के सबी नशे में चूर होकर गिर पड़े। हो सकता है कि वे ये सब बातें भूल जायें। पर तुम तो स्वयं जानते हो कि हमारे व्यापार में वैसा ही होता है जैसा राजनीति में। लोक्तीव आज तो हमारा मित्र है, पर कौन जाने कल हमारा कट्टर शत्रु बन जाय।"

प्योत्र दीवार से अपना सिर ज़ोर से दबाये बैठा था। वह चुप रहा। सड़क के शोर-ग़ुल से दीवार में कम्पन हो रहा था और उसे लगा कि यह कम्पन उसके मस्तिष्क में होनेवाले नशे के विप्लव को दबा देगा, और उसके डर को भगा देगा। उसके भाई ने जिन बातों की सूची गिनायी थी, उसे उनमें से एक भी तो याद न थी। और अपने भाई को एक न्यायाधीश, एक बुजुर्ग के अन्दाज़ में बातें करते सुनना उसे कष्टकर हो रहा था। वह और जाने क्या-क्या न कह बैठे, इसकी कल्पनामात्र भयावह थी।

"तुम्हें हो क्या गया है ?" अलेक्सी ने पूछा। "तुमने तो कहा था कि तुम निकिता से मिलने जा रहे थे।"

"मैं उससे मिलने गया तो था।"

"मैं भी गया था। हमने जब तार भेजा और उसने उत्तर दिया कि तुम वहाँ हो ही नहीं, तो मैं फ़ौरन वहाँ गया। सब लोग परेशान थे। आख़िर यह दुनिया कोई निरापद् स्थान तो नहीं है। तुम्हारी कहीं हत्या ही हो जाती !"

"मेरे हृदय में कोई चीज़ टीसें मार रही थी।" उसने धीमे से और जैसे क्षमा-याचना के स्वर में स्वीकार किया।

"इसलिए उस चीज़ को जबरन खींचकर सबकी आँखों के आगे बाहर लाने की ज़रूरत थी? क्या इतना भी नहीं समझ सकते कि तुम इस तरह सारे व्यापार को चोट पहुँचा रहे हो? आख़िर कैसी क़ुर्बानी के बारे में तुम बक रहे थे? तुम हो कौन—फ़ारस के हो, जो छोकरों के साथ खेलते-फिरते हो? कौन-सा छोकरा?"

अपने मुँह पर हाथ उठाकर, मानो अपने बालों और दाढ़ी को बराबर करना चाहता हो, प्योत्र ने मुँह पर उँगलियाँ रखकर कहा—

"इलिया....यह सब उसकी बदौलत ही हुआ।"

धीरे-धीरे, संकोचपूर्वक, मानो अँधेरे में रास्ता टटोल रहा हो, वह अलेक्सी को इलिया और अपने झगड़े की बात बताने लगा। उसे अधिक नहीं बोलना पड़ा। उसका भाई चैन की साँस लेकर ज़ोर से बोल उठा—

"छिः! हाँ, तो अब समझ गया! और लोक्तीव ने एशिया में प्रचलित इसके गन्दे अर्थ लगाये। तो यह इलिया की बात थी? अरे भाई, माफ़ करना, तुम ज़रा भी बुद्धिमान नहीं हो। व्यापारी वर्ग को तो सब कुछ सीखने की ज़रूरत है, जीवन के हर क्षेत्र और कार्य में पारंगत होने की आवश्यकता है, पर तुम इसके बजाय....।"

वह बड़ी देर तक और उत्साह से बोलता रहा। उसका मत था कि व्यापारियों के लड़कों को इंजीनियर, सरकारी कर्मचारी, फ़ौजी अफ़सर आदि सभी कुछ बनना चाहिए। इसी समय खिड़की में से थियेटर को जानेवाली गाड़ियों, आइस-क्रीम, और सोडा-लेमनेड बेचनेवालों और ढोल-बाजों का कर्कश, कानों को बहरा कर देनेवाला शोर शुनाई दिया। नगाड़े की आवाज़ सुनकर प्योत्र के मन में पाउला मिनोत्ती की याद कौंध गई।

"मेरे हृदय में कोई चीज़ नासूर की तरह टीसें मार रही थी।" प्योत्र ने दुहराया और अपने कान की लौर को उँगली से छूते हुए उसने अपने लेमनेड के गिलास में कोन्यक शराब उँडेलने के लिए हाथ बढ़ाया। पर उसके भाई ने एक ताड़ना भरी दृष्टि से देखते हुए उसके हाथ से बोतल छीन ली।

"होश में आओ। फिर नशे में ग़र्क़ हो जाओगे। हाँ, तो मिरोन को ही लो—

वह इंजीनियर बनना चाहता है। मैं इससे बेहद .खुश हूँ। वह विदेश-भ्रमण के लिए जाना चाहता है। मैं इस बात से भी .खुश हूँ। यह सीधे मुनाफ़े की बात है, इसमें नुक़सान कहाँ है। क्या तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आता? हमारी जागीर ही तो मूल शक्ति है....।"

प्योत्र के मन में इस समय कुछ भी समझने की इच्छा न थी। वह सिर्फ़ एक कान से अपने भाई की बातें सुनता हुआ अपनी ही सोच रहा था कि यहाँ बैठे इस आदमी ने न जाने कैसे अपने से अधिक धनी, और शायद अधिक बुद्धिमान लोगों का भी आदर प्राप्त कर लिया है—ऐसे लोगों का, जो समूचे राष्ट्र के व्यापार की नकेल घुमाते हैं कि उसके दूसरे भाई ने भिक्षुओं के मठ में बैठकर ज्ञानी और नीतिवान् होने की ख्याति प्राप्त कर ली है; और वह, प्योत्र, केवल समय के क्रूर संयोगों की दया पर जीवित है। आख़िर क्यों? किन पापों के कारण?

"और सम्मानित-जनों पर तुमने व्यभिचारी होने का आरोप क्यों लगाया?" अलेक्सी कहता गया। उसका स्वर अब पहले से नरम और आग्रहपूर्ण था। "यह व्यभिचार नहीं है, यह तो अतिरिक्त शक्ति का उच्छ्वास है। वह वकील है तो पक्का बदमाश, लेकिन चीज़ों को ठीक-ठीक देखता-समझता है। उसका दिमाग़ दुरुस्त है! निश्चय ही ये सब वयोवृद्ध लोग हैं—कुछ उनमें से बूढ़े भी हैं और वे छोकरों की तरह उछृङ्खल भी हो जाते हैं। पर, छोकरे भी अगर बेक़ाबू हो जाते हैं, तो इसीलिए न कि अभी बढ़ रहे हैं। उनमें बहुत बड़ी मात्रा में अतिरिक्त शक्ति है और फिर तुम्हें यह बात भी तो ध्यान में रखना होगा कि हमारी औरतें नीरस हैं। उनमें कुछ मसाला है ही नहीं। वे जीवन को नीरस बना देती हैं। मैं ओल्गा की बात नहीं कर रहा। वह तो सबसे भिन्न है! कुछ स्त्रियाँ इतने मूर्ख ढंग से बुद्धिमान होती हैं कि उनमें वह आँख नहीं होती जो पाप और बुराई देखने को अंधी होती हैं। ओल्गा उनमें से एक है। तुम उसको चोट पहुँचा ही नहीं सकते। वह बुराई देखती ही नहीं और न किसी बुराई में विश्वास ही करती है। पर नतालिया के बारे में तुम यह बात नहीं कह सकते। तुमने सब लोगों के सामने उसे जो "घरेलू मशीन" कहकर पुकारा, वह वास्तव में सच है।"

"क्या सचमुच मैंने यह कहा था ?" प्योत्र ने उदास मन से पूछा।

"हाँ, मैं तो नहीं सोचता कि लोक्तीव ने अपने मन से ही यह बात गढ़ ली है।"

प्योत्र ने अपने भाई से अनेक बातें पूछना चाहा, लेकिन इससे अलेक्सी को और चीज़ों की, और तथ्यों की याद आ जाती, जिन्हें शायद वह भूल गया था। प्योत्र के मन में अपने भाई के प्रति वैमनस्य और ईर्षा की भावना उठी।

"यह व्यक्ति अधिकाधिक चतुर होता जाता है, शैतान!"

अलेक्सी अपने उत्साह में जैसे फुदकता हो, उसमें तुरन्त चल पड़ने की तत्परता और लोमड़ी जैसी चालाकी थी। प्योत्र उसकी बाज़ जैसी पैनी दृष्टि से खीझ रहा था। उसके फड़कते हुए ऊपर के ओंठ के नीचे से चमकते हुए सोने के दाँत और फ़ौजी जवान की तरह ऐंठी हुई सफ़ेद मूँछों, छोटा-सी साफ़ तराशी दाढ़ी और उसकी लम्बी पतली उँगलियों को देखकर उसे चिढ़ हो रही थी। विशेषकर उसे उसके दाहिने हाथ की तर्जनी से खीझ होती थी जो लगातार वायु में मनमाने आकार बनाती जाती थी। अलेक्सी अपने छोटे, भूरे, सलेटी जैकेट में एक उद्दण्ड गुमाश्ता जैसा दीख रहा था।

प्योत्र की यकायक इच्छा हुई कि अलेक्सी वहाँ से चला जाय।

"मुझे नींद आ रही है।" उसने आँखें मूँदते हुए कहा।

"यह अक्ल की बात की।" अलेक्सी ने अपनी स्वीकृति दी। "अच्छा हो कि आज तुम कहीं न जाओ।"

"मुझे नसीहत करता है, जैसे मैं कोई बालक होऊँ।" प्योत्र ने अलेक्सी के जाने पर क्षुब्ध मन से सोचा। वह कोने में तिपाई पर रखे तसले में हाथ-मुँह धोने के लिए उठा, लेकिन अपने जैसे ही एक दूसरे आदमी की आकृति देखकर वह ज्यों का त्यों खड़ा रह गया। वह एक बेहाल आदमी की आकृति थी जिसके मुख पर झुर्रियाँ पड़ रही थीं और आँखें डर के मारे बाहर को निकली पड़ती थीं; जो अपने लाल हाथों से अपनी गीली दाढ़ी और बालदार छाती को सहला रहा था। पहले तो प्योत्र को यह विश्वास ही न हुआ कि सोफ़े के पीछे लगे आईने में यह उसका ही प्रतिबिम्ब दीख रहा था। फिर एक रोगी जैसी मुस्कान के साथ वह पुनः अपने मुँह, गर्दन और छाती को बरफ़ से मलने लगा।

"एक घोड़ागाड़ी लेकर शहर चला जाऊँगा।" उसने निश्चय किया और

अपने कपड़े बदलने लगा। लेकिन उसने अभी जैकेट आधा ही पहना था कि फिर उतारकर फेंक दिया और घंटी के बटन को ज़ोर से दबाने लगा।

"चाय, ख़ूब तेज़ बनाना।" उसने नौकर को आदेश दिया, "साथ में कुछ नमकीन और कोन्यक शराब भी।"

उसने खिड़की में से बाहर की ओर झाँककर देखा। दुकानों के चौड़े-चौड़े दरवाज़ों में ताले पड़ चुके थे। लोग सड़क पर धीमी चाल से ही इधर-उधर आ-जा रहे थे और कुछ लोग उमस-भरे अँधेरे में जहाँ-तहाँ बैठे थे। थियेटर के प्रवेश द्वार पर एक तेज़ रोशनी का लैम्प जल रहा था। कहीं निकट से ही स्त्रियों के गाने की आवाज़ें आ रही थीं।

"तितलियाँ।"

"कमरे में सफ़ाई कर दूँ?" उसके पीछे से एक आवाज़ आई। उसने तेज़ी से मुड़कर देखा कि दरवाज़े पर एक कानी बुढ़िया हाथ में झाड़नेवाला ब्रुश और कुछ लत्ते लिए खड़ी है। वह चुपचाप निकलकर बरामदे में चला गया। वहाँ एक ऐसे आदमी से टकराया जो धूप का चश्मा और काला टोप लगाये एक अधखुले दरवाज़े में से कह रहा था—

"हाँ, हाँ, बस इतना ही!"

यहाँ हर चीज़ की चूल ढीली हो रही थी। हर चीज़ को समझने के लिए दिमाग़ पर ज़ोर डालना पड़ता था। शब्दों के गूढ़ अर्थों की खोज करनी पड़ती थी। इसके बाद प्योत्र अर्तामोनोव एक गोल मेज़ के सहारे बैठ गया। सामने एक छोटा-सा समावार खौल रहा था और ऊपर लैम्प की चिमनी हिल रही थी, मानो किसी अदृष्ट हाथ के सूक्ष्म स्पर्श से हिल रही हो। उसकी स्मृति में शराब के नशे में चूर विचित्र मनुष्यों की आकृतियाँ, गीतों के बोल और अपने भाई के तानाशाही वार्तालाप के टुकड़े एक चलचित्र की तरह घूम गये। इन सबके होते हुए भी उसके मस्तिष्क में अंधकारपूर्ण शून्य ही शून्य भरा था, उस शून्य में काँपती हुई रोशनी की बस एक क्षीण किरण ही थी, जिसमें धूल के कणों की तरह ये आकृतियाँ चक्कर काटती हुई दिखाई दे रही थीं। और इनके कारण ही वह एक दूसरी चीज़ पर जो अत्यन्त महत्त्व की थी, अपने ध्यान को एकाग्र कर पाने में असमर्थ हो रहा था।

उसने गर्म कड़ी चाय पी और कोन्यक गटर-गटर कर गया, इससे उसका तालू जल गया; पर उसे नशा नहीं हुआ—सिर्फ़ थोड़ी बेचैनी भर लगने लगी, वहाँ से चले जाने की इच्छा। उसने घंटी बजाई। कोई आया, कुहरे-सा उड़ता, उसके न तो चेहरा दिखाई पड़ता था, न बाल—वह हाथी दाँत की मूठ के बेंत की तरह था।

"हरी शराब ले आओ, वेन्का। जानते हो न—हरे रंगवाली।"

"जी हाँ, शार्त्रूज़।"

"तो तुम्हारा नाम वेन्का है न ?"

"जी नहीं, कोन्स्तान्तिन है।"

"अच्छी बात है, जाओ।"

नौकर जब शराब ले आया तो प्योत्र ने उससे पूछा—

"फ़ौज में थे ?"

"जी नहीं।"

"पर बोलते तो फ़ौजियों की तरह हो।"

"यह भी कुछ वैसा ही काम है—जो कहा जाय वही करना होता है।"

अर्तामोनोव ने एक क्षण सोचा, फिर उसे एक रूबल देकर नसीहत की—

"यह काम छोड़ दो। सब सालों को भाड़ में जाने दो....यहाँ से निकलकर आइसक्रीम बेचो। बस, इतना ही काफ़ी है!"

यह शराब शीरे की तरह चिपचिपी और अमोनिया की तरह तीखी थी। उसे पीकर प्योत्र का मस्तिष्क कुछ हल्का और साफ़ हो गया। सब बातें मन में जमा होने लगीं और जब मन में जमा होने की यह क्रिया जारी थी, उस समय सड़क का कोलाहल धीमा होता गया, और एक मन्द मर्मर के रूप में परिणत होकर दूर होता गया और अपने पीछे निस्तब्धता भरता गया।

"जो कहा जाय, वही करना होता है, एँ ?" अर्तामोनोव ने विचार किया, "किससे—मुझसे ? मैं तो स्वामी हूँ। मैं कोई नौकर थोड़े हूँ। मैं तो स्वामी हूँ, या नहीं ?"

लेकिन यह विचार शीघ्र ही छिन्न-भिन्न हो गये और उनके स्थान पर भय और आतंक ने डेरा जमा लिया। क्योंकि उसी समय अर्तामोनोव ने यकायक देखा

कि वह आदमी ठीक उसके सामने बैठा है, जो वास्तव में दोषी है, जो उसे अलेक्सी या किसी अन्य चतुर आदमी की तरह पूरे आत्मविश्वास से जीवन-पथ पर आगे बढ़ने से रोकता है। उसे रोकनेवाला आदमी चौड़े मुख का था, उसके दाढ़ी थी और वह समावार के पीछे ठीक उसके सामने ख़ामोश बैठा था। अपने बायें हाथ से वह दाढ़ी पकड़े हुए था और उसकी ठोढ़ी हथेली पर रखी थी। उसने शोकपूर्ण दृष्टि से प्योत्र अर्तामोनोव की ओर ताका, मानो सदा के लिए उससे विदा ले रहा हो, पर साथ ही उस पर दया कर रहा हो, उसकी भर्त्सना कर रहा हो। उसकी ओर घूरते हुए वह रोने लगा और हृदय में व्याप्त विष के आँसू उसकी लाल डोरे पड़ी आँखों से टपकने लगे। एक बड़ी-सी मक्खी उसकी बाईं आँख के पास दाढ़ी के किनारे भिनभिन कर रही थी। अब वह उसके मुख पर रेंगने लगी, मानो वह एक शव हो। वह कनपटी पर पहुँची, फिर माथे की ओर बढ़ गई और एक भौंह पर रुककर उसकी आँख में झाँकने लगी।

"हूँ, तुम निकम्मे हो।" अर्तामोनोव ने अपने शत्रु से कहा। लेकिन उसका शत्रु न हिला न डुला, केवल उसके ओंठ किंचित हिलकर रह गये।

"ढाड़ मारकर रो रहे हो?" प्योत्र अर्तामोनोव ख़ुशी से चिल्लाया। "मुझे कीचड़ में फँसा दिया तुमने, गन्दे कुत्ते, और अब ढाड़ मारकर रो रहे हो! अपनी करनी पर पश्चात्ताप हो रहा है तुम्हें? उह!"

मेज़ पर से एक बोतल उठाकर उसने अपनी पूरी शक्ति से उस गंजे स्थान पर दे मारी, जो उसके शत्रु की खोपड़ी पर दिखाई देने लग गया था।

दर्पण के टूटने की आवाज़ और मेज़ पर उलटी-पलटी तश्तरियों की झनकार और समावार के गिरने के धमाके को सुनकर लोग भागे-भागे कमरे में घुस आये। ये लोग संख्या में अधिक तो नहीं थे, लेकिन उनमें से हर एक दो हिस्सों में बँट जाता था, और बढ़ता और फैलता हुआ नज़र आता था। कानी बुढ़िया ज़मीन से समावार उठाने के लिए झुकी, पर साथ ही वह सीधी खड़ी भी दिखाई दे रही थी।

फ़र्श पर बैठते हुए अर्तामोनोव को लोगों के उलाहने सुनाई दिये—

"....आधी रात बीते। जब सब लोग सो रहे हैं।"

"तुमने आईना तोड़ दिया।"

"ऐसा भी कोई करता है ?"

अर्तामोनोव ने अपनी बाँहें आगे पीछे फैलाईं, जैसे तैर रहा हो, फिर कराहा—

"आह, यह मक्खी....!"

दूसरे दिन शाम होते-होते अलेक्सी जल्दी-जल्दी में आया और अपने भाई की ओर ऐसी सहृदय दृष्टि से देखने लगा, जैसे कोई डाक्टर अपने रोगी की ओर या कोचवान अपने घोड़े की ओर देखता है। अपनी मूँछों पर एक विचित्र-सा ब्रुश फेरते हुए उसने कहा—

"तुम्हारे अन्दर शालीनता तो जैसे ख़त्म हो गई है। इस शक्ल को लेकर तुम्हें घर नहीं जाने दिया जा सकता और इसके अतिरिक्त तुम यहाँ पर मेरी सहायता कर सकते हो। प्योत्र, तुम्हें अपनी दाढ़ी छँटवानी पड़ेगी और अपने लिए नये जूते ख़रीदने होंगे। तुम्हारे जूते तो किसी कोचवान-जैसे दीखते हैं।"

अपने दाँतों को भींचे हुए प्योत्र अर्तामोनोव को एक पराजित की तरह अलेक्सी के पीछे-पीछे नाई की दुकान तक जाना पड़ा। वहाँ अलेक्सी ने नाई को कठोर आदेश सुना दिए कि बालों और दाढ़ी में से कितनी-कितनी छँटाई होनी चाहिए। इसके बाद प्योत्र को उसके साथ जूते की दूकान पर जाना पड़ा, जहाँ स्वयं अलेक्सी ने उसके लिए जूता पसन्द किया। यह सब हो जाने पर जब प्योत्र ने शीशे में देखा तो उसे लगा कि वह एक क्लर्क-सा दीखने लगा है। नये जूते भी पंजे में तंग थे। पर वह कुछ न बोला और अपने को यही विश्वास दिलाता रहा कि अलेक्सी की बात ही ठीक है। बाल कटवाना और नये जूते पहनना—यह सब ज़रूरी था। संक्षेप में, अब समय आ गया था कि अपना होश सँभाले और शराब के नशे से उत्पन्न मन को यन्त्रणा देनेवाले उन धुँधले विचारों से मुक्ति पा जाये, जो उसके हृदय पर इतना दारुण बोझ डालकर उसे दबा रहे थे।

किन्तु अपने मस्तिष्क में छाई धुंध, और अपने विषाक्त और रिक्त शरीर में भरी थकान के बीच, अपने भाई को देखकर उसके मन में रह-रहकर ईर्षा और आदर, गुप्त मनोरंजन और कटु क्षोभ से मिश्रित एक विचित्र भाव जग उठता। यह दुर्बल-काय, क्षिप्र-चरण, तीक्ष्ण दृष्टिवाला आदमी, जो अपना बेंत घुमा-घुमा-

कर व्यापार के जूए में अधिक से अधिक भाग लेने की अमिट प्यास के उत्ताप से चारों ओर जैसे धूँआ और चिनगारियाँ बिखेर रहा था। मेले की सबसे अच्छी सरायों के प्राइवेट कमरों में प्रमुख व्यापारियों के साथ भोजन करते हुए प्योत्र ने देखा कि अलेक्सी बड़े सहज ढंग से एक पेशेवर मसखरे की तरह अपने चुटकुलों और व्यंगों से इन धनी व्यापारियों का खुलकर मनोरंजन करता है। उसे लगा कि ये व्यापारी शायद उसके मसखरेपन की ओर ध्यान नहीं देते। वे स्पष्टतया अलेक्सी को पसन्द करते, उसका आदर करते और ध्यानपूर्वक उसकी बातों को सुनते थे।

कोमोलोव नाम के एक भीमकाय, घनी दाढ़ीवाले सूती कपड़े के उद्योगपति ने अलेक्सी की ओर अपनी सुनहरी उँगली उठाई। पर उसका स्वर स्नेहपूर्ण था और वह अपनी बैलों जैसी आँखों को मटकाकर प्रत्येक शब्द के बाद ओठों को ज़ोर से चाटकर बोल रहा था—

"तुम बड़े होशियार हो, अल्योशा! पुरानी लोमड़ी की तरह चालाक हो! तुमने तो मुझे भी मात कर दिया!"

"येरमोलाई इवानोविच्!" अलेक्सी जैसे आत्मविभोर होकर चिल्लाया। "यह तो प्रतियोगिता है—ठीक है न?"

"तुम ठीक कहते हो। अपनी आँखें खोलकर चलो और हमेशा अपना तुरुप का इक्का लगाओ!"

"यरमोलाई इवानोविच, मैं अभी सीख रहा हूँ!"

कोमोलोव ने अपना सिर हिलाया।

"तुम्हें सीखना चाहिए।"

"सज्जनों!" अलेक्सी ने घोषणा की—उसके स्वर में अभी तक आत्मोल्लास भरा था, किन्तु साथ ही उकसानेवाली उत्तेजना भी थी, "मेरा बेटा मिरोन—बड़ा होशियार लड़का है—इंजीनियर बनने जा रहा है। उसने मुझे बताया कि किसी समय विश्व-विख्यात नगर सिराक्यूज़ में एक बुद्धिमान आदमी रहता था। उसने अपने राजा से कहा—मुझे खड़ा होने के लिए कोई चीज़ दे दो और फिर देखो मैं तुम्हारे लिए सारी पृथ्वी को उलटकर रख दूँगा।"

"मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हो!"

" 'उलटकर रख दूँगा' उसने कहा था ! सज्जनों ! हमारी सम्पत्ति, हमारे उद्योग को खड़ा रखने के लिए एक ही चीज़ है—रूबल ! हमें बुद्धिमान लोगों की ज़रूरत नहीं, जो हमारे लिए चीज़ों को उलटकर रख दें। हम स्वयं काफ़ी बुद्धिमान हैं। हमें बस एक ही चीज़ की ज़रूरत है—विभिन्न प्रकार के प्रबन्ध-कर्त्ताओं या कर्मचारियों की ! सज्जनों ! ज़मीन्दार-वर्ग पतनोन्मुख है। वे हमारे मार्ग में रोड़ा बनकर नहीं अड़ सकते। फिर भी हमें सारे दफ़्तरों में, सारे महत्व-पूर्ण पदों पर अपने ही आदमी चाहिए, ऐसे आदमी, जो व्यापारी-वर्ग से निकले हों और जो हमारे व्यापार को ठीक-ठीक समझते हों—बस, इतना ही ज़रूरी है !"

सफ़ेद बालोंवाले बड़े-बूढ़ों, गंजी खोपड़ियोंवाले और ख़ूब खाते-पीते मोटे तुन्दियल—सभी लोगों ने हर्षातिरेक से अपनी सहमति प्रकट की—

"तुम ठीक कहते हो !"

उनमें से एक ने—कमीशन एजेन्ट लोसीफ़ ने, जो तीखी नाक और हड्डि-यल, एक दुर्बल-काय बुड्ढा आदमी था—नम्रतापूर्वक दाँत निपोरते हुए कहा:

"अलेक्सी इलिच का दिमाग़ गोंद की तरह है—हर चीज़ उससे चिपक जाती है ! और उन्हें जो आता है उसका खुलकर इस्तेमाल करते हैं ! यह लो, शराब का यह दौर उनकी सेहत के लिये !"

गिलास उठ गये और अलेक्सी ने उन सबके गिलासों से अपना गिलास खनकाया। कोमोलोव के विशाल कन्धे को थपथपाने के लिये अपना नन्हा-सा हाथ बढ़ाते हुए लोसीफ़ बोला—

"हमारे बीच अब चतुर आदमी भी पैदा होने लगे हैं।"

"सो तो हमेशा से ही पैदा होते रहे हैं।" कोमोलोव ने गर्व-स्फीत स्वर में हुंकारा। "मेरे बाप ने जहाज़ के कुली की हैसियत से ज़िन्दगी शुरू की थी और फिर देखो वे कितने ऊँचे चढ़ गये।"

"लोगों का कहना है कि तुम्हारे बाप ने एक धनी आर्मीनी सेठ के पेट में छुरा भोंक कर अपनी उन्नति का मार्ग तैयार किया था।" लोसीफ़ ने खिल-खिलाकर कहा। घनी दाढ़ीवाले कपड़े के व्यापारी ने अपने अट्टहास से कमरा गुँजा दिया, फिर वह बोला—

"वे झूठ बोलते हैं ! लोग वेवकूफ हैं, इसलिए उनका कहना है कि अगर तुम पर भाग्य मुस्कराया है तो इसका अर्थ है कि तुमने ज़रूर पाप किया है। ऐसी गंदी अफ़वाहें तो तुम्हारे बारे में भी फैली हुई हैं, कुज्या !"

"वह तो है ही।" लोसीव ने आह भरते हुए कहा—"अफवाहें ! वे तो उड़ा ही करती हैं !"

प्योत्र अर्तामोनोव बैठा सुनता रहा। वह केवल बीच बीच में हुंकारी-सी भर देता था। वह ख़ूब खाने में लगा था और यथासंभव कम से कम पी रहा था। निराशा से उसने सोचा कि वह इन लोगों से किसी भिन्न नस्ल का जानवर है। उसे ज्ञात था कि ये सब पहले किसान थे और इन सब के जीवन में उसे ऐसे महान् कृतित्वों की झाँकी मिली, जिनमें जहाज़ी लुटेरों की-सी उद्दाम साहसिकता थी और जो उसके पिता की याद दिलाती थीं। पिता इन लोगों की हमजोली के थे, वे व्यापार, और व्यभिचार और शराबख़ोरी दोनों में इनका भरपूर साथ दे सकते थे। वे भी शायद इन लोगों की तरह आँखें मूँदकर शराब पर शराब पीते और व्यभिचार करते, और मोमबत्ती की लौ में छीलन की तरह नोट जलाते। इन लोगों के लिए धन वास्तव में छीलन के समान है जो धरती के तल से, एक दूसरे से, किसानों से निरन्तर, अथक रूप से जो हाथ पड़ता है, छीलते और कुतरते रहते हैं।

इन बड़े-बड़े धनी सेठों से अलेक्सी कुछ भिन्न था और ऐसे भी क्षण आते जब अपनी दुर्भावना के बावजूद प्योत्र को लगता कि उसका भाई इन सब लोगों से कहीं ज़्यादा तीक्ष्ण-बुद्धि का, होशियार, यहाँ तक कि ख़तरनाक भी है।

"सज्जनों!" अलेक्सी उन्मत्त होकर चिल्लाया, मानो उस पर भूत सवार हो। "हमारी अनन्त, अक्षय श्रम-शक्ति की ओर देखो, हमारे लाखों किसानों की ओर ! वे ही काम करते हैं और वे ही माल ख़रीदते हैं। इतनी अधिक संख्या में तुम्हें किसान और कहाँ मिलेंगे ? कहीं नहीं ! और हमें विदेशियों की क़तई ज़रूरत नहीं है। हम ख़ुद अपना प्रबन्ध सँभाल लेंगे !"

"ठीक कहते हो, तुम !" शराब के नशे में आधे चूर, ऊँचे ऊँचे स्वर से बोलनेवालों की मंडली ने सहमति प्रकट की।

विदेशों से आनेवाले माल पर अधिक से अधिक आयात-कर लगाने की

ज़रूरत, जमीन्दारों की सम्पत्ति को ख़रीद लेने की ज़रूरत और उच्चवर्ग के ज़मींदारों के लिये विशेष प्रकार के बैंकों के खोले जाने से जो हानि हो रही है—इन सब बातों को लेकर वह विस्तार से बोलता रहा। ऐसा लगता था जैसे उसे सब कुछ आता है और प्योत्र अर्तामोनोव को यह देख-देखकर आश्चर्य हो रहा था कि उसका भाई जो कुछ कहता, उससे सारे लोग पूरे उत्साह से तुरन्त सहमत हो जाते थे।

"निकिता ने ठीक ही कहा था। अलेक्सी को जीना आता है।" प्योत्र ने ईर्षालु मन से सोचा।

अपने दुर्बल स्वास्थ्य के बावजूद अलेक्सी भी रंगरेलियों में भाग लेता था। उसकी भी एक रखैल थी, जो शायद काफ़ी दिनों से स्थायी रूप से उसकी होकर ही रहती थी। वह मास्को की रहनेवाली थी और मेले में उसने एक संगीत मंडली का आयोजन कर रखा था। वह एक विशाल-काय स्त्री थी, पर उसके शरीर की गठन सुन्दर थी और उसका स्वर मधुर, और आँखें प्रफुल्ल और चमकीली थीं। उसकी उम्र लगभग चालीस थी, लेकिन देखने में वह तीस से भी कम लगती थी—उसकी मलाई जैसी कोमल त्वचा और शिराओं में बहनेवाले गरम रक्त को देखकर, जिससे उसके कपोल रह-रहकर लाल हो जाते थे, यही अनुमान होता था।—

"अल्योशा, मेरे शिकरे।" वह अपने लोमड़ी जैसे तीखे दाँत खोलकर कहती। अलेक्सी उसकी विशाल काया में इस तरह छिप जाता जैसे बालक अपनी माँ की बग़ल में छिप जाता है।

इस स्त्री को यह तो मालूम ही होगा कि अलेक्सी उसकी मंडली की अन्य लड़कियों के साथ भी साँठ-गाँठ करने से बाज़ नहीं आता। उसने यह बात ज़रूर देखी ही होगी। फिर भी उसका व्यवहार अलेक्सी के प्रति सदा मित्रतापूर्ण ही रहता। प्योत्र ने अक्सर अपने भाई को अन्य लोगों और अपने मामलों के बारे में इस स्त्री की सलाह लेते हुए सुना था—यह एक आश्चर्यजनक बात थी, और उसे अपने पिता और उल्याना बैमाकोवा के सम्बन्ध की याद दिला देती थी।

"शैतान!" प्योत्र ने अपने भाई के जीवन पर विचार करते हुए सोचा।

यहाँ तक कि अलेक्सी ने शरारत करने के लिये जो युक्ति सोच निकाली, वह भी एक भिन्न प्रकार की अनोखी थी। मेयर नाम के एक मोटे-थल्ले जर्मन विदूषक ने सर्कस में एक सिखाया-पढ़ाया सूअर दिखाया। यह सूअर एक लम्बा फ्रॉक कोट पहने, ऊँचा हैट लगाए और पैरों में पेटेन्ट चमड़े के जूते बाँधे, ठीक एक रूसी व्यापारी की वेष-भूषा और आकृति बनाए अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा होकर चलते दिखाया गया था। दर्शकों को ख़ूब मज़ा आया, यहाँ तक कि व्यापारी-गण भी ठहाका मार के हँसते रहे। केवल अलेक्सी नहीं हँसा! उसे बुरा लगा और उसने अपने कुछ मित्रों को इसके लिये राज़ी कर लिया कि इस जानवर को ग़ायब कर दिया जाय। वे अस्तबल के रखवाले को रिश्वत देकर सूअर को चुरा लाये। फिर व्यापारी वर्ग ने उसे बार्बेन्को होटल के चतुर बावर्ची द्वारा भिन्न-भिन्न क़िस्म की पकाई चीज़ों की रकाबियों में से ले-लेकर गंभीरतापूर्वक जमकर खाया। प्योत्र अर्तामोनोव ने बाद में यह अफ़वाह सुनी कि दुःख के मारे उस विदूषक ने फाँसी लगा ली थी। *अलेक्सी में पैदा होनेवाली इन नई प्रवृत्तियों को मेले में यकायक देख करके प्योत्र के मन में अनेक आकुल विचार जग गये।

"तेज़ आदमी है। हृदयहीन है। वह तो मेरी ओर एक बार बिना देखे ही मुझे भी बर्बाद कर सकता है। किसी लालच के वश नहीं—केवल घटनाओं के साथ क़दम मिलाकर चलने में ही।"

इस आशंका की अनुभूति ने उसको गंभीर कर दिया। वह सुस्थिर हो गया और अकेला ही घर को लौटा, क्योंकि अलेक्सी मास्को चला गया था। सितम्बर का बरसाती और आँधी का महीना था, मेह से गीली धरती पर दबाकर ज़ोर-ज़ोर से टापें रखते हुए डाक की गाड़ी के घोड़े द्रियामोव नगर के बाक़ी रास्ते पर ख़ुशी से बढ़े जा रहे थे। सड़क के दोनों ओर खड़े सरो के वृक्ष ऐसी सीधी क़तारों में फैले थे, मानों सन्तरी खड़े इस सँकरी और कीचड़ भरी सड़क की रक्षा कर रहे हों। आसमान में पतझर के भूरे-भूरे बादल छाये थे और वैसी ही

*पी० डी० बोबोरीकिन ने अपने समाचार-पत्र, 'रूसी कूरियर' में यह ख़बर छापी थी। सन् १८८० की घटना है।

भूरी-भूरी नीरसता प्योत्र के मन में भरी थी। उसे लग रहा था, जैसे वह अपने किसी साथी को दफ़नाकर लौटा है, ऐसे साथी को जो अत्यन्त निकट तो था, पर जिसका होना उसके लिये भार बन गया था। मृतक के लिये उसके मन में दया उमड़ती थी, लेकिन साथ ही यह जानकर ख़ुशी भी हो रही थी कि वह उसे अब कभी न मिलेगा। वह अपनी अस्पष्ट माँगों से उसके मन की शान्ति न छीन लिया करेगा। वह उन चीजों के कारण, जिन्होंने उसके जीवन को विषमय बना दिया है और उसे वास्तव में जीवित आदमी की ज़िन्दगी बसर करने से रोकती हैं, उसे अपनी मूक भर्त्सना का शिकार न बना सकेगा।

"मेरा काम तो व्यापार है, बस और कुछ नहीं।" उसने अपने आपसे कहा। "काम ही हर आदमी को ज़िन्दा रखता है, हाँ।"

पतझर की सुबह के मोतिया झुटपुटे में उठकर प्योत्र अर्तामोनोव मिल की सीटी सुनता। आधे घंटे बाद श्रम की दुर्दमनीय, शक्तिशाली, किन्तु एकरस ठन-ठन, कट-कट, खट-खट शुरू हो जाती। प्रातःकाल से लेकर सन्ध्या को देर-तक किसान मर्द और औरतें कारख़ाने में फ़्लैक्स तैयार करते हुए द्वारों पर खड़े बोलते-चिल्लाते रहते। ऍकार्डियन बाजे के चीख़ते हुए सुरों में सुर मिलाकर लोग वतरुशा के किनारे की सराय में शराब के नशे से चूर होकर सुर मिलाकर पागलों की तरह गाते। बग़ीचे में तिखोन व्यालोव हर समय ही हाथ में झाड़ू, फावड़ा या कुल्हाड़ी पकड़े मशीन की तरह अपने काम में लगा इधर से उधर आता-जाता दिखाई देता। वह अपने साथियों पर कठोर दृष्टि उठाकर देखता—तिखोन व्यालोव हर समय ही बिना किसी जल्दी के झाड़ते, खोदते, लकड़ी काटते या किसानों और मज़दूरों को भारी स्वर से डाँटते-फटकारते नज़र आता। सेराफ़ीम कभी-कभी उधर से निकलता। वह हमेशा नीले और साफ़ सुथरे कपड़े पहने रहता। घर में नतालिया थी, वह भी एक मशीन की तरह अपने काम में लगी रहती। नतालिया बड़ी प्रसन्न थी कि उसका पति मेले से उसके लिये बढ़िया-बढ़िया उपहार लाया है। प्योत्र की ख़ामोशी और आन्तरिक शान्ति को देखकर वह और भी अधिक प्रसन्न थी। हर चीज़ अपने आप बिना किसी कठिनाई के चल रही थी। लगता था कि सब चीज़ों ने एक स्थायी सामंजस्य पा लिया है। मिल, मज़दूर, यहाँ तक कि घोड़े भी—सब इस तरह काम में लगे

थे कि लगता था मानो चिरकाल तक ऐसे ही चलते जाने के लिये एक सूत्र में बँध गये हों। और वायु के झोंकों से उड़ाये गये बादलों की तरह महीनें पर महीने बीतते गये। वर्षों की संख्या बढ़ती गई।

बैल की तरह सिर झुकाए प्योत्र अर्तामोनोव दुकानों के सामने से टहलता हुआ गुज़रता या मज़दूर-बस्ती की सड़क पर चहलक़दमी करता, जिससे मिल के बच्चे भय से काँप उठते और हर दिशा में उसे एक नये और विचित्र परिवर्तन का अनुभव होता कि इस विशाल उद्योग-धन्धे में वह बिलकुल अनावश्यक हो गया है, किसी काम का नहीं रहा, केवल एक तटस्थ द्रष्टा बनकर रह गया है। उसे यह जानकर सन्तोष था कि याकोव को व्यापार की बातों का ज्ञान हो गया है और अब वह उसमें गहरी दिलचस्पी लेने लगा है। याकोव के व्यवहार ने पिता के विचारों को बड़े बेटे की ओर भटकने से रोक दिया—इससे भी अधिक इलिया के प्रति उसके क्रोध और क्षोभ को भी कुछ शान्त कर दिया।

"चलो, तुम्हारे साथ भी निभा लूँगा, विशेषज्ञ विद्वान! तुम अपना अध्ययन जारी रख सकते हो।"

गदराये शरीर, सेब-जैसे लाल गालों और आत्मीय दृष्टि से चमकती हुई उत्फुल्ल आँखोंवाला याकोव अपने गोलमटोल शरीर को बड़ी सावधानी और गम्भीरता से सीधा करके चलता। उसे पास में देखकर एक कबूतर की याद आ जाती थी, किन्तु दूर से वह बड़ा चुस्त और होशियार आदमी दिखाई देता था। मिल में काम करनेवाली छोकरियाँ उसे देखकर मुस्करा देतीं और जब वह उनसे बातें करने के लिए रुकता या उनके आगे से फुदककर एक किनारे हटता तो उसकी आँखें नुकीली हो जातीं और उनमें से वासना झलकने लगती। उस समय वह अपनी दिलचस्पी को शालीनता या शिष्टाचार के आवरण में ढँकने का यत्न न करता। पिता अपने कान की लौर को खींचते हुए अपने कण्ठ में ही हँसता और सोचता—

"अरे, मूर्ख बालक! पाउला सामने पड़ जाय तो क्या हो?"

उसे यह देखकर ख़ुशी होती कि अलेक्सी के घर जाने पर याकोव कभी भी तो उसके बेटे मिरोन और उसके फूहड़, उद्विग्न साथी गोरित्स्वेतोव में निरन्तर चलनेवाली बहसों में भाग न लेता। मिरोन की बाह्य वेश-भूषा और शकल में एक

व्यापारी होने का कोई चिह्न भी न बाक़ी रहा था। दुर्बल शरीर, बड़ी नाक, आँखों पर चश्मा, पतलून और चमचमाते हुए पीतल के बटनोंवाला जैकेट, जिसके कन्धे पर कोई न कोई चिह्न हमेशा टँका रहता—वह देखने में शान्ति का दूत दिखाई देता, एक सैनिक की तरह तनकर चलता और रोबदार, अधिकारपूर्ण स्वर में बोलता। प्योत्र इतना तो समझता था कि उसके भतीजे की बातचीत में चातुर्य है, लेकिन न जाने क्यों मिरोन उसे कभी न भाया।

"अरे भाई, कहता तो हूँ कि यह निर्बलता का दर्शन है।" मिरोन अपने दोनों हाथ जैकेट की जेबों में खोंस और दोनों कोहनियों को एक तीखे कोण में बाहर की ओर निकालकर एक उपदेशक के स्वर में कहता। "इस ढंग से सोचने की आदत निर्बलता के कारण ही पड़ती है, यह न जानने के कारण कि कोई बात क्यों और कैसे होती है।"

प्योत्र अर्तामोनोव को लगा कि गोरित्स्वेतोव भी बुद्धिमानी की बातें करता है, मूर्खता की नहीं। गोरित्स्वेतोव नाटे क़द का सूक्ष्म-सा बालक था। उसके विद्यार्थियों-जैसे कोट और उसके नीचे की काली कमीज़ में बटन कभी साबित न होते। उसके बाल बिखरे रहते और उसकी आँखें सूजी-सी रहतीं, मानो उसे कई दिन से सोने को नहीं मिला है और उसका साँवला मुँह मुहासों से विकृत बना रहता। बातचीत में मिरोन पर आक्रमण करते हुए वह मुँह बिचका-बिचकाकर चिल्लाता और अपनी बात के बीच किसी की न सुनता—

"तुम अपने उद्देश्य को पूरा कर लोगे। तुम्हारे कारख़ानों की सीटियाँ सुनकर ही अब आकाश में सूरज उगा करेगा। तुम्हारी मशीनों की आवाज़ पर धुंध से भरा हुआ दिन दलदलों और जंगलों में से बाहर निकल आया करेगा, लेकिन तुम मानवता का क्या करोगे?"

मिरोन अपनी भौंहों को उठाकर किंचित रोष से देखता। अपने चश्मे को ठीक करते हुए वह बीसवीं बार रूखे स्वर में धीरे से कहता—

"यह निर्बलों का दर्शन है, कविता है! अरे भाई, यह तो निरर्थक बकवास है, शून्य कल्पना की बहक है। जीवन एक संघर्ष है। कविता और विक्षिप्तता—इन दोनों की इसमें कोई जगह नहीं—वे हास्यास्पद हैं।

साधारण कोटि की बातचीत में इन दोनों के शब्द ऐसे भिन्न दीखते, जैसे

श्याम रंग के फाख़तों के बीच सफ़ेद अलग दीखती हैं। प्योत्र अर्तामोनोव ने मन ही मन सोचा—

"ज़िन्दगी इसी तरह आगे बढ़ती है—नये पंछी, नये गाने।"

उनकी बहस के मूल तत्त्व को वह अस्पष्ट रूप से ही समझ सका था। याकोव की ओर देखकर उसे अपार सन्तोष हुआ कि उसका पुत्र अपनी विद्रूप-भरी मुस्कान को छिपाने के लिए अपने ऊपरी होंठ के बालों को बड़े यत्न से मलकर ठीक-ठिकाने लगा रहा है।

"ऐसा!" प्योत्र ने सोचा। "और इलिया होता तो क्या कहता?"

गोरित्स्वेतोव चिल्लाया—

"जब तुम लोगों को लोहे की ज़ंजीरों में बाँध दोगे, जब तुम आदमी को मशीन का ग़ुलाम बना दोगे....।"

लेकिन मिरोन ने बीच में ही अपनी नाक को ज़ोर का झटका देकर उत्तर दिया—

"तुम्हारा यह आदमी, जिसके बारे में तुम इतना चिन्तित हो रहे हो, बिलकुल सुस्त और निकम्मा है। उसे अगर इस बात का चेत नहीं हुआ कि उद्योग-धन्धों के विकास से ही उसका उद्धार सम्भव है, तो वह सदा के लिए और जल्द ही मिट जायगा।"

"इन दोनों में से किसकी बात ठीक है? किसकी अधिक अच्छी है?" प्योत्र अर्तामोनोव आश्चर्यचकित हो सोचता रहा।

गोरित्स्वेतोव तो उसे अपने भतीजे से भी कम भाता था। वह कुछ कमज़ोर क़िस्म का आदमी था, अविश्वसनीय-सा लगता था। वह ज़रूर किसी बात से डरता था, जिसके कारण वह इतना चिल्ला-चिल्लाकर बातें करता था। शराबी आदमी की तरह उसे भी शिष्टाचार बरतना तो आता ही न था। वह अपने मेज़बानों के सामने बैठकर छुरी-काटों को उलटता-पलटता रहता, जल्दी-जल्दी भोजन करता, बिलकुल जंगली की तरह, कभी अपने ओंठ जला लेता, तो कभी एक बड़ा कौर बिना चबाये गले में फँसा बैठता। अलेक्सी की तरह उसके अन्दर भी झटकों के साथ आगे बढ़ने का गुण था, ऐसी चीज़ जो किसी भी प्रकार वांछित न थी, और जो प्योत्र को बेहूदा और कटुकर लगती थी। उसकी लाल

आँखों की काली पुतलियाँ मानो अन्ध दृष्टि से घूरती थीं। प्योत्र से हाथ मिलाने के लिए वह अभिनन्दन का एक भी शब्द कहे बिना अपना गरम-गरम रूखा हाथ उद्दंडतापूर्वक आगे बढ़ाता और फिर झटके के साथ पीछे खींच लेता। कुल मिलाकर वह एक निकम्मा-सा व्यर्थ का आदमी था और यह समझना कठिन था कि मिरोन को उसके अन्दर कौन-से ऐसे गुण दिखाई देते थे, जिनके कारण वह उसका इतना घनिष्ठ था।

"बात बंद करके खाना खाओ, स्त्योपा।" ओल्गा उससे कहती और वह बड़े-बड़े शब्दों में उत्तर देता—

"जब घातक मानवद्रोह का प्रतिपादन किया जा रहा हो, तब मुझसे नहीं खाया जाता!"

प्योत्र को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अलेक्सी इन दोनों विद्यार्थियों की बहसों को चुपचाप ध्यान से सुनता रहता था और शायद ही कभी अपने पुत्र के समर्थन में दो-एक शब्द कह देता था।

"यह ठीक है! जहाँ शक्ति होती है, वहीं सत्ता भी होती है। और शक्ति उद्योगपतियों के पास है, इसलिए....।"

भोजन और चाय समाप्त होने के बाद ओल्गा काढ़ने का काम लेकर खिड़की के पास बैठ जाती और चुपचाप कपड़े पर सुन्दर, तेज़, चमकते रंगों के फूल काढ़ती रहती। उसकी कनपटियों पर अब झुर्रियाँ पड़ गई थीं, जो उसकी आँखों की कोर से फैलती थीं। उसकी नाक की कोर उसके भारी चश्मे के बोझ से लाल पड़ रही थी। प्योत्र को अपने घर की अपेक्षा भाई के घर में अधिक सुख मिलता। यहाँ समय दिलचस्पी के साथ कट जाता और बढ़िया शराब का एक गिलास तो कभी भी दुर्लभ न होता।

याकोव के साथ घर लौटते हुए प्योत्र पूछता—

"तुम्हारी समझ में कुछ आया, ये लोग किस विषय पर बहस कर रहे थे?"

"हाँ" पुत्र संक्षेप में उत्तर देता।

फिर कड़े शब्दों में प्योत्र पूछ बैठता, ताकि बेटा यह न भाँप ले कि वह समझ पाने में असमर्थ रहा है—

"अच्छा, तो फिर क्या बात थी?"

याकोव के उत्तर हमेशा संक्षिप्त और अनमने होते; किन्तु फिर भी स्पष्ट समझ में आते। उसके अनुसार मिरोन का कहना यह था कि रूस को वैसे ही रहना चाहिए, जैसे और बाक़ी योरप रहता है। इसके विपरीत गोरित्स्वेतोव का विश्वास है कि रूस को स्वयं अपने ही मार्ग पर चलना चाहिए। इस मौक़े पर बेटे को यह दिखाने के लिए कि इस विषय में बाप की भी निश्चित धारणाएँ हैं, प्योत्र अर्तामोनोव प्रभावपूर्ण ढंग से घोषणा करता—

"विदेशियों की दशा यदि हमसे अच्छी होती तो वे यहाँ घुसने की चेष्टाएँ न करते।"

किन्तु यह विचार तो अलेक्सी से चुराया हुआ था। उसके पास अपने विचार थे ही नहीं। प्योत्र अर्तामोनोव क्षोभ से खीझ उठा और न जाने क्यों यह खीझ और भी बढ़ गई, जब पुत्र ने कहा—

"हम अपनी योग्यता की डींग हाँके बिना, बिना बकवास के भी अपना काम चला सकते हैं।"

प्योत्र अर्तामोनोव ने बड़बड़ाकर उत्तर दिया—

"मेरा भी ऐसा ही ख़्याल है, हम अपना काम चला सकते हैं।"

उसे अक्सर ही यह अनुभव होता कि उसके दिल को एक छोटी-सी चोट पहुँच गई है या कि वह आश्चर्यचकित-सा हो गया है। उसे लगा कि सभी लोग उसे कोहनी मार-मारकर किनारे की ओर ठेल रहे थे, ताकि वह केवल एक तटस्थ द्रष्टा बनकर रह जाय, जिसे विवश होकर सब कुछ अपनी आँखों देखना पड़े और हर बात पर सोचना-विचारना पड़े। उसके इर्द-गिर्द की हर चीज़ में एक अदृष्ट; किन्तु तीव्र परिवर्तन हो रहा था। हर जगह, शब्दों में और कार्यों में, कोई नया और निरंतर उद्विग्न रहनेवाला तत्व आ मिला था, जो अपनी सत्ता को बरबस स्वीकृत करा रहा था। एक दिन चाय पीते समय ओल्गा ने कहा—

"सत्य तभी है, जब आपकी आत्मा परिपूर्ण हो और आपको कुछ पाने की लालसा न रहे।"

"ठीक है।" प्योत्र ने हामी भरी।

किन्तु मिरोन का चश्मा चमक उठा। उसने अपनी माँ की बात में संशोधन किया—

"सत्य यह नहीं है, यह तो मृत्यु है। सत्य तो चीज़ों के करने में है, क्रियाशीलता में है।"

चलते समय प्योत्र ने ओल्गा से कहा—

"तुम्हारा बेटा तुम्हारे साथ बहुत मुँहफट है।"

"नहीं तो !"

"मैं तो देखता हूँ कि वह है।"

"वह मुझसे अधिक होशियार है।" ओल्गा ने उत्तर दिया, "आख़िर मैं बेपढ़ी स्त्री हूँ और अक्सर मूर्खतापूर्ण बातें कर बैठती हूँ। और जो हो, हमारे बच्चे हमसे अधिक योग्य तो हैं ही।"

इस बात को तो अर्तामोनोव कभी भी स्वीकार करने को तैयार न था। उसने हँसकर उत्तर दिया—

"तुम्हारे मूर्ख होने में तो कोई सन्देह नहीं। हमारे बुजुर्ग बहुत सयाने थे। उनका कहना था --"बेटा खाये रोटी तो बेटी खाये बोटी। समझीं ?"

ओल्गा के मुख से बच्चों की बुद्धिमत्ता की बातें सुनकर प्योत्र खीझ उठा था। हो न हो, उसका संकेत इलिया को ओर था। प्योत्र यह जानते हुए भी कि इलिया अलेक्सी से पैसे लेता है और मिरोन उससे पत्र-व्यवहार करता है, चुप रहता। स्वाभिमान के कारण उसने इलिया की ख़ैर-ख़बर भी न पूछी थी। ओल्गा इस बात को जानती थी और जानबूझ कर इलिया का हाल-चाल बड़ी चतुराई से बता देती। वह जानता था कि इलिया आर्केंजिल में है, जहाँ से वह विदेश चला जायगा।

"ठीक है, जहाँ उसकी इच्छा हो, वहीं रहे। जब उसे चेत आयेगा, तब ख़ुद ही समझ जायगा कि वह कितना बड़ा मूर्ख था।"

कभी-कभी उसे अपने बेटे की ढिठाई पर आश्चर्य होता। हर कोई बुद्धिमान बन रहा है। फिर इलिया ही क्यों पथभ्रष्ट हो गया है ?

भाई के घर जाने पर अक्सर प्योत्र की मुठभेड़ वीरा पोपोवा और उसकी बेटी से हो जाती। पोपोवा की सौम्य मुद्रा सदैव की भाँति सुन्दर थी। वह प्योत्र से बहुत कम बात करती, और अगर कभी करती भी तो ठीक उसी स्वर में, जिसमें इलिया के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करने के बाद प्योत्र करता था। पोपोवा

को देखते ही उसकी बेचैनी बढ़ जाती। शान्त क्षणों में पोपोवा की प्रतिभा मानस-पटल पर उभर आती; लेकिन आश्चर्य के सिवा प्योत्र के मन में और कोई भाव न जागृत होता। कैसी विचित्र बात है ! एक व्यक्ति से आप प्रसन्न होते हैं, उसके विषय में हर समय सोचते रहते हैं, लेकिन क्यों ? इसका उत्तर नहीं दिया जा सकता। पोपोवा से बात करना प्योत्र के लिये किसी गूँगे और बहरे आदमी से बात करने के बराबर था।

सब ओर परिवर्तन हो रहा था। यहाँ तक कि कारखाने के मज़दूर भी दिन प्रतिदिन जड़बुद्धि, क्षय-पीड़ित और कर्कश होते जा रहे थे—और उनकी औरतों की ज़बानें तेज़ हो गई थीं। बस्ती का शोर-ग़ुल पहले की अपेक्षा अधिक अप्रिय होता जा रहा था—सन्ध्या के समय लोग भेड़ियों की तरह ग़ुर्राते थे—ऐसा लगता मानो सड़क का कण-कण क्रोध से फुफकार रहा हो।

मज़दूरों में एक विचित्र बेचैनी-सी और घुमक्कड़पन की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। नौजवान छोकरे किसी आदमी या काम के प्रति असन्तोष का कोई कारण न होते हुए भी अचानक दफ़्तर में घुसते चले आते और हिसाब चुका देने की माँग करते।

"कहाँ जा रहे हो ?" प्योत्र पूछता।

"कहीं और क़िस्मत आज़माने के लिए।"

"इन्हें कौन-सा घुन खाये जा रहा है।" प्योत्र अपने भाई से पूछता। अलेक्सी उत्तर में कन्धा हिलाकर एक शरारत भरी हँसी हँस देता और कहता कि हर जगह मज़दूरों में असन्तोष फैला हुआ है।

"हमारे मज़दूर तो औरों के मुक़ाबले में भले और शान्त स्वभाव के हैं। सेन्ट पीटर्सबर्ग में तो....हमें आवश्यकता है नये अफ़सरों की, नये पादरियों की।"

इसके बाद अलेक्सी ने और भी बहुत-सी गुस्ताख़ी की बातें की। वे इतनी हास्यास्पद थीं कि बड़े भाई को तुरन्त डाँटना पड़ा।

"यह सब बकवास है। ज़ार से ताक़त छीन लेने से ज़मींदारों का ही फ़ायदा होगा, क्योंकि वे निर्धन होते जा रहे हैं। हमें ताक़त नहीं चाहिए, बिना ताक़त के ही हम धनी हैं। हमारे पिता तो छुट्टी के दिन भी गर्द-ग़ुबार में सने जूते ही पहनते थे। लेकिन तुम हो जो बढ़िया विदेशी जूते और रेशमी टाइयाँ पहनते

हो। हमें ज़ार के चतुर कर्मचारी बनना चाहिए, न कि असन्तुष्ट सूअर। ज़ार ही हमारा कल्पवृक्ष है।"

अलेक्सी ने लापरवाही से नाक-भौं सिकोड़ लिए। इससे प्योत्र के तन-बदन में आग लग गई। प्योत्र यह महसूस करता था कि लोगों की आदतें बिगड़ती जा रही हैं; और नाक-भौं सिकोड़ने की यह नयी आदत भद्दी और मूर्खतापूर्ण है। इनमें से कोई भी बूढ़े बढ़ई सेराफ़ीम की तरह मनोरञ्जक तथा सन्तोषप्रद विनोद में भाग नहीं ले सकता।

बूढ़े सेराफ़ीम के साथ प्योत्र की मित्रता बहुत गाढ़ी हो गई थी। प्योत्र को फिर उदासी के दौरे पड़ने लगे। ऐसे क्षणों में वह शराब पीने के लिए उद्विग्न हो उठता। अलेक्सी के यहाँ पीने में उसे संकोच लगता, क्योंकि वहाँ हर समय अजनबी लोगों का जमघट लगा रहता। साथ ही वह नहीं चाहता था कि पोपोवा उसे नशे में धुत देखे। घर पर उसकी मानसिक दशा को देखकर नतालिया मन मसोस कर रह जाती। प्योत्र की इच्छा उससे लड़ाई-झगड़ा करने की होती, लेकिन नतालिया का व्यवहार उसे निरस्त्र कर देता। उसकी संत्रस्त और भयभीत मुद्रा क्रोध के स्थान पर दया का भाव जगाती और प्योत्र तुरन्त उठकर सेराफ़ीम के घर की ओर चल देता।

"बूढ़े मियाँ लाओ, कुछ पिलाओ।"

विनोदी बढ़ई मुस्कराकर इस प्रस्ताव का स्वागत करता।

"ठीक कहते हो। थके हुए हो और थकना भी स्वाभाविक ही है—गरमियों की धूप की तरह। अच्छा है अपने को फिर ताज़ा कर लो। तुम्हारा काम भी तो साधारण नहीं है।"

वह अपने मालिक के लिये हमेशा बढ़िया शराब छिपाकर रखता। रंग-बिरंगी बोतलें दिखाकर कहता—"यह मेरा आविष्कार है। एक बाँकी-सी विधवा इसे तैयार करती है। चखकर तो देखो। इसमें बर्च की कलियों की सुगन्ध है और बसन्त की ताज़गी है। बढ़िया है?"

और वह एक कुर्सी खींचकर अपनी प्रिय 'शलजम' की शराब की चुस्कियाँ ले-लेकर चहकता रहता।

"हाँ, वह पादरिन है। अभागी बेचारी। उसका हर प्रेमी चोर निकलता

है और वह कम्बख़्त प्रेमियों के बिना रह भी नहीं सकती। उसके ख़ून में इतनी गर्मी है!"

"हाँ, हाँ, एक ऐसी औरत तो मैंने भी मेले में देखी थी!" प्योत्र ने कहा।

"बिल्कुल ठीक, वहाँ तो सब जगह की चुनी औरतें हैं, मुझे क्या पता नहीं!"

सेराफ़ीम हर किसी को और हर बात जानता था। उसने कारख़ाने के मज़दूरों के व्यक्तिगत जीवन की कुछ मनोरंजक कहानियाँ सुनाईं। सबके बारे में उसकी बातचीत का लहजा सहानुभूतिपूर्ण होता। वह अपनी बेटी के बारे में भी इसी तरह बात करता जैसे वह कोई दूर की परिचित हो।

"अब उसने घर बसा लिया है। उसने मिस्त्री सेदोव के साथ शादी कर ली है। दोनों की आपस में ख़ूब पटती है। तुम्हारा क्या ख़याल है? हर कोई अपना घर ढूँढ़ ही लेता है।"

सेराफ़ीम के यहाँ का वातावरण उसे बहुत सुखद लगता। उसका छोटा-सा साफ़-सुथरा कमरा, जिसमें चीड़ के तख़्तों की मन्द सुगन्ध भरी रहती और दीवार पर टगे टीन के लैम्प की हल्की रोशनी के बावजूद वहाँ एक सुखद अँधियारा-सा छाया रहता।

थोड़ी-सी पी जाने के बाद प्योत्र लोगों के और मानव मात्र के प्रति अपनी शिकायतों का वही-खाता खोल देता और सेराफ़ीम उसे सान्त्वना देता—

"चिन्ता मत करो। सब भले के लिये ही है! मानवता अब अपने पाँवों चल पड़ी है—सारी बात बस इतनी-सी है! वह अब तक सोई पड़ी थी, सोई पड़ी थी और सोच-विचार में डूबी थी—किन्तु अब उठकर खड़ी हो गई है और चल पड़ी है। आख़िर चल क्यों न पड़े? तुम अपना धीरज मत खोओ। इन्सान में विश्वास रखो। तुम्हें अपने ऊपर तो विश्वास है, है न?"

प्योत्र अर्तामोनोव ने मौन रहकर इस प्रश्न पर विचार किया—क्या उसे अपने ऊपर विश्वास है? या नहीं है? लेकिन सेराफ़ीम बोलता चला गया और उसके मुख से निकले शब्दों में जैसे सान्त्वना देनेवाली सहानुभूति ध्वनित हो रही थी।

"कौन बुरा है, कौन अच्छा है, इस चिन्ता से अपने को परेशान मत करो। यह कब तक चलेगा? कल जो बात अच्छी थी वह आज बुरी समझी

जाती है। प्योत्र इलिच, मैंने भले-बुरे दोनों को खूब परखा है। आह, मैंने अपनी ज़िन्दगी में क्या-क्या नहीं देखा! कभी मैं कहता—'हाँ, यह अच्छी बात है।' लेकिन वह पलक झपकते ही नष्ट हो जाती। मैं जहाँ का तहाँ ही खड़ा रह जाता, पर वह मिट चलती। मुझे छोड़कर आगे बढ़ जाती, आँधी की धूल की तरह! मैं वहीं ठगा-सा खड़ा रह जाता। अरे भई, मैं हूँ क्या? बस एक मच्छर न? भीड़-भम्भड़ में भला नज़र भी आ सकता हूँ। लेकिन तुम तो....।"

अपनी तर्जनी को एक अर्थपूर्ण मुद्रा में उठाकर वह चुप हो जाता।

उसकी बातों से प्योत्र को दोहरा आनन्द मिलता। एक ओर तो उसकी बातें सचमुच में मनोरंजक होने के कारण सान्त्वना देतीं; साथ ही प्योत्र यह भी जानता था कि बूढ़ा अभिनय कर रहा है। बूढ़े की बातें हृदय से न निकल कर सान्त्वना देने के विचार से प्रेरित होतीं। सान्त्वना देनेवाले यही करते हैं। यह सब समझते हुए प्योत्र सोचता, 'यह बदमाश बहुत ही होशियार है। निकिता इस तरह के हथकण्डे नहीं जानता।'

और फिर प्योत्र के स्मृति-पटल पर सान्त्वना देनेवालों के चित्र उभर आते। मेले की निर्लज्ज स्त्रियाँ, सरकस के विदूषक, कलाबाज़, जादूगर, साईस, गवैये और मानवता का रक्षक स्त्योपा, और अलेक्सी भी इन लोगों से मिलते-जुलते थे। लेकिन तिखोन के व्यक्तित्व में ऐसी कोई बात न थी। न पाउला मिनोत्ती में ही यह बात थी।

थोड़ा नशा चढ़ने पर वह सेराफ़ीम से कहता—"तुम झूठ बोलते हो!"

लेकिन बढ़ई अपने हड़ीले घुटनों पर हाथ मारकर गम्भीर स्वर में कहता—"नहीं। एक क्षण तो सोचकर देखो। अगर मैं सच को नहीं जानता होता तो भला झूठ कैसे बोल सकता? मैं तुमसे साफ़-साफ़ कहता हूँ कि बिना सच जाने कोई झूठ नहीं बोल सकता।"

"तो चुप रहो!"

"मैं क्या गूँगा-बहरा हूँ।" सेराफ़ीम लाड़ से पूछता। उसके गुलाबी गालों पर मुस्कान फैल जाती। "मैं बूढ़ा हो गया हूँ और दुनिया में चन्द ही दिनों का मेहमान हूँ। मैं सच के बिना भी गुज़ारा कर सकता हूँ। सत्य की खोज तो नौजवानों को करनी चाहिए। इसीलिये तो वे आँख पर चश्मा चढ़ाकर चलते

हैं। मिरोन अलेक्सीविच अपने चश्मे के भीतर से सब चीज़ों के आर-पार देख लेता है। वह सब बातों को जानता है।"

प्योत्र यह जानकर ख़ुश हुआ कि बढ़ई को मिरोन से नफ़रत है और जब सेराफ़ीम ने गितार बजाकर गाना शुरू किया तो प्योत्र हँसी से लोट-पोट हो गया :

"वह लकड़हारा तकुओं की दुकान में फुदकता फिरता है
अपनी तुतुही जैसी नाक पर चश्मा चढ़ाये
और सोचता है कि सब जगह बस बुद्धू ही बसते हैं
अकेला एक वही तो कारख़ाने में चतुर आदमी है"

"ठीक कहते हो !" प्योत्र ने समर्थन में चिल्लाकर कहा।

और शराब के नशे में चूर होकर बूढ़ा बढ़ई अपने पाँव से ताल देता हुआ गाता जाता—

वह कोई घुघ्घू नहीं, न चील है वह
जो चिड़ियों के घोंसले उजाड़ती फिरती हो
वह तो हमारे मालिक का चहेता बेटा है
अलेक्सी इलिच का—हाँ हाँ उनका ही !"

प्योत्र अर्तामोनोव को यह गीत भी पसन्द आया, और सेराफ़ीम और भी निर्लज्ज भाव से याकोव के बारे में गाने लगा—

"याशा इतने निकट खींचकर लड़कियों का आलिंगन करता है
कि उसे अपनी नाक से आगे कुछ भी तो नहीं दीखता।"

और इस तरह यह गाना चलता रहता। कभी-कभी तो सुबह हो जाती। तब तिखोन व्यालोव किवाड़ पर दस्तक देता, प्योत्र अगर सो गया होता तो उसे जगाकर उदासीन भाव से कहता—

"घर जाने का समय हो गया। मिल का भोंपू अब बजने ही वाला है और मज़दूर तुम्हें यहाँ देख लेंगे। यह ठीक बात नहीं है।"

इस पर अर्तामोनोव डाँटकर कहता—

"क्या ठीक बात नहीं है ? मैं मालिक हूँ !"

लेकिन वह आज्ञाकारी की तरह चुपचाप उठ बैठता और नींद में झूमता हुआ घर जाकर सो रहता। कभी-कभी तो वह दिनभर सोया पड़ा रहता और

रात को फिर सेराफ़ीम के यहाँ आ जमता।

यह विनोदी बढ़ई एक दिन काम करते-करते मर गया। वह डाक्टर के काने सहायक के, पानी में डूबकर मरे, बेटे के लिये ताबूत तैयार कर रहा था कि अचानक फ़र्श पर ढेर होकर लुढ़क गया। प्योत्र अर्तामोनोव ने बूढ़े की क़ब्र तक जनाज़े के साथ जाने का निश्चय किया। गिरजाघर में पहुँचकर उसने देखा कि वहाँ मिल के मज़दूर खचाखच भरे हुए हैं। लाल सिरवाला पादरी अलेक्ज़ेन्डर, जो पुराने, विनम्र स्वभाववाले पादरी ग्लेब के स्थान पर नया ही आया था, कठोर-मुद्रा में खड़ा प्रार्थना करवा रहा था। मिल के स्कूल में पढ़ानेवाले ग्रीकोव द्वारा आयोजित भजन-मंडली एक सुन्दर, भावपूर्ण लय बजा रही थी। भीड़ में अनेक तरुण व्यक्ति भी थे।

"आज इतवार का दिन है ?" अर्तामोनोव ने अन्त्येष्टि क्रिया के लिये इतनी बड़ी भीड़ के जमा होने का कारण खोजते हुए सोचा।

नौजवान जुलाहे भी सेराफ़ीम के हल्के-से ताबूत को उठाने के लिए आये थे। जो अधिक सम्पन्न और भद्र मज़दूर थे, वे कफ़न से दूर-दूर ही रहे। ज़ेनेदा एक भड़कीला-सा ब्लाउज़ पहनकर, जो इस शोक-अवसर के सर्वथा अनुपयुक्त था, ताबूत के पीछे-पीछे चल रही थी। उसके मुख पर शोक की गहरी छाया थी, लेकिन आँखों में आँसू न थे। उसकी बग़ल में चौड़े कन्धों वाला, साफ़-सुथरी पोशाक पहने मिस्त्री सेदोव था। दूर सड़क के किनारे-किनारे तिखोन व्यालोव अपने भारी-भारी क़दमों से रेत को पीटता चल रहा था। सूरज ख़ूब तेज़ चमक रहा था। गानेवाले लड़के एक सामंजस्यपूर्ण अलाप में गा रहे थे। सबसे विचित्र बात तो यह थी कि कफ़न के इर्द-गिर्द कहीं शोक और उदासी का वातावरण न था।

"लोग आये तो बड़ी संख्या में है।" प्योत्र ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा। तिखोन यकायक रुक गया और अपने पाँव के अँगूठों की ओर देखते हुए कुछ सोचकर बोला—

"वह सबका मनोरंजन करता था। बस, चाभी घुमाने की देर थी कि वह गाने सुनाने लगता था, इस तरह....।"

और उसने हवा में एक कल्पित चाभी घुमाने का उपक्रम किया।

"बूढ़ा आदमी था बेचारा, गा-बजाकर ज़िन्दगी बसर करता था। साथ में एक छोटी-सी लड़की थी जो उसके बाजे के साथ गाती थी। लोगों के हृदय को सान्त्वना देता था।"

अपने स्वामी की ओर अवज्ञापूर्ण और कठोर दृष्टि से देखते हुए तिखोन फिर बोला--

"वह लोगों के सिर फिरा देता था। किसी को उसने कभी चोट नहीं पहुँचाई, लेकिन उसने नेक ज़िन्दगी नहीं बसर की।"

"नेक और बद!" उसके मालिक ने जैसे खिल्ली उड़ाई। "तुम इन विचारों के साथ वैसे ही जंज़ीर से बँधे हो जैसे तुलुन अपने खूँटे से बँधा रहता था। देखना कहीं तुम भी उसकी तरह पागल न हो जाओ।"

और तेज़ी से उसकी ओर पीठ फेरकर प्योत्र घर चला आया।

अभी दोपहर भी न हुआ था, लेकिन गरमी बहुत तेज़ थी। रेतीली सड़क, और आकाश और वायु की नीलिमा उष्णतर होती जा रही थी। शाम होते-होते आकाश में श्वेत बादलों के पर्वत छाकर मन्द गति से पूर्वी क्षितिज की ओर बढ़ने लगे, जिससे वायु और अधिक भाराक्रान्त हो गई। अर्तामोनोव कुछ देर तक तो बग़ीचे में टहलता रहा, फिर फाटक की ओर निकल गया। तिखोन फाटक की मरम्मत में लगा हुआ था।

"आज क्यों काम में लगे हो। आज तो इतवार है।" अर्तामोनोव ने बेंच पर बैठते हुए सुस्ती से कहा। तिखोन ने उसकी ओर कनखियों से देखा और धीमे स्वर में बोला—

"सेराफ़ीम बुरा था।"

"उसमें क्या बुराई थी?"

और उसके उत्तर में अर्तामोनोव को कुछ विचित्र शब्द सुनाई दिये, मानो गोबरैले रेंग रहे हों।

"वह बहुत ध्यान देता था, उसे ज़रूरत से ज़्यादा बातें याद रह जाती थीं। जो भी देखता उसे याद हो जाता था और देखने को मिलता ही क्या है? पाप, अहंकार, सुस्ती। सो वह हरेक से इन्हीं के बारे में बातें करता था। उसने ही लोगों में बेचैनी और असन्तोष फैलाया। मुझे सब कुछ दिखाई दे रहा है।"

कब्जे पर ब्रश चलाते हुए तिखोन और अधिक कटुतापूर्वक कहता रहा—

"लोगों के दिमाग़ में से स्मृति को बिलकुल मिटा देना चाहिए। स्मृति ही पाप की जड़ है। होना तो यह चाहिए कि एक पीढ़ी अपनी ज़िन्दगी बसर करके जब मरे तो उसके साथ ही उस पीढ़ी के समस्त पाप, उसकी समस्त मूर्खताएँ भी मर जायँ। जो नई पीढ़ी पैदा हो उसे पिछली पीढ़ी के पापों की कोई स्मृति न सताये। उसे केवल उसके पुण्य ही याद रहें। मुझे ही लो—मैं अपनी स्मृति के कारण ही दुःख झेल रहा हूँ। मैं बूढ़ा हो गया, मुझे शान्ति चाहिए। लेकिन मुझे शान्ति कहाँ मिल सकती है? शान्ति तो विस्मृति में ही है।"

तिखोन ने पहले कभी इतनी बातें न की थीं, न इस ढंग से ही। सदा की तरह आज भी उसकी मूर्खता भरी बातों ने मन में वैमनस्य की भावना जगा दी थी। उसकी चटाईदार दाढ़ी, उसकी पीली, पानी-भरी आँखों और उसके झुर्रियों पड़े पत्थर के समान माथे की ओर ग़ौर से देखकर अर्तामोनोव एक बार फिर उसकी नित्यप्रति बढ़ती हुई कुरूपता के प्रति सचेत हो गया। तिखोन के माथे की झुर्रियाँ गहरी थीं, जैसे टखनों पर जूते में गहरी सिलवटें पड़ जाती हैं। उसके गाल, जिन पर बुढ़ापे के कारण बाल झड़ गये थे, भूरे दिखाई देते थे और उसकी नाक के रोमछिद्र स्पंज जैसे हो गये थे।

"यह आदमी सठिया गया है—हर समय बकझक करता रहता है—अब काम करने के योग्य नहीं रहा। मैं इसे कुछ रुपया देकर निकाल दूँगा।"

एक हाथ में ब्रश और दूसरे में तारकोल का बर्तन लिये तिखोन मालिक के पास आ पहुँचा। कच्चे मांस की तरह लाल रंग की इमारतों की ओर इशारा करते हुए उसने कहा—

"लोगों की बातें सुनने के क़ाबिल हैं—वह छैला सेदोव, काना मोरोज़ोव, उसका भाई ज़ाखर और ज़ेनेदा सब मनमानी बातें करते हैं। जो कारोबार दूसरे लोगों की मेहनत से बना है, उसे नष्ट कर देना चाहिए।"

"ऐसा लगता है, उन्होंने तुमसे शिक्षा ली है।" मालिक ने ताना दिया।

"मुझसे शिक्षा ली है?" तिखोन ने सिर हिलाया। "नहीं, वह मेरी शिक्षा नहीं है, ऐसी बेकार बातों से मुझे क्या मतलब? यदि सब लोग स्वयं मेहनत करें तो दुनियाँ की सभी मुसीबतें और बुराइयाँ दूर हो जावें!" लेकिन लोग तो कहते

हैं—"सब कुछ हमने किया है, हम उसके मालिक हैं। देखो प्योत्र इलिच! यह ठीक है कि यह सब उनका ही किया हुआ है। उन्होंने तुम्हें कारोबार में जोत दिया, तुमने उसे कीचड़ में से निकालकर उन्नति-पथ पर ला खड़ा किया। और अब....।"

प्योत्र उठ खड़ा हुआ। उसने दोनों हाथ जेब में डालकर आसमान की ओर देखा। तिखोन के सिर के पीछे के बिखरे बालों को देखते हुए उसने दृढ़ निश्चय के स्वर में फुसफुसाते हुए कहा, "देखो मैं सब समझता हूँ। तुम इतने वर्षों से मेरे पास हो। लेकिन अब तुम्हारी उम्र ढल गई है। अब तुम्हारे लिए काम करना मुश्किल होगा।"

"सेराफ़ीम ने ही इन ऐसी बातों का सिलसिला शुरू किया था।" तिखोन ने मालिक की बात अनसुनी करके अपनी बात जारी रखी।

"चुप रहो, यह समय तुम्हारे लिए आराम करने का है।"

"बेशक, सब लोगों के लिए।"

"ठहरो, तुम्हारे साथ निभाना बहुत मुश्किल काम है....।"

तिखोन व्यालोव अपनी बर्ख़ास्तगी पर ज़रा भी हैरान नहीं हुआ। उसने शान्त स्वर में कहा—

"अच्छा, तो....।"

"घबराओ मत, तुम्हें अच्छी-ख़ासी रक़म मुआवज़े के रूप में दी जायगी।" प्योत्र ने जमादार की आवेशहीन मुद्रा को देखकर कहा। तिखोन चुपचाप अपने जूतों की धूल झाड़ता रहा। प्योत्र ने फिर दृढ़ निश्चय के स्वर में कहा—

"अच्छा, बिदा।"

"अच्छी बात है।" तिखोन ने उत्तर दिया।

प्योत्र नदी के किनारे की ओर चल दिया। उसे आशा थी कि वहाँ ठंडक होगी। उस देवदार के वृक्ष के नीचे, जहाँ इलिया से उसका झगड़ा हुआ था, सेराफ़ीम ने उसके लिए देवदार की टहनियाँ काटकर एक आराम कुर्सी बना दी थी, जहाँ से बैठकर वह कारख़ाने की इमारत, अहाता, घर, मज़दूरों की बस्ती, गिरजाघर और क़ब्रिस्तान सबको देख सकता था। कारख़ाने के अस्पताल की विशाल खिड़कियाँ बरफ की तरह झिलमिला रही थीं। मनुष्यों की नन्ही-नहीं

आकृतियाँ करघे की पिन्नी की तरह कारोबार के असीम ताने-बाने में इधर से उधर फिरती थीं। बस्ती की रेतीली सड़क पर और भी अधिक नन्हीं-नन्हीं आकृतियाँ इधर-उधर रेंग रही थीं। गिरजे के पास की भूरी घास पर बकरियों का झुंड चर रहा था, जो खिलौनों के समान दिखाई दे रहा था। यह बकरियाँ डाक्टर के काने सहकारी बोरिस मोरोज़ोव ने पाल रखी थीं- क्योंकि कारख़ाने की बहुत-सी औरतें अपने बच्चों के लिए बकरी का दूध खरीदती थीं। अस्पताल के बिना घास के चौरस आँगन में रोगी घूम रहे थे। उनके पीले कोटों और सफ़ेद टोपियों को देखकर लगता था जैसे पागलख़ाने के जीव हों। कारख़ाने के आस-पास पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड आ बसे थे। कौए, गौरैयाँ और मैंगपाई इधर से उधर उड़ रही थीं। नीले ख़ाकी रंग के कबूतर ज़मीन पर फुदक रहे थे। नदी के किनारे की सराय के आस-पास पक्षियों की संख्या और भी अधिक थी।

पिछले कुछ दिनों से इन सब चीज़ों से प्योत्र के मन को उल्लास और अभिमान नहीं मिलता था। इन सब पर दृष्टि डालते ही उसे तीव्र आत्म-पीड़ा का अनुभव होता था। उसके भाई, भतीजे और नौकर-चाकर हर समय कुंजड़ों की तरह हाथ मटकाकर चीख़ते-चिल्लाते रहते थे। उन्हें प्योत्र की उपस्थिति का आभास तक न होता था। यहाँ तक कि कारोबार के मामलों में भी वे उसे भूल जाते थे। जब वह कोई बात कहता, तो सब चुप्पी का अभिनय करते और बाद में अपनी मनमानी ही करते। इस तरह की बात बहुत दिनों से चली आती थी, उस समय से जब उन्होंने प्योत्र के विरोध के बावजूद भी बिजली पैदा करने की मशीन लगवाई थी। बाद में प्योत्र भी समझ गया था कि बिजली से काम सस्ता होता है, परन्तु उसके मर्मस्थल की चोट वैसी ही रही। छोटी-मोटी चोटें तो लगती ही रहती थीं, संख्या में बढ़कर वे और भी तीव्र होती जाती थीं।

प्योत्र का भतीजा मिरोन उद्दण्डता में सबसे बाज़ी ले गया था। पढ़ाई ख़त्म करने के बाद उसने स्कूल की वर्दी उतारकर विदेशी क़िस्म की चमड़े की वास्कट पहन ली थी। सुनहरी चश्मे से लेकर पीले जूतों तक उसकी हर चीज़ चमचमाती रहती। अपनी आँखें चारों ओर घुमाकर वह कहता—

"वह बातें पुरानी हो गईं। चचाजान, ज़माना बदल गया है।"

वह ज़माने से घबराता था, जैसे कोई नौकर सख़्त मालिक से डरता है।

लेकिन यही चीज़ थी जिससे वह डरता था और हर बात में वह बेहद गुस्ताख़ था। एक बार तो उसने यहाँ तक कह डाला—

"सुनो चचा, तुम्हारे-जैसे लोगों के रहते रूस चल नहीं सकता।"

प्योत्र के होशहवास गुम हो गये। वह यह भी न पूछ सका—"क्यों?"

वह बहुत खिन्न होकर घर चला गया और इस घटना के बाद कई हफ्तों तक वह अपने भाई के घर नहीं गया और कारख़ाने में सामना होने पर उसने मिरोन से बात नहीं की।

मिरोन का विचार वीरा पोपोवा की बेटी से विवाह करने का था, जो अपनी माँ की तरह ही लम्बी और नाजुक थी। सब लोगों की तरह वह भी हर चीज़ का मज़ाक उड़ाती थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें अविश्वास और निर्लज्जता से चमकती रहती थीं। वह सुबह से शाम तक मक्खी की तरह गुनगुनाती हुई चित्रकला का अभ्यास करती कैनवस लिये अच्छे-भले कैनवस को शोख़ रंगों से भरकर बिगाड़ देती। उसका तिनकों का हैट सदा पीठ पर झूलता रहता और उसके सुनहरी बाल धूप में खुले रहते। उसकी पोशाक भद्दी होती थी और उसके ऊँचे घाघरे में से टाँगें घुटने तक दिखाई देते।

उस कम्बख्त गोरित्स्वेतोव की तो शकल देखकर ही प्योत्र को चिढ़ होती थी। वह तीर की तरह सनसनाता सामने आता और उसी क्षण ग़ायब हो जाता। लोगों पर पागल कुत्ते की तरह झपटता और सदा एक ही बात कहता—

"तुम लोग अमरीका की भौतिक अनात्मिकता की नक़ल करके रूस के आध्यात्मिक वैभव का नाश करना चाहते हो। लोगों के लिए तुम एक जाल बिछाने लगे हो....।"

कभी-कभी प्योत्र को इन बातों में सचाई की झलक दिखाई देती, लेकिन आमतौर पर उसे लगता कि इन बातों में तिखोन की-सी मूर्खता भरी हुई है। यद्यपि वह जानता था कि उस बातूनी गोरित्स्वेतोव और चिन्तामग्न तिखोन में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। गोरित्स्वेतोव एलिज़ावेता पोपोवा को डाँटकर कहता—

"तुम इतनी चुप क्यों बैठी हो?"

उसकी भूरी, शुष्क आँखें मुस्करा उठतीं, पर उसके चेहरे की उद्दंड अच-

लता ज्यों की त्यों बनी रहती। ये लोग विचित्र ढंग के शब्दों का प्रयोग करते, जिन्हें समझना प्योत्र के लिए कठिन हो जाता।

"यह छायावाद का मरण-गीत है।" मिरोन अपने चश्मे को साफ़ करता हुआ कहता।

अलेक्सी सदा मास्को जाता रहता। मोटा-थल्ला याकोव सदा की भाँति अलग-अलग ही बना रहता और बहुत कम बोलता। लेकिन वह जो कुछ भी बोलता, उसमें ज़रूर पैनी नोक रहती होगी, नहीं तो मिरोन और गोरित्स्वेतोव दोनों उसकी बात से हमेशा तिलमिला न उठते। याकोव ने तातारों-जैसी घनी, चौकोर और ललछौंही दाढ़ी रख ली थी, और दाढ़ी के बढ़ने के साथ-साथ उसमें हर किसी की उपेक्षा-भाव से खिल्ली उड़ाने की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही थी। अर्तामोनोव को इन चंचल प्रकृति के लोगों की अपेक्षा अपने बेटे को धीर, शान्त भाव से बातें करते देख हार्दिक प्रसन्नता होती—

"अगर इतनी तेज़ी से ऊपर चढ़ना चाहोगे तो एक न एक दिन अपना सिर फोड़ लोगे। आख़िर तुम लोग सीधे सादे ढंग से क्यों नहीं रह सकते ?"

प्योत्र अर्तामोनोव और याकोव दोनों को ही यह सुनकर अजब-सा लगा कि एलीज़ावेता पोपोवा ने एक दिन अचानक मास्को जाकर गोरित्स्वेतोव से शादी कर ली है। मिरोन ग़ुस्से से पागल हो गया और अपनी भावना को छिपा न सका। अपनी नुकीली दाढ़ी को उँगली से ऐंठते हुए उसने रूखे स्वर में पाखंडियों की तरह कहा—

"स्तीपान गोरित्स्वेतोव जैसे लोग उस नस्ल की पैदावार हैं जो अब मिट रही है। दुनिया में कहीं भी आपको उसके जैसे निकम्मे और व्यर्थ के मनुष्य न मिलेंगे।"

पर याकोव ने जले पर नमक छिड़का—

"लेकिन फिर भी इस निकम्मी नस्ल का ही एक आदमी तो तुम्हारी नाक के नीचे से तुम्हारी प्रेयसी को चुराकर ले भागा !"

अपने कन्धों को सिकोड़कर मिरोन ने उत्तर दिया—

"मैं कोई छायावादी नहीं हूँ।"

"वह क्या होता है ? क्या नहीं हो ?" प्योत्र ने पूछा और मिरोन ने एक-

एक शब्द का उच्चारण इस ढंग से किया, जैसे कोई न्यायाधीश फैसला सुना रहा हो।

"कोई नहीं समझता कि छायावादी क्या होते हैं और चाचाजी आप भी नहीं समझते। वे लोग सौन्दर्य के आकांक्षी हैं, जैसे गंजी खोपड़ी पर कोई बालों की घनी लटों की कामना करे या फिर वे सावधानी के क़ायल हैं, जैसे कोई जालसाज़ अपनी शक्ल छिपाने के लिए कृत्रिम दाढ़ी लगा ले।"

"आहा! तुम्हारी नाक कट गई है!" प्योत्र अर्तामोनोव ने सन्तोष से कहा।

इन बेचैन क़िस्म के लोगों से, जो उसे नित्य ही आघात पहुँचाते रहते थे और जो सारे व्यापार पर अपना पंजा मज़बूत जमाते जाते थे और उसे एक कोने के एकान्त में दूर खदेड़ते जाते थे, बदला लेने के रूप में इस तरह के तुच्छ सन्तोष प्योत्र को सुखद लगते। अपने इसी एकान्त में उसे आनन्द मिलने लगा था। इस एकान्त ने उसे एक दूसरे ही कुछ कुछ जाने पहचाने व्यक्ति से परिचय कराया—वह व्यक्ति भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियोंवाला उसके अंतःकरण का प्योत्र अर्तामोनोव था।

यह व्यक्ति देखने-भालने में शानदार और स्वस्थ, सुगठित शरीर का मेधावी व्यक्ति था, लेकिन संसार ने उसके साथ निर्मम व्यवहार किया था। जीवन उसके प्रति सौतेली माँ की तरह क्रूर और निरंकुश रहा था। जीवन ने उसे अपने पिता के मूक आज्ञाकारी भृत्य के रूप में प्रारंभ कराके उसके कन्धों पर एक विशाल और जटिल कारोबार का भारी बोझ डाल दिया था। ठीक है कि उसकी पत्नी उससे प्रेम करती है और विवाह का प्रारम्भिक वर्ष सुखद भी रहा; लेकिन अब वह जानता है कि एक ललछौंहे बालों की गरारी भरनेवाली दुश्चरित्र लड़की भी अपने प्यार में उसकी पत्नी से कहीं अधिक गर्मी और चट-पटापन भर सकती है। रही मेलेवाली चलती हुई फुलझड़ियाँ, उन्हें न याद करना ही अच्छा होगा। उसकी पत्नी का जीवन डर में बीता था, प्रारम्भिक दिनों में वह अलेक्सी और मिट्टी के तेल के लैम्पों से डरती थी, बाद में उसे बिजली के बल्बों से डर लगता था। उनमें रोशनी देखते ही वह चौंककर अपने शरीर पर क्रॉस का चिह्न बना लेती थी। एक बार मेले में फोनोग्राफ़ की दुकान पर उससे प्योत्र को बहुत लज्जित होना पड़ा था।

"हाय! इसे मत ख़रीदो; शायद इसमें शैतान की आत्मा बैठी हो।" उसने गिड़गिड़ाकर पति से प्रार्थना की।

आजकल उसे मिरोन, डाक्टर याकोवलेव और अपनी ही बेटी तात्याना से डर लगता था। काफ़ी मोटी होते हुए भी वह सबेरे से रात तक खाती ही रहती थी। उसका भाई उसके पेटूपन से तंग आ गया था। बच्चे उसका सम्मान नहीं करते थे। जब उसने याकोव को शादी करने की सलाह दी तो वह बिगड़कर बोला:

"अच्छा हो कि अपने खाने के लिए कुछ ले लो।"

वह नम्रतापूर्वक उत्तर देती —

"क्यों? मुझे और नहीं चाहिए।" और फिर खाने लगती।

पिता ने कहा —

"माँ का मज़ाक क्यों उड़ाते हो? अब तुम्हारी शादी हो जाना ही चाहिए।"

"आजकल परिवार के झंझटों में फँसने के दिन नहीं।" याकोव ने झट से जवाब दिया।

"तुम सब लोग ज़माने की शिकायत क्यों करते हो?" प्योत्र ने क्रोध से पूछा। बेटे ने उत्तर में सिर्फ़ कन्धे हिला दिये। जवाब कुछ न दिया।

याकोव भी अक्सर कहता —

"पिता, तुम समझते नहीं।"

वह आहिस्ता से यह कहता, लेकिन पिता पुत्र की अपेक्षा कम जाने, भला यह कैसे सम्भव हो सकता है? लोग अतीत की ओर देखते हैं न कि भविष्य की ओर। यही दुनिया की रीति है।

बड़ा बेटा इलिया, जो पिता का लाड़ला था, जा चुका था। उसके प्रेम में पिता ने ऐसा काम कर डाला था, जिसे याद करते ही आत्मा काँप उठती थी।

बड़ी बेटी एलेना, जो अब भारी-भरकम स्त्री बन गई थी, अपने धन-दौलत और शराबी पति के नशे में डूबी रहती। वह कभी कभी माँ-बाप से मिलने आती थी। उसकी उँगलियाँ अंगूठियों से भरी रहतीं और गले में सोने के हार रहते। अपने सुनहरी चश्मे को ऊपर उठाकर वह आलस्य-भरे स्वर में कहती—

"यहाँ की वायु कैसी बुरी है। सारा घर सड़-गल गया है। आप लोग नया घर क्यों नहीं बनाते? कारख़ाने के पास रहना ठीक नहीं।"

एक दिन प्योत्र ने छिपकर सुना, एलेना माँ से कह रही थी—

"मैं देखती हूँ, पिता ज़रा भी नहीं बदले। तुम उनके साथ ऊब जाती होगी। मेरा छैला तो पीता-पिलाता है, लेकिन कम से कम उसमें कुछ जीवन तो है।"

एलेना को सफ़ाई करने की सनक रहती थी। बैठने से पहले वह रूमाल से कुर्सी पोंछती। उसके कपड़े इतने अधिक सुगन्धित होते कि लोगों को छींकें आने लगतीं। अपने घर के प्रति उसकी अवहेलना तथा अपमानजनक क्षोभ को देखकर प्योत्र का मन बदला लेने के लिए भड़क उठता। एलेना की उपस्थिति में वह जान-बूझकर ड्रेसिंग गाऊन की पेटी खोल देता और बिना मोज़ों के रबर के स्लीपर पहनकर आँगन में चक्कर काटता। खाने के समय वह फूहड़ ढंग से खाना चबाता और डकार लेता। बेटी क्रोध से तड़प उठती—

"पिता जी, तुम्हें क्या हो गया है?"

प्योत्र यही चाहता था।

"क्षमा करना, मेम साहब! तुम तो जानती हो, मैं सीधा-सादा किसान हूँ।"

वह जान-बूझकर पहले से ज़ोरों से चपर-चपर करता और डकारें लेने लगता।

एलेना विदेशों की सैर भी कर आई थी। सन्ध्या के समय वह माँ को तरह-तरह की गप्पें सुनाती। एक शहर में औरतें साबुन और ब्रश से घर को धोती थीं, तो इस शहर में ठंड और कुहरे के कारण सड़कों की बत्तियाँ दिन भर जलती रहती थीं। पेरिस की दुकानों में सिले-सिलाये कपड़े बिकते थे और वहाँ एक इतनी ऊँची मीनार थी कि उस पर से समुद्र-पार के शहर भी दिखाई देते थे।

एलेना अपनी छोटी बहन के साथ हर समय लड़ती-झगड़ती रहती। तात्याना लम्बी और पतली थी, और अपनी बदसूरती पर उसे गहरा क्षोभ था। उसे देखकर क़ब्र खोदनेवाले की याद आ जाती। वह अपनी बहन के साथ शहर में रहती थी। वह हाई स्कूल की परीक्षा में फ़ेल हो गई थी। उसे चूहों से डर लगता था। वह मिरोन की तरह ज़ार के अधिकारों को सीमित करने के पक्ष में थी। हाल ही में उसने सिगरेट पीना भी सीख लिया था। गर्मी की छुट्टियों में जब वह घर आई तो माँ को नौकरों की तरह डाँटती। पिता से एक शब्द बोलने की भी हिम्मत न होती। दिन भर किताबों में उलझे रहने के बाद शाम को वह अपने चचा के यहाँ चली जाती। सोने के दाँतोंवाला डाक्टर याकोवलेव

उसे घर पहुँचाने आता। रात को वह अपनी प्रेयसी सखी के विचारों में डूब जाती और पाँव के सलीपरों से मच्छरों को दनादन मारती रहती।

प्योत्र को दुनिया की हर चीज़ में शोर-गुल, मूर्खता और अजनबीपन दिखाई देता था। मिरोन के उद्दण्डतापूर्ण शब्दों से लेकर वास्का की मूर्खताभरी कविताएँ उसे व्यथित कर देती थीं। कोयला झोंकनेवाले लँगड़े वास्का के बाल माथे पर बिखरे रहते और वह छुट्टी के दिन रसोई के आस पास अपना बाजा लेकर चक्कर काटता। वह आँखें बन्द करके ऊँचे स्वर में गाता—

"यह एक बुरी आदत ही तो है,
कि तुम मेरी हो
मुझे तुम्हारा सुन्दर मुख देखने की इच्छा है
मानो वह बढ़िया शराब हो।"

बहुत दिनों से ओल्गा ने उसे इलिया का कोई समाचार नहीं दिया था। उधर नया आहत व्यक्ति, प्योत्र अर्तामोनोव, हर समय अपने बड़े लड़के के विषय में सोचता रहता। शायद इलिया को अपनी ज़िद का फल मिल गया हो। अलेक्सी के यहाँ भी लोग यही सोचते थे। एक दिन शाम को मिरोन ने बड़े कमरे में कोट उतारते हुए कहा—

"इलिया उन लोगों में से है जो किताबों के पन्नों से दुनिया देखते हैं—वे गाय और घोड़े में अन्तर नहीं बता सकते।"

"यह झूठ है।" प्योत्र ने भतीजे के विरोध से आत्मसन्तोष का अनुभव करते हुए सोचा।

अलेक्सी ने पूछा—

"क्या वह गोरित्स्वेतोव जैसा ही है।"

"उससे भी बदतर।" मिरोन ने कहा।

प्योत्र ने मन ही मन उन्हें धमकी दी—

"वह वापिस आ जाय, तब तुम्हें बतायेगा।"

मिरोन ने फ़ौरन मॉस्को के क़िस्से बताने शुरू किये—उसे सरकार की मूर्खता पर क्षोभ था। इतने में नतालिया और याकोव आ पहुँचे। मिरोन कागज़ बनाने के कारख़ाने के विषय में बातें करने लगा। वह बहुत दिनों से उन लोगों को

इसके लिये परेशान कर रहा था।

"चचा देखो, हमारी कितनी पूँजी बेकार पड़ी है।" मिरोन ने कहा। नतालिया के गाल क्रोध से लाल हो गए। उसने पूछा—

"कहाँ रखी है पूँजी? किसकी पूँजी पड़ी है?"

प्योत्र को सहसा एक अज्ञात उदासी ने आ घेरा, मानो किसी ने एक ऐसे कमरे का दरवाज़ा खोल दिया हो जिसमें सब चीज़ें परिचित हों, जैसी की तैसी, जिससे कमरे में रिक्तता-सी दिखाई देती हो। ऐसी अप्रत्याशित उदासी का आक्रमण होते ही प्योत्र के कानों और आँखो पर एक कुहरा-सा छा जाता। मन में मृत्यु और रोग-सम्बन्धी विचार भर जाते।

"तुम सब मेरी नाक में दम कर देते हो, कभी एक क्षण को आराम भी करने दोगे?" प्योत्र ने कहा।

याकोव कुनमुनाया, "जितना कुछ है वही काफी मुसीबत है।"

और नतालिया ने चिल्लाकर कहा, "जैसा कुछ चल रहा है इसमें मज़दूरों के मारे बाहर तक नहीं निकल सकते! चारों ओर शराबख़ोरी और व्यभिचार फैला है।"

प्योत्र खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। बग़ीचे में मुँह ऊपर उठाये तिखोन एक नन्हीं लड़की को सेब का पेड़ दिखा रहा था।

"यह है नया आदम।" प्योत्र ने मन ही मन सोचा। उसकी थकान दूर हो गई। इस तरह के बाह्य विचार अक्सर चूहों की तरह उसके मन में आ जाते थे। प्योत्र उनके आने से बहुत प्रसन्न होता था, क्योंकि वे बिजली की चमक की तरह उसे परेशान किए बिना आकर चले जाते—बस इतना ही।

तिखोन का मामला भी बड़ा पेचीदा था। एक वर्ष तक बाहर रहने के बाद जब तिखोन ने आकर मठ से निकिता के ग़ायब होने का समाचार सुनाया तो प्योत्र के मन को विश्वास हो गया कि तिखोन को निकिता का पता मालूम है। सिर्फ़ लोगों को डराने के लिए ही वह इस तरह की कहानियाँ सुना रहा है। दोनों भाइयों में इस बात पर झगड़ा हो गया। अलेक्सी ने तिखोन का पक्ष लेते हुए कहा—

"दिमाग़ से काम लो। जो आदमी जीवन भर तुम्हारी सेवा करता आया

हो, उसे तुम निकाल दो, क्या यह उचित होगा ?"

प्योत्र जानता था कि उसने अनुचित काम किया है, लेकिन तिखोन को बर्दाश्त करना अब उसके लिए असम्भव था। जीवन में पहली बार उसकी पत्नी ने अलेक्सी का पक्ष लिया था। उसने दृढ़ निश्चय के स्वर में अपना मत प्रकट किया —

"प्योत्र इलिच, यह ठीक नहीं। तुम जो चाहे कहो, लेकिन यह बात अनुचत है।"

ओल्गा की सहायता से विरोधी पक्ष ने उसे हरा दिया था। लेकिन उसके भीतर का आहत व्यक्ति जीत गया था।

"देखा! तुम्हारी मर्ज़ी किसी के लिए भी क़ानून नहीं बन सकती। समझे!" उसके अन्तर में बैठा आहत व्यक्ति उभर कर सामने आता जाता था और स्पष्ट आकार ग्रहण कर लेता था। अपने भारी भरकम शरीर को घसीटता हुआ प्योत्र पहाड़ी पर जाता और देवदार के नीचे अपनी आराम कुर्सी पर बैठकर अन्तर के आहत पुरुष के बारे में सोचता —अपने हृदय की सारी करुणा उस पर उँडेल देता। इस अभागे पुरुष को, जिसे न कभी ठीक से समझा गया, न पसन्द किया गया, यद्यपि जो इतने अच्छे गुणों से विभूषित था, अपने दृष्टि-पट पर लाने में उसका मन एक विचित्र माधुर्य और कटुता से भर जाता। वह अन्तर का पुरुष शून्य में से निकलकर तुरन्त आकार ग्रहण कर लेता, जैसे नीले शून्य में से निकलकर धीरे-धीरे बादल आकाश में छा जाते हैं।

फिर वहाँ से कारख़ाने और उसके इर्द-गिर्द की इमारतों पर एक विहंगम दृष्टि डालकर वह सोचता—

"इन खिलौनों के बिना ज़िन्दगी और तरह भी गुज़ारी जा सकती है।"

लेकिन व्यापारी अर्तामोनोव इस पर आपत्ति करता—

"यह तो तिखोन की जैसी बात है।"

"पर पादरी ग्लेब भी तो यही कहता था और गोरित्स्वेतोव और अनेक लोग भी तो यही कहते हैं। यह सच है कि लोग एक मकड़े के जाले में फँसी हुई मक्खियों के समान हैं।"

"तो तुम कुछ न करके तो कुछ भी नहीं पा सकते।" व्यापारी प्योत्र

उत्तर देता।

कभी-कभी उसके भीतर इन दो व्यक्तियों का मूक वाद-विवाद उग्र रूप धारण कर लेता और वह अन्तर का आहत व्यक्ति निर्मम होकर चीख़ उठता :

"याद है, उस दिन जब तुम मेले में नशे से चूर हो रहे थे, उस समय तुम चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे कि तुमने अपने बेटे को वैसे ही बलिदान कर दिया जैसे इसाक़ ने अब्राहम को बलिदान कर दिया था, और यह कि दुम्बे की जगह पर निकोनोव का बेटा तुम्हारे मत्थे मढ़ दिया गया था, याद है? यह बात एकदम सच्ची है। और इसी सचाई की ख़ातिर तुमने मेरे सिर पर एक बोतल दे मारी थी। तुमने मुझे कुचल डाला था। मार डाला था। क्या तुमसे पूछूँ कि किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तुमने मेरी हत्या की थी? निकिता के सींगोंवाले देवता के लिये? सच बताओ, हाय रे मूर्ख!"

जब यह विवाद बहुत अधिक बढ़ जाता तो उद्योगपति प्योत्र क्रोध और अपमान के कड़ुवे आँसुओं को थामने के लिये आँखें मींच लेता, किन्तु आँसुओं की बाढ़ बह निकलती। वह अपने गालों पर से बहते हुए आँसुओं को पोंछता और फिर अपनी दोनों हथेलियों को रगड़कर सुखा देता। वह अपनी सूजी हुई लाल हथेलियों को शून्य दृष्टि से ताकता रहता और फिर मदिरा नामक शराब की बोतल एक साँस में गटक जाता।

अपने सारे रोने-धोने के बावजूद भी प्योत्र अपने अन्तर के आहत व्यक्ति के बिना नहीं जी सकता था। वह भाप के स्नानागार के उस सेवक की भाँति था, जो आपकी पीठ में साबुन के सुखद झाग मलता है, क्योंकि लोगों का हाथ पीठ पर मुश्किल से पहुँचता है।

....अचानक साइबेरिया से दूर कहीं रूस को भयंकर आघात पहुँचा।

अलेक्सी हाथ में अख़बार लिये कुर्सी से उछल पड़ा।

"डाका, दिन दहाड़े डाका!" उसने मुट्ठी तानकर आवेशपूर्वक कहा। "हम उन्हें दिखा देंगे, कुचल डालेंगे!"

सोने के दाँतवाला डाक्टर जेब में हाथ डाले चुपचाप आग सेंकता रहा। उसने शान्त स्वर में कहा—

"यह भी तो संभव है कि वे ही हमें मज़ा चखा दें।"

निस्सन्देह डाक्टर इस लम्बे लाल रंग के व्यक्ति का मज़ाक उड़ा रहा था। हर बात का मज़ाक उड़ाना उसकी आदत थी। बीमारी और मौत तक की बातें वह इस तरह व्यंगभरी मुस्कराहट से करता जैसे कि वह ओंठ बिचकाकर ताश की हारी बाज़ी के बारे में बातें कर रहा हो। प्योत्र को ऐसा लगता कि डाक्टर एक विदेशी की तरह है, जो अजनबी लोगों के बीच में घबराकर मुस्कराने लगता है या अपने चारों ओर के बाहरी लोगों की बातें समझने में असमर्थ हो। प्योत्र को डाक्टर नापसन्द था और उस पर उसे विश्वास न था। बीमारी में वह कठोर मुद्रावाले जर्मन डाक्टर क्रोन को बुलाना अधिक पसन्द करता था।

मिरोन सारस की तरह कमरे में चक्कर लगा रहा था। उसकी उँगलियाँ अन्यमनस्क भाव से दाढ़ी से खेल रही थीं। उसके चिड़चिड़ेपन को देखकर लगता था मानो उसके सिर में भयंकर पीड़ा हो रही हो। वह सबको उपदेश दे रहा था—

"हमें इस कारोबार में अंग्रेज़ों को साझीदार बनाना चाहिए था।"

"किस कारोबार में?" प्योत्र ने कई बार पूछा, लेकिन न तो उसका चुस्त भाई और न योग्य भतीजा ही इस अकस्मात् युद्ध के विषय में समझदारी से कुछ बता सका। इन आत्मविश्वासी सर्वज्ञ लोगों को देखकर मन को सन्तोष होता, विशेषकर अलेक्सी को देखकर। उसके विचित्र व्यवहार को देखकर ऐसा लगता मानो इस अकस्मात् युद्ध के छिड़ जाने से उसके किसी गूढ़ उद्देश्य को क्षति पहुँची हो।

एक धार्मिक जलूस का आयोजन किया गया। घनी दाढ़ियोंवाले प्रभावशाली व्यापारी सुनहरी वास्कटोंवाले पादरियों के पीछे-पीछे बरफ़ को रौंदते हुए चले जा रहे थे। देवताओं की प्रतिमाएँ और झंडे फहरा रहे थे। शहर के सब गिरजों की भजन-मण्डलियों का सम्मिलित स्वर आकाश में गूँज उठा। "हे ईश्वर, लोगों की रक्षा करो।" इस प्रर्थना में विनती की अपेक्षा माँग की भावना अधिक थी। मुँह की भाप के साथ-साथ प्रार्थना के शब्द भी भजनमंडली के गवैयों की दाढ़ी-मूछों पर जाकर जम गये। गाड़ी बनानेवाले का लड़का मेयर वोरोपोनोव भी बेसुरे स्वर में गा रहा था। लम्बे तगड़े सीपी के बटन-सी आँखोंवाले वोरोपोनोव ने जायदाद के साथ-साथ विरासत में अर्तामोनोव परिवार

के प्रति घोर शत्रुता भी पाई थी। अर्तामोनोव परिवार के सातों व्यक्ति इकट्ठे खड़े थे। अलेक्सी और उसकी पत्नी, याकोव, नतालिया और तात्याना, मिरोन और डाक्टर, और सबसे पीछे नरम जूते पहने प्योत्र खड़ा था।

"समूचा राष्ट्र।" मिरोन ने धीमे स्वर में कहा।

"शक्ति का प्रदर्शन।" डाक्टर बोला—

मिरोन अपने चश्मे को उतार कर रूमाल से रगड़ने लगा। "उनको मुँह की खानी पड़ेगी, देखते रहो।"

"हूँ....कच्ची धातु है, आग पकड़ने में काफी समय लगेगा।"

"खामोश रहो।" प्योत्र ने अपने भतीजे को डाँटकर कहा। मिरोन ने चचा की ओर कनखियों से देखा और फिर अपनी लम्बी नाक को उँगली से सहलाते हुए चश्मा लगा लिया।

"हे ईश्वर, लोगों की रक्षा करो।" वोरोपोनोव ने ऊँचे स्वर में ईश्वर से माँग की। उसने पीछे मुड़कर नगर के लोगों को देखा और अपनी टोपी हिला दी।

पोम्यालोव की बेटी ऊँचे स्वर में गा रही थी। चालीस के लगभग होने पर भी उसके शरीर में ताज़गी थी और उसके वक्ष ऊँचे और सुडौल थे। वह तीन बार विधवा हो चुकी थी, और निर्लज्जता और उच्छृङ्खल जीवन के लिये सारे शहर में आगे थी। वह नतालिया से कह रही थी—"बहन, तुम अपने पति को युद्ध में क्यों नहीं भेज देतीं। उनकी आकृति इतनी भयानक है कि दुश्मन देखते ही भाग खड़ा होगा।"

फिर वह याकोव की ओर मुड़कर बोली—"क्यों बेटे, शादी क्यों नहीं करते? आवारागर्द कहीं के।"

प्योत्र ने अपने सिर को झटका दिया। यह सारे शब्द उसके मस्तिष्क में मक्खियों की तरह भिनभिना रहे थे। वह भीड़ में से निकलकर आहिस्ता-आहिस्ता सड़क की ओर चल दिया। विशाल जनसमूह आगे बढ़ गया। दूध जैसी सफ़ेद बरफ़ की पृष्ठभूमि में लोग असाधारण रूप से काले लग रहे थे। उनके मुँह से साँस ऐसी सफ़ेद निकल रही थी जैसे समावार से भाप।

कठोर मुद्रावाली वीरा पोपोवा नंगे सिर स्कूल की लड़कियों का नेतृत्व कर रही थी। उसके कोमल भूरे बालों पर हिम-बिन्दु चमक रहे थे। अर्तामोनोव का

अभिवादन करते समय उसकी कोहरे से ढँकी पलकें काँप उठीं। प्योत्र को उस पर दया आ गई।

"मूर्खा कहीं की! भाड़े पर बत्तखें चराने आई है।"

इसके बाद मुड़े सिरों की बारी आई। नगर के दोनों स्कूलों के लड़के पंक्तिबद्ध होकर जा रहे थे। उनके पीछे एक मशीन और सैनिकों की आधी कम्पनी थी, जिसका नेतृत्व लेफ्टिनेएट मावरिन कर रहा था। यह आदमी सारे शहर में चर्चा का विषय बना हुआ था, क्योंकि वह बारहो मास ओका नदी में स्नान करता था और पोम्यालोवा के साथ रहता था और उसका पैसा उड़ाता था। उसके बाद बत्तख की तरह मोटा-ताज़ा और चीनी मूँछोंवाला फ़ौजी अफ़सर नेस्तेरेंको शान से अकड़कर चल रहा था। उसके पीछे उसकी बीमार पत्नी थी, जो अपने भाई की बाँह का सहारा लिए थी। स्वर्गीय मेयर का बेटा ज़ितेकिन अब चमड़े के कारख़ाने का मालिक था। उसके बारे में प्रसिद्ध था कि पादरिनों से रंगरेलिया करने के बावजूद भी उसने सात सौ किताबें पढ़ी थीं और ढोल बजाने में वह अपना सानी नहीं रखता था—आजकल वह गुप्त रूप से सैनिकों को यह कला सिखाता था।

मांस का पिण्ड स्तीपान बार्स्की अपने पियक्कड़ दामाद और भेंगी लड़की के साथ स्लेज में बैठा था। उनके पीछे साधारण जनता का विशाल जन-समूह था, जिसमें निम्न मध्यवर्ग के लोग, चमड़े के कारख़ाने के मज़दूर, बुनकर, मिस्त्री और यहाँ तक कि भिखारी, और कुछ बूढ़ी लावारिस स्त्रियाँ भी थीं, जिन्हें देखकर चूहों की याद आती थी। लोगों के नंगे सिरों पर बर्फ़ गिर रही थी। दूर कहीं से वोरोपोनोव की आवाज़ सुनाई दी—

"हे ईश्वर, रक्षा करो!"

"ईश्वर के लिये भला इन लोगों का क्या उपयोग हो सकता है?" प्योत्र ने सोचा। उसे शहर के लोगों से नफ़रत थी और व्यापारिक सम्बन्धों के अतिरिक्त वह उनसे किसी प्रकार का नाता नहीं रखना चाहता था। शहर के लोग भी उसे उद्दण्ड और बदमिज़ाज समझकर उससे घृणा करते थे। लेकिन अलेक्सी के प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा थी, क्योंकि वह शहर को सम्पन्न बनाना चाहता था—जिसका सुबूत गली की पक्की सड़कें, मैदान के चारों ओर लगे नीबू

के वृक्ष तथा ओका नदी के किनारे बना पार्क था। मिरोन और याकोव को सब लोग लालची समझते थे, क्योंकि वे सारी दुनिया को हड़प जाना चाहते थे।

मन्दगति से चलनेवाले इस गम्भीर जलूस को देखकर प्योत्र ने नाक-भौं सिकोड़ लीं। असंख्य अपरिचित आँखें उसकी ओर लगी थीं। सबमें वही विरोध की भावना झलक रही थी।

अलेक्सी के घर के फाटक पर तिखोन ने उसका अभिवादन किया। प्योत्र ने पूछा—

"कहो! हम लोग युद्ध करने जा रहे हैं?"

तिखोन ने अपनी आदत के अनुसार ख़ामोशी से अपना गाल सहलाया। प्योत्र ने सवाल किया—

"तुम्हारी क्या राय है?" आज पहली बार उसके स्वर में विश्वास था।

"यह बच्चों का खेल है।" तिखोन ने तुरत इस तरह उत्तर दिया मानो वह इस प्रश्न की प्रतीक्षा में था।

"तुम्हें सब बातें बच्चों का खेल ही दिखाई देती हैं।" अर्तामोनोव ने संदिग्ध स्वर में कहा।

"बिलकुल ठीक, आख़िर हम हैं क्या? कुत्ते! हम कठोर पशु तो हैं नहीं।"

प्योत्र आगे बढ़ गया, जनसमूह बर्फ़ से लदे वृक्षों और टीलों की ओट में छिप गया।

सेराफ़ीम की मृत्यु के बाद अब प्योत्र तैसिया पराक्लीतोवा से सान्त्वना प्राप्त करता था। अनिश्चित आयु की यह पादरिन् देखने में किशोरी और श्यामा बकरी की तरह लगती थी। वह प्रायः चुप रहती और प्योत्र की हर बात का समर्थन करती।

"ठीक है, प्यारे! हाँ प्यारे, यही बात है!"

प्योत्र बेरोक शराब पीता। लेकिन उसका प्रभाव धीरे-धीरे होता, जिससे उसे खीझ होती, क्योंकि तैसिया के मनगढ़न्त किस्सों में अपने को खोने में बहुत देर लगती थी। नशे के पहले झोंके प्योत्र के मन में कटुता भर देते। जीवन एक पापमय हरे रंग की दलदल में बहता दिखाई देता, जिसकी चक्करदार धारा उसे चकरा देती। दूसरे ही क्षण, ऐसा लगता कि वह उसे किसी अनिश्चित ढाल पर गिरा

देगी। प्योत्र दाँत पीसकर अपने मन की धुँधली अशान्ति पर घूरता रहता। फिर पादरिन की ओर दहाड़ता—

"कुछ बोलती क्यों नहीं? कोई नई बात है?"

बकरी की तरह फुर्तीली स्त्री उठ खड़ी होती। एक पुस्तक के पन्ने पलटते हुए वह कहती—

"पोम्यालोवा ने कैप्टन मेवरिन को रक़म दी। ताश में वह तीन सौ बीस हार गया है। वह उसे पुकार रही है। उसने पुकार सुन ली। जानते हो, कैप्टन अपनी बीमार पत्नी को अपने साथ क्यों नहीं रखता? यहाँ उसकी प्रेमिका जो रहती है।"

"यह सब गन्दी बकवास है।" प्योत्र कहता।

"गन्दी, कैसे प्यारे?"

शहर की गन्दी अफ़वाहों की उसकी बकवास सुनकर प्योत्र के विचार विभिन्न दिशाओं में दौड़ने लगते। शहरियों के प्रति उसकी घृणा को एक नैतिक बल मिलता। वह उन्हें घोर पापी समझता था। उसे रह रहकर मेले की धूमधाम याद आ जाती। पागल से होकर लोग इधर-उधर भागते थे—उनकी नशे में चूर, पर अतृप्त आँखें लालच में निकल पड़ती थीं और वे वासना के उन्माद में आकर काली पृष्ठभूमि में खड़ी नग्न स्त्री की ओर झपट रहे थे कि मार्ग की सभी बाधाओं को चकनाचूर करना चाहते थे।

प्योत्र चुपचाप रंग-बिरंगी शराबों को पी जाता और आहिस्ता-आहिस्ता कुकुरमुत्तों का चिकना अचार खाता। नशे में उसे लगता कि संसार का सबसे शक्तिशाली वरदान, पैसे के लिए अपने यौवन का प्रदर्शन करनेवाली इस लम्पट स्त्री के शरीर में है। धनी लोग अपना पैसा, इज़्ज़त और स्वास्थ्य बर्बाद करते थे। लेकिन अब उसके जीवन में उस श्यामा बकरी के सिवा कुछ न था, जो उसके घुटनों पर बैठी है।

"अपने कपड़े उतारो! नाचो!" प्योत्र दहाड़ता।

"बिना संगीत के कैसे नाचूँ?" पादरिन अपने कपड़ों में लगे बटनों से खेलती हुई कहती। "क्यों न शिकारी नोस्कोव को यहाँ बुला लें। वह मुँह का बाजा अच्छा बजाता है।"

ऐसे मनोरंजनों में समय तेज़ी से बीत जाता। बीच में कोई घटना आकर मन को सोचने के लिए विवश कर देती। सर्दियों में यह ख़बर आई कि सेंट पीटर्सबर्ग में मज़दूरों ने राजमहल को ध्वंस कर ज़ार को क़त्ल करने की कोशिश की है।

तिख़ोन ग़ुर्राया—

"इसके बाद वे गिरजों को तोड़ेंगे। बर्दाश्त करने की भी एक हद होती है।"

गर्मियों में ख़बर आई कि एक रूसी जहाज़ ने रूसी समुद्र में तटवर्ती शहरों पर गोलाबारी की है। तिख़ोन बोला—

"फिर क्या हुआ? आख़िर सिपाही जो ठहरे!"

फिर जलूस निकाला गया। भूरे कोटवाले वोरोपोनोव ने ज़ार की बड़ी-सी तस्वीर उठाकर प्रार्थना की—

"हे ईश्वर, लोगों की रक्षा करो!"

इस बार वह पहले की अपेक्षा और अधिक ज़ोर से चिल्लाया, और अधिक क्रोधपूर्वक, किन्तु सहायता की माँग करनेवाले उसके दीर्घ स्वरों में चिन्ता की गूँज थी।

शराब के नशे में चूर और बिना हैट के ज़ितीकिन की गंजी खोपड़ी लाल हो रही थी। वह चमड़े के कारख़ाने के मज़दूरों के आगे चल रहा था। उसके हाथ में दुनाली बन्दूक़ थी और वह गरज गरजकर चिल्ला रहा था—

"दोस्तो! रूस को बनियों को न दे दो। रूस किसका है? हमारा?"

"हमारा है!" नशे में धुत चर्मकार चिल्लाये।

पुराने दुश्मन बुनकर मज़दूरों का मुक़ाबला होते ही दोनों दलों में टक्कर हो गई। डाक्टर याकोवलेव की वास्कट मिट्टी में सन गई और बूढ़े दवाफ़रोश को नदी में फेंक दिया गया। ज़ितीकिन ने उसका पीछा किया और दो बार उस पर गोली चलायी। निशाना चूक कर दर्ज़ी ब्रुस्कोव की पीठ में जा लगा। कारख़ाना बन्द हो गया। तरुण बुनकरों ने आवेश में आकर अपनी बाँहें चढ़ा लीं। मिरोन जैसे सलाहकारों और औरतों के आँसुओं की परवाह न करके वे शहर की ओर सरपट भागे।

कारख़ाना सुनसान पड़ा था। सनसनाती हवा में उसका आकार संकुचित

होता प्रतीत होने लगा। लगता था कि हवा भी विद्रोह में चीख़ रही हो और दीवारों पर बर्फ़ की वर्षा के छींटे मार रही हो; फिर चिमनी को बरफ़ से ढँक रही हो और क्षण भर बाद उसे धो डालती हो।

प्योत्र खिड़की के पास बैठा शून्य दृष्टि से नगर की ओर जानेवाली सड़क पर चलते लोगों की चींटियों-सी आकृति देख रहा था। खिड़की के शीशे में से लोगों की आवाज़ें आ रही थीं। लगता था वे ख़ुशियाँ मना रहे हैं। फाटक के पास मज़दूरों के दल में अकार्डियन ज़ोरों से बज रहा था और भट्ठी झोंकनेवाला लँगड़ा वास्काक्रोतोव गा रहा था—

"रूस में जगह की इतनी तंगी थी
कि हमने जापान से युद्ध छेड़ दिया
जब वे हमारी नाक दबाते हैं
तो हम उन पर चर्म-चिह्नों से वार करते हैं!"

बस्ती की ओर से हवा के झोंके में आनेवाली लोगों के असन्तोष की ध्वनि ऐसी लग रही थी, मानो खारी झील का पानी किसी बड़े समावार में उबलकर बुदबुदा रहा हो। अलेक्सी की गाड़ी फाटक में मुड़ी। अगली सीट पर डाक्टर का काना सहकारी मोरोज़ोव बैठा था। शाल में लिपटी ओल्गा गाड़ी से कूद पड़ी। टाँगों का दर्द भूलकर प्योत्र हड़बड़ाकर उतर पड़ा—

"क्या बात है?"

घबराई हुई मुर्ग़ी की तरह काँपकर ओल्गा बोली—

"चर्मकार! उन्होंने हमारी खिड़कियाँ तोड़ डालीं।"

उसके लिए रास्ता छोड़कर प्योत्र एक ओर हट गया। ज़रा हँसकर वह बुदबुदाया—

"यह है! इन लोगों की बातों का यह हुआ। मेरा तो विरोध करते हैं और यह होता है। ज़ार....।"

ओल्गा अकस्मात् ज़ोर से चिल्ला उठी—

"बस करो! तुम्हारा ज़ार भी पक्का बेईमान है!"

"तुम्हें ज़ारों के बारे से बहुत अधिक ज्ञान है।" प्योत्र ने खिसियाकर कहा और उसका हाथ अपने कान की लौर की ओर बढ़ा।

इस चश्मेवाली स्त्री के अचानक क्रोध को देखकर प्योत्र चकित रह गया। वह प्रायः शान्त रहती थी। उसके शब्दों में गहरी सचाई थी। लेकिन वह सचाई वैसी नगण्य और अर्थहीन थी जैसी कि बैल के पाँव से दुम कुचलने पर चुहिया का बिलबिलाना। क्योंकि बैल न तो चुहिया को देखता ही है और न उसे चोट पहुँचाना चाहता है। प्योत्र फिर अपनी आराम कुर्सी पर बैठकर चिन्तामग्न हो गया।

कुछ हफ्ते पहले मिरोन से झगड़ा होने के बाद प्योत्र ओल्गा से नहीं मिला था और तब से मिरोन से मुठभेड़ के तो कुल अवसर बचा गया। गरमियों के अन्तिम दिनों पैरों में सूजन आने से प्योत्र बिस्तर पर पड़ गया, उस समय वोरोपोनोव हाँफता हुआ अफ़सरों के ढंग से आया और अपने मोटे होठों को चाटते हुए उसने प्योत्र से ज़ार को भेजे जानेवाले एक तार पर हस्ताक्षर करने को कहा। तार में ज़ार से प्रार्थना की गई थी कि वे किसी के सामने न झुकें और दृढ़ रहें। प्योत्र को मेयर के दुस्साहस पर आश्चर्य हुआ, लेकिन अलेक्सी और मिरोन को चिढ़ाने के लिए उसने हस्ताक्षर कर दिये। उसे यह भी विश्वास था कि सेन्ट पीटर्सबर्ग से वोरोपोनोव को करारी डाँट पड़ेगी। इस मोटे होठोंवाले मूर्ख को अपने से बड़ों के मामले में बिना कहे पड़ने की क्या ज़रूरत है।

वोरोपोनोव ने काग़ज़ को जेब में रखकर कोट के सब बटन बन्द कर लिये। उसने अलेक्सी, मिरोन, डॉक्टर और उन लोगों के विरुद्ध शिकायत करना आरंभ की, जो यहूदियों के बहकावे में आकर ज़ार के विरुद्ध काम कर रहे हैं। उसका कहना था कि कुछ लोग तो स्वार्थवश ऐसा करते हैं और कुछ अज्ञान के कारण।

अर्तामोनोव ने यह शिकायतें बड़े सुख के से भाव से सुनीं और सिर हिलाकर अनुमोदन किया। लेकिन जब वोरोपोनोव ने वीरा पोपोवा के ख़िलाफ़ ज़हर उगलना शुरू किया तो प्योत्र की त्यौरियाँ चढ़ गईं।

"वीरा निकोलाइव्ना का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है?"

"क्या मतलब, कोई सम्बन्ध नहीं? हमें सारी बातें मालूम हैं....।"

"तुम्हें कुछ नहीं मालूम।"

"अच्छी बात है, तुम भी मुसीबत में फँसोगे।" मेयर धमकी देकर चला गया। उसी दिन शाम को प्योत्र का भतीजा और बेटी उस पर पिल पड़े। उसकी

उम्र का कुछ ख़याल न रख वे कुत्तों की तरह भूँकने लगे—

"पिता, तुम क्या कर रहो?" तात्याना चिल्लाई। उसकी आँखों में विक्षिप्तता भरी थी। याकोव खिड़की के पास खड़ा शीशे पर ताल दे रहा था। प्योत्र को मालूम था कि उसका बेटा भी उसके खिलाफ़ है। मिरोन ने ताने से पूछा—

"आपने तार पढ़ा कि उसमें क्या था?"

"नहीं, मैंने नहीं पढ़ा, लेकिन मुझे मालूम है उसमें क्या लिखा था—पिल्लों को छूट नहीं मिलनी चाहिए।"

वह मिरोन और तात्याना को उत्तेजित चाहता था, लेकिन याकोव की चुप्पी ने उसे उद्विग्न कर दिया। उसे अपने पुत्र की व्यवसायिक चतुराई पर भरोसा था और उसे लगा कि शायद उसने अपने हित के विपरीत कार्य किया है। लेकिन अपनी स्थिति पर सीधे प्रश्न करके याकोव को विवाद में घसीटने का स्वाभिमान आड़े आ रहा था। वह लेट गया और चिढ़ में कराहने लगा। मिरोन उसे कोंच-कोंच कर बहस में घसीट रहा था—

"तुम्हारी समझ में नहीं आता? ज़ार ठगों के गिरोह से घिरा हुआ है। उन्हें हटाकर उनकी जगह पर ईमानदार लोगों को लाना ज़रूरी है।"

प्योत्र जानता था कि मिरोन स्वयं इन ईमानदार लोगों की श्रेणी में आना चाहता है। अलेक्सी इसी उद्देश्य से मिरोन को शाही ड्यूमा (पार्लियामेन्ट) का सदस्य बनवाने के लिये कई बार मास्को जा चुका है। ज़ार के निकट अपने सारस जैसे भतीजे के खड़े होने की कल्पना ही हास्यास्पद और भयावह थी। यकायक अलेक्सी झपटा हुआ आया। उसके कपड़े और बाल सब अस्त-व्यस्त थे। आते ही वह बड़बड़ाने लगा—

"मूर्ख, सनकी, तुम्हें पता है कि क्या कर रहे हो?"

ऐसा लगता था जैसे वह किसी क्लर्क को डाँट रहा हो।

"तुम सबके सब भाड़ में जाओ। तुम्हारे उपदेश किसने माँगे? निकल जाओ यहाँ से!" प्योत्र को स्वयं अपने आकस्मिक क्रोध पर आश्चर्य हुआ।

और जब ओल्गा कोने में बैठी शान्ति से नगर की गड़बड़ का हाल सुना रही थी, प्योत्र समझने की कोशिश कर रहा था कि कौन ग़लती पर है, वह या बाक़ी लोग।

ओल्गा की बच्चों जैसी बातें सुनकर वह उद्विग्न हो उठा। पर वह बड़ी शान्ति से बातें कर रही थी, बड़े स्नेह से बोली—

"हमारे बुनकर कितने अच्छे हैं, उन्होंने देखते-देखते ही वोरोपोनोव के मज़दूरों और चर्मकारों को भगा दिया, और अब वे घर की चौकसी के लिये रुके हैं।"

नतालिया डर से सहमी बैठी थी। वह क्रोध से भभककर बोली—

"तुम्हारा घर ही तो सारी मुसीबत की जड़ है। बहुत अच्छा हुआ, जैसी करनी वैसी भरनी।"

इतने में मिरोन बिना किसी दुआ सलाम के आ धमका। लचीले क़दमों से कमरे में टहलते हुए उसने धमकियों की बौछार शुरू कर दी—

"लोगों को उपद्रव के लिये उकसाने के लिये इन वोरोपोनोवों और ज़ती-किनों को भारी क़ीमत चुकानी पड़ेगी। ये लोग ऐसी आसानी से बचकर नहीं जा सकते। लौटती चोट पड़ेगी। इलिया पेत्रोविच के मित्रों का सिखाया विद्रोह का पाठ ही काफी है। और इस तरह की चीज़ें भी होती हैं तो....।"

प्योत्र चुप रहा।

वोरोपोनोव की अर्ज़ी के झगड़े के बाद प्योत्र को मिरोन से सख्त नफ़रत हो गई। लेकिन सारा कारख़ाना मिरोन के हाथ में था। वह कुशलता से विश्वास-पूर्वक काम चलाता था। मज़दूरों में उसका आदर या भय था, और वे नगर के मज़दूरों की अपेक्षा अधिक संयत और नम्र व्यवहार करते थे।

बरफ़बारी हो जाने के कारण ठंडी हवा बंद हो गई। खिड़कियाँ सफ़ेद बरफ़ के पर्दों से ढँक गईं और कारख़ाने का अहाता दृष्टि से ओझल हो गया। कोई प्योत्र से बात तक न करता था और उसे लगा कि नतालिया के सिवा सब लोग हर बात के लिये उसे ही दोषी मानते हैं। उपद्रव, बुरा मौसम, ज़ार की करतूतें सभी उसके मत्थे मढ़ दी गईं।

"याशा कहाँ गया। मैं पूछती हूँ याशा कहा गया?" माँ ने चिन्तित स्वर में पूछा। मिरोन ने चाची की नज़र बचा, मुँह बिचकाकर घृणा से कहा—

"वह कहीं दरबे में छिपा पड़ा होगा, बस्ती में।"

"क्या? कहाँ?" नतालिया भयभीत होकर बोली।

प्योत्र सोच रहा था—"कितनी मूर्ख है? याकोव की प्रेमिका के बारे में इसे

तनिक भी पता नहीं।"

अचानक प्योत्र ने दृढ़ स्वर में कहा—"सुनो, जैसे चाहो, रहो; जो मन में आये, करो। मेरी समझ में कुछ नहीं आता। यह सही है, मैं बूढ़ा हो गया हूँ, और....और शैतान अपने काम में लगा है। मैं कुछ नहीं समझता।"

४

छब्बीस वर्ष की आयु तक याकोव अर्तामोनोव ने आराम और शान्ति का जीवन बिताया था। अप्रिय और कटु अनुभवों ने तब तक उसके जीवन में विष न घोला था, लेकिन वह आ ही गया। जब शान्ति-प्रेमियों के शत्रु क्रूर काल ने एक झूठ और फ़रेब से भरा नाटक रचा, जिसका सूत्रधार याकोव को स्वयं बनना पड़ा। यह नाटक उस विद्रोह के तीन वर्ष बाद, जिसने दीर्घकाल से मन मसोसकर शान्त रहनेवाली जनता के हृदयों में तूफ़ान जगा दिया था, एक दिन अप्रैल की रात को शुरू हुआ।

याकोव सोफ़े पर लेटा सिगरेट पी रहा था। उसके मन में एक ऐसी तृप्ति छायी हुई थी, जिसमें कोई इच्छा शेष न रही थी। इस तृप्ति को वह जीवन में सर्वोपरि मानता था। उसकी दृष्टि में यह तृप्ति ही जीवन का उद्देश्य और वास्तविक मूल्य थी। स्वादु भोजन और एक स्त्री का उपभोग कर लेने के उपरान्त यह तृप्ति और भी सुखद हो उठी थी।

गदराये और सुगठित शरीरवाली स्त्री कमरे के बीच मेज़ के पास खड़ी विचारपूर्ण मुद्रा में काफ़ी के बर्तन के नीचे स्पिरिट से जलनेवाले स्टोव की तेज़ बैंगनी लपटों की ओर देख रही थी। लैम्प की रोशनी लाल शेड में से छनकर उसकी नंगी बाहों और बाल्य मुख पर चमक रही थी। उसके काले अस्त-व्यस्त बाल गर्दन और कन्धों पर बिखरे हुए थे। वह एक सुनहरी रंग के बुख़ारा के शाल में नंगी लिपटी हुई थी और उसके पैरों में हरे मोरक्को चमड़े के स्लीपर थे। पोलीना देखने में हल्की-फुल्की फुरतीली ऐसी लगती थी कि रूसी न हो। उसका छोटा प्रफुल्ल मुख किसी किशोर बालक का-सा लगता था। उसकी आँखें चेरी के फल की भाँति गोल और ओंठ भरे थे। उसका तबियत भर उपभोग

करने के बाद भी याकोव को वह आकर्षक लग रही थी। निस्सन्देह अभी तक वह जिन लड़कियों से परिचित था, उनसे वह कहीं अधिक सुन्दर थी। यदि उसके विचार मूर्खतापूर्ण न होते तो वह निश्चय ही संपूर्ण होती।

"मुझे और कॉफ़ी नहीं चाहिए, मेरी जान!" याकोव ने सिगरेट का धुँआ उड़ाते हुए कहा। पोलीना ने उसकी ओर देखे बिना ही पूछा—

"और मैं?"

"मैं क्या जानूँ, तुम्हें क्या चाहिए?" याकोव ने थकी हुई जमुहाई ली।

"तुम अच्छी तरह जानते हो!" लड़की ने झुँझलाकर खरी-खोटी सुनाई। कुछ क्षणों तक उसकी गाली-गलौज को सुनने के बाद याकोव उठ खड़ा हुआ। उसने सिगरेट ज़मीन पर फेंककर जूते चढ़ाये। फिर गहरी साँस लेकर बोला—

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम रंग में भंग क्यों डालती हो? तुम अच्छी तरह जानती हो कि पिता के मरने से पहले मैं तुम्हारे साथ विवाह नहीं कर सकता।"

यह सुनकर पोलीना ने हमेशा की तरह ताने मारने शुरू किये।

"तुम्हें तो हर समय रंगरेलियाँ चाहिए, मकड़े कहीं के। मैं जानती हूँ, रंग-रेलियों की ख़ातिर तुम मुझे तातार कबाड़ी के यहाँ भी बेच आओगे। तुम्हें अपनी आबरू का ख़्याल हो तब न!"

'मकड़ा' पुकारने पर याकोव उससे बेहद नफ़रत करता, किन्तु प्रेम के क्षणों में वह उसे किसी दूसरे मनोरंजक नाम से पुकारती—"मेरे मुलायम चारा।" कम से कम आज तो वह यही चाहता था कि वह उससे झगड़ा न करती। अभी दो घण्टे पहले उसने पोलीना को सौ रूबल दिये थे।

"चीख़ने-चिल्लाने से कुछ न बनेगा।" याकोव ने चेतावनी दी और सिर पर टोपी लगाकर हाथ बढ़ाया, "सलाम!"

"सूअर! फिर सिगरेट के टुकड़े तमाम फ़र्श पर बिखेर दिये।"

सड़क पर सीली-सीली हवा चल रही थी। बादलों की छाया धरती पर रेंग रही थी, मानो पानी के गड्ढों को सुखाना चाहती हो। क्षण भर के लिए जब चन्द्रमा ने नीचे झाँककर देखा, तो यह गड्ढे जिन पर बरफ़ की झिल्ली छा रही थी, ताँबे की तरह चमक उठे। उस वर्ष सर्दियों का मौसम बसन्त के आगमन

को जबरन रोक रहा था। अभी परसों ही ख़ूब बर्फ़ पड़ी थी।

याकोव अर्तामोनोव जेबों में हाथ डाले, अपनी मोटी छड़ी को बग़ल में दबाये धीमी चाल से जा रहा था। वह सोच रहा था, "लोग किस तरह इतने मूर्ख होते हैं। उस प्यारी मूर्ख लड़की पोलीना में आख़िर किस चीज़ की कमी है? वह आराम से रहती है। उसे न कोई चिन्ता है, न परेशानी। उसे क़ीमती उपहार भेंट किये जाते हैं, क़ीमती कपड़े पहनती है, ऊपर से हर महीने सौ रूबल ख़र्च को मिलते हैं। वह याकोव को चाहती है, इसका उसे अनुभव था। फिर उसे और क्या चाहिए? उसे विवाह की क्या ज़रूरत है?"

"मुरब्बे के मर्तबान में बैठे चूहे-सी मूर्ख" याकोव ने सोचा। यह उसकी अपनी आविष्कार की हुई प्रिय कहावत थी। जीवन उसे एक सीधी-सादी चीज़ लगता था, जो एक मनुष्य से कुछ अधिक माँगता। जो है वही पर्याप्त है। आख़िर इस पर ध्यानपूर्वक सोचा जाय, तो बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है। सब लोग एक ही लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील हैं—दिन की दौड़-धूप और आपा-धापी रात की शान्ति की भूमिका ही तो है। उस शान्ति की, जिसके चन्द घंटों में पुरुष एक स्त्री के साथ अकेला होता है, और उसके प्यार और मनुहार की सुखद थकान से चूर होकर गहरी नींद में हो जाता है। वास्तव में यही महत्व-पूर्ण है, यही सत्य है। सब लोग मूर्ख हैं, क्योंकि यदि लगभग सभी स्पष्ट या गुप्त रूप से अपने को उससे अधिक बुद्धिमान समझते हैं। उन्होंने इतनी व्यर्थ की चीज़ें ईजाद कर ली हैं। कदाचित् एक विशेष प्रकार के अन्धेपन के कारण, क्योंकि हर व्यक्ति दूसरों के मुक़ाबिले में अपने को विशिष्ट साबित करने के लिए परेशान है, ताकि वह कहीं भीड़ में न खो जाय, अपने को भूल न जाय।

बुद्धू इलिया भी विद्यार्थी जीवन में ही किताबों के फेर में पड़ गया, और अब कहीं साम्यवादियों के गिर्द चक्कर काट रहा है। उसने कई बार याकोव को अपमानित किया था, और अब—इलिया साइबेरिया में था। याकोव ने कुछ दिन पहले उसको वहाँ पैसे भेजे थे। उनकी माँ असह्य और हास्यास्पद रूप से मूर्ख है, नीरस स्वभाववाला उनका पिता असाध्य रूप से मूर्ख है। यह बूढ़ा भालू किसी के साथ भी बनाकर नहीं रख सकता, उसकी आदतें फूहड़ और गन्दी हैं। चचा अलेक्सी बजरबट्टू-सा डूमा का सदस्य बनना चाहता है। इस इरादे

से वह भूखे भेड़िये की तरह अख़बारों पर टूटता है और शहर में हर किसी से बनावटी मिठास से बोलता है। मिल के मज़दूरों को अधेड़ कामुक स्त्री की तरह रिझाता फिरता है। सबसे अधिक दुखदाई मूर्ख तो वह मोटी नाकवाला कठ-फोड़वा मिरोन है, जो अपने को देश का सबसे योग्य व्यक्ति समझता है और सचमुच ही उसे विश्वास है कि वह भविष्य में कभी मन्त्रिमण्डल का सदस्य बन जायेगा। रही वर्तमान की बात, तो वह इस विश्वास को छिपाने का प्रयत्न नहीं करता कि वही स्पष्ट देखता है कि क्या करना चाहिए और सब क्या सोचें। वह भी मज़दूरों की सहानुभूति अपनी ओर करने में लगा है। इसलिए वह तरह-तरह के मनोरंजन जुटाता है, फुटबाल की टीमें बनाता है और पुस्तकालय खोलता है। गाजरें खिलाकर भेड़ियों को पालतू बनाना चाहता है।

सुन्दर कपड़े बुननेवाले मज़दूर फटे-चीथड़े पहनते, गन्दी कोठरियों में नशे में पड़े रहते। वे भी सबके सब एक बड़ी मूर्खता के शिकार थे और दुर्भाग्य से उनमें सीधे-सादे किसान जैसी चतुराई भी न थी। याकोव हर समय मज़दूरों के बारे में सोचता रहता। क्योंकि उसे रोज़ मजदूरों से काम लेना होता था, इसलिए बचपन से ही उसके मन में उनके प्रति तीव्र घृणा थी। छोकरियों के कारण बुनकरों से उसकी बीसियों बार लड़ाइयाँ हुई थीं। पहले के प्रतिद्वंद्वियों में से कुछ तो अब तक अपने पुराने क्षोभ को न भूले थे। दाढ़ी उगने से पहले ही वह दो बार रात को पत्थरों की बौछार सह चुका था। अनेक बार उसकी माँ को बदनामी से बचने के लिये नक़द रुपये देकर चीख़ती हुई औरतों का मुँह बन्द करना पड़ा था। ऐसे मौक़ों पर उसकी माँ हास्यास्पद ढंग से उसकी भूलें उसे समझाती—

"तुम भी क्या करते फिरते हो! छुट्टे साँड़ की तरह घूमते हो। शादी होने तक अपने को रोक नहीं सकते! नहीं, तो फिर एक को चुनकर उसके ही होकर रहो। अगर कहीं तुम्हारे पिता तक बात पहुँची तो वह तुम्हें इलिया की तरह निकाल बाहर करेंगे।"

गड़बड़ी के पिछले दो-तीन वर्षों में याकोव को कारख़ाने में कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं दिखाई दी। तो भी मिरोन की बातें, चचा अलेक्सी की आहें और अख़बार तो थे ही। याकोव को अख़बार पढ़ने का क़तई शौक न

था, फिर भी उसे अनिच्छापूर्वक राज्य की ड्यूमा में दिये गये मज़दूर-प्रतिनिधियों के भाषण पढ़ने पड़ते। इस सबसे मज़दूरों के प्रति उसकी घृणा और भी बढ़ गई। उसे लगता मानो वास्तव में उसका जीवन मज़दूरों पर निर्भर है, और इस तथ्य को मज़ाकों, मुस्कानों और छोटी-मोटी रियायतों के पीछे छिपाना पड़ता है। वैसे तो समग्र रूप में जीवन बुरा नहीं था, किन्तु कभी-कभी याकोव के मन में एक विचित्र प्रकार की ग्लानि-सी पैदा होती। उसे ऐसा लगता मानो उनका मालिक, वह, इन मज़दूरों के यहाँ बहुत दिनों से टिका हुआ है, और जिससे उसके मेज़बान तंग आ गये हैं और उसे देख-देखकर चुपचाप सोचते हैं—

"तुम निकलते क्यों नहीं, यही ठीक वक्त है।"

ऐसे क्षणों में उसे धुँधली-सी आशंका होती कि कारखाने में कुछ सुलग-सा रहा है, कुछ छिपा हुआ अदृश्य, जो उसके लिये व्यक्तिगत रूप से उसके ही लिये घातक विपत्ति का पूर्वसूचक हो। याकोव को विश्वास था कि मानव सीधा होता है और सिधाई उसकी सबसे प्रिय इच्छा रहती है। अपने आप मानव दुश्चिन्ता नहीं उपजाता, अपने में उसके बीज नहीं रखता। ऐसे विषैले विचार तो मानव के बाहर कहीं बाह्य वातावरण से आते हैं, और जब वे उसके मन पर आक्रमण करते हैं तो वह बड़ा ही अजीब हो जाता है। इन विचारों को न जानना और उन्हें अपने अन्दर न पनपने देना ही सबसे अच्छा है। लेकिन इस विचारों का विरोध करते हुए भी याकोव अपने आस-पास के व्यक्तियों को को इन विचारों का शिकार पाता था। वह देखता कि वे उसके चारों ओर फैली मूर्खता की कठिन गाँठों को सुलझा नहीं पाते, और जिन स्पष्ट और सीधी चीज़ों को वह प्यार करता, उन्हें उलझाने में ही सफल होते।

अपने परिचितों में से उसे तिखोन व्यालेव ही सबसे अधिक बुद्धिमान लगता था। तिखोन के अथक परिश्रम तथा दूसरे लोगों के प्रति संयत भाव को देखकर याकोव को उससे ईर्षा होती थी। यहाँ तक कि सोते समय भी तिखोन बुद्धिमान दिखाई देता, उसके कान तकिये पर दबे रहते, मानो वह कुछ सुन रहा हो। याकोव पूछता—

"क्या तुम्हें सपने आते हैं?"

"मुझे क्यों आने लगे? मैं क्या औरत हूँ?" तिखोन उत्तर देता, और

इन शब्दों के पीछे याकोव को एक दृढ़ और परिपक्व शक्ति का भान होता, अचल शक्ति का।

"स्त्रियों के से सपने!" चचा अलेक्सी के घर होनेवाली बहसों को सुनकर याकोव सोचता। उसे मन ही मन हँसी आती।

याकोव सोचने का आदी न था। जब वह सोचने लगता तो उसका शरीर शिथिल हो जाता, मानो उस पर भारी बोझ आ पड़ा हो। सिर और आँखें नीचे झुक जातीं। जिस रात को वह पोलीना को छोड़कर बाहर निकला, उस समय भी वह गहरी चिन्ता में डूबा था। इसीलिए उसे अँधेरे में से निकलता तगड़ा काला आकार तबतक दिखाई न दिया जबतक कि वह उसके सामने न आ गया। उसका हाथ याकोव के सिर पर उठता दिखाई दिया। याकोव ने तुरन्त घुटने के बल बैठकर जेब से पिस्तौल निकाला और आक्रमणकारी की टाँग पर गोली चलाई। गोली की आवाज़ धीमी और अस्पष्ट थी, लेकिन वह मनुष्य उछल पड़ा। उसका कन्धा बाड़े से टकरा गया और वह कराहकर बाड़े के सहारे बैठ गया।

तब याकोव ने अनुभव किया कि वह बहुत अधिक डर गया है, इतना अधिक कि वह चिल्लाना चाहता था, पर मुँह से आवाज़ न निकलती थी। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उसके हाथ-पाँवों ने जवाब दे दिया। दो क़दमों की दूरी पर वह व्यक्ति ऐंठ रहा था, वह भी उठने की कोशिश कर रहा था। उसकी टोपी गिर गई थी, जिससे उसके घुँघराले बाल दिखाई दे रहे थे।

"शैतान! मैं गोली से तुम्हारा सिर उड़ा दूँगा।" याकोव ने पिस्तौल तानकर रुँधे गले से कहा। घूमने से उस आदमी का चौड़ा चेहरा सामने हुआ, वह बुदबुदाया—

"तुम मुझे पहले ही उड़ा चुके हो।"

उस व्यक्ति को पहचानते ही याकोव की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

"नोस्कोव! कुत्ते कहीं के, तुम हो!"

याकोव का भय तुरन्त दूर हो गया और उसकी जगह उसे ख़ुशी हो रही थी। वह मन ही मन प्रसन्न हुआ। उसे पश्चात्ताप न होकर इस बात की ख़ुशी हो रही थी कि आक्रमणकारी उसकी मिल का मज़दूर नहीं है। नोस्कोव शिकार

मार कर और लोगों की शादियों में अकार्डियन बजाकर अपना पेट पालता था। उसका अपना कोई परिवार न था, और वह पादरिन तैसिया पगाक्रीनेवा के यहाँ भोजन करता था। इस रात की घटना के पहले नगर में कभी किसी ने उसकी निन्दा नहीं की थी।

"अच्छा! तुम यह किया करते हो?" याकोव ने उठते हुए पूछा। पेड़ों में सरसराती हुई वायु के अतिरिक्त चारों ओर निस्तब्धता छाई थी।

"क्या किया करता हूँ?" नोस्कोव ने ऊँची आवाज़ से पूछा, "मैं तो तुम्हें डराने के लिए मज़ाक कर रहा था और तुमने आव देखा न ताव, झट से गोली दाग़ दी। तुम्हें इस बात पर शाबाशी नहीं मिलेगी, इतना कहे देता हूँ। मैं भी डर गया था।"

"ओह, सचमुच?" याकोव ने विद्रूप भरे विजय-स्वर में पूछा। "अच्छी बात है, खड़े हो जाओ, पुलिस के पास चलना है।"

"मैं खड़ा नहीं हो सकता, तुमने मुझे लँगड़ा कर दिया है।"

नोस्कोव ने अपनी टोपी उठाई और कहा—

"मैं पुलिस से नहीं डरता।"

"यह तो वहाँ जाकर मालूम होगा। चलो।"

"मैं नहीं डरता।" नोस्कोव ने दुहराया। "पहले तो तुम यह कैसे साबित करोगे कि मैंने तुम पर आक्रमण किया था, तुमने नहीं?"

"अच्छा, और दूसरे?" याकोव ने घृणा से मुस्कराकर पूछा, यद्यपि नोस्कोव की निडरता देखकर वह थोड़ा घबरा उठा था।

"दूसरी बात यह कि तुम्हें मेरी ज़रूरत है।"

"तुम्हारी बातें परियों की कहानियों और बच्चों की लोरियों को भी मात करती हैं।"

अकस्मात् आवेश में आकर याकोव ने शिकारी के चेहरे पर पिस्तौल तान दिया।

"मैं तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूँगा।"

नोस्कोव ने शान्त भाव से याकोव के चेहरे की ओर देखा, फिर अपने हैट को देखा और प्रभावपूर्ण स्वर में कहा—

"किसी प्रकार की गड़बड़ करने की चेष्टा मत करो। मालूम है कि तुम

अमीर हो, लेकिन इससे साबित कुछ न कर पाओगे। मैं कह रहा हूँ कि तुमसे मज़ाक कर रहा था। मैं तुम्हारे पिता को जानता हूँ। कितनी ही बार उन्हें बाजा सुना चुका हूँ।"

उसने टोपी लगाई और अस्पष्ट स्वर से कुछ बुदबुदाते हुए अपनी पतलून चढ़ाई। ज़ख्म घुटनों से ऊपर था। फिर जेब से रूमाल निकालकर उसने जख्म पर पट्टी बाँधी। उसके इस विचित्र व्यवहार से याकोव की सारी शेखी मिट्टी में मिल गई।

असाधारण शीघ्रता से याकोव अर्तामोनोव ने सारी स्थिति पर विचार किया। यों तो नोस्कोव को यहाँ छोड़कर उसे पुलिस के दफ्तर में इस आक्रमण की रिपोर्ट करनी चाहिए। लेकिन फिर छानबीन शुरू होगी और नोस्कोव बतायेगा कि किस तरह उसका पिता पादरिन के यहाँ रंगरेलियाँ मनाता है। हो सकता है कि और लोगों को भी बदला चुकाने का अवसर मिले; किन्तु नोस्कोव को सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए....।

सर्दी बढ़ती जा रही थी। पिस्तौल पकड़े याकोव की उँगलियाँ ऐंठकर दुखने लगी थीं। पुलिस का दफ्तर वहाँ से बहुत दूर था और निश्चय ही सारे कर्मचारी नींद में बेसुध होंगे। याकोव किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो चुपचाप खड़ा था। उसे इस बात का खेद था कि उसने इस बदमाश को जान से क्यों नहीं मार दिया। उसकी टाँगें कमान की तरह मुड़ी थीं, मानो वह जीवन भर गोल पीपे पर चढ़ा रहा हो। हठात् याकोव का ध्यान टूटा। नोस्कोव कह रहा था—

"मैं तुम्हें एक गुप्त रहस्य बताता हूँ। मैं तुम लोगों की भलाई के लिए ही यहाँ रहता हूँ, तुम्हारे मज़दूरों पर आँख रखने। सम्भव है कि तुम्हें डराने की बात झूठ कही हो। सच बात तो यह है कि एक आदमी है, जिसे पकड़ना है, और मैंने तुम्हें ही वह आदमी समझ लिया।"

"शैतान, तुम्हारा क्या मतलब है?" याकोव ने पूछा।

"जो कुछ मैं कह रहा हूँ, तुम वह नहीं जानते; लेकिन इस स्थान पर साम्यवादी अपने दल का संगठन कर रहे हैं। पादरिन के स्नानागार में छिप-छिपकर वे तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ते हैं और विद्रोह की बातें करते हैं।"

"तुम झूठ बोलते हो।" याकोव बुदबुदाया, यद्यपि उसे हर शब्द पर

विश्वास हो गया था। "कौन-कौन जमा होते हैं ?"

"मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता। जब वे जमा हों, तब स्वयं देख लेना।"

नोस्कोव अहाते के तख्तों का सहारा लेकर खड़ा हो गया और बोला—"मुझे अपनी छड़ी दे दो। मैं बिना सहारे के नहीं चल सकता।"

याकोव ने झुककर ज़मीन से छड़ी उठाई और शिकारी को पकड़ा दी। कनखियों से नोस्कोव की ओर देखकर उसने धीमे स्वर में पूछा—"लेकिन तुमने....मुझपर प्रहार क्यों किया ?"

"मैंने तुम पर प्रहार नहीं किया। सिर्फ़ पहचानने में ग़लती हो गई। मैं किसी और की तलाश में था। छोड़ो, इस बात को। तुम जल्दी ही जान जाओगे कि मेरी बात सच है। इस समय तो मुझे इलाज कराने के लिए थोड़े पैसे दे दो।"

फिर एक हाथ से छड़ी का सहारा लेकर और दूसरे हाथ से अहाते के तख्तों को पकड़ता नोस्कोव नगर के बाहरी भाग में स्थित अँधेरे मकानों की ओर चल पड़ा। ऐसा लगता था जैसे वह बादलों की शीतल छाया को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा है। दस क़दम आगे बढ़कर वह ठिठक-सा गया और धीमे स्वर से उसने याकोव को आवाज़ दी—

"याकोव पेत्रोविच !"

याकोव लपककर उसके पास पहुँचा। शिकारी ने कहा—"इस बारे में किसी से एक शब्द भी न कहना, क्योंकि....तुम स्वयं समझदार हो।"

"वह छड़ी टेकता हुआ वहाँ से चला गया और याकोव पत्थर बना वहीं खड़ा रहा। इस बात के इतने पहलू हैं, सभी पर सोचना है और तुरन्त उसे निश्चय करना होगा कि उसने ठीक काम किया या नहीं। निस्सन्देह यदि नोस्कोव साम्यवादियों पर जासूसी करता है, तो वह बड़ा उपयोगी व्यक्ति है। उसे नहीं छेड़ना चाहिए। लेकिन अगर यह सब धोखा हो तो ? नोस्कोव ने मौक़ा निकालने के लिए झूठ बोला हो कि बाद में अपनी असफलता और घायल पैर का बदला निकाले ! याकोव को कोई और समझ लेने की बात झूठ है, और उसे डराने की बात भी साफ़ तौर से झूठ है। मान लो, मज़दूरों ने उसे पैसा देकर याकोव की हत्या करानी चाही हो। बुनकरों में भी गुण्डों और बदमाशों की कमी न थी। रही साम्यवादियोंवाली बात—तो उस पर सहसा विश्वास नहीं हो सकता।

मज़दूरों में सबसे अधिक सम्मानित सेदोव, किकूनोव और मेस्लोव आदि ने तो हाल ही में एक पुराने बदमाश की बर्ख़ास्तगी की माँग की थी। नोस्कोव की सारी बातें झूठ हैं। क्या यह बातें मिरोन को बतानी उचित होंगी ?

उसकी समझ में न आया कि मिरोन से नोस्कोव के बारे में कहने पर क्या होगा, लेकिन यह बात पक्की थी कि मिरोन जज की तरह ज़रा ज़रा-सी बातें पूछेगा और किसी न किसी बात पर सारा दोष उसके मत्थे ही मढ़ देगा। वह और जो कुछ भी करे, पर उसका मज़ाक उड़ाना निश्चित था। यदि नोस्कोव जासूस है तो यह बात शायद मिरोन को मालूम होगी। इसके अतिरिक्त दोनों में से ग़लती किसकी थी—नोस्कोव की या याकोव की ? नोस्कोव ने कहा—

"तुम्हें जल्दी मालूम हो जायगा कि मेरी बात सच है।"

याकोव चुपचाप खड़ा शिकारी को देखता रहा। शिकारी रात के अँधेरे में ग़ायब हो गया। हर चीज़ सीधे-सादे और समझ में आनेवाले ढंग पर शुरू हुई थी। नोस्कोव ने लूटने के इरादे से याकोव पर हमला किया था और याकोव ने आत्मरक्षा के लिए उस पर गोली चलाई थी। लेकिन बाद की बातें एक भयानक सपने के समान थीं। नोस्कोव जिस ढंग से बाड़े की दीवार के सहारे चल रहा था वह भी असाधारण था। नोस्कोव के पीछे रेंगनेवाली घनी और भयानक परछाईं भी असाधारण थीं। याकोव ने ऐसी परछाईं को घसीटते कभी न देखा था।

इन चिन्ताओं से चूर होकर याकोव ने चुप रहने और प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। लेकिन नोस्कोव की बात उसके मन में लगातार बनी रही, जिससे वह दुःखी और खिन्न हो उठा। खाने के समय जब सब मज़दूर कारख़ाने से निकलकर बाहर आते तो याकोव दफ़्तर की खिड़की के पास खड़ा होकर साम्यवादियों को पहचानने की कोशिश करने लगा। कहीं भट्ठी झोंकनेवाला लँगड़ा वास्का तो इसमें शामिल नहीं है, जिसने सेराफ़ीम से विचित्र तुकबन्दियाँ जोड़ने की कला सीखी थी।

कुछ दिन बाद याकोव एक भड़कनेवाले घोड़े को दौड़ाने के लिए जंगल में गया। उसे वहाँ घुड़सवार पुलिस का आदमी नेस्तरेंको दिखाई दिया। स्वेडिश जाकेट और ऊँचे बूट पहने वह जंगल के पास खड़ा सिगरेट जला

रहा था। उसके कंधे पर बन्दूक़ थी और पास ही में शिकारी थैला पड़ा था। उसकी वास्कट धूप में लोहे की बनी दिखाई देती थी। याकोव को यकायक एक बात सूझी। वह घोड़ा दौड़ता हुआ उसके पास पहुँचा और जल्दी में बोला—

"कहो, शहर कब आये ?"

"परसों। मेरी पत्नी का रोग फिर बढ़ गया है।"

इस शोकपूर्ण समाचार को उल्लासपूर्ण ढंग से सुनाकर नेस्तरेंको ने अपने थैले की ओर इशारा करके कहा—

"अपनी क़िस्मत आज़माता रहा हूँ। बुरा नहीं है।"

"तुम उस शिकारी नोस्कोव को जानते हो ?" याकोव ने धीमे स्वर से पूछा।

नेस्तरेंको की ललछौंहीं भृकुटियाँ आश्चर्य से चढ़ गईं और उसकी चीनियों-सी मूँछें उठ खड़ी हुईं। वह आसमान की ओर देखकर कुछ सोचने और मूँछ का एक सिरा मरोड़ने लगा। याकोव ने उसे देखकर मन ही मन सोचा—

"कोई मनगढ़न्त कहानी सोच रहा है, ज़रा मैं भी देखूँ !"

"नोस्कोव ? वह कौन है ?"

"एक शिकारी, घुँघराले बालोंवाला, जिसकी टाँगें मुड़ी हैं....।"

"हाँ, अब याद आया। शायद मैंने उसे जंगल में कहीं देखा है। उसके पास एक रद्दी-सी बंदूक है। उसकी क्या बात है ?"

नेस्तरेंको की चमकती हुई भूरी आँखें उत्सुकतापूर्वक याकोव के चेहरे पर टिक गईं। याकोव ने सारी घटना कह सुनाई। नेस्तरेंको सिर नीचा किये बन्दूक़ के कुंदे से देवदार की नोक को कुचलता हुआ चुपचाप सुनता रहा। जब याकोव कह चुका तो आँखें उठाये बिना ही उसने पूछा—

"तुम पुलिस के पास क्यों नहीं गये ? ऐसी बातों की छान-बीन करना उनका काम है। मेरे दोस्त, इन्हें बताना तुम्हारा फ़र्ज़ था।"

"यही तो मैं तुम्हें बता रहा हूँ। उसने मुझसे कहा कि वह मज़दूरों पर जासूसी करता है। पर यह तुम्हारा काम है।"

"हूँ !" नेस्तरेंको ने सिगरेट की राख झाड़ी। फिर वह याकोव की ओर पैनी दृष्टि डालकर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहने लगा। याकोव ने पुलिस से यह घटना छिपाकर क़ानून के विरुद्ध काम किया है, लेकिन अब समय बीत गया,

इसलिए कुछ नहीं किया जा सकता ।

"अगर तुम उसे फ़ौरन पुलिस के दफ्तर में ले जाते, तो मामला साफ़ बन जाता । लेकिन अब तुम यह कैसे साबित कर सकते कि उसने तुम पर हमला किया ? उसकी टाँग ?....मुँह....आत्मरक्षा के लिए तुमने उस पर गोली चलाई हो अचानक लापरवाही से ।"

याकोव को लगा कि नेस्तरेंको धोखा देकर, डरा-धमकाकर उसे या अपने को इस मामले से अलग करना चाहता है । याकोव को विश्वास हो गया कि वह झूठ बोल रहा है ।

"मेरे दोस्त, विश्वास रखो, उसे जासूसी करने का पूरा फल मिलेगा । हम उससे सारी बातें उगलवायेंगे ।"

फिर याकोव के कन्धे पर हाथ रखकर उसने कहा—

"देखो ! वादा करो कि यह बात यहीं तक रहेगी । यह तुम्हारे हक़ में है । कहो वायदा करते हो ?"

"अवश्य ।"

"अपने चचा या मिरोन अलेक्सी तक से इस बात की चर्चा मत करना । तुमनें कहीं उनसे यह बात कह तो नहीं दी ? अच्छी बात है, इस बात को यहीं रहने दो । समझे ? शिकारी ने स्वयं गोली चलाकर अपनी टाँग ज़ख्मी कर ली है—तुम्हारा इस घटना से कोई सम्बन्ध नहीं ।"

याकोव मुस्करा दिया । नेस्तरेन्को अचानक सजीव और हँसमुख हो गया था । बिलकुल दूसरा आदमी ।

"सलाम -- अपना वायदा याद रखना ।"

याकोव घर लौट आया । उसके मन का बोझ कुछ हल्का हो गया था । शाम को चचा ने उसे सरकारी जागीर पर जाने के लिए कहा—वह फ़ौरन राज़ी हो गया । आठ दिन बाद जब वह वापिस लौटा तो चचा के यहाँ भोजन के समय जो ख़बरें सुनीं, उनसे उसकी दुःशंकायें और अधिक बढ़ गईं । मिरोन बोला :

"नेस्तरेन्को उतना लफंगा नहीं, जितना मैं समझता था । उसने शहर में तीन आदमियों को पकड़ा है, जिनमें एक स्कूल का अध्यापक मेदेस्तोव और दो अन्य व्यक्ति हैं ।"

"कारख़ाने में से भी किसी को पकड़ा है ?" याकोव ने पूछा ।

"कारख़ाने से ? सेदोव, क्रिकुनोव, अब्रामानोव और पाँच और छोकरे पकड़े गये । वैसे तो शहर की पुलिस ने गिरफ्तारियाँ कीं, लेकिन यह सारा काम नेस्त-रेंको का है । उसकी पत्नी की बीमारी हमारे लिये फ़ायदेमन्द साबित हुई । वह मूर्ख नहीं— हर समय अपनी रक्षा के लिए सतर्क रहता है ।"

"आजकल उन लोगों ने हत्या करना बन्द कर दिया है ।" अलेक्सी बोला ।

"हूँ" मिरोन ने तपाक से जवाब दिया । 'अरे, हाँ मैं भूल गया । शहर में एक और आदमी पकड़ा गया है । क्या नाम है उसका वह शिकारी....?"

"नोस्कोव ?" याकोव ने क्षीण स्वर में पूछा ।

"मुझे उसका नाम तो नहीं मालूम, लेकिन वह पादरिन के घर में रहता था, जहाँ साम्यवादियों की सभायें होती थीं, और उसी समय तुम्हारे पिताजी पादरिन के साथ उसके शयनकक्ष में रंगरेलियाँ मना रहे थे ! यह संयोग सुखद नहीं है ।"

"ख़ैर, जाने दो इस बात को ।" अलेक्सी ने अपना गंजा सिर हिलाते हुए, कहा—"उसे कौन समझाए ?"

याक़ाव का सिर चकराने लगा। उसने मिरोन के वाक्य को पूरा नहीं सुना।

नोस्कोव गिरफ्तार हो गया था। इससे यह बात साफ़ हो गई कि वह लुटेरा नहीं, बल्कि स्वयं एक साम्यवादी था। इसका अर्थ यह है कि मज़दूरों ने मालिक को पीटने या मार डालने के लिए उसे रखा था, और वही मज़दूर जिन्हें याकोव सबसे अधिक सम्मानित और योग्य समझता था, हमेशा साफ़-सुथरा रहनेवाला सेदोव, हँसमुख और शिष्ट मिस्त्री क्रिकोनोव, बढ़िया काम करनेवाला गायक अब्रामोनोव, ये सभी के सभी साम्यवादी निकले । कौन सोच सकता था कि ये लोग भी उसके दुश्मन निकलेंगे ?

उसे लगा कि उसकी अनुपस्थिति में चचा के यहाँ और अधिक शोर-गुल मचने लगा था । सोने के दाँतवाला डाक्टर याकोवलेव, जो कभी किसी चीज़ या व्यक्ति के बारे में भली बात नहीं कहता था, जीवन की हँसी उड़ाकर उससे दूर-दूर रहता —वही डाक्टर याकोवलेव अब सबसे आगे आ गया है । उसके अख़बार पलटन के ढंग में ही कुछ डरावना-सा था ।

"हाँ" वह बोला और उसके सोने के दाँत चमक उठे। "हममें जीवन आ रहा है, हम जाग उठे हैं। जनता ऐसे नौकरों के मानिन्द है जिन्हें अचानक मालिक के आने की ख़बर मिली हो। नौकरी छूटने के भय से वे भागदौड़ कर रहे हैं।"

"यह सब अस्पष्ट बातें हैं, डाक्टर!" मिरोन ने मुँह बनाकर कहा, "तुम्हारी यह अराजकता और नास्तिकता....।"

लेकिन डाक्टर की आवाज़ लगातार ऊँची होती गई। उसके भाषण भी लम्बे होते गये और उसके शब्दों से याकोव चिन्तित हो उठा। मानो सब लोगों के मन में कोई अज्ञात भय समा गया है। सभी विपत्ति की भविष्यवाणी कर एक दूसरे का डर बढ़ाते रहते। लगता था कि वे वास्तव में अपने ही विचारों और व्यवहार से डरते थे। याकोव को यह भी उस सर्वव्यापी मूर्खता का ही रूप जान पड़ा; जबकि उसका भय काल्पनिक अनिष्टों का नहीं था। उसका भय वास्तविक, ऐसा वास्तविक कि गले के फन्दे के स्पर्श मात्र से उसकी खाल सिकुड़ जाती। यह फन्दा अदृश्य होते हुए भी तंग होता जाता था, और उसे किसी महान् और अनिवार्य विपत्ति की ओर खींच रहा था।

उसका भय और बढ़ गया, जब दो महीने बाद नोस्कोव शहर में फिर दिखाई दिया और पीला, पतला-दुबला अब्रामोनोव कारख़ाने में लौट आया।

"क्या तुम इस बूढ़े को फिर से काम पर लगा लोगे?" अब्रामोनोव ने मुस्कराकर पूछा। याकोव को मना करने का साहस न हुआ।

"अच्छा, बताओ तो जेल बुरी रहती है?" उसने पूछा। अब्रामोनोव ने मुस्कराते हुए ही जवाब दिया—

"वहाँ बेहद भीड़ है। अगर टाइफस का बुख़ार न हो तो पता नहीं वे लोगों को कहाँ बन्द करते।"

उसके चले जाने के बाद याकोव ने सोचा, "तुम मुस्कराते हो, पर मैं जानता हूँ, तुम क्या सोचते हो।"

उसी शाम को मिरोन ने अब्रामोनोव को लेकर बखेड़ा खड़ा कर दिया। वह याकोव पर चिल्लाता और बार-बार इस तरह अपना पाँव पटक रहा था जैसे किसी नौकर को डाँट रहा हो।

"क्या तुम पागल हो गये हो? उसे कल ही निकाल बाहर करो।" वह चिल्लाया। उसकी नाक क्रोध से लाल हो आई थी।

कुछ दिनों बाद जब याकोव सबेरे ओका में नहाने जा रहा था, तब रास्ते में लेफ्टीनेन्ट मेवरिन और नेस्तरेंको से उसकी भेंट हो गई। वे नाव खेते हुए बंसी उठाये किनारे आ रहे थे। शान्त स्वभाववाला लेफ्टीनेन्ट तो याकोव का लापरवाही से अभिवादन करके नाव खेता हुआ बिना बोले फिर बीच धार की ओर बढ़ गया, लेकिन नेस्तरेंको ने उतरकर कपड़े उतारते हुए कहा—

"तुम्हें अब्रामोनोव को नहीं निकालना चाहिए था। खेद है कि मैं पहले तुम्हे चेतावनी न दे सका।"

"इसकी ज़िम्मेदारी मिरोन पर है।" याकोव ने देखा कि नेस्तरेंको की साँस शराब पीने से भारी हो रही है।

"अच्छा! इसमें तुम्हारा हाथ नहीं था?" नेस्तरेंको ने पूछा।

"नहीं।"

"बड़े दुःख की बात है। नहीं तो वह लोगों को फाँसने के काम आता, फंदा।"

सवार ने अपनी देह सीधी की। नंगी देह सूरज की धूप में सुनहरी लग रही थी। उसकी खाल उछलती मछली के सिन्नों की तरह चमक रही थी। याकोव की ओर एक षड्यन्त्रकारी साथी की दृष्टि से देखते हुए उसने पूछा—

"तुम अपने दोस्त शिकारी से मिले?"

अपने से सन्तुष्ट होकर वह चुपचाप मुस्कराने लगा।

"जानते हो वह उस दिन तुम्हारी ताक में क्यों बैठा था? वह अपने लिये एक दुनाली बन्दूक़ ख़रीदना चाहता था। मेरे प्यारे दोस्त, लोग इच्छाओं के विवश होकर ही अच्छे या बुरे काम करते हैं। अब वह शिकारी भी बड़े काम आयेगा, क्योंकि तुम्हारे साथ अपनी ग़लती के कारण वह अब मेरे शिकंजे में है।"

"ग़लती? लेकिन अभी तो तुम कह रहे थे....।"

"ग़लती, जनाब ग़लती!" सवार ने ज़ोर से कहा और वह पानी में घोड़े की तरह टाँगें छप-छप करता हुआ घुस गया।

"शैतान तुम सबसे समझे!" याकोव ने उदासी से सोचा।

अचानक मानो दरवाजा फट से बन्द हो जाय, ऐसे ही जहाँ जीवन का शोर था, वहाँ मृत्यु आ पहुँची।

रात को उसकी माँ ने उसे जगाकर रोते हुए कहा—

"उठो, तिखोन आया है। चचा अलेक्सी चल बसे।"

याकोव उछलकर खड़ा हो गया।

"यह झूठ है। वह तो बीमार भी नहीं थे ? वह बीमार तो कभी नहीं थे !"

दरवाज़े पर पहुँचते ही प्योत्र भी आ गया। उसकी साँस फूल रही थी।

"तिखोन कभी अच्छी ख़बर नहीं लाता, देखा तुमने याकोव ? इतनी जल्दी....।"

प्योत्र रात के कपड़ों में नंगे पाँव भागा आया था। उसके कन्धे पर ड्रेसिंग गाउन पड़ा हुआ था। उसे कमरा अपरिचित-सा लग रहा था। वह बार-बार कान सहलाकर कहता जाता था—"ओह !"

"यह कैसे हो सकता है ?" याकोव ने घबराकर पूछा।

"पापों के बोझ के कारण।" माँ ने समझाया। वह बड़ी आटे की बोरी-सी दिखाई दे रही थी।

सब लोग खुली गाड़ी में बैठकर चल दिये। याकोव घोड़ों को हाँक रहा था। आगे-आगे तिखोन घोड़े पर उचकता जा रहा था। उसकी हिलती हुई परछाईं मानो धरती में समा जाना चाहती थी।

अहाते में ओल्गा मिली। वह रह-रहकर फाटक और सहन के चक्कर काट रही थी। उसने अपने रात के कपड़ों के ऊपर सफ़ेद लबादा ओढ़ लिया था। रात की चाँदनी में वह एक पारदर्शक नीली बर्र के समान दीख रही थी। अहाते के फ़र्श के पत्थरों पर उसकी लम्बी छाया एक विचित्र-सी आकृति बना रही थी।

"मेरा जीवन तो समाप्त हो गया।" उसने आर्द्र स्वर में कहा। उनका काला कुत्ता कुचुम उसके पीछे था।

रसोईघर के बाहर की बेंच पर मिरोन सिर झुकाये बैठा था। उसके एक हाथ में सुलगी सिगरेट थी और दूसरे हाथ में चश्मा। उसकी सोने की चेन रह-रहकर चमक उठती थी। चश्मा उतारने के कारण उसकी नाक और भी बड़ी

दिखाई दे रही थी। याकोव चुपचाप मिरोन के पास बैठ गया और प्योत्र अहाते के बीचोबीच खड़ा होकर खुली हुई खिड़की की ओर देखने लगा, मानो कोई भिखारी भीख की आशा कर रहा हो। ओल्गा ने आकाश की ओर देखकर नतालिया को गम्भीर स्वर में बताया—

"मैं नहीं जानती कब....अचानक उनका प्यारा कन्धा पत्थर-सा ठंडा हो गया और मुँह खुला रह गया। बेचारे को एक शब्द कहने का भी मौक़ा नहीं मिला। कल वे हृदय में पीड़ा की बात कह रहे थे।" ओल्गा का स्वर धीमा था, मानो उसके शब्द भी छाया छोड़ते जा रहे हों।

मिरोन ने सिगरेट फेंक दी। अपना सर याकोव के कन्धे पर डालकर वह रोने लगा। "तुम नहीं जानते, वे कितने अच्छे आदमी थे।"

"अब क्या किया जा सकता है?" याकोव ने जवाब दिया। उसकी समझ में न आया कि और क्या कहे। चाची से भी कुछ कहना चाहिए—पर क्या? वह चुपचाप ज़मीन में आँखें गड़ाये बेंच के नीचे पाँव हिलाता रहा।

प्योत्र कमरे के अन्दर विक्षिप्त अवस्था में चक्कर काट रहा था। याकोव चुपचाप पंजे के बल उसके पीछे गया। अलेक्सी का शव एक चादर से ढँका हुआ था। उसके मुँह को बन्द करने के लिए एक रूमाल ठुड्ढी से सिर तक बँधा हुआ था। सिर पर गाँठ के दोनों छोर सींगों के समान दिखाई देते थे। चादर अँगूठों पर ऐसी तनी थी कि वे चादर को फाड़ने की चेष्टा में निकलते लग रहे थे। खिड़की में से चाँद की तेज़ रोशनी आ रही थी। हवा से परदा फरफरा रहा था। बाहर अहाते में कुचुम भूँकने लगा, मानो उसके उत्तर में अपने शरीर पर क्रॉस-चिह्न बनाते हुए प्योत्र ने ज़ोर से कहा—

"एक हल्की-फुल्की ज़िन्दगी और इतनी आसान मौत।"

खिड़की से बाहर झाँककर याकोव ने देखा कि वीरा पोपोवा नन के-से काले कपड़े पहने उसकी चाची के आस-पास चक्कर काट रही है। ओल्गा पुनः उसी स्वर में अपनी शोक-कहानी सुना रही थी—

"सोते-सोते ही चल बसे....।"

"चुपचाप खड़े रहो।"

तिखोन चुपके से रो पड़ा। वह सूखी घास से अपने घोड़े को खरहरा कर

रहा था। घोड़ा बार-बार तिखोन के कानों को चबाने की कोशिश कर रहा था और वह अपने सर को झटका दे रहा था था। प्योत्र ने याकोव के निकट आकर कहा—"बेवकूफ़, कैसा चिल्ला रहा है ? रत्ती भर भी अक्ल नहीं है।"

"कुछ कहने की ज़रूरत नहीं।" याकोव ने मन ही मन निश्चय किया। बाहर बरामदे में आकर वह श्वेत और काले वस्त्रों में लिपटी उन दोनों स्त्रियों की छाया देखने लगा, जो फर्श पर जमा धूल को साफ कर रही थीं। देखते-देखते पत्थर साफ़ चिकने निकल आये। नतालिया तिखोन से फुसफुसाकर कुछ कह रही थी। तिखोन ने सिर हिलाकर हामी भरी। घोड़े ने भी सिर हिला दिया। उसकी ताम्रवर्ण आँखों में एक विचित्र-सी चमक आ गई। प्योत्र बाहर निकल आया। नतालिया बोली—

"हमें निकिता इलिच को तार दे देना चाहिए। तिखोन को उसका पता मालूम है।"

"तिखोन को मालूम है ?" प्योत्र ने ग़ुस्से से दुहराते हुए कहा।" मिरोन, तार भिजवा दो।"

मिरोन लपककर दरवाज़े की ओर चल दिया। उसका कोट दरवाज़े के कोने में उलझ गया और वह क्षणभर के लिये वहीं रुक गया।

"इलिया को भी ख़बर कर दो।" प्योत्र ने पीछे से आवाज़ दी। पर मिरोन ने पीछे मुड़कर उत्तर दिया—"इलिया नहीं आ सकता।"

"मैंने उनके साथ तीस साल गुज़ारे और चार साल शादी से पहले, अब मैं क्या करूँगी ?" ओल्गा को स्वयं अपने हर शब्द पर आश्चर्य हो रहा था।

प्योत्र याकोव के पास आकर खड़ा हो गया।

"इलिया कहाँ है ?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"झूठ कहते हो ?"

"पिता, इस समय इलिया की बातें करने का मौक़ा नहीं है।"

डाक्टर याकोव्लेव झपटा हुआ अहाते में आया। उसने हाँफते-हाँफते पूछा "सोने के कमरे में ?"

"मूर्ख, मृतक को कैसे जिला सकोगे ?" याकोव ने मन ही मन सोचा।

आनेवाले नीरस क्षणों की कल्पना से उसका दम घुटने लगा। चारों ओर निराशा छायी थी। लोगों की बातें, चाँदनी में ताँबे की तरह चमकता हुआ घोड़ा, शोक से मौन कुत्ता—सभी अनावश्यक ढंग से उदास थे। चाची ओल्गा अपने सुखद अतीत की शान बघार रही थी। कोने में बैठी उसकी माँ झूठ-मूठ भद्दे स्वर में शोक-प्रदर्शन करती हुई सुबक रही थी। उसके पिता की आँखें शून्य और भावहीन थीं। सारी चीज़ें इतनी उदास, इतनी दुखद हो रही थीं कि उतना सब अनावश्यक था।

जनाज़े के दिन कफ़न को दफ़नाने के बाद जब लोग उस पर पहली ही मुट्ठियाँ भरकर मिट्टी डाल रहे थे कि निकिता क़ब्रिस्तान में आ पहुँचा।

"हूँ।" याकोव ने निकिता के नुकीले चेहरे की ओर देखकर सोचा। भिक्षु अपने रोपे हुए बर्च के सहारे टेक लगाकर खड़ा था।

"तुम देर से पहुँचे।" प्योत्र ने अपने आँसुओं को पोंछते हुए उसके पास आकर कहा। कछुए की तरह उसने अपना सर झुकाकर कूबड़ के सहारे कर दिया। उसका मटमैला लबादा धूप में बदरंग हो गया था। उसकी टोपी टीन के पुराने डिब्बे की तरह मटमैली हो रही थी। उसके जूतों की एड़ियाँ घिस गयी थीं और नीची हो गयी थीं। उसके फूले गाल धूल से भद्दे हो रहे थे। क़ब्र के इर्द-गिर्द लोगों की ओर अपनी धुँधली दृष्टि से देखकर वह अस्पष्ट शब्दों में कुछ बुदबुदाया। उसकी छोटी-सी दाढ़ी हिल रही थी। याकोव ने कनखियों से चारों ओर देखा। दर्जनों आँखें धनी घराने के बेटे भिक्षु की ओर उत्सुकता-पूर्वक घूर रही थीं, मानो लोग किसी झगड़े की प्रतीक्षा में हों। याकोव जानता था कि नगर के लोगों का दृढ़ विश्वास था कि दोनों बड़े भाइयों ने सम्पत्ति के लालच से इस कुबड़े को संन्यास लेने के लिए विवश किया था। मोटे पादरी निकोलाई ने उच्च स्वर में ओल्गा को समझाया—

"रोने-पीटने से ईश्वर का अपमान होता है, क्योंकि उसकी इच्छा.... ।"

ओल्गा ने संयत स्वर में उत्तर दिया—

"पर मैं रो नहीं रही हूँ। न शिकायत ही कर रही हूँ।"

उसने काँपते हुए हाथों से अपनी जेब टटोली। वह अपने आँसुओं से तर रूमाल को छिपाने का प्रयत्न कर रही थी।

तिखोन व्यालोव कुशलता से फावड़ा भर-भरकर क़ब्र में मिट्टी डाल रहा था। मिरोन जड़वत् क़ब्र के सिरहाने खड़ा था। कुबड़े भिक्षु ने मृदु स्वर में नतालिया से कहा—

"ओह, तुम कितनी बदल गई हो ? पहचानी नहीं जाती।"

फिर अपने कूबड़ की ओर संकेत करके वह बोला—

"मैं तो हमेशा पहचाना जा सकता हूँ। वह सामने कौन है ? तुम्हारा याकोव ? और वह लम्बा व्यक्ति ? अल्योशा का बेटा मिरोन है ? अच्छा, अब चलें।"

याकोव क़ब्रिस्तान में रुका रहा। कुछ देर पहले उसने मज़दूरों के झुण्ड में खड़े नोस्कोव को देखा था। उसके साथ भट्ठी झोंकनेवाला लँगड़ा वास्का भी था। वहाँ से ग़ुजरते समय शिकारी ने प्रश्नसूचक दृष्टि से याकोव की ओर देखा था, जिससे याकोव काँप उठा। आख़िर वह क्या सोच रहा होगा ? निश्चय ही उस आदमी के लिये उसके विचार अच्छे न होंगे, जिसने उसकी टाँग में गोली मार दी हो और जिसने उसे जान ही से मार दिया होता।

तिखोन अपने कोट की मिट्टी झाड़ता हुआ आ पहुँचा और बोला—

"ज़रा सोचो, अलेक्सी इलिच ने कितनी कोशिश की, लेकिन कुछ न बन सका....अब निकिता इलिच भी बीमार है।"

"एक बात है...." याकोव को कोई बात अचानक ही सूझी, लेकिन वह बीच में ही चुप हो गया।

"कौन-सी बात ?"

"मज़दूरों को चचा की मृत्यु पर शोक है।"

"हाँ, है।"

"एक शिकारी है—नोस्कोव।" याकोव ने फिर बात छेड़ी, "मैं उसके बारे में तुम्हें बहुत-सी बातें बता सकता हूँ....।"

"लोगों को तो एक घोड़े की मृत्यु पर भी दुःख होता है।" तिखोन ने गम्भीर स्वर में कहा। "अलेक्सी इलिच जीवन भर सरपट दौड़ते रहे और दौड़ में ही उनकी मृत्यु हुई, मानो वे किसी चीज़ से टकरा गये हों। मरने से एक दिन पहले उन्होंने मुझसे कहा था.... ।"

याकोव समझ गया कि इस समय तिखोन कुछ भी सुनने को तैयार नहीं

है। उसने मन में निश्चय कर लिया था कि वह तिखोन को यह बात ज़रूर बतायेगा, केवल इसीलिये कि उसे किसी से बात कहनी थी। इस नीरस वातावरण की अपेक्षा नोस्कोव का ख़्याल उसे अधिक पीड़ा दे रहा था। कल ही शहर में यह मुड़ी टाँगोंवाला जीव सिपाही-सा भावहीन चेहरा बनाये अचानक किसी कोने से निकलकर उसके सामने आ खड़ा हुआ था। उसने अपनी टोपी उतारकर याकोव को सलाम किया और बोला—

"मेरे कुछ पैसे आप पर हैं। आपने मेरी टाँग के इलाज के लिए एक रक़म देने का वायदा क़िया था। आपके चचा की मृत्यु हो गई है। उनके लिए प्रार्थना करने के लिए भी पैसों की ज़रूरत है। साथ ही मैं आपके पिता के मनोरंजन के लिए एक नया बाजा भी ख़रीदना चाहता हूँ।"

याकोव पर मानो वज्रपात हुआ। वह चुपचाप खड़ा नोस्कोव की ओर देखने लगा। शिकारी की हिम्मत और भी बढ़ गई।

"आपको पता होना चाहिए कि मैं आपकी भलाई के लिए ही रूस के दुश्मनों से लड़ रहा हूँ।"

"कितनी रक़म चाहिए?" याकोव ने पूछा।

कुछ क्षण सोचकर नोस्कोव ने उत्तर दिया—

"पैंतीस रूबल।"

याकोव रक़म देकर जल्दी चला आया, और क्रोध और भय में भरकर सोचने लगा। "वह मुझे मूर्ख समझता है। शायद उसका ख़्याल है कि मैं उससे डरता हूँ। बदमाश कहीं का, मैं उसे मज़ा चखाऊँगा।"

क़ब्रिस्तान से लौटते समय याकोव के मन में बस एक ही समस्या थी, वह यह कि किस तरह इस व्यक्ति से पिण्ड छुड़ाया जाय, जो उसे बलि के बकरे की तरह बलिस्थान की ओर घसीट रहा है।

स्मृति-भोज बड़ी देर तक चलता रहा। अतिथियों ने पादरी कार्त्सेव और गिरजे की भजनमंडली से मृतक आत्मा की चिरंतन स्मृति के गीत सुने। ज़ितीकिन तो नशे में इतना चूर था कि भद्रता और शिष्टाचार भूलकर वह काँटा उठाकर चिल्लाने लगा—

"ये योद्धा अब अतीत के गौरव और उन रक्तरंजित युद्ध-क्षेत्रों की याद

दिलाते हैं, जहाँ वे अन्तिम क्षण तक जूझते रहे !"

जब स्तीपान बास्की की परों के तकिये जैसी मोटी और गुदगुदी देह गाड़ी में ठूँसी जाने लगी, तो उसने ऊँचे स्वर से कहा—

"शाबास प्योत्र इलिच ! तुम्हें ज़रूर अपने भाई से गहरा प्रेम था। आज की दावत आसानी से भुलाई नहीं जा सकती।"

याकोव ने अपने पिता को, जो ज़ोरों में पी रहा था, व्यंगपूर्वक कहते सुना—"तुम तो ज़रा देर में ही सब कुछ भूल जाओगे। तुम्हारा पेट फटने ही वाला है।"

प्योत्र ने अपने भतीजे के विरोध की परवाह न करते हुए शहर से ज़ितीकिन, बास्की वोरोपोनोव तथा अन्य सम्मानित व्यक्तियों को निमन्त्रित किया था। मिरोन ने अपना क्रोध छिपाने का प्रयत्न न किया। वह आधे घंटे के लगभग बैठने के बाद सारस की तरह अकड़ता खिसक गया। कुछ देर बाद ओल्गा भी चली आई। पिये हुए लोगों के मठ के विषय में उत्सकतापूर्ण प्रश्नों से तंग आकर भिक्षु भी उठ खड़ा हुआ। प्योत्र के व्यवहार से ऐसा लगता था, मानो वह सबसे लड़ाई मोल लेना चाहता हो, याकोव अपने पिता और नगरवासियों की लड़ाई की प्रतीक्षा में चुपचाप बैठा था।

ओल्गा और वीरा पोपोवा का मेल-मिलाप देखकर नतालिया कुढ़ उठी। वह फ़ौरन घर चली गई। लेकिन प्योत्र ने किसी न किसी कारण से भाई के अध्ययनकक्ष में रात बिताने का निश्चय किया। याकोव को यह बात अनावश्यक और हास्यास्पद जान पड़ी। वह कौच पर लेटकर दो-एक घंटे तक सोने की चेष्टा करने लगा। आख़िरकार वह उठकर आँगन में चला गया। वहाँ रसोईघर की खिड़की के नीचेवाली बैंच पर उसने तिख़ोन के साथ भिक्षु की काली आकृति को बैठे देखा, जो विचित्र ढंग से मशीन के किसी टूटे पुर्ज़े की याद दिलाता था। टोपी के बिना भिक्षु देखने में नाटा और चौड़ा लग रहा था, उसका मुख नन्हें बालक जैसा दिखाई देता था। उसके हाथ में एक गिलास था और पास बैंच पर क्वास शराब की एक बोतल रखी हुई थी।

"वह कौन है ?" उसने मृदु स्वर में पूछा, और तुरन्त अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया—"यह तो याशा है। यहाँ आओ और कुछ देर बुज़ुर्गों के पास भी बैठो, याशा !"

चन्द्रमा के प्रकाश में अपने गिलास को उठाकर वह उसके भीतर के झाग-भरे द्रव को देखने लगा। चाँद ने घंटे की मीनार के पीछे छिपकर उसे एक धुँधली रजत आभा से नहला दिया था। जिससे वह मीनार रात्रि के गरम अँधियारे की पृष्ठभूमि में एक विचित्र आकार बनाती हुई उभर आई थी। घंटे की मीनार के बहुत ऊपर घने बादल छाये थे। लगता था जैसे गहरे नीले मखमल में भद्दे पैबन्द फूहड़ ढग से टाँक दिये गये हों। अलेक्सी का प्यारा कुत्ता कुचुम शोकमग्न-सा ज़मीन की ओर नाक किये आँगन में घूम रहा था। फ़र्श के पत्थरों पर वह सूँघता घूम रहा था कि अचानक आकाश की ओर थूथनी उठाकर प्रश्नसूचक ढंग से धीमे से रो पड़ा—

"हुश ! कुचुम !" तिखोन ने शान्त स्वर में कहा।

कुत्ते ने उसके पास आकर अपना मोटा सिर उसके घुटनों के बीच डालकर रोते हुए शिकायत-सी की।

"इस बेचारे को याद आती है।" याकोव ने कहा। बाकी दोनों चुप रहे, लेकिन सोचने की क्रिया से बचने के लिये याकोव को बातें करना बहुत जरूरी था।

"यह समझता है।" उसने दोहराया। तिखोन ने कोमल स्वर मे समर्थन दिया—

"हाँ, सो तो ठीक है।"

"सुज़दल में मठ का कुत्ता तो चोरों को गन्ध से ही पहचान लेता है।" भिक्षु बोला।

"आप लोग क्या बातें कर रहे थे ?" याकोव ने पूछा। भिक्षु ने थोड़ी-सी क्वास पीकर चोगे की आस्तीन से ओंठ पोंछे और अपने पोपले मुँह से इस तरह झटके देकर बड़बड़ाया मानो बहुत ऊँची सीढ़ियों से उतरकर नीचे आ रहा हो—

"तिखोन कह रहा था कि लोग यहाँ फिर विद्रोह का इरादा कर रहे हैं। लगता भी ऐसा ही है। हर आदमी का दिमाग़ विचारों से परेशान दीखता है....।"

"मैं तो इन बातों से तंग आ गया हूँ।" तिखोन ने कुत्ते के कानों से खेलते हुए कहा।

"कुत्ते को हटाओ। इसके कीलें पड़ी हुई हैं।" याकोव ने आदेश दिया।

जमादर ने कुचुम के पंजे अपने घुटने से हटा दिये और उसे पाँव से ढकेल दिया। कुत्ता टाँगों में दुम दबाकर वहीं बैठ गया और बार-बार भूँकने लगा। तीनों व्यक्तियों ने उसकी ओर देखा, याकोव ने सोचा शायद तिखोन और भिक्षु को क़ब्र में सोये हुए स्वामी की अपेक्षा उसके कुत्ते के लिये अधिक दुःख हो रहा है।

"विद्रोह तो होगा ही।" याकोव आँगन के अँधेरे कोनों की ओर घूरते हुए बोला। "तिखोन याद है तुम्हें, सेदोव और उसके दोस्त जो पकड़े गये थे ?"

"हाँ, याद है।"

भिक्षु ने अपने चोग़े की जेब में से एक छोटी-सी टीन की डिबिया निकालकर एक चुटकी सुँघनी नाक से लगाई। उसने भतीजे को समझाया—"देखो, यह सुँघनी है—इससे मेरी आँखो को फ़ायदा होता है। अब मुझे पहले जैसा दिखाई नहीं देता।" छींककर उसने अपनी बात जारी रखी—

"गाँवों में भी तो गिरफ्तारियाँ हुई हैं।"

"जासूस सब ओर फैले हैं।" याकोव ने अपने स्वाभाविक स्वर में कहने का यत्न किया। "वे हर आदमी पर नज़र रखते हैं।"

तिखोन भुनभुनाया। "अगर नज़र न रखे, तो फिर दीखेगा भी क्या ?"

अनिश्चित भाव से रात की ठंड के कारण या भय से काँपते हुए याकोव ने फुसफुसाकर कहा—

"वे लोग यहाँ भी मौजूद हैं। उस शिकारी नोस्कोव के विषय में भद्दी अफ़वाहें फैली हुई है। कहते हैं, उसने ही सेदोव और उसके साथियों का भेद बताया था।"

"वह तो मूर्ख है।" तिखोन ने कुछ देर रुककर कहा। उसने कुत्ते को थपथपाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन कुछ सोचकर पीछे खींच लिया। याकोव को लगा कि वह बेकार ही बोला। उसने तिखोन को चेतावनी दी—

"देखो, तुम नोस्कोव के बारे में इधर-उधर चर्चा मत करना।"

"मुझे उससे क्या लेना-देना है ? और यहाँ बात करने को है ही कौन ? कोई किसी पर विश्वास नहीं करता।"

"सच कहते हो।" भिक्षु बोला—"विश्वास तो रहा ही नहीं। युद्ध के बाद

मुझे कुछ घायल सैनिक मिले थे। उन्हें भी युद्ध में विश्वास नहीं था। याशा, हर जगह लोहा ही लोहा है। मशीनें काम करती हैं, मशीनें गाती हैं। जीवन का यह लौह-तंत्र लोहे के ही व्यक्तियों की माँग करता है। बहुत से लोग इस बात को समझते हैं। मैं उनमें से कुछ लोगों से मिला हूँ। उनका कहना है, 'हम तुम्हारे-जैसे कोमल-हृदयों को मज़ा चखा देंगे।' कुछ लोग इस बात के विरुद्ध हैं। वे आदेश-पालन करना ही पसन्द करते हैं, लेकिन लोहे की धातु उनके प्रतिकूल पड़ती है—ये लोहे की चीज़ें, हथौड़े, बसूले आदि जिन्हें उठाकर इस्तेमाल करना पड़ता है; लेकिन यहाँ टनों बोझ के बावजूद भी मशीनें जीवित चीज़ें हैं।"

तिखोन ने एक हुंकार भरी, जिसे सुनकर याकोव को आश्चर्य हुआ, फिर हँसने लगा और बोला—

"कैसी उल्टी बातें करते हैं, शैतान!"

"कई लोग इस बात पर ख़फ़ा हैं।" भिक्षु ने धीमे स्वर में कहा—"तीन वर्ष तक मैं चारों ओर घूमता रहा। मैंने लोगों के इस रोष को देखा है। दुर्भाग्य से उनका रोष एक दूसरे के विरुद्ध ही टकराता है। सब एक दूसरे से बढ़-चढ़-कर बुद्धिमान और मूर्ख हैं। मुझे पादरी ग्लेब ने यह बात बताई थी।"

"क्या पादरी अब भी ज़िन्दा है?" तिखोन ने पूछा।

"अब वह पादरी नहीं रहा। वह गाँव के मेलों में घूम-घूमकर किताबें बेचता है।"

"बड़ा भला पादरी था। मैंने कई बार उसके सामने अपने पाप स्वीकार किये थे। मेरा ख़याल है कि वह केवल ग़रीबी के कारण ही पादरी बना था, नहीं तो उसे ईश्वर मे रत्तीभर भी विश्वास नही था।"

"उसे ईसामसीह मे विश्वास था। सभी भरसक विश्व... करते हैं।"

"यही तो सारी मुसीबत की जड़ है।" तिखोन ने दृढ़ता से कहा। फिर वह हँसा। "सोचने से यही होता है।"

प्योत्र रात के कपड़े पहने नगे पाँव चुपचाप बरामदे में आ खड़ा हुआ। उसने पीले आसमान की ओर देखकर तीनों व्यक्तियो से कहा—

"मुझे नींद नहीं आ रही। इधर कुत्ते ने नाक में दम कर रक्खा है और

तुम लोग भी यहाँ बैठे फुसफुसा रहे हो।"

कुत्ता आँगन के बीचोबीच बैठा बार-बार रो उठता था। उसके कान खड़े थे और आँखें खिड़की की ओर लगी थीं, मानो वह स्वामी के आदेश की प्रतीक्षा में हो।

"तिखोन तुम—अभी तक वही पुराना राग अलापे जाते हो।" प्योत्र ने कहा—"इसकी ओर देखो याकोव, एक दिन इसके मन में कोई सनक सवार हुई और यह भेड़िये की तरह पिंजरे में फँस गया। यही हाल तुम्हारे भाई का भी हुआ। तुम्हें इलिया का क़िस्सा मालूम है, निकिता?"

"सुना है।"

"हाँ, मैंने उसे घर से निकाल दिया। उसने जीवन की दौड़ में ग़लत घोड़ा चुना और उड़ गया—कहाँ? "इसमें शक नहीं कि संसार में उसकी तरह विरले ही ऐसे है, जो पैसे के लालच को छोड़कर तकलीफ़ में रहें।"

"खुदा के बन्दे संत अलेक्सी ने भी ऐसा ही किया था।" भिक्षु ने प्योत्र को स्मरण दिलाया।

प्योत्र अपने माथे पर हाथ रखे थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा। फिर बग़ीचे की ओर मुड़कर उसने याकोव से कहा—

"मेरे लिए कुछ तकिये और एक कम्बल ग्रीष्म-गृह में पहुँचा दो। मैं वहाँ सोने की कोशिश करूँगा।"

सफ़ेद कपड़ों में उसकी विशाल आकृति भयानक दीख रही थी। उसके बाल अस्त-व्यस्त थे, और चेहरा सूजा हुआ और बदरंग हो रहा था।

"निकिता, मशीन के बारे में तुम सबकी धारणायें ग़लत हैं। मशीनों के बारे में भला तुम्हें क्या ज्ञान है? तुम अपने काम से मतलब रखो—ईश्वर से। तुम्हें मशीनों से क्या ग़रज़?"

तिखोन ने बीच में टोककर अवज्ञापूर्ण स्वर में कहा—

"मशीनें जीवन को मँहगा और अशान्त बनाती हैं।"

प्योत्र घृणा से कंधे उचकाकर बग़ीचे की ओर चला गया। याकोव हाथों में तकिये उठाये आगे-आगे चल रहा था। उसने मन ही मन चिढ़कर सोचा—

"सगे रिश्तेदार। मेरे पिता और चचा, मेरे लिए दोनों निरर्थक हैं।"

प्योत्र ने भिक्षु को अपने यहाँ नहीं ठहराया।

निकिता ओल्गा के यहाँ अटारी में ठहर गया। उसने विश्वास दिलाया—
"मैं अधिक देर नहीं रुकूँगा। जल्दी ही यहाँ से चला जाऊँगा।"

वह बिना बुलाये नीचे किसी कमरे मे न जाता! उसे बगीचे में बैठकर वृक्षों की काट छाँट करना या कछुए की तरह रेंगकर ज़मीन से काँटे चुनना अधिक प्रिय था। दिन प्रतिदिन उसके चेहरे की झुर्रियाँ बढ़ती जाती थीं और उसका शरीर घुलता जा रहा था। वह सदा धीमे स्वर से बोलता, मानो कोई गुप्त रहस्य बता रहा हो। खराब स्वास्थ्य के बहाने वह गिरजे में बहुत कम जाता, सो भी अनिच्छा पूर्वक। घर में थोड़ी ही देर प्रार्थना करता। ईश्वर की चर्चा वह स्वयं न करता और इस विषय पर बात छिड़ते ही वह तटस्थ हो जाता।

याकोव ने देखा कि ओल्गा ने भिक्षु से मित्रता कर ली है और शान्त स्वभाववाली वीरा पोपोवा भी उसका सम्मान करती है। यहाँ तक कि मिरोन भी बिना किसी चूँ-चपड़ के चचा की यात्राओं की कहानियाँ सुनता रहता है। यों पिता की मृत्यु के बाद मिरोन की धृष्टता अधिक बढ़ गई थी। कारखाने में वह याकोव को इस तरह डाँटता, मानो वह सारे कारोबार का मालिक हो और याकोव एक साधारण क्लर्क हो।

नतालिया की उपस्थिति में भिक्षु उसके गोल-मटोल लाल मुँह पर वैसी ही करुण दृष्टि डालता जिससे औरों को देखता, पर वह उससे बहुत कम बोलता। वास्तव में वह दिन प्रतिदिन भाषण की कला भूलती जा रही थी। केवल श्वास लेती थी। उसकी धुँधली आँखें भावशून्य और फीकी थीं। कभी-कभी ही उनमें भावना की चमक दिखाई दे जाती थी—विशेषकर पति के स्वास्थ्य की चिन्ता करते समय, मिरोन के डर से, मोटे रोबीले याकोव के प्रति स्नेह-भाव से। लगता था कि तिखोन से भिक्षु का कुछ मतभेद हो गया था। वे एक दूसरे पर बड़बड़ाते थे, और यद्यपि उनमें झगड़ा नहीं हुआ, पर एक दूसरे को देख न सकते थे।

भिक्षु की काली कठोर आकृति को देखकर याकोव की चिन्ताएँ और भी बढ़ जातीं। उसके मन में अनेक प्रकार की दुःशंकाएँ उठने लगतीं। उसकी काली, क्षीण देह बरबस मृत्यु के विचार पैदा कर देती। घर में होनेवाली

घटनाओं के प्रति याकोव का एक ही दृष्टिकोण था। वह सबसे पहले अपनी सुख सुविधा का ध्यान रखता था। जब कि उसकी चिन्ताएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। घर मे कोई न कोई नयी चिन्ता मानो उठ खड़ी होती एक कुशल प्रेमी की चतुर अन्तर्दृष्टि से उसने भाँप लिया था कि पोलीना उसके प्रति विरक्त होती जा रही है। लेफ्टिनेन्ट मेवरिन के व्यवहार से उसका यह सन्देह और पक्का हो गया। याकोव को देखकर वह आजकल सिर्फ़ लापरवाही से अपनी टोपी छूकर सलाम करता था और आँखें ऐसे ऊपर कर लेता, मानो वह सुदूर स्थित किसी तुच्छ वस्तु को देख रहा हो। उसके व्यवहार में पहले कहीं अधिक शिष्टता थी, जब नगर के क्लब में ताश खेलने के लिये कुछ सिक्के उधार माँगते समय या कर्ज़े की अदायगी को स्थगित कराने की प्रार्थना करते समय वह घिघियाकर कहा करता था—

"तुम्हारा शरीर तो ठीक तोपची के लायक है!"

इस तरह की शिष्ट आत्मीयता से याकोव ख़ुश हो उठता था। सर्दी के प्रति अवज्ञा, अपनी शक्ति और स्फूर्ति से और अप्रकट, किन्तु संशयहीन दुःसाहस से, रबड़ की तरह लचीले इस अफ़सर ने समस्त नगर को स्तब्ध कर दिया था। अपनी गोल पथराई आँखों को लोगों की आँखों मे डालकर वह एक अभ्यस्त सेनापति के स्वर मे कहता—

"मैं ठंडे दिमाग का आदमी हूँ। मुझे अतिशयोक्ति से बेहद चिढ़ है!"

एक दिन वह ताश खेलते समय बूढ़े पोस्टमास्टर द्रोनोव से झगड़ पड़ा। यह बूढ़ा अपने तीखे व्यंगों के लिये सारे शहर में प्रसिद्ध था। मेवरिन ने उससे कहा—

"मैं अतिशयोक्ति नहीं करता, लेकिन यह सच है कि तुम एक मूर्ख ख़ूसट हो!"

मेवरिन को अपने प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देखकर याकोव भयभीत हो उठा। उसे डर था कि किसी दिन ज़रूर आपस मे ठनेगी। पर वह कभी भी यह सहन न कर सकता था कि पोलीना उसके हाथों से निकलकर लेफ्टिनेण्ट के पास चली जाय। वह दिन-प्रतिदिन उसको प्रसन्न करती रहती, फिर भी वह पोलीना को चेतावनी दे चुका था—

"देखो, तुमने यदि सेवरिन के साथ मेलजोल रखा तो मेरे साथ तुम्हारी यह आखिरी मुलाक़ात होगी।"

साथ ही नोस्कोव के कारण उसे बराबर भय बढ़ता जाता था। वह नगर से बाहर वतरक्षा के पुल के पास याकोव की प्रतीक्षा में छिपा रहता और अकस्मात् सड़क के बीचोबीच प्रगट होकर पैसों का तकाज़ा करता, मानो याकोव उसका कर्ज़दार हो।

शिकारी का रेंगते हुए-सा प्रगट होना अजीब था। वह सदा वहीं पर निकल पड़ता, जहाँ दो ऐंठे विलो के पेड़ों के चारों ओर बर्डक और अरखल की घनी झाड़ी थी। केवल दो वर्ष पहले यहाँ माली पानफिल का घर था। किसी ने उसकी हत्या करके घर में आग लगा दी थी। दोनों विलो के वृक्षों में जहाँ तक लपट पहुँची थी, अभी तक जलने के निशान थे। स्किट्ल खेल के प्रेमियों ने अपनी उछलकूद से राख को कुचलकर जमा दिया था। घर में सिर्फ़ चूल्हा साबित बचा था। उसकी चिमनी गिरी हुई ईंटों की नींव पर क्षितिज की पृष्ठ-भूमि में और अधिक लम्बी लगती। निर्मल रातों में एक हरे रंग का तारा काँपता हुआ आकाश में उसके ऊपर टिमटिमाता रहता। नोस्कोव इस चिमनी के पीछे से अरखल को कुचलता हुआ धीमी चाल से सामने आ खड़ा होता और आहिस्ता से अपनी टोपी उतारकर भुनभुनाने लगता—

"मैं तुम्हारा काम बना दूँगा। कारखाने में एक नया गुट फिर बन रहा है।"

"मुझसे उसका क्या सम्बन्ध है?" याकोव क्रोध से लाल-पीला हो जाता। नोस्कोव धृष्टतापूर्वक उत्तर देता--

"बेशक, यह तुम्हारा किया नहीं है, पर उसका मतलब तो तुमसे है।"

"काश! मैं उसी रात इसका काम तमाम कर देता।" याकोव बीसवीं बार मन ही मन खीझता, फिर ख़ुफ़िये को रक़म देकर कहता—

"देखो—सावधान रहना।"

"बिलकुल।"

"मुझे इन पचड़ों में मत घसीटना।"

"कभी नहीं। निश्चिन्त रहो।"

"मुझे ज़रूर मूर्ख समझता है।"

नोस्कोव की उपयोगिता को जानते हुए भी याकोव को इस चपटे चेहरे-वाले मुड़ी टाँगोवाले शिकारी से डर लगता था। हो न हो वह अपनी घायल टाँग का बदला लेने का अवसर ढूँढ़ रहा है। वह किसी न किसी मज़दूर को धमकाकर या पैसे देकर याकोव को उसी के पैसे से मरवा डालेगा। याकोव को मज़दूरों की आँखों में दुश्मनी दिखाई देने लगी थी।

मिरोन के कहने के अनुसार—और वह बराबर इसी लहजे मे बातें करता रहता—

मज़दूर अपनी हालत अच्छी करने के लिए विद्रोह नहीं करते हैं, बल्कि एक बेढंगे, पागल विचार के कारण, जो कि उन्हे विदेशियों ने सिखाया है कि वे बैंक, दूकान, कारख़ाने और देश की सारी अर्थनीति अपने हाथ मे कर लें। जब मिरोन यह बातें करता, तो वह अपनी लम्बी टाँगों से कमरे में चक्कर काटता रहता। ऐसे समय वह बड़ी ऐंठ मे अकड़कर चलता और गर्दन टेढ़ी कर कालर मे, मानो उसे ढीला करने के लिए उँगली डाले रहता, गोकि उसकी गर्दन पतली ही थी और कालर तंग न था।

"ये लोग तो समाजवादियों को भी पीछे छोड़ गये हैं—पता नहीं इन कम्बख़्तों का क्या नाम है और ऐसे विचार फैलानेवालों में तुम्हारा भाई भी है। हमारी सरकार के मूर्ख मन्त्री....।"

याकोव जानता था कि इस सारे भाषण का अर्थ था कि मिरोन अपने श्रोतागण को और स्वयं अपने को यह आश्वस्त कर दे कि वह राज्य की ड्यूमा का सदस्य बनने का अधिकारी है, फिर भी इससे याकोव का भय और घबराहट बढ़ गई। उसे लगता कि सैकड़ों मज़दूरों के बीच वह अरक्षित तथा अकेला है। एक दिन बड़ी भयानक घटना घटी। पौ फटने से पहले चीख़-पुकार सुनकर वह जागकर देखता है कि सामने की दीवार पर सैकड़ों छाया इधर-उधर भाग रही थीं, उछल रही थीं और भाव-भंगी कर रही थीं। याकोव का शरीर पसीने से तर हो गया—वह सोच मे पड़ गया और रुँधी आवाज़ से चिल्ला उठा :

"विद्रोह!"

कुछ देर बाद झपटती हुई परछाइयाँ, जो जीती-जागती आकृतियों से कहीं डरावनी थीं, अन्तर्धान हो गईं। याकोव को याद आया कि यह तो छुट्टी के

बाद होनेवाले चिरपरिचित झगडे थे। लेकिन वह उन ख़ौफ़नाक आकृतियों को मन से न निकाल सका। जीवन में इतनी दुःशंकाएँ आ बसी थीं कि अख़बारों को देखने से रूह काँपती थी—पढ़ना तो दूर रहा। सरल और स्पष्ट घटनाओं का स्थान भयानक अप्रिय घटनाओं ने ले लिया था। रंगमंच नये लोगों से भर गया था।

याकोव की बहन तात्याना वोरोगोरोद से सहसा एक पति को साथ ले आई। वह छोटे क़द का फुर्तीला और हँसमुख व्यक्ति था। उसका सिर लाल था और वह इंजीनियरों की वर्दी की टोपी लगाये था। आयु में वह तात्याना से दो वर्ष छोटा था। तात्याना की देखादेखी सब उसे 'मित्या' पुकारने लगे। वह गिटार बजाकर तरह-तरह के विचित्र गीत गाता था। एक गीत जो वह अक्सर गाता था, याकोव को अपमानजनक लगता था और नतालिया ग़ुस्से में भर उठती थी:

> "मेरी पत्नी क़ब्र में लेटी है।
> हे ईश्वर!
> अपनी क्षुद्र दासी को
> स्वर्ग के कोने में स्थान दो।"

लेकिन तात्याना को बुरा न लगता। वह जिस तरह औरों का मनोरंजन करता वैसे ही उसका भी करता रहता। कभी-कभी नतालिया भी पिघलकर कहती:

"बन्दर कहीं के, कुछ खा ले, बदमाश!"

खाने-पीने के मामले में मित्या हारनेवाला नहीं था, वह कबूतर की तरह पेटू था। प्योत्र टकटकी लगाकर उसे देखता, मानो कोई स्वप्न देख रहा हो। चकित हो आँखें मिचमिचाकर वह पूछता—

"तुम्हारी हरकतों से तो लगता है कि तुम धती पियक्कड़ होगे। तुम पीते हो?"

"क्यों नहीं!" दामाद ने उत्तर दिया। रात के खाने पर उसने पीने की अच्छी योग्यता दिखाई। वह ओल्गा, यूराल, क्रीमिया, काकेशस सब जगहों पर घूम आया था। उसे असंख्य कहानियाँ और चुटकुले याद थे। वह ऐसे देश का निवासी मालूम होता था, जहाँ चिन्ताओं का नाम तक नहीं।

"जीवन एक लाड़ली सुन्दरी है!" वह हँसकर कहता। वह आते ही कारोबार के भँवर में फँस गया। मज़दूर उसे चाहने लगे, बूढ़े लोग उसके चुटकुलों पर सिर हिलाते, छोकरे हँसी के मारे लोटपोट हो जाते, यहाँ तक कि मिरोन भी

मित्या के हँसोड़ भाषणों को सुनकर खिल उठा था। अब वे कारखाने के आँगन को एक साथ पारकर पाँचवीं इमारत की ओर थे। हाल ही में लाल ईंट के बने इस पाँचवें हिस्से मे अभी तक बाँस बल्ली के पाड़ बँधे थे। बढ़ई जगह-जगह काम कर रहे थे। इधर बढ़इयों के बसूले चाँदी से चमक रहे थे—उधर मिरोन के सुनहरी चश्मे की किरणें देखनेवालों को चकाचौंध कर रही थी। मिरोन ने प्राचीन चित्रों के सेनापतियों के ढंग से हाथ उठाया। मित्या ने सिर हिलाकर अपनी बाँहें इस ढंग से फैलाईं, मानो वह धरती पर कुछ बिखेर रहा हो।

याकोव दफ्तर में बैठा खिड़की से उन दोनों की ओर देख रहा था। उसे भी अपना नया बहनोई पसन्द था। उसके साहचर्य मे रहकर समय जल्दी से बीत जाता था और चिन्ताएँ भाग जाती थीं। याकोव को मित्या के व्यक्तित्व से स्पर्द्धा होती। साथ ही अविश्वास की एक धुँधली रेखा भी उसके मानस-पटल पर खिंच जाती। उसे आशका होती कि यह मुक्त पक्षी जैसे आया है, वैसे ही कल कहीं उड़ न जाये, क्या पता किसी सनक में आकर वह अभिनेता या नाई ही बन जाये, मित्या मे एक गुण और था, वह था निष्कपटता। उसने तात्याना के दहेज की रकम तक न पूछी थी। हो सकता है, इसमे शायद तात्याना की चालाकी हो! प्योत्र दुःखी होकर कहता—

"मेरी सारी मेहनत इस मूर्ख पर व्यर्थ गई।"

मिरोन ने भी शादी कर ली।

"मेरी पत्नी से मिलिये" मास्को से लौटने पर वह एक गोल-मटोल नन्ही गुड़िया साथ लाया, जिसकी आँखें नीली और बाल घुँघराले थे। उसका प्रत्येक अंग इतना सुडौल था कि याकोव को वह हाड़-मांस की न लगकर चचा अलेक्सी की प्रिय घड़ी पर बनी चीनी-मूर्ति की तरह दिखाई दे रही थी। इस मूर्ति का सर टूट गया था और फिर जोड़ने में ज़रा टेढ़ा लग गया था, जिससे उसकी आँखें कमरे में लोगों की ओर न होकर उस दर्पण की ओर घूम गयी थीं; जिसके सहारे वह खड़ी थी। मिरोन ने बताया कि उसकी पत्नी का नाम अन्ना है और वह अठारह वर्ष की है। लेकिन उसने यह नहीं बताया कि वह एक काग़ज़ के व्यापारी की एकलौती बेटी है और दहेज में ढाई लाख लाई है।

"कुछ लोगों को ऐसी पत्नियाँ मिल जाती हैं।" "प्योत्र ने क्रोध से आँखें

तरेरकर याकोव को डाँटा—"और तुम न जाने किनके साथ घूमते हो। इलिया का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।"

प्योत्र को अपने मोटापे के कारण चलने में कठिनाई होती थी। याकोव को लगता था कि शायद प्योत्र अपनी देह के मुटापे से तंग आकर जान-बूझकर दर्शकों के सामने अपनी कुरूपता का प्रदर्शन करना चाहता है। वह स्लीपर पहने ड्रेसिंग गाऊन के बटन खोलकर अपनी चर्बीली छाती दिखाता घूमता—जैसा कि उसने एलेना को तंग करने के लिए किया था। कभी कभी वह याकोव के दफ़्तर में आकर अपना दुखड़ा रोता, और कहता कि कारोबार और सन्तान की खातिर उसने अपना सारा जीवन कुर्बान कर दिया है। कारोबार की चिन्ताओं की चक्की मे वह पिस गया है—एक क्षण के लिए भी उसे मनोरंजन अथवा सुख नही प्राप्त हुआ।

याकोव चुपचाप सुनता रहता। इस रोने-धोने से प्योत्र को कुछ सान्त्वना मिलती। वह अपने बेटे की आँखों में गिरजे के ऊपर घंटे की मीनार-सा ऊँचा उठ जाता, उस मीनार की तरह जिस पर सूर्य बस्ती के घरों से बहुत पहले ही चमकता और रात को अस्त होते समय सबसे अन्त में विदा लेता। इस सारे रोने-धोने से याकोव ने केवल एक ही परिणाम निकाला कि पिता की तरह जीवन बिताना उसके लिये निकम्मी बात है।

याकोव देखता था कि अपना दुखड़ा रोने के बावजूद भी प्योत्र लोगों के मन को चोट पहुँचाने के लिए हर समय व्याकुल रहता था। उसकी पत्नी को खिड़की के पास बैठकर बग़ीचे को देखना बहुत प्रिय था। वह घण्टों घुटनों पर हाथ रखे शून्य दृष्टि से बाहर ताकती रहती। प्योत्र उसके पास बैठकर ताना मारता:

"क्या सोच रही हो? तुम इतनी मोटी होते हुए भी व्यक्तित्वहीन हो। तुम्हारे बच्चे भी तुम पर ध्यान नहीं देते। तात्याना तुमसे अधिक रसोइये का आदर करती है। एलेना तुम्हारे प्रति उदासीन है, वह तुमसे मिलने क्यों नहीं आती? किसी नये प्रेमी के साथ रंगरेलियाँ मना रही होगी। और इलिया कहाँ है?"

लेकिन पत्नी को तंग करने से प्योत्र को विशेष आनन्द न मिलता। वह फ़ौरन रो पड़ती और उसकी आँखों से, गालों से, दोहरी ठुड्डी से आँसुओं की नदियाँ बहने लगतीं।

'टपकते पीपे की तरह हो' प्योत्र चिढ़कर कहता और चुपचाप वहाँ से चल देता। आँसू देखना उसके बस की बात न थी।

प्योत्र ने कभी याकोव को परेशान नहीं किया। लेकिन याकोव को पिता की आँखों मे अपमानजनक दया दिखाई देती। प्योत्र ठडी साँस लेकर कहता—

"आह ! शून्य आँखें।"

मिरोन पर तानों का कोई प्रभाव न होता था। इसलिये प्योत्र उससे दूर रहता। यह याकोव अच्छी तरह समझता। मिरोन से कारखानेवाले और घर वाले सभी डरते। उसकी माँ और चीनी की गुड़िया-सी बीवी से लेकर दरवाजा खोलनेवाला ग्रीश्का तक सब घबराते। मिरोन के अहाते मे आते ही चारो ओर चुप्पी छा जाती, मानो उसकी लम्बी छाया से सब पर चुप्पी छा गयी हो।

लाल बालोंवाले दामाद को भी तग करने में प्योत्र को कोई आनन्द न मिलता। मित्या दूसरों से ज़्यादा स्वयं ही अपना मज़ाक उड़ाता था। औरों से कोडे खाने की अपेक्षा उसे स्वयं अपनी खाल उधेड़ना अधिक पसन्द था। तात्याना माँ बननेवाली थी। वह खाने के बाद एक साथ तीन पुस्तकें सामने रखकर पढ़ने का उपक्रम करती और फिर मित्या को साथ घसीटकर सैर को चली जाती।

तिखोन और निकिता को सताने के लिए प्योत्र गाड़ी जोतने का हुक्म देता। शहर में जाकर वह निकिता से कहता—

"अरे, पादरियों की टोपीवाले विद्यार्थी ! तुम्हारा ईश्वर खो गया है ?"

निकिता मानो अपने कूबड़ मे सिकुड़ता हुआ मृदु स्वर मे जवाब देता—

"ओह ! तुम्हे ऐसा नहीं करना चाहिए....।"

"क्यों नही ? तुमने ग़लत टोपी पहन ली है। तुमने नक़ली टोपी पहनी है। तुम्हारे सारे कपड़े नक़ली हैं। कैसे भिक्षु हो तुम ?"

"इसकी चिन्ता मुझे करनी चाहिए।"

"तुम सुँघनी भी सूँघते हो। तुमने भारी ग़ल्ती की। अगर किसी निर्धन अनाथ कन्या से शादी कर लेते, तो वह तुम्हें कृतज्ञ होकर सन्तान देती और आज तुम भी मेरी तरह नाती, नातिनोंवाले होते। लेकिन तुम पर तो सनक सवार थी। याद है....?"

एक विशाल मन्दगतिवाले कछुए की तरह भिक्षु वहाँ से चल देता। फिर

प्योत्र ओल्गा के पास जाकर उसे अलेक्सी की प्रेम-लीलाओं की कहानियाँ सुनाता। इससे भी उसके मन को शान्ति न मिलती। पति की मृत्यु के बाद ओल्गा बहुत बेचैन रहती। हर समय वह घर के सामान को इधर-उधर रखती-फिरती या शून्य दृष्टि से खिड़की से बाहर ताकती रहती। वह कभी ही अपना सर घुमाती, क्योंकि मोटा चश्मा पहनने पर भी वह चीज़ों को छूती हुई चलती। चलते समय वह टटोलने के लिए हाथ बढ़ाकर छड़ी के सहारे चलती। प्योत्र के द्वेषपूर्ण आक्षेप सुनकर वह कहती—

"तुम जो मन चाहे सो कहो। मेरा अल्योशा अब सब भलाई-बुराई से दूर है।"

"अलेक्सी ठीक कहता था—तुम एक आँख बन्द कर दुनिया को देखती हो।"

"अब तो दोनों ही आँखें अन्धी-सी हैं, ऐसा ख़राब दिखाई पड़ता है। कल मैंने उनका प्रिय प्याला तोड़ डाला।"

प्योत्र ने तिखोन को तड़पाने की कोशिश की। लेकिन यह आसान न था। तिखोन कभी ख़फ़ा न होता। वह आक्रमणकारी की ओर तिरछी नजर से देखकर संयत रूप में संक्षिप्त-सा जवाब देता।

"तुम बहुत दिन तक ज़िन्दा रहे।" प्योत्र कहता—

"बहुत से लोग मुझसे भी अधिक जीवित रहते हैं।"

"लेकिन क्यों? मुझे बताओ तो सही।"

"हर कोई जीता है।"

"सो तो ठीक है, लेकिन सब लोग आँगन नहीं बुहारते फिरते।"

तिखोन का जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण था—

"मनुष्य पैदा होता है और मरने तक जीवित रहता है।" वह कहता, लेकिन प्योत्र ने सुना नहीं।

"तुम्हारा सारा जीवन झाड़ने-बुहारने में बीत गया है। न पत्नी, न बच्चे, कोई फ़िक्र नहीं, क्यों? मेरे पिता ने तुम्हें अच्छी नौकरी पर लगाना चाहा, लेकिन तुमने वह नहीं की। तुमने ऐसी ज़िद क्यों की?"

"अब इस बात को पूछने से क्या लाभ है, प्योत्र इलिच?" तिखोन मुँह

फेरकर कहता ।

ख़फ़ा होकर अर्तामोनोव हठ के साथ तंग करने लगा ।

"ज़रा सोचो तो सही ! तुम्हारे सामने कितने लोगो के भाग्य पलट गये ? हर कोई धन-दौलत चाहता है ।"

"धन-दौलत जमा करो, फिर शैतान के हवाले कर दो । क्यों ?" तिखोन ने उत्तर दिया ।

याकोव सोच रहा था कि उसका पिता भभक उठेगा और चिल्लायेगा, लेकिन थोड़ी देर चुप रहकर वह मुँह ही मुँह कुछ बड़बड़ाता हुआ वहाँ से चला गया । तिखोन बुढ़ापे के कारण गंजा हो गया था और उसका चेहरा झुर्रियों से भर गया था । तो भी उसका स्वास्थ्य अच्छा था—उसके व्यक्तित्व में एक विचित्र आकर्षण आ गया था और उसके शब्द पहले से अधिक प्रभावशाली होते जा रहे थे । याकोव को ऐसा लगता कि अपनी बातचीत और व्यवहार में प्योत्र की अपेक्षा तिखोन कहीं अधिक मालिक लगता ।

याकोव स्वयं अधिक स्पष्टता से अनुभव करता कि वह अपने परिवार में बाहरी व्यक्ति है । परिवार मे यदि कोई मन का आदमी है तो वह बाहरी मित्या लांगिनोव । याकोव को मित्या न तो बुद्धिमान लगता न मूर्ख । वह इन श्रेणियों में न आता । वह और लोगों की तरह न था । और मित्या के प्रति मिरोन का व्यवहार उसके विचार की पुष्टि करता । मिरोन रूखा और रोबदाबवाला था और जैसा उसे ठीक लगता वैसा ही सबको हुक्म देता फिरता, पर उसकी मित्या से .खूब पटती । यद्यपि वे दोनों अक्सर बहस करते पर बहस में भी कभी झगड़ते नहीं; मिरोन अपनी ज़बान पर क़ाबू रखता । सबेरे से रात तक घर गूँजता रहता—

"मित्या !" तात्याना पुकारती ।

"मित्या कहाँ है ?" नतालिया पूछती; यहाँ तक कि प्योत्र भी खिड़की से झाँककर आवाज़ देता—

"मित्या ! खाने का समय हो गया है !"

मित्या लोमड़ी की तरह सारे कारखाने में चक्कर काटता । उसके विनोद-भरे चुटकुलों को सुनकर मज़दूर हँसी से लोटपोट हो जाते और मिरोन के दुर्व्यवहार को भूल जाते । वह मज़दूरों को मित्र कहकर पुकारता ।

"देखो दोस्त, यह सब गलत है।" मित्या बढ़इयों के बुज़ुर्ग फ़ोरमैन को लाल चमड़े की जिल्दवाली नोटबुक दिखाकर कहता या पास ही के किसी तख़्ते पर खींचकर दिखाता।

"देखो, इस तरह, और इस तरह, और फिर ऐसे। ठीक ?"

"समझ गया, लेकिन हम पुराने ढंग से कर रहे थे, जैसा कि हमेशा करते रहे थे।" फ़ोरमैन मानकर कहता।

"नहीं दोस्त ! वह अच्छा नहीं है। तुम्हें नया तरीक़ा सीखना होगा, उसमें अधिक लाभ है ?"

फ़ोरमैन सिर हिलाकर हामी भरता।

"बहुत अच्छा।"

कारोबार में मित्या अलेक्सी की तरह कुशल था, लेकिन उसमें अलेक्सी-सी मालिकों की लालचीपन की गन्ध तक न थी। उसके हँसोड़पन को देखकर सेराफ़ीम की बहुत याद आती। प्योत्र ने इस बात पर ध्यान दिया। एक दिन जब मित्या ने भोजन के समय उदास वातावरण को दूर कर दिया, तो प्योत्र ने मुस्कराकर कहा—

"हमारे यहाँ एक और सान्त्वना देनेवाला था, सेराफ़ीम।"

प्योत्र और मिरोन में अक्सर झगड़ा हो जाता। एक बार याकोव ने मिरोन से मित्या को कहते सुना—

"क्षुद्रतापूर्वक डरपोक और दयनीय से घृणा का संयोजन—यह है शुद्ध रूसी रसायन।"

फिर सान्त्वना देने के लिये उसने कहा—

"पर ठीक है। ऐसी चीज़ें शीघ्र ही समाप्त हो जायगी। हम अपनी सफ़ाई आप कर रहे हैं।"

एक रोज़ छुट्टी के दिन सब लोग सन्ध्या को बग़ीचे में बैठे चाय पी रहे थे। प्योत्र ने शिकायत के स्वर में कहा—

"मेरे जीवन में कभी कोई छुट्टी नहीं आई।"

मित्या के मुँह से ज़ोरदार विरोध की आतिशबाज़ी-सी छूटी—

"इसमें आपका ही क़ुसूर है। इन्सान अपनी छुट्टी स्वयं बनाता है। जीवन एक लाड़ली सुन्दरी है, वह आये दिन नये उपहार और मनोरंजन माँगती है।

जीवन का उपभोग करना चाहिये। हर रोज़ आनन्द मनाने के लिये कुछ न कुछ मिलता ही रहता है।"

वह उत्साही वादक की तरह बोलता ही रहा, और लोग चुप रहे। सदा ही ऐसा होता। उसकी बातें सुनकर लोग मानो स्वप्न देखने में तल्लीन हो जाते। याकोव को मित्या के शब्दों में सत्य की झलक दिखाई देती। साथ ही उसके मन में आता कि उससे पूछे—

"तो फिर तुमने ऐसी मूर्ख, बदसूरत छोकरी से शादी क्यों की?"

याकोव को पता लगा कि अपनी पत्नी के साथ मित्या का दिखावटी सम्बन्ध था। उसके प्रेम-प्रदर्शन में दिखावट की मात्रा आवश्यकता से अधिक थी। याकोव ने सोचा कि तात्याना से भी यह बात छिपी नहीं है। वह प्रायः चुपचाप रहती और ज़रा-ज़रा-सी बात पर खीझ उठती। पति की बजाय उसे मिरोन से राजनीति पर बहस करने में अधिक आनन्द आता। राजनीति के अतिरिक्त वह और किसी विषय पर बात करने में असमर्थ थी।

कभी-कभी याकोव को लगता कि मित्या परीदेश का वासी नहीं, बल्कि एक ऐसे अँधेरे गर्त से निकलकर आया है जहाँ जीवन चिन्ताओं से ग्रस्त है। अर्तामोनोव परिवार से मिलकर उसकी नीरसता दूर हो गई है और वह प्रसन्नता से चहकता फिरता है। मित्या एक ऐसे शिशु के समान था, जो खिलौनों से भरे कमरे में मुँह बाये हो, पर ऐसे चतुर बालक के समान जिसने शीघ्र ही पहचान लिया हो कि कौन से खिलौने सबसे अधिक काम के हों। पूरे परिवार और कर्मचारियों में केवल दो प्राणी ही ऐसे थे जिन्हें मित्या से चिढ़ थी— निकिता और तिखोन। जब याकोव ने तिखोन से मित्या के बारे में पूछा तो तिखोन ने शान्त स्वर में कहा—

"किसी काम का नहीं।"

"क्यों?"

"वह मक्खी की तरह हर चीज़ पर भिनभिनाता है।"

याकोव ने बूढ़े से बीसियों प्रश्न पूछे, लेकिन उसका एक ही जवाब था—

"याकोव पेत्रोविच, तुम स्वयं ही देखो। देखते नहीं कि वह हर तरह की तिकड़में करता फिरता है?"

निकिता की भी ऐसी ही राय थी।

"झगडा करता फिरता है।" निकिता ने ठंडी साँस लेते हुए कहा। "मैंने ऐसे बीसियों लोग देखे हैं। बकवासी। वह शब्दों का जाल रचकर लोगों की आँखों में धूल झोंकता है। ऐसे लोगों को अगर तुम कहो कि 'हाय, कहीं आराम नहीं' तो वे तुम्हे मटर का गिलास भेंट कर देंगे। हाँ, ऐसा है वह।"

विनयशील भिक्षु को घृणा का प्रदर्शन करते देखकर याकोव चकित रह गया। सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि ये दोनों बुड्ढे, जो हर समय लड़ते-झगड़ते रहते थे, आज तात्याना के पति के प्रति एक मत हो रहे थे। याकोव को इस बात मे इन्सानों में फैली उसी मूर्खता की झलक मिली, जिससे उसे चिढ़ थी। दोनों बूढे कब्र में पाँव लटकाए बैठे थे।

च्चा निकिता मरणासन्न अवस्था में था और प्योत्र उसे जान-बूझकर कब्र मे ढकेल रहा था। वह हर मौक़े पर जान-बूझकर भाई को अपनी घृणा से कुच-लना चाहता था।

"मैं जीवनभर गधे की तरह भार ढोता रहा हूँ और तुम बिल्ली की तरह आराम से रहते हो। सब लोग तुम्हें आराम और सुख देने का यत्न करते हैं। शायद उन्हें यह ध्यान ही नहीं रहता कि तुम कुबड़े हो। और मैं—मुझे सब क्षुद्र मनोवृत्ति का कहते हैं। मैं क्षुद्र कैसे हूँ? जीवनभर....।"

भिक्षु अपने कूबड़ में आश्रय लेकर खाँसता हुआ कहता—

"ख़फा मत हो।"

और दूसरी बात जिससे याकोव को जीवन कठिन लगता, वह था याकोव के मन में अपने पिता के प्रति घृणा। प्योत्र की नंगी छाती उसे सफ़ेद बालों से भरे साबुन जैसी दिखाई देती, जिसे देखते ही वह विक्षुब्ध हो उठता। वह बार-बार अपने को संयत रखने के लिये याद करता।

"ये मेरे पिता हैं। इन्होंने मुझे जन्म दिया है।" लेकिन इन विचारों से उसके पिता का रूप तो बदलता नहीं, उसके कारण उत्पन्न घृणा न दब सकती। इसके उल्टे यह विचार ही घृणाजनक था, अपमानजनक था।

प्योत्र हर रोज़ मानो निकिता को मरते देखने के लिये ही शहर जाता। हाँफता हुआ सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद वह भिक्षु के बिस्तर पर बैठकर लाल सूजी

हुई आँखों से उसे घूरता। निकिता चुपचाप पड़ा रहता। बार-बार खाँसकर वह शून्य दृष्टि से छत की ओर ताकता रहता। उसके हाथ चोगे में मानो कुछ झाड़ते रहते। खाँसते-खाँसते उसका दम फूल जाता और वह उठने की कोशिश करता।

"प्राण निकल रहे हैं?" प्योत्र अपने भाई से पूछता।

निकिता भाई के कंधे और कुर्सियों का सहारा लेता हुआ खिड़की तक जा पहुँचता। उसका ढीला चोगा टूटे हुए मस्तूल पर लटके हुए पाल की तरह दिखाई देता। खिड़की के पास बैठकर वह नीचे के बगीचे या सुदूरस्थित जंगल की ओर देखता रहता।

"अच्छा, तो आराम करो।" प्योत्र कान की मोटी लौर को सहलाते हुए कहता और नीचे आकर ओल्गा को बताता—

"वह अब मर रहा है, ज्यादा देर न लगेगी।"

इतने में मोटा पादरी मार्दारी आ पहुँचा। उसने कहा कि धार्मिक नियमों के अनुसार निकिता को मठ में ही प्राण देने चाहिए, लेकिन कुबड़े ने ओल्गा से इन्कार करने के लिये मना लिया—

"मरने के बाद ही मुझे वहाँ भेजना।"

फिर बात पूरी होने पर उसने गिड़गिड़ाकर कहा—

"जनाज़े का ढक्कन ऊँचा रखना, नहीं तो मेरा कूबड़ दबेगा। भूलना मत।"

महायुद्ध छिड़ने से चार दिन पहले वह चल बसा। मरने से एक दिन पहले उसने मठ मे सूचना भेजने को कहा— .

"उन्हें आने दो। उनके आने तक मेरे प्राण निकल जायेंगे।"

अन्तिम दिन याकोव अपने पिता को सहारा देकर सीढ़ियों के ऊपर ले गया। प्योत्र ने अपने शरीर पर क्रॉस-चिह्न बनाते हुए भाई के रक्तहीन मटमैले चेहरे की ओर देखा। निकिता की आँखें मुँदी हुई थीं और गाल धँसे हुए थे। उसने अस्वाभाविक रूप से ऊँचे स्वर में कहा—

"मुझे क्षमा कर दो!"

"यह तुम क्या कह रहे हो? तुमने क्या कसूर किया है?" प्योत्र बुदबुदाया।

"मेरी धृष्टता के लिये।"

"क्षमा तो मुझे माँगनी चाहिए।" बड़े भाई ने कहा। "मैंने यहाँ कई बार तुम्हारी खिल्ली उड़ाई है।"

"ईश्वर हँसी-मज़ाक से नहीं चिढ़ता।" भिक्षु ने क्षीण स्वर में विश्वास दिलाया। प्योत्र ने पूछा—

"तुम्हें अब कैसा लग रहा है ? किधर ... ।"

"अरे, हाँ मैं भूल गया।" भिक्षु ने बीच में टोका। "याशा, जाकर तिखोन से कह दो कि ग्रीष्म-गृहवाला पेड़ काट दे। वह बढ़ नहीं सकता।"

याकोव भिक्षु की अलौकिक स्पष्ट आवाज को सहन नहीं कर सका और न वह उसकी टेढ़ी-मेढ़ी छाती और कूबड़ को ही देख सका। काले वस्त्रों में ढँके इस अस्थि-पिंजर में जीवन की एक भी किरण शेष न बची थी। वह मुट्ठी में एक प्राचीन ढंग का ताँबे का क्रॉस पकड़े हुए था। याकोव को अपने चचा पर दुःख था, साथ ही उसने सोचा कि यह बुरा रिवाज है कि बड्ढे और विशेषतः कुटुम्बी ऐसी जगह मरें, जहाँ सब उन्हें देख सकें।

निकिता के फिर बोलने की प्रतीक्षा में प्योत्र कुछ देर चुप-चाप वहाँ खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे याकोव की बाँह का सहारा लेकर चल दिया। नीचे उतरकर वह बोला—

"निकिता मर रहा है।"

"सचमुच ?" मिरोन ने अखबार पढ़ते हुए पूछा। उसने एक क्षण के लिए भी अखबार से दृष्टि नहीं हटाई। कुछ देर बाद अखबार को मेज पर डालकर उसने पत्नी को आवाज़ दी—

"देखो, मैं ठीक कहता था। इसे आकर पढ़ो।"

उसकी गोल-मटोल पत्नी भागी हुई मेज के पास आई और खिड़की पर से घबराकर ओल्गा चिल्लाई—

"मिरोन ! क्या सचमुच युद्ध छिड़ गया है?"

"अब दूसरा अर्तामोनोव भी चल बसा।" प्योत्र ने ज़ोर से कहकर स्मरण दिलाया।

"यह सरासर झूठ है।" मिरोन ने न जाने अपनी पत्नी को या याकोव को

सुनाकर कहा। याकोव भी अखबार में दृष्टि गड़ाये सोच रहा था कि व्यक्तिगत रूप से इस सबमें उसे क्या डर है। प्योत्र चिढ़कर कमरे से बाहर चला गया। गरमी के कारण फर्श के पत्थर इतने तप गये थे कि मखमली स्लीपरों में प्योत्र के तलवे झुलसने लगे। खिड़की में से मिरोन की रूखी, डाटने की आवाज़ आ रही थी। याकोव अख़बार पढ़ने के लिये जब खिड़की पर आया तो उसने बाहर पिता को ग़ुस्से में मुट्ठियाँ तानते हुए देखा, मानो किसी को धमकी दे रहा हो।

तीन दिन बाद तड़के सात भिक्षु आ पहुँचे। सबके सब एक दूसरे से लम्बाई और चौड़ाई में भिन्न थे, लेकिन याकोव को एक को छोड़कर सभी नव-जात शिशु के समान अबोध दिखाई दिये। उनका नेता, जो कद में सबसे लम्बा और दुबला था, हाथ में काले रंग का एक बड़ा-सा काला क्रॉस उठाये हुए था। उसकी घनी दाढ़ी और ऊँचा प्रफुल्ल स्वर इस शोकपूर्ण अवसर के सर्वथा अनुपयुक्त थे। चेहरा तो मानो उसके था ही नहीं। क्योंकि उसकी गंजी खोपड़ी और सघन दाढ़ी के बीच बस एक मोटी-सी नाक गालों में मिल गयी थी। और चेहरे में दो गहरे गड्ढों के सिवा कुछ न था। वह इतने धीमे-धीमे क़दम उठाता कि वह अंधा लगता। गाते समय उसके गले से एक साथ ही तीन आवाज़ें निकलती थीं।

"ईश्वर ही सबसे पवित्र है।" गम्भीर स्वर में उसने भजन की टेक आरम्भ की।

"पवित्र और शक्तिमान्।" उसका स्वर कुछ ऊँचा हो गया।

"पवित्र और अमर, हम पर दया कर।" गले से इतनी तीखी आवाज़ निकली कि गली में खेलते बच्चे इस तीन आवाज़ोंवाले दढ़ियल को देखने के लिए दौड़े आये।

जब जनाज़ा चौक पहुँचा, तो शहर के लोग वहाँ ठसाठस भरे थे। भीड़ के बीचोबीच नगर के कुछ अधिकारी, लेफ्टिनेण्ट मेवरिन, और उसके साथी और पादरियों का एक झुण्ड था। दृढ़ लेफ्टिनेण्ट मेवरिन अपनी चमकती वर्दी पहने एक स्मारक की भाँति अचल खड़ा था। पुरोहित और पादरी नुकीले चोगे पहने पत्थर पर खुदी मूर्तियों की तरह चुपचाप खड़े थे। उनके सुनहरी कपड़ों की किरणें लेफ्टिनेण्ट मेवरिन के मुख पर पड़ रही थीं। एक मोटा-सा अफ़सर

अपनी टोपी हिलाता हुआ इधर-उधर घूम रहा था।

तीन आवाज़ोंवाले भिक्षु ने लोगों की दीवार के सामने रुककर गंभीर स्वर मे कहा—

"हट जाओ।"

लोग हट गये। भिक्षु के लिए नहीं, बल्कि सहकारी पुलिस अफ़सर एक्की के दुर्बल घोड़े को आते देखकर। भिक्षु को एक ओर धक्का देते हुए एक्की ने आगे बढ़कर चौक का रास्ता रोक लिया और अपने सफ़ेद दस्तानेवाले हाथ को हिलाकर लोगों को डाँटा—

"कहाँ जा रहे हो? दिखाई नही देता? वापस मुड़ो।"

भिक्षु ने क्रॉस उठाकर गाना शुरू किया—

"ईश्वर ही सबसे पवित्र....।"

"हुर्रा!" मोटा अफ़सर चिल्लाया और चौक में खड़े लोगों की भीड़ भी चिल्लाई—"हुर्रा!"

एक्की ने घोडे को ऐंड़ लगाई और भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ गया।

"प्योत्र इलिच, आप लोग सड़क छोड़कर किसी गली से निकल जायें, तो अच्छा हो। मिरोन अलेक्सीविच, हम पर रहम कीजिए! इस उपद्रव के बीच आप....को लेकर आये हैं। आपने भीड़ नहीं देखी?"

प्योत्र जनाज़े के आगे-आगे चल रहा था, साथ में नतालिया और याकोव भी थे। एक्की के कर्कश चेहरे की ओर देखकर प्योत्र ने भिक्षुओं से कहा—

"आप लोग पीछे मुड़ चलिए!" फिर रुँधे गले से बोला—"मुझे लगता है कि आदेश देने का मेरा यह अन्तिम अवसर है।"

याकोव को सारी घटना अनुचित और हास्यास्पद लगी। वे लोग उस तंग गली की ओर मुड़ गये, जिसमें पोलीना रहती थी। इतने मे सफ़ेद कपड़े पहने और हाथ मे गुलाबी रंग का छाता लिए पोलीना स्वयं दिखाई दी। चौक पार करते समय उसने जल्दी से अपने उन्नत वक्ष पर क्रॉस का चिह्न बनाया।

"मेवरिन को आँखें फाड़कर देखेगी।" याकोव ने सड़क की धूलि और मन के क्षोभ से खिन्न होकर कहा। भिक्षुओं ने तेजी से क़दम बढ़ाये। दढ़ियल का स्वर भी धीमा हो गया और भजनमंडली चुप हो गई। नगर के बाहर

कसाईख़ाने के सामने दो घोड़ों से जुती एक विचित्र ढंग की गाड़ी खड़ी थी। कफ़न को इस गाड़ी पर रख दिया गया और शोक-प्रार्थनाएँ शुरू हुईं। शहर की सड़क पर बैंड 'ईश्वर ज़ार की रक्षा करे' की धुन बजा रहा था। तीनों गिरजों की घण्टियाँ टन टन बज रही थीं और एकत्रित भीड़ चिल्ला रही थी—

"हुर्रा!"

याकोव ने मन ही मन लेफ्टिनेन्ट मेव्रिन को आदेश देते हुए सुना—

"सावधान!"

प्रार्थना के बाद वह अन्य लोगों के साथ अपनी चची के यहाँ लौट आया। स्मृति-भोज के अवसर पर उसने पिता की क्रोध-भरी बड़बड़ाहट सुनी—

"किस बेवकूफ़ ने गाड़ी को कसाईख़ाने के सामने खड़ा किया था?"

"पुलिस ने।" मित्या ने आश्वासन दिया। "आपने देखा नहीं, ऐसे राष्ट्रीय उत्साह के अवसरों पर जनाज़े का जलूस शोभा नहीं देता।"

डॉक्टर याकोव्लेव शोक अवसरों पर सबसे आगे रहता था। मिरोन ने मुस्कराकर कहा—

"यदि हम 'रजत राजकुमार' उपन्यास के नायक मित्का की भाँति सबको संयुक्त कर लें तो जीत अधिक संख्यावालों की ही होगी।"

"जीत संख्या की नहीं, यान्त्रिक साधन जिसके पास अधिक होंगे, उसकी होगी।" डॉक्टर ने उत्तर दिया।

"यांत्रिक साधन? यह तो ठीक है, लेकिन....।"

इन सब झंझटों से छुट्टी पाकर रात को नौ बजे के बाद याकोव पोलीना के घर की ओर चल पड़ा। रास्ते भर वह एक अपूर्व चिन्ता में डूबा रहा।

"हाय रे दैया!" पोलीना की नौकरानी ने याकोव को आते देख रसोई की बेंच पर धम्म से बैठते हुए कहा।

"गन्दी कुटनी!" याकोव ने घुसते हुए नाक-भौं सिकोड़कर कहा। वह क्षणभर के लिए पोलीना के कमरे के बाहर ठिठक गया। कमरे के भीतर से फ़ौजी कदमों के साथ ही परिचित फ़ौजी आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"अच्छी बात है, अपने दिमाग़ से काम लो। तुम्हें दिमाग़ से काम लेना ही पड़ेगा, ठीक है न?"

"शायद अभी तक कुछ नहीं हुआ।" याकोव ने सोचा। लेकिन दरवाजा खोलते ही उसने देखा कि सब कुछ हो चुका है। लेफ्टिनेन्ट जेबों में दोनों हाथ डाले कमरे के बीचोबीच खड़ा था और उसकी वर्दी के बटन खुले हुए थे। पोलीना टाँगें फैलाए सोफ़े पर बैठी थी और उसका एक मोजा टख़ने तक उतरा हुआ था। उसकी आँखों में एक विचित्र चमक थी और गाल लाल हो रहे थे।

"कहिये?"

लेफ्टिनेण्ट का यह धृष्टतापूर्ण प्रश्न सुनकर याकोव के मन का सन्देह सही साबित हो गया। कमरे में दाख़िल होते ही अपना हैट एक कुर्सी पर फेंककर वह बदले हुए अजीब स्वर में बोला—

"मैं अभी जनाज़े से लौटा हूँ।"

"तो फिर?" लेफ्टिनेण्ट ने घर के मालिक की-सी प्रश्नसूचक ध्वनि से कहा। पोलीना सिगरेट का एक गहरा कश खींचते हुए उपेक्षापूर्वक बोली—

"लेफ्टिनेण्ट सर्जीविच की राय है कि मुझे रेडक्रॉस की नर्सों में भरती हो जाना चाहिए।" उसके स्वर में आत्मग्लानि का आभास तक न था।

"नर्सों की टुकड़ी में?" याकोव मुँह बिचका कर हँसा। लेफ्टिनेण्ट ने उसके पास आकर रूखे स्वर में पूछा—

"तुम किस बात पर हँस रहे हो? साफ़ कहो। यह समझ लो कि मैं किसी प्रकार की गुस्ताख़ी बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

याकोव का शरीर क्रोध से अंगारे की तरह जलने लगा। उसे हठात् स्मरण हो आया कि सामने बैठी हुई छोकरी उसके लिये अपने शरीर के किसी अङ्ग के समान आवश्यक है और वह यह कभी नहीं बर्दाश्त कर सकता कि कोई दूसरा व्यक्ति आकर उसे छीन ले। इस विचार की कल्पना मात्र से ही उसका क्रोध लौट पड़ा। उसकी रीढ़ में एक ठंडी सनसनी-सी दौड़ गई। उसने जेब में हाथ डालते हुए कहा—

"ख़बरदार जो मेरे नज़दीक आये!"

उसकी आँखें क्रोध से फटी जा रही थीं।

"क्यों न-न-हीं?" लेफ्टिनेन्ट ने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा। याकोव को लेफ्टिनेन्ट का व्यंजनों को दुहराकर बोलना सदा नापसन्द था और अब तो

उससे वह बोखला उठा। जेब से हाथ निकालने का प्रयत्न करते हुए वह बोला :

"जान से मार दूँगा !"

लेफ्टिनेन्ट मेवरिन ने ज़ोर से उसकी कलाई दबोच ली। पिस्तौल का घोड़ा याकोव की जेब ही मे दब गया और लेफ्टिनेण्ट ने याकोव की शिथिल उँगलियों को झटका देते हुए पिस्तौल छीनकर पास की कुर्सी पर फेंक दिया और कहा—

"यह तो बेकार हो गया !"

"याशा ! याशा !" पोलीना ज़ोर से फुसफुसाई, "लेफ्टिनेन्ट सर्जिविच ! क्या तुम लोग पागल हो गये हो ? आख़िर किस बात पर हाथा-पाई कर रहे हो? मुफ्त में मेरी बदनामी करनाओगे ? किसलिए ?"

"अच्छी बात है।" लेफ्टिनेण्ट गरजा और याकोव की दाढ़ी पकड़कर ज़ोर से अपनी ओर खींचते हुए बोला—

"माफ़ी माँगो, बेवकूफ़ !"

वह बार-बार याकोव की दाढ़ी को झटके देकर नीचे-ऊपर कर रहा था।

"हाय ! हाय ! कुछ तो शर्म करो !" पोलीना ने बढ़कर लेफ्टिनेण्ट की कोहनी थाम ली।

याकोव की दाहिनी बाँह निर्जीव-सी लटक रही थी। उसने दाँत किटकिटाकर बायें हाथ से लेफ्टिनेन्ट को धक्का देने की कोशिश की। क्रोध और अपमान के आँसू उसकी आँखों से बहकर टपकने लगे।

"अपने हाथ अलग रखो !" लेफ्टिनेन्ट ने चिल्लाकर याकोव को उस कुर्सी पर पटक दिया जिस पर तमंचा पड़ा था। याकोव दोनों हाथो से अपने आँसुओं को छिपाने की कोशिश कर रहा था। उसे मूर्छा-सी आ रही थी। उसने पोलीना को चीख़कर कहते सुना—

"हाय भगवान् ! कितनी बुरी बात है ? और तुम ? इतना अपमान, किस लिए कर रहे हो ?"

"श्रीमतीजी, तुम जहन्नुम में जाओ !" मेवूरिन ने मुँह बिचकाकर कहा। "यह लो, एक रूबल ! तुम्हारे लिए इतना ही बहुत है। मुझे अतिशयोक्ति से घृणा है- लेकिन यह सच है कि तुम बहुत घटिया किस्म की.... ।"

पैर पटकते हुए लेफ्टिनेण्ट ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करके खट-खट उतरता

हुआ चला गया।

याकोव उठ खड़ा हुआ। उसके पैर रूई के गाले की तरह शिथिल हो गया था और उसका सारा शरीर काँप रहा था। एलेना लैम्प के नीचे बैठी थी। उसका दम फूल रहा था और वह अपने हाथों में पकड़े गंदे रूबल के नोट की ओर देख रही थी।

"हरामज़ादी! यह तूने क्या किया? तू तो हमेशा कहा करती थी....मैं तुझे जान से मार डालूँगा।" याकोव बोला।

पोलीना ने नोट ज़मीन पर पटककर रुँधे स्वर में कहा—

"बदमाश, लुच्चा!"

वह अपना सिर पकड़कर आराम-कुर्सी में धँस गई। याकोव ने उसके कन्धे पर घूँसा मारकर कहा—

"हटो, मुझे पिस्तौल लेने दो!"

वह पत्थर की तरह निश्चल बैठी रही। उसने चकित स्वर मे पूछा—

"तुम मुझसे प्रेम करते हो?"

"मुझे तुमसे सख़्त नफ़रत है।"

"यह झूठ है! अब तो तुम मुझे चाहते हो!"

वह फ़ौरन झपटकर याकोव के गले से लिपट गई और ज़ोरों से उसके ओठों को चूमने लगी।

"तुम झूठ बोलते हो! तुम मुझे चाहते हो और मैं तुम्हें, आह! मेरे मुलायम चारे!"

केवल प्रेम के उन्माद मे आकर ही पोलीना याकोव को इस नाम से पुकारती थी। इसे सुनकर याकोव पागल हो उठता—उसने पोलीना को कसकर अपने आलिंगन मे ले लिया और चूमते हुए बदहवासी की हालत में बोला—

"कुतिया, छिनाल, जब जानती हो....।"

घण्टेभर बाद वह सोफ़े पर बैठा पोलीना को गोद में लिटाये उसको हिला रहा था।

"कितनी जल्दी बीत गया!" याकोव ने सोचा।

पोलीना अलसाये स्वर में बोली, "मैंने क्रोध में आकर तुम्हे छोड़ देने क

निश्चय कर लिया था। तुम हर समय अपने परिवार के पचड़ों में पड़े रहते हो। आज जनाज़ा है, तो कल कुछ और। मै अकेलेपन से उकता गई हूँ और मुझे तुम्हारे प्रेम का भी क्या भरोसा था? अब मुझे तुम्हारे प्रेम पर विश्वास है, क्योंकि तुम्हें और लोगों से ईर्षा होती है। कहते हैं, यदि पुरुष ईर्षा करे तो....।"

"काश हम यहाँ से कहीं दूर जा सकते।" याकोव बुदबुदाया।

"उहँ, पेरिस चलो। मुझे फ्रेंच आती है।"

कमरे में अँधेरा था। बाहर आधी रात का सन्नाटा छाया था। सिपाहियों की ऊँची आवाज़ें सुनायी दे रही थीं।

"आजकल बाहर जाना असम्भव है, युद्ध जो छिड़ गया है।" याकोव को याद आया। "युद्ध! शैतान इन सबसे समझे!"

पोलीना अपनी विचारधारा में डूबी हुई थी।

"ईर्षा के बिना प्रेम संभव ही नहीं, कुत्तों के प्रेम को छोड़कर। ससार के सभी दुःखान्त नाटक ईर्षा से उद्भूत हैं।

याकोव हँसकर बोला—

"जिस तरह गोली छूटी, वह सौभाग्य ही है। वह मेरी टाँग में लग सकती थी, पर—देखो!—सिर्फ पतलून में छेद हो गया है।"

पोलीना ने छेद में उँगली घुसेड़ दी। अचानक वह सिसकने लगी। तीव्र घृणा के स्वर में वह बोली—

"तुमने उसके रबड़-से पेट मे गोली क्यों नहीं मार दी? कितनी शर्म की बात है!"

"चुप रहो!" याकोव ने उसे झकझोरकर कहा। लेकिन वह दाँत किट-किटाकर क्रोध में फुफकारती रही।

"सुअर! उसनें मेरा कितना अपमान किया? तुम सब पुरुष....स्त्री के हृदय को तुम लोग नहीं समझ सकते।"

फिर उसने सूजे हुए ओंठों को खोलकर अपने लोमड़ी-जैसे दाँतों की पंक्ति दिखाकर कहा—

"कोई स्त्री यदि पुरुष से विश्वासघात करती है तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह उसे प्यार नहीं करती।"

"मैं कहता हूँ, चुप रहो !" याकोव ने चिल्लाकर उसे इतने ज़ोर से दबाया कि वह पीड़ा से चिल्ला उठी।

"आह ! अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम सचमुच प्रेम करते हो। याशा, मेरे मुलायम प्यारे !"

पौ फटने पर याकोव पोलीना के घर से निकला। उसे लग रहा था, मानो वह एक भयंकर प्रतियोगिता में विजयी होकर लौटा है। जाने से पहले उसने पोलीना से अपना पिस्तौल माँगा। पोलीना के इन्कार करने पर याकोव ने उसे नोस्कोववाली पूरी घटना कह सुनायी। पोलीना का डर एक प्रेमिका के अनुरूप ही था। वह बार-बार अपने हाथ मलकर आह और ऊह करती जाती थी। याकोव को भी विश्वास हो गया था कि वह उससे प्रेम करती है। पोलीना ने झिड़ककर पूछा, "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ?"

फिर कुछ देर रुककर वह बोली, "सचमुच बड़ी दिलचस्प बात है। क्या वह जासूस है ? तुमने शेरलॉक होम्स पढ़ा है ? मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि यहाँ के जासूस भी बदमाश होंगे।"

"इसमें सन्देह नहीं।" याकोव ने समर्थन किया।

पिस्तौल की जाँच करने के लिए पोलीना ने याकोव से एक गोली दाग़ने को कहा। दोनों पेट के बल फर्श पर लेट गये, घोड़ा दबाते ही अँगीठी से राख का एक बादल उड़ता दिखाई दिया। पोलीना डर से चीख़ पड़ी। यकायक उसने कहा—

"देखो, वह देखो !"

लकड़ी के रँगे फ़र्श पर गोली का एक छेद हो गया था।

"जरा सोचो तो, इसी छेद में से अभी मृत्यु ग़ुज़र कर गई है।" पोलीना ने ठंडी आह भर और भौंह सिकोड़कर कहा।

पोलीना पहले कभी इतनी मधुर नहीं लगी थी, मानो उसी की हो। नोस्कोव की बातें सुनकर उसकी आँखें बाल-सुलभ आश्चर्य से चमकने लगीं। उसके नन्हें किशोर मुख पर क्रोध का कोई चिह्न न था।

"इसे आत्मग्लानि नहीं हो रही।" याकोव ने आश्चर्य से सोचा। वह मन ही मन प्रसन्न हुआ।

विदा होते समय पोलीना ने याकोव की दाढ़ी में उँगलियाँ डालते हुए कहा—

"ओह, याशा, याशा ! कितना गम्भीर मामला है ? हे ईश्वर !....लेकिन वह सूअर....!"

फिर दोनों मुट्ठियाँ तानकर उसने भर्त्सना के स्वर मे कहा—

"हे ईश्वर ! दुनिया में कितने सूअर हैं !"

यकायक याकोव की बाँह पकड़कर वह गम्भीर स्वर में बोली—

"ठहरो ! मुझे याद आया, शहर मे एक लड़की रहती है....वह ज़रूर... ।"

फिर याकोव के ऊपर क्रॉस का चिह्न बनाती हुई वह प्रफुल्लता से बोली—
"जाओ मेरे मुलायम प्यारे !"

प्रातःकाल ठंड और ओस थी । बग़ीचे में हवा सनसना रही थी । आकाश की रजत आभा में सेब की गन्ध समायी थी ।

"कोई बात नहीं, क्रोध मे आकर उसने बेवफ़ाई दिखाई थी, पिता के मरते ही मुझे उससे शादी करनी होगी ।" याकोव ने उदारतापूर्वक सोचा । उसे सेराफ़ीम का एक चुटकुला याद आया—

"हर छोकरी डूबते हुए की तरह होती है—तिनके का सहारा ले लेती है, तो तिनका बनकर ही उसे हथियाना है ।"

लेफ्टिनेण्ट का ख़्याल आते ही वह चिन्तित हो उठा । वह तो तिनके की तरह नहीं था । उसके क्रोध के अप्रिय परिणाम हो सकते थे । सम्भव है कि उसे मोर्चे पर भेज दिया जाय । पहले की अपेक्षा आज उसे नोस्कोव-सम्बन्धी विचार कम तंग कर रहे थे, यद्यपि इसी समय बहुधा उससे मुठभेड़ हो जाया करती थी । याकोव पिस्तौल के घोड़े पर हाथ रखे सतर्क होकर चारों ओर देखता चल रहा था ।

इस घटना के एक या दो सप्ताह बाद याकोव का पुराना भय कड़ुए धुँए की तरह फिर लौट आया । एक दिन याकोव जंगल में काटने के लिए ख़रीदी लकड़ी का निरीक्षण करने गया था । वहाँ उसने देखा कि शिकारी नोस्कोव पीठ पर एक बोरी लटकाए झाड़ी में से निकल रहा है । उसकी पेटी में अनेक फंदे लटके हुए थे ।

"अच्छा हुआ, जो आप मिल गये।" उसने याकोव के पास आकर टोपी उतारते हुए कहा। याकोव का ध्यान इस ओर गया था कि वह टोपी सिपाहियों की तरह लगाये था, दाहिनी आँख पर झुकी हुई और उसने उसे आगे से पकड़ने के बजाय ऊपर से उठाया था।

याकोव ने इस विचित्र अभिवादन का कोई उत्तर न दिया। वह दाँत भींचकर जेब में पड़े पिस्तौल को टटोलने लगा। नोस्कोव भी चुपचाप खड़ा अपनी टोपी के अस्तर को उँगलियों से कुरेदता रहा। •इसी हालत में कुछ क्षण बीत गये।

"कहो क्या बात है?" अर्तामोनोव ने पूछा।

नोस्कोव ने अपनी कुत्ते-सी आँखें ऊपर उठाकर छितरे बाल ठीक करते हुए स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया—

"तुम्हारी प्रेमिका, मेरा मतलब पोलीना आजकल पादरी की बेटी से दोस्ती बढ़ा रही है। उसे मना कर दो।"

"मैं क्यों मना कर दूँ?"

"क्योंकि....।"

कुछ क्षण गिरजे की घण्टियों को सुनने के बाद शिकारी ने कहा—

"मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही यह सलाह दे रहा हूँ। तुम मुझे इस समय....।"

आकाश की ओर देखकर उसने कुछ सोचा—

"पैंतीस रूबल दो।"

याकोव ने रूबल गिनते हुए मन ही मन सोचा—"इस कुत्ते को जान से मार देना चाहिए।"

शिकारी रूबल लेकर लँगड़ाता हुआ झाड़ी की ओर चला गया। याकोव को लगा कि यह आदमी दिन-ब-दिन उसके लिए पहले से अधिक बुरा और असहनीय होता जा रहा है।

"नोस्कोव!" उसने शिकारी को आवाज़ दी—"तुम यह पेशा छोड़ क्यों नहीं देते?"

"क्यों छोड़ दूँ?" नोस्कोव ने मुँह बढ़ाकर पूछा।

याकोव को शिकारी की आँखों में भय अथवा द्वेष की झलक दिखाई दी।

"यह ख़तरनाक है।"

"यह तो जानना चाहिए कि कोई काम कैसे किया जाता है और अगर यह नहीं मालूम तो खतरा सभी कामों में है।"

"जैसी तुम्हारी .ख़ुशी।"

"तुम अपने ही अहित की बात कर रहे हो।" नोस्कोव ने धमकी दी।

"शत्रुता में भला किसका हित है?" याकोव बुदबुदाया। उसे खेद हो रहा था कि उसने व्यर्थ ही भेदिये को मुँह लगाया। उसने मन ही मन सोचा--"यह अपने आपको क्या समझता है? उल्लू! चला है मुझसे बहस करने!"

नोस्कोव ने उपदेश-सा दिया--"बिना शत्रुता के जीवन किस काम का? सबके अपने मित्र और शत्रु अलग होते हैं। अच्छा, नमस्कार!"

इतना कहकर नोस्कोव पास की एक घनी झाड़ी में घुस गया। याकोव चुपचाप खड़ा कुछ देर तक टहनियों और पत्तों की सरसराहट सुनता रहा। फिर तुरन्त घोड़े पर सवार होकर पोलीना के यहाँ पहुँचा।

"सूअर!" पोलीना आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता से बोली। "उसे इतनी जल्दी कैसे पता चला कि मैं पादरी की बेटी से मिलती-जुलती हूँ? अच्छा, तो इसमें तुम्हारी क्या राय है?"

"तुम ऐसे लोगों से दोस्ती करती ही क्यों हो?" याकोव ने चिढ़कर पूछा।

पोलीना भी इस प्रश्न से चिढ़ गई। उसने अपने महीन रूमाल को मरोड़ते हुए कहा—

"पहले तो यह तुम्हारे ही भले के लिए है। और फिर इसके अलावा मैं और करूँ भी क्या? कुत्ते-बिल्लियाँ पालूँ या मेवूरिन सरीखे लोगों को....मैं सारे दिन क़ैदी की तरह बन्द रहती हूँ। कोई ऐसा भी नहीं, जिसके साथ बाहर घूमने के लिए जा सकूँ। वह दिलचस्प बातें करती है। पढ़ने को पुस्तकें और पत्रिकाएँ देती है। उसे राजनीति में गहरी रुचि है। हम दोनों पोपोवा के स्कूल में इकट्ठे पढ़ने जाती थीं, तभी आपस में एक बार लड़ाई हुई थी।" फिर याकोव के कन्धे पर हाथ रखकर वह किंचित आक्रोश से भरकर बोली—

"तुम्हारे विचार में गुप्त रूप से रखेल बनकर रहना आसान है? स्लाद्-

कोपेसेवा कहती है कि रखेल औरत रबर के जूते के समान है, जिसकी केवल कीचड़ में जरूरत होती है। समझे ? तुम्हारे डाक्टर से उसका प्रेम-सम्बन्ध है। वे दोनों इस बात को किसी से नहीं छिपाते। एक तुम हो, जो मुझे फोड़े की तरह छिपाये फिरते हो। तुम तो इस तरह शरमाते हो, मानो मैं कानी या कुबड़ी होऊँ। मैं कोई चुड़ैल तो नहीं हूँ ?"

"चुप रहो।" याकोव ने डाँटा। "मै तुमसे गंभीरतापूर्वक कहता हूँ कि तुमसे शादी कर लूँगा। वैसे तो तुम सुअर हो और. ..।"

"हम दोनों मे से कौन ज़्यादा सुअर है, यह बात अभी तै नहीं हुई।"

पोलीना क़हक़हा लगाकर हँस पड़ी। "क्या कहते हैं, मेरे मुलायम चारे के ! मेरे निःस्वार्थ प्रियतम के ! कोई और होता तो ऐसे शब्द ज़बान पर न लाता। जो भी हो, वह जासूस तुम्हारे काम का है।"

याकोव ने सदा की तरह आज भी उसके मन को अपने प्रेम से संतुष्ट कर दिया। एक सप्ताह बाद घड़ियाल बजानेवाले चेचक मुँह अलागिन ने आकर खबर सुनाई कि बुनकर मोर्दवीनोव अस्पताल में पड़ा है। एक दिन तड़के बुनकरों का एक दल मछली मारने के लिए नदी की ओर गया था। शिकारी नोस्कोव् को डूबने से बचाने की चेष्टा में मोर्दवीनोव स्वयं डूब चला था। यह ख़बर सुनकर याकोव के हाथ पाँव काँपने लगे।

उसने सोचा, "इन्ही लोगों ने उसको डुबोया होगा।" लेकिन मोर्दवीनोव के कोमल, औरतों जैसे मुँह का ख़्याल आते ही उसे यह विश्वास न हो सका कि यह आदमी भी ख़ून कर सकता है।"

"चलो अच्छा हुआ।" उसने चैन की साँस ली। पोलीना की भी यही राय थी।

"अच्छा हुआ, नहीं तो यदि किसी और ढंग से वह मरता तो एक लम्बा बखेड़ा खड़ा हो जाता।" पोलीना ने गम्भीर स्वर में कहा।

फिर भी वह मन-ही-मन उदास हो गई। "अच्छा होता, यदि उसे पकड़कर सारी बातें कहलवाई जातीं और फिर उसे गोली मार दी जाती। तुमने पढ़ा है....।"

"व्यर्थ की बातें मत करो, पोलीना।" याकोव ने बीच में टोका। कुछ दिन शान्ति से बीत गये। इस बीच याकोव बोरोगोरोद भी हो आया। वापस लौटते ही मिरोन ने चिन्तित स्वर से कहा—

"मिल में फिर गड़बड़ी शुरू हो गई है। एकी को आदेश मिला है कि वह शिकारी के डूबने की घटना की पूरी छानबीन करे। पुलिस ने मोर्दवीनोव, किर्याकोव और क्रोतोव को पकड़ लिया है। इनके सिवा उस दिन जो लोग मछली पकड़ने गये थे वे सभी गिरफ्तार हो गये हैं। मोर्दविनोव का सारा चेहरा खरोंचा हुआ है और उसका कान फटा हुआ है। उन्हें इसमें कोई राजनीतिक चाल लगती है।"

मिरोन एक उँगली पर चश्मा साधे पियानो के पास खड़ा था और कमरे के एक कोने की ओर टकटकी लगाये देख रहा था। स्वीडिश वास्कट, भूरी पतलून और मिट्टी से सने ऊँचे जूतों से वह इंजिन का ड्राइवर-सा दिखाई दे रहा था, जब कि उसके हजामत किये गालों और तिरछी मूँछों को देखकर उसके फ़ौजी होने का भ्रम होता था। उसकी कठोर मुद्रा पर किसी बात का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता था।

"अजब मूर्खतापूर्ण ज़माना है। लो, एक नया युद्ध शुरू हो गया। सदा की तरह अपनी मूर्खता से ध्यान हटाने के लिए हम लड़ाई छेड़ देते हैं। मूर्खता के विरुद्ध युद्ध करने का विचार किसी के दिमाग में नहीं आता। फिर भी हमारी अधिकांश समस्याएँ घरेलू है। किसानों के देश मे मज़दूरों की पार्टी शासन करना चाहती है! और उस पार्टी में एक व्यापारी का बेटा इलिया अर्तामोनोव भी शामिल है। उसने एक ऐसे वर्ग में जन्म लिया है जिसके कन्धों पर देश को योरपीय सभ्यता सिखाने और औद्योगिक तथा यान्त्रिक दृष्टि से उन्नति करने का महान् भार है। अपने वर्ग के साथ विश्वासघात करने के लिए उसे कठोर दण्ड मिलना चाहिए। सच पूछो तो यह भारी देशद्रोह है...यदि बुद्धिवादी गोरित्स्वेतोव ऐसी बातें करे तो समझ में आ सकता है, क्योंकि वह पढ़ने और गप्पें हाँकने के अतिरिक्त और किसी काम के योग्य नहीं है। मेरे विचार मे रूस में केवल निकम्मे और आवारा लोग ही क्रान्ति की बातें सोचते हैं।"

ऐसा लगता था, मानो मिरोन किसी भरे कमरे में भाषण दे रहा हो। धीरे-धीरे उसकी आँखें मुँद गईं। याकोव अपनी चिन्ताओं में डूब गया। नोस्कोव की मौत की जाँच कैसे समाप्त होगी और उसका उस पर क्या असर पड़ेगा?

मिरोन की पत्नी कमरे में दाखिल हुई। वह गर्भवती थी और देखने में

दराज़ोंवाली बड़ी आल्मारी-सी लगती थी। उसने पति की ओर देखकर अलसाये स्वर में कहा—

"जाकर कपड़े बदल लो।"

मिरोन चुपचाप चश्मा सँभालता हुआ कमरे से बाहर चला गया।

एक महीने बाद सब मज़दूर रिहा कर दिये गये। मिरोन ने याकोव को आदेश दिया—

"इन सब को बर्ख़ास्त कर दो।"

धीरे-धीरे याकोव को चचेरे भाई का रोब सहने की आदत पड़ गई थी। एक दृष्टि से यह अच्छा भी था, क्योंकि इस तरह उसे कारख़ाने के झंझटों से मुक्ति मिल जाती थी, लेकिन इस बार उसने कहा—

"कोयला झोंकनेवाले क्रोतोव को नहीं निकालना चाहिए।"

"क्यों?"

"वह बड़ा हँसमुख है और इतने वर्षों से हमारे यहाँ काम कर रहा है। वह लोगों का मनोरंजन करता है।"

"अच्छी बात है, तो शायद उसे रखना पड़े।"

फिर होंठ चाटकर मिरोन बोला—

"मसख़रे काम आते है, यह सच है।"

कुछ दिनों के लिए याकोव को लगा कि सब ठीक चल रहा है। युद्ध के कारण लोग अधिक गम्भीर और बुझे हुए हो गये थे। लेकिन याकोव अपनी आदत के अनुसार नई मुसीबतों की प्रतीक्षा करने लगा। उसे अधिक दिन प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। नेस्तरेंको एक लम्बी औरत की बाँह थामे शहर में दिखाई दिया। उसकी सूरत वीरा पोपोवा से मिलती थी। दुआ सलाम के बाद भेदभरी दृष्टि से याकोव की ओर देखकर उसने पूछा—

"क्या तुम एक घंटे बाद मुझसे मिल सकोगे? मैं अपने ससुर के यहाँ ठहरा हूँ। मेरी पत्नी मृत्यु-शैया पर है, इसलिये सामने के द्वार की घंटी न बजाना। पिछले दरवाजे से चले आना।"

एक घंटा बड़ी मुश्किल से बीता। उसके बाद याकोव ने अपने आपको एक किताबों से भरे कमरे में पाया। नेस्तरेंको ने शान्त स्वर में कहा—

"हमारा दोस्त तो मार दिया गया। इसमें सन्देह नहीं कि यह काम बड़ी चतुराई से किया गया। अब बात यह है—तुम्हारी प्रेयसी पोलीना स्लाद्कोपेत्सेवा नाम की लड़की की सहेली है। यह लड़की उस दिन वोरोगोरोद में गिरफ्तार हुई थी। क्या यह सच है ?"

"मैं नहीं जानता।" याकोव के माथे पर ठंडे पसीने की बूँदे चमकने लगीं। नेस्तरेंको ने मूछों पर ताव देकर संयत स्वर में कहा—

"तुम अच्छी तरह जानते हो।"

"मैं इतना ही जानता हूँ कि पोलीना उससे मिली है।"

"यही तो मैं कह रहा था।"

"आख़िर माजरा क्या है ?" याकोव ने नेस्तरेंको की लाल चपटी नाक की ओर देखते हुए मन ही मन सोचा। उसकी मटमैली आँखों में से मानो शराब की दुर्गन्ध आ रही थी।

"मैं तुम्हारे साथ एक अफ़सर की हैसियत से बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि तुम्हारे हित के लिए एक परिचित की तरह नेक सलाह देना चाहता हूँ। प्यारे दोस्त....निशानेबाज़।" फिर कुछ क्षण रुककर उसने समझाया।

"एक ज़माना था, जब तुम्हारा निशाना कभी ठीक नहीं बैठता था। बात यह है कि स्लाद्कोपेत्सेवा तुम्हारी प्रेयसी की सखी है। ज़रा सोचकर देखो, हम दोनों के अतिरिक्त कोई तीसरा उस शिकारी के पेशे को नहीं जानता था। मेरा तो प्रश्न ही नहीं उठता। नोस्कोव भी मूर्ख नहीं था, यद्यपि....।"

नेस्तरेंको ने आँखें नीची करके अपनी बात जारी रखी—

"हम सबको एक न एक दिन मरना है। बस इतनी-सी बात है।"

याकोव को लगा, मानो नेस्तरेंको के होंठों से शब्द नहीं फाँसी के फन्दे निकल रहे हों। ये अज्ञात, सूक्ष्म फन्दे उसकी गर्दन में इतने ज़ोर से लिपट रहे थे कि याकोव का दम घुटने लगा और उसके कलेजे की धड़कन बन्द होने लगी। उसके चारों ओर तूफान का-सा चक्कर और साँय-साँय होने लगी। नेस्तरेंको जान-बूझकर धीमे स्वर से कहता जा रहा था—

"मुझे पक्का विश्वास है कि तुम इस बीच सतर्क नहीं रहे। तुमने ज़रूर किसी से बातें की हैं, क्यों कुछ याद है ?"

"नही तो।" याकोव ने स्वर ऊँचा करके उत्तर दिया। वह मन ही मन डर रहा था कि कहीं उसकी आवाज़ धोखा न दे जाय।

"सच कहते हो?" सिपाही ने अपनी मूँछ की नोकें मरोड़ते हुए पूछा।

"हाँ, ऐसी कोई बात नहीं है।" याकोव ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया।

"ताज्जुब है, सख्त ताज्जुब। ख़ैर, बात सँभाली जा सकती है। देखो नोस्कोव की जगह किसी और को रखना पड़ेगा, जो तुम्हारे लिये उपयोगी सिद्ध हो। मीनायेव नाम का एक आदमी तुम्हारे पास आयेगा। मुझे विश्वास है कि तुम उसे रख लोगे।"

"अच्छी बात है।"

"मुझे यही कहना था। आगे से सतर्क रहना। औरतों के सामने कभी मुँह न खोलना। समझे!"

"पता नहीं मुझे यह इतना मूर्ख क्यों समझता है।" याकोव ने सोचा।

इसके बाद नेस्तरेंको ने पतझर में हंसों के आगमन, युद्ध, और पत्नी की बीमारी और बहन के बारे में बातें कीं, जो उसकी देख-भाल करती थी।

"हमें सबसे बड़ी मुसीबत के लिये तैयार हो जाना चाहिए।" उसने अपनी मूँछों पर ताव देते हुए कहा। इससे ऊपरी ओंठ उठ गये और पीले दाँतों की पक्ति दिखाई देने लगी।

"मुझे यहाँ से चल देना चाहिये, नहीं तो यह दुष्ट मुझे मुसीबत में डाल देगा।" याकोव ने मन ही मन सोचा।

नदी के किनारे-किनारे घर पहुँचकर वह बड़बड़ाया—

"शैतान तुम सबसे समझे! तुम मेरे किस काम के हो?"

पतझर के आगमन की सूचना देनेवाली वर्षा की हल्की फ़ुहारें धरती को धीमे-धीमे छिड़क रही थीं, पीली नदी पर बूँदों के गिरने से धब्बे से पड़ रहे थे; और हवा में मतली लानेवाली गर्मी भरी थी। इस वातावरण ने याकोव की उदासी को और भी गहरा कर दिया। क्या ऐसी चिन्ताओं से मुक्त होकर एक शान्त सीधा-सादा जीवन-बसर नहीं किया जा सकता?"

जिस तरह जाड़े मे हवा के थपेड़ों और बर्फ में लदी हुई गाड़ियाँ नये-नये

संकट का सामना करती बढ़ती हैं, वैसे ही महीने पर महीने बीतते गये ।

ज़ाखर मोरोज़ोव युद्ध में से संत जार्ज क्रॉस लेकर वापिस लौटा । उसके बाल उड़ गये थे, जली हुई चाँद लाल घावों से भरा था, एक कान ग़ायब था, दाहिनी भौं के स्थान पर एक लाल घाव का निशान था और उसके नीचे कुचली मुरदार आँख थी । दूसरी आँख संसार को बड़ी कड़ाई से देखती थी । जाखर और लगड़े वास्का क्रोतोव में मित्रता हो गई । सेराफ़ीम के शिष्य ज़ाखर ने फौरन एक नया राग छेड़ा—

"चारों ओर तूफान, बर्फ और वर्षा है,
मैं खाइयों में बैठा हूँ ।
एक मूर्ख उल्लू की भाँति
मैं फ्रांसीसियों की सहायता कर रहा हूँ ।"

याकोव ने मोरोज़ोव से पूछा—

"क्यों ज़ाखर, क्या माजरा है ? क्या हम लोग ठीक से नहीं लड़ रहे हैं ?"

"हमारे पास लड़ने के लिये है ही क्या ?" जुलाहे ने उत्तर दिया । उसका स्वर ऊँचा और उजड्ड था, और उसमें से वही निर्लज्ज झनकार निकल रही थी जो भट्ठी झोंकनेवाले के गीत में थी ।

"याकोव पेत्रोविच हमारा कोई मालिक नहीं है । चारों ओर बदमाशों और धोखेबाज़ मालिक बने बैठे हैं ।" उसने मालिक के मुँह पर कहा ।

वह और भट्ठी झोंकनेवाला वास्का मजदूरों के समूह के बीच पतझड़ की रात के अँधेरे में लालटेन की तरह थे । जब तात्याना का चञ्चल पति बहुत ही ढीले आसन की पतलून पहनकर आया तो भट्ठी झोंकनेवाले ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और गाने लगा—

एक व्यक्ति की पतलून देखो, ओ हो !
दोनों बातें एक साथ नहीं हो सकतीं,
कुछ लोग अपने दिमाग़ को बढ़ाना चाहते हैं
और कुछ अपनी पतलूनों को !

याकोव के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि नाराज़ होने के बजाय मित्या ठहाका मारकर हँस पड़ा है, जिससे वास्का की हिम्मत और भी

बढ़ गई। सब मज़दूर भी हँसने लगे। एक दिन ज़ाखर अपने साथ एक बाल-दार पिल्ले को ले आया, जिसकी झबरी पूँछ सैनिक ढंग से उसकी पीठ पर मुड़ी थी। दुम के सिरे पर छाल के रेशों के गुच्छे से एक छोटा-सा सफ़ेद सत जार्ज का क्रॉस लटक रहा था। मिरोन को यह गुस्ताखी सहन न हुई और ज़ाखर को गिरफ़्तार कर लिया गया। तिखोन व्यालोव ने पिल्ले को अपने पास रख लिया।

नगर की सड़कें फ़ौजी कोट पहने अपाहिज, अंधे और लूले लँगड़े सैनिकों से भर गईं। सारे नगर पर उनकी फटी-पुरानी बदरंग वर्दियों का रंग छा गया। नगर की भद्र महिलाएँ अपाहिज सैनिकों को घुमाने के लिये ले जातीं। वीरा पोपोवा ने स्त्रियों के एक ऐसे दल का संगठन किया। पोलीना भी इस दल में भरती कर ली गई। वह याकोव के सामने सिर को झटका देकर चिल्लाती—

"ओह! मैं यह सब सहन नहीं कर सकती! कैसा भयानक अत्याचार है? ज़रा सोचो याशा! ये सब कितने कमउम्र हैं, हट्टे-कट्टे हैं, पर सब कटे-फटे और विकृत हैं, और कैसे बदबू करते हैं! मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। चलो कहीं और चलें।"

"किधर जायें!" याकोव चिढ़कर पूछता। उसने देखा कि पोलीना दिन-प्रतिदिन चिड़चिड़ी होती जा रही थी। वह सिगरेट बहुत पीने लगी थी और उसकी साँस में तम्बाकू की दुर्गन्ध रहती। यों तो नगर की सभी औरतों, विशेष-कर कारखाने की औरतों का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। वे हर समय मँहगाई का रोना रोती रहती थीं। उनके पति लापरवाही से सीटियाँ बजाते-फिरते। ये अधिक वेतन की माँग करने लगे थे और काम में कम मेहनत करते। बस्ती में शाम के समय का कोलाहल पहले की अपेक्षा अधिक कर्कश और ऊँचा हो गया था।

शान्त स्वभाववाला फिटर मीनायेव मज़दूरों से मेल-जोल रखता था। यहू-दियों सा दिखाई देनेवाला मीनायेव तीस वर्ष का था और उसकी बड़ी-सी नाक मुड़ी हुई थी। वह भूला-भूला-सा दिखाई देता था, मानो किसी बात को याद कर रहा हो। याकोव यत्नपूर्वक उससे बचता रहता। प्योत्र अपनी दुखती टाँगों का घसीटता हुआ अहाते में घूमता फिरता। उसके कन्धे पर लोमड़ी के अस्तर-वाला एक सफ़री कोट लटका रहता और वह आने-जानेवाले मज़दूरों को रोककर

कठोर स्वर में पूछता—

"किधर जा रहे हो ?"

फिर क्रोध से हाथ हिलाकर वह बड़बड़ाता—

"अच्छी बात है, जाओ! आवारा जोंकों! तुम लोगों ने मेरा लोहू पी रखा है।"

उसका फूला हुआ लाल चेहरा काँपने लगता और उसका निचला होंठ क्रोध से खुल जाता। याकोव नहीं चाहता था कि कोई उसके पिता को ऐसी अवस्था में देखे। तात्याना सारे दिन अखबार खोलकर बैठी रहती और किसी बात से वह इतना डरी रहती कि उसके कान सदा लाल रहते। मिरोन मानो पंख लगाये सरकारी जागीर पर मास्को और पीत्रोग्राद आता जाता रहता। घर लौटकर वह चौड़ी एड़ी के अमरीकी जूते पहन कर टहलता रहता और घृणित प्रसन्नता से सबको बताता कि एक नशेबाज़ लम्पट किसान जोंक की तरह ज़ार से चिपका हुआ है।

"मुझे इस बात पर रत्तीभर विश्वास नहीं कि वास्तव में ऐसा कोई किसान है।" ओल्गा सोफ़े पर लेटे-लेटे बोली। उसकी आँखों की ज्योति क्षीण हो गई थी। उसके पास ही उसकी पुत्रवधू बैठी थी और दो वर्ष का पौत्र प्लेतोन खेल रहा था। "यह सब पढ़ाने के लिए जान-बूझकर गढ़ी हुई बातें हैं।"

"शाबास, बहुत ख़ूब! किसानों ने भी अच्छा बदला लिया!" तात्याना के चंचल पति ने ख़ुशी से उछलकर कहा।

हर्षातिरेक में वह अपने छोटे-छोटे मोटे हाथ मलने लगा। उन सब लोगों मे अकेले उसी को किसी भावी आह्लाद की आशा थी।

"हाय भगवान्!" तात्याना चिढ़कर बोली, "आख़िर तुम किस बात पर इतने ख़ुश हो रहे हो!"

उसकी ओर आश्चर्य से आँखें फाड़कर मित्या कूक उठा—

"क्या क....हा ? तुम्हें दिखाई ही नहीं देता ? किसानों को जो अत्याचार सहने पड़े हैं, वे आज उसका बदला चुका रहे हैं! उनके मूक रोष मे एक विष का परिपाक हो रहा था, जिसने इस एक किसान का रूप धारण कर लिया है....।"

"चुप रहो!" मिरोन चिल्लाया, "कुछ दिन पहले तो तुम दूसरा ही राग

अलापा करते थे !"

लेकिन मित्या उसी उत्साह से एक साँस में कहता चला गया—

"एक प्रतीक है वह प्रतीक, मात्र किसान नहीं ! तीन साल पहले ही ज़ार ने अपने शासन की तीन सौवीं वर्ष गाँठ मनाई थी और आज....!"

"क्या बकवास है ?" मिरोन ने तीव्र उपेक्षा से कहा। डाक्टर याकोवलेव ने सदा की भाँति खीसें निपोर दीं। याकोव ने मन ही मन सोचा कि कहीं नेस्तरैंको को इस तरह की बातों का पता चल जाय....!"

"ऐसी बातें क्यों करते हो ?" उसने पूछा। "इससे क्या फायदा ? और फिर उसने उन लोगों से कहा—"यह बातें बन्द करो।"

याकोव को यह देखकर गहरी निराशा हुई कि मिरोन भी काफ़ी घबराया-सा रहता है। सारे परिचित लोगों में केवल मित्या ही ऐसा व्यक्ति था, जो हर समय लट्टू की तरह घूमता रहता और हँसी और क़हक़हों के बीच शाम को गितार बजा-कर गाता—

'मेरी पत्नी क़ब्र में लेटी है....'

किन्तु अब इन गीतों से तात्याना का मनोरंजन नहीं होता था।

"ओफ़ ! तुम मुझे तंग करते हो।" वह कमरा छोड़कर बच्चों के पास चली जाती।

मित्या मज़दूरों को संतुष्ट रखने का भरसक प्रयत्न करता। उसने मिरोन को सलाह दी कि देहात से आटा, सब्ज़ियाँ, सूखे मटर और आलू ख़रीदकर मज-दूरों को सस्ते दाम पर बेचा जाय। इस बात पर मज़दूर बहुत ख़ुश हुए और मित्या के प्रति उनकी आस्था और भी बढ़ गई। इसके सिवा याकोव ने देखा कि मिरोन आये दिन मित्या से झगड़ पड़ता है।

"आखिर तुम चाहते क्या हो—हवा का रुख देखकर चलें ?" मिरोन ईर्षापूर्वक पूछता। मित्या मुस्कराकर उत्तर देता—

"लोगों की मरज़ी....लोगों के अधिकार....!"

"तुम कहाँ हो, मैं सिर्फ़ इतना ही जानना चाहता हूँ।" मिरोन चिल्लाता।

"बस करो, बहुत हो गया।" प्योत्र झल्ला उठता। याकोव जानता था कि उसके पिता को भतीजे और दामाद की लड़ाई देखने में सुख मिलता है।

तात्याना की डाँट-फटकार सुनकर वह मारे खुशी के फूलकर कुप्पा हो जाता था, विशेषकर जब नतालिया क्षीण स्वर में कहती—

"तान्या, एक प्याली चाय और बना दो।"

हर नई घटना से भय और आशंका के नये तत्व उभर आते। प्रत्येक घटना मानो अपने आप निकल पड़ती, मानो पहले जो कुछ हो चुका है उससे उसका कुछ सम्बन्ध न हो। इन दिनों ओल्गा बिल्कुल अन्धी हो गई थी। अचानक उसे सरदी लग गई और दो दिनों में ही वह चल बसी। उसकी मौत के कुछ दिन बाद ज़ार के गद्दी छोड़ने की ख़बर आई। नगर और मिल में खलबली मच गई, मानो कोई वज्रपात हो गया हो।

"अब क्या होगा? क्या प्रजातन्त्र बनेगा?" याकोव ने अपने चचेरे भाई से पूछा, जो बड़ी शान से हाथों मे अख़बार थामे बैठा था।

"निःस्सन्देह प्रजातन्त्र ही बनेगा!" मिरोन ने उत्तर दिया। वह डेस्क के ऊपर झुका हुआ अखबार पढ़ रहा था। अचानक उसकी कोहनी के भार से अख़बार के दो टुकड़े हो गये। याकोव को यह अपशकुन लगा, लेकिन मिरोन का चेहरा खिल उठा और उसने ऊँचे, प्रफुल्ल स्वर मे कहा—

"मेरे दोस्त, रूस का नया जीवन शुरू होनेवाला है!" उसने मानो याकोव को गले लगाने के लिए अपनी बाहें फैलाईं। फिर कुछ सोचकर अपने चश्मे को ठीक करते हुए उसी क्षण अगले दिन मास्को जाने की घोषणा कर दी।

मित्या ने एक जोशीले गाड़ीवान की तरह भावभंगी कर ज़ोर से कहा—

"अब सब बढ़िया हो जायगा। अब आख़िरकार लोगों को अपनी दबी-कुचली भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर तो मिलेगा!"

मिरोन ने फिर मित्या से बहस नहीं की, केवल अपने पतले होठों को चाटकर मुस्कुराता रहा। याकोव को लगा कि सचमुच सब ठीक हो गया है और सब लोग प्रसन्न हैं। मित्या ने बरामदे में खड़े होकर मज़दूरों की एकत्रित भीड़ को पेत्रोग्राद के सारे समाचार सुनाये। तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश काँप उठा और मित्या को कन्धों के ऊपर उछाला गया। मित्या ने शरीर को गेंद की तरह गोलकर बड़े ऊँचे उछला। लेकिन जब मिरोन को भी उछाला गया तो लगा कि उसके अंजर-पंजर उखड़कर गिर पड़ेंगे। वह हवा में अपनी टाँगें और

हाथ बेतहाशा इधर-उधर फेंकता था। पुराने मज़दूरों ने मित्या को चारों ओर से घेर लिया और विशालकाय तगड़ा बुनकर जेरासीम वोईनोव चिल्लाया—

"मित्री पेव्लोविच! तुम बड़े मज़ेदार आदमी हो! दोस्तो, मित्री पेव्लोविच के लिए हुर्रा!"

सब लोगों ने ज़ोर से तालियाँ बजाईं और वास्का ने आवेश मे आकर ज़ोरों से गाना शुरू किया, मानो वह पिये हुए हो—

"हो! लोग नीचे दबे थे
और ज़ार का सिंहासन ऊँचा था
ऊपर चढ़कर उन्होंने देखा
कि सिंहासन पर एक मूर्ख चिड़िया बैठी है!"

"और सुनाओ, वास्का!" मज़दूर चिल्लाये। वे याकोव को भी उछालना चाहते थे, लेकिन वह घर मे जाकर छिप गया, क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि उसे उछालकर मजदूर अपने हाथ हटा लेंगे। शाम के समय यास्कोव दफ़्तर में बैठा था कि इतने मे खिड़की के बाहर से तिखोन की आवाज़ सुनाई दी—

"तुम पिल्ले को रखकर क्या करोगे? मेरे हाथ बेच दो, तो मैं उसे बहुत बढ़िया कुत्ता बना दूँगा!"

"वाहरे बूढे, क्या यह समय कुत्ते पालने का है?" ज़ाखर ने व्यंग किया।

"पर उसे लेकर क्या करोगे? यह लो एक रूबल और सौदा पक्का हुआ।"

"इस बात को छोड़ो।"

याकोव ने खिड़की से बाहर सिर निकालकर कहा—

"तुमने ख़बर सुनी, तिखोन?"

"उहँ" बूढ़े ने उत्तर दिया। और चारों ओर देखकर धीरे से सीटी बजायी।

"ज़ार को लोगों ने हटा दिया।" फिर उसने जूते का फीता बाँधते हुए कहा—

"तूफान फूट पड़ा है! अन्तोनुश्का कहा करता था, गाड़ी का पहिया खो गया।" फिर तिखोन ने खड़े होकर आवाज़ दी—

"तुलुन! तुलुन!"

इसी हँसी-खुशी और शोर मे अनेक सप्ताह बीत गये। मिरोन, तात्याना

और डाक्टर सभी प्रसन्नमुख और एक दूसरे के प्रति स्नेहशील हो गये थे। शहर से कुछ अजनबी आकर मिस्त्री मेनायेव को साथ ले गये। गर्म और धूप भरी बसन्त की सुहावनी ऋतु आ गई।

पोलीना ने कहा—"सुनो मेरे मुलायम चारे! तुम्हारे मन में जो आये, सो कहो, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। ज़ार शासन करने से इन्कार करता है। सारे सैनिक अपाहिज हो गये हैं या मारे जा चुके हैं। पुलिस अलग कर दी गयी है। चारों ओर नागरिकों का राज्य है। हम लोग कैसे जीयेंगे? हर बदमाश अपनी मनमानी कर सकता है और मैं तुम्हे बताये देती हूँ कि यह कम्बख़्त ज़ितीकिन मुझे चैन से नहीं रहने देगा। और वे सारे लोग, जिन्हें मैंने निराश किया है, मेरी जान के पीछे पड़ जायेंगे। मै ऐसी अराजकता के बीच नहीं रह सकती। मैं ऐसी जगह जाना चाहती हूँ, जहाँ मुझे कोई न जानता हो। इसके अतिरिक्त क्रान्ति और स्वतन्त्रता के बाद तो हर एक को अपने मनचाहे ढंग से रहने का अवसर मिलना चाहिए।"

पोलीना का आग्रह दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। याकोव उसे धीरज बँधाता:

"कुछ देर और ठहरो। शान्ति स्थापित होते ही....।"

लेकिन उसे इस बात का विश्वास नहीं रहा कि उसके चारों ओर फैला आन्दोलन कभी शान्त होगा।

मिल मे दिन प्रतिदिन असन्तोष बढ़ता जा रहा था। जिसके लिए भय स्वाभाविक हो गया हो, वह व्यक्ति हर बात से घबरा जाता है और याकोव को ज़ाख़र की जली हुई खोपड़ी से डर लगता। वह सबका बेताज का बादशाह बना हुआ था। मज़दूर भेड़ों की तरह उसके पीछे चलते। मित्या भी एक पालतू चिड़िया की तरह उसके चारों ओर मँडराता रहता। ज़ाख़र एक विशाल, शक्तिशाली कुत्ते की तरह सीधा चलने लगा था। झुलसे सर के कारण अक्सर वह मित्या द्वारा भेंट की गई तात्याना की रोयेंदार तौलिया को सिर पर पगड़ी की तरह बाँध लेता। सहकारी अफ़सर एकी की तरह अपनी गन्दी फ़ौजी पतलून की पेटी में हाथ डालकर वह ज़ोर से चिल्लाता—

"ख़ामोश, साथियो!"

तीन मज़दूर कपड़ा चुराने के अपराध में उसके सामने लाये गये। उसकी

ऊँची आवाज़ से पूरा अहाता गूँज उठा।

"मालूम है कि तुमने किसकी चीज़ चुराई है ?"

और स्वय ही उसने उत्तर दिया—

"अपनी और हम सबकी ! हरामी पिल्लो ! अब चोरी नहीं कर पाओगे।" उसने अपराधियों को कोड़े लगाने का आदेश दिया और दो मज़दूर फौरन कोड़े लेकर उन पर पिल पड़े।

वास्का पागलों की तरह गा उठा—

"देखो जोंकों को कोड़े पड़ रहे हैं।"

"कितना सही फैसला हुआ है आज ?" अचानक वास्का जोर से बोल पड़ा :

"हे ईश्वर, लोगों की रक्षा करो !"

मित्या ने दूर से आवाज़ दी—

"शाबाश !"

वह भूरी पतलून पहने इधर-उधर भागता फिरता था। उसके लाल गलगुच्छों-वाले मुख पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं और आँखों से उल्लास फूटा पड़ता था। पिछली रात पत्नी से उसकी बुरी तरह लड़ाई हो गई थी। याकोव ने तात्याना की क्रोध-भरी आवाज़ सुनी थी—

"तुम भाँड़ हो। तुममें कोई आत्म-सम्मान नहीं। तुम्हारे विचार? भिखारियों के कोई विचार नहीं होते। सब झूठ है। एक महीना पहले तुम्हारे विचार.... मैं तंग आ गई हूँ। मैं कल ही अपनी बहन के पास शहर चली जाऊँगी। बच्चे भी मेरे साथ जायेंगे।"

इस बात से याकोव को रत्ती भर आश्चर्य नहीं हुआ। काफ़ी अरसे से वह देखता रहा था कि मित्या के कार्य आपत्तिजनक होते जा रहे थे। उसे ख़ुशी सिर्फ़ इस बात की हुई कि मित्या के चरित्र को सबसे पहले उसने ही भाँप लिया था और अब नतालिया भी, जो पहले मित्या को इतना लाड़ करती थी, बिगड़-कर बोली—

"उसे क्या हो गया है ? दिन-भर आवारा छोकरों की तरह झगड़ता रहता है। कितना कृतघ्न है।"

मित्या समझता, "जीवन एक लाड़ली सुन्दरी की तरह है। लेकिन अब

हमें परियों की कहानियों को भूलना होगा। भेड़िये और मेमने अब एक घाट पानी नहीं पी सकते। वह ज़माने बीत गये, तात्याना पेत्रोव्ना !"

मिरोन चिढ़कर पूछता—

"और कल तुम क्या कहोगे ?"

"जो भी ज़िन्दगी कहलवायेगी, वही। और कुछ ?"

मिरोन और तात्याना उसकी ख़ूब दुर्गत बनाते। कुछ दिन बाद मित्या अपना सारा सामान लेकर शहर चला गया—किताबों के तीन बड़े पुलिन्दे और बेंत का एक बड़ा सन्दूक़।

याकोव को चारों ओर आग लगी दिखाई देती। सब लोग मूर्खता का धुँआ छोड़ रहे थे। पागलपन के ये दिन ख़त्म होते न लगते थे। उसने पोलीना से कहा—

"अच्छी बात है, मैंने फ़ैसला कर लिया है। हम पहले मास्को जायेंगे, फिर देखा जायगा....।"

पोलीना प्रसन्नता से गद्गद् होकर उसके गले से लिपट गई और बार-बार उसका मुख चूमने लगी।

जुलाई के महीने में बग़ीचे पर रक्तिम आभा फैल जाती। वर्षा से भीगी गरम मिट्टी की सुगन्ध से सारा कमरा गमक उठता। वातावरण में निराशा छा जाती। एक दिन याकोव ने पोलीना के गरम नम हाथों को अपने कन्धे से हटाकर अनमने स्वर में कहा—

"जाकर कपड़े पहन लो। फिर गम्भीरता से सारे मामले पर सोचेंगे।"

पोलीना भागकर एक शॉल ओढ़ आई और चुपचाप उसके पास बैठ गई।

याकोव ने अपनी दाढ़ी खुजलाते हुए कहा—

"हमें कोई ऐसा स्थान ढूँढ़ना होगा, ऐसा देश जहाँ शान्ति हो, जहाँ तुम्हें न चीज़ों को समझने के लिए मगज़पच्ची करनी पड़े, और न और लोगों के लिए परेशानी ही उठानी पड़े। क्यों ?"

"ठीक।" पोलीना ने कहा।

"हमें हर समय सतर्क रहना होगा। मिरोन कहता है कि गाड़ियों में भगोड़े सैनिकों की भरमार रहती है। हमें ग़रीबों के भेस में जाना चाहिए।"

"तुम काफ़ी धन साथ ले चलो।"

"हाँ। मैं घरवालों को यह नहीं बताऊँगा कि कहाँ जा रहा हूँ। केवल यही कहूँगा कि मैं वोरोगोरोद जा रहा हूँ—समझीं?"

"इसे छिपाने से क्या लाभ?" पोलीना ने आश्चर्य से सन्दिग्ध स्वर में पूछा।

याकोव को यह बात पहले नहीं सूझी थी। उसने पोलीना को समझाया—

"देखो, मेरे पिता और मिरोन तरह-तरह के सवाल पूछेंगे। व्यर्थ की बहस से क्या फायदा? मैं मास्को जाकर बहुत धन जुटा सकता हूँ।"

"तो जल्दी ही सब ठीक कर डालो। अब यहाँ रहना असम्भव हो गया है। मँहगाई की तो हद हो गई है, चीज़ें मिलतीं नहीं। ऐसी हालत मे चोरी-डाके पड़ेंगे।"

फिर दरवाज़े की ओर कनखियों से देखकर वह फुसफुसाई—

"मेरी नौकरानी को ही देखो! पहले वह इतनी भली थी, पर अब हर समय लड़ती-झगड़ती है। किसी रात को मेरी हत्या भी कर डाले, तो आश्चर्य की बात नही। कल मैंने उसे किसी आदमी से छिप-छिपकर बातें करते सुना। मैंने दरवाजा खोला, तो देखा कि वह घुटने टेककर बुदबुदा रही थी। मैं ऐसी बातों से तंग आ गई हूँ।"

"चुप रहो। पहले मैं चला जाऊँगा।" याकोव ने उसे चुप कराते हुए कहा।

"नहीं, मैं पहले जाऊँगी। तुम मुझे पैसे दे देना और....।"

"तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं, क्यों?" याकोव ने अपमान की पीड़ा सहते हुए पूछा।

"नहीं। मैं साफ़ बात कहती हूँ। नहीं! जब सब लोगों ने ज़ार को धोखा दे दिया, तो विश्वास कहाँ रहा? तुम्हे भला किसी पर विश्वास है?"

पोलीना की दलील ज़ोरदार थी। उससे भी अधिक ज़ोर था उसके उरोजों में, जो चादर की लटकते परतों से आधे दिखाई दे रहे थे। याकोव ने फ़ौरन हथियार डाल दिये। अन्त में यह तय हुआ कि पोलीना अगले रोज़ ही सामान बाँधकर नोवोगोरोद चली जाये और याकोव की राह देखेगी।

दूसरे दिन याकोव ने घर जाकर सिर-दर्द और पेट दुखने की शिकायत

की। पिछले कुछ महीनों में ही उसका वज़न बहुत घट गया था। उसकी इन्द्र-धनुष-सरीखी आँखों के नीचे गड्ढे पड़ गये थे। आठ दिन बाद वह सुनसान रास्ते से रेलवे स्टेशन की ओर चल दिया। रास्ता ऊबड़-खाबड़ पत्थरों से पटा था, वह भग्न जीवन को पीछे छोड़ आया था। सामने धुँधले बादलों के बीच मन्द सूर्य चमक रहा था।

एक महीने बाद मास्को से लौटकर मिरोन तात्याना से मिला। उसने अपनी हथेली की ओर देखते हुए कहा—

"मैं एक दुखद समाचार लेकर आया हूँ। वह बेहूदा औरत जो याकोव के साथ रहती थी, मास्को में मुझे मिली थी, उसने बताया कि रास्ते में कुछ लोगों ने याकोव को मार-पीटकर गाड़ी के नीचे फेंक दिया....।"

"नहीं!" तात्याना ने कुर्सी से उठने का प्रयत्न करते हुए कहा।

"चलती गाड़ी से। दो दिन बाद वह चल बसा। पोलीना ने पेतुश्की स्टेशन के पास एक क़ब्रिस्तान में उसे दफ़ना दिया।"

तात्याना फफक-फफककर रो पड़ी। उसके दुबले कन्धे काँपने लगे और उसके ज़मीन पर फहराते काले वस्त्रों को देखकर लगता था कि वह शोक में घुल रही है।

मिरोन ने अपना चश्मा ठीक किया और कुछ देर तक गिरजे की घन्टी सुनता रहा। फिर कमरे में टहलते हुए उसने तात्याना को समझाया—

"रोने-धोने से क्या लाभ? किसी से कहना मत। वह बेहद निकम्मा, मूर्ख और अशिष्ट आदमी था। क्षमा करना, किन्तु यह बात सच है।"

"हे ईश्वर!" तात्याना की आँखें रो-रोकर लाल हो रही थीं। उसने एक उँगली को मुँह से गीला करके अपनी भौंहों को ठीक किया।

"वह छोकरी पोलीना एक दुखी विधवा का अभिनय कर रही थी, लेकिन उसकी वेश-भूषा को देखने से लगता था कि उसने याकोव को अच्छी तरह लूटा है। वह कह रही थी कि उसने घरवालों को भी सूचना भेज दी है।" मिरोन ने जेबों में हाथ डालते हुए कहा।

तात्याना ने सिर हिलाया।

"अच्छा! मैं तो पहले ही जानता था कि उसने सूचना नहीं भेजी होगी।

मैं सोचता हूँ कि तुम्हारे माता-पिता को यह बात नहीं बतानी चाहिए। अच्छा हो कि वे यही समझें कि याकोव कहीं पर जिन्दा है, क्यों ?"

"हाँ, यही ठीक रहेगा।" तात्याना ने सहमति प्रकट की।

"ठीक है, चचा प्योत्र तो बिलकुल सठिया गये हैं, लेकिन तुम्हारी माँ तो रो-रोकर मर जायगी।"

तात्याना ने फिर सिर हिलाकर कहा—

"हम सब भी जल्द ही ख़त्म होनेवाले हैं।"

"शायद अगर हम यहाँ ठहरें। मैं अपनी पत्नी और बच्चों को बाहर भेज रहा हूँ। तुम भी कहीं चली जाओ। कहीं जाकर मोरोजोव ...अच्छा तो हम बूढ़ों को यह बात नहीं बतायेंगे। अब मुझे इजाज़त दो। मेरी पत्नी की तबियत अच्छी नहीं।"

फिर उसने आगे बढ़कर तात्याना से हाथ मिलाया। जाते-जाते वह बोला—

"आजकल सफ़र करना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। सड़कों की बुरी दशा है।"

प्योत्र आजकल अर्द्धचेतन अवस्था में रहने लगा था। वह दिन-रात बिस्तर पर पड़ा रहता या खिड़की के पास पड़ी आराम-कुर्सी पर बैठ जाता। खिड़की के बाहर स्वच्छ नीला आकाश फैला था, जिस पर कभी-कभी बादल छा जाते। शीशे में एक मोटे बूढ़े व्यक्ति की आकृति दिखाई देती थी, जिसका चेहरा और आँखें सूजी हुई थीं, दाढ़ी के बाल सफ़ेद और बिखरे थे। प्योत्र अपनी शक्ल देखकर बुदबुदाता—

"कितना सुन्दर पिस्सू है!"

उसकी पत्नी उसके ऊपर झुककर उसे जगाने की कोशिश करती।

"तुम कहीं चले जाओ। तुम्हें इलाज की ज़रूरत है।"

प्योत्र चिढ़कर कहता—

"निकल जाओ यहाँ से! मैं तो तुमसे तंग आ गया हूँ। मुझे पड़ा रहने दो।"

फिर वह पड़ा-पड़ा कान लगाकर कुछ सुनता। अहाते में, बग़ीचे में चारों ओर चहल-पहल थी; लेकिन मिल में सन्नाटा छाया था।

उसके अन्तर का असन्तुष्ट व्यक्ति मर चुका था। चलो अच्छा हुआ,

क्योंकि प्योत्र में अब सोचने की शक्ति न रही थी और न सोचने की उसे इच्छा ही होती थी। बहुत सोचने-विचारने के बाद प्योत्र इस नतीजे पर पहुँचा था कि चिन्ता करना व्यर्थ है--सब लोग कहाँ चले गये ? याकोव, तात्याना, मित्या ?

कभी-कभी वह अपनी पत्नी से पूछता—"क्या इलिया वापस आ गया ?"

"नहीं।"

"अभी तक नहीं लौटा ?"

"नहीं।"

"और याकोव ?"

"वह भी नहीं।"

"तो वे कहीं मौज उड़ा रहे हैं और मिरोन कारोबार को जोंक की तरह चूस रहा है।"

"यह बातें मत सोचो।" नतालिया समझाती।

"हट जाओ!"

वह कोने में जाकर प्योत्र को टकटकी बाँधकर देखती, उस व्यक्ति को देखती जिसके साथ उसने सारी जिन्दगी बितायी थी। वह बुढ़ापे के कारण दुर्बल हो गयी थी और उसका सिर हिलने लगा था।

प्योत्र अक्सर अपने कमरे में अजनबियों को देखकर चौंक उठता। वह आँखें फाड़कर उनकी ओर ताकता रहता। उसकी पत्नी चिल्लाकर कहती—

"हे ईश्वर! यह क्या हो रहा है ? मैं कहती हूँ ये मालिक हैं। हम मालिक हैं। मैं इन्हें इलाज के लिए शहर ले जाना चाहती हूँ।"

"यह मुझे छिपाना चाहती है। आखिर क्यों ?" प्योत्र सोचता। "महा मूर्ख है। याकोव इसकी ही तरह मूर्ख है। लेकिन इलिया मेरी तरह है। उसे आने दो, वह सब ठीक कर देगा।"

वर्षा बरफ और पाला; साथ में तेज़ तूफ़ान।

अचानक ज़ोर की भूख ने प्योत्र की तन्द्रा भंग कर दी। वह बाहर निकल-कर बग़ीचे के ग्रीष्म-गृह में आ गया। सामने की शीशे की दीवार पर रक्तिम आकाश का प्रतिबिम्ब पड़ रहा था। प्योत्र को लगा कि वह हाथ बढ़ाकर आकाश को छू सकता है।

"मुझे भूख लगी है।" लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला।

ग्रीष्म-गृह के सामने दो घोड़े एक-दूसरे की गर्दन पर सिर रखे विश्राम कर रहे थे। उनमे से एक हल्के भूरे रंग का था और दूसरा श्यामवर्ण का। पास की बेंच पर एक आदमी बैठा रस्सी को सुलझा रहा था।

"नतालिया! सुनती नहीं? मुझे कुछ खाने को दो।"

उसकी पत्नी सदा पहली आवाज़ पर ही आ जाती थी। वह लगातार प्योत्र के सिरहाने बैठी रहती थी। पर आज उसका पता नहीं।

"क्या वह. ..।" उसे आश्चर्य हुआ। फिर कुछ देर सोचकर उसने कहा—"शायद वह बीमार हो।"

उसने अपना सिर उठाया। ग्रीष्म-गृह के दरवाजे पर कोई चीज़ चमक रही थी। उसने देखा कि वह हरी वर्दीवाले एक सैनिक की पीठ पर लटकी हुई बन्दूक की संगीन थी। अहाते मे कोई चिल्ला रहा था—

"यह क्या हो रहा है, साथियो! क्या घोड़ों से ऐसा बर्ताव किया जाता है? लोग सुअरों तक से अच्छा सलूक करते हैं! और यह भूसा क्यों बाहर पड़ा भीग रहा है? क्या तुम ग्रीष्म-गृह के ताले में बन्द होना चाहते हो?"

बेंच पर बैठा व्यक्ति रस्सी को भूमि पर पटककर सैनिक से बोला—

"वह अपने आप को न जाने क्या समझता है, शैतान उसकी ख़बर ले!"

"आजकल पहले से ज्यादा अफसर हो गये हैं।" सिपाही ने चिढ़कर कहा।

"इन शैतानों की नियुक्ति कौन करता है?"

"यह लोग अपनी नियुक्ति स्वयं करते हैं। आजकल सब बातें स्वयं होती हैं, बूढ़ी नानी की कहानियो की तरह!"

उस आदमी ने आगे बढ़कर घोड़ों की अयाल पकड़ लीं। प्योत्र ने पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा—

"अरे कौन है? मेरी बीवी को बुलाओ!"

बकवास बन्द कर बुड्ढे! "हूँ, इसे अपनी बीवी चाहिए!" जवाब मिला।

घोड़े वहाँ से हाँक दिये गये। प्योत्र ने अपने मुख और दाढ़ी पर हाथ फेरा, बर्फ की-सी ठंडी उँगलियों से कान टटोलकर चारों ओर देखा। वह ग्रीष्म-गृह के पिछवाड़े की दीवार पर चित्रित एक सेब के वृक्ष के नीचे लेटा था। चित्र में

लाल सेबों के गुच्छे चमक रहे थे। उसे नीचे से कोई कठोर चीज़ चुभ रही थी। उसने अपना फटा-पुराना लोमड़ी का अस्तर लगा कोट ऊपर से ओढ़ रखा था और गरम वास्कट पहन रखी थी। फिर भी उसे सरदी लग रही थी। उसकी समझ में न आया कि वह वहाँ क्यों पड़ा हुआ है। शायद किसी त्यौहार के अवसर पर घर मे सफ़ाई हो रही है। कौन-सा त्योहार? बग़ीचे में घोड़े और सैनिक क्यों खड़े हैं? अहाते मे यह कौन चिल्ला रहा है?

"कामरेड! तुम निरे मूर्ख हो! क्या कहा? सैनिक थक गये हैं? थकने का समय अभी बहुत दूर है। बेवकूफी मत करो।"

चिल्लाहट दूर पर थी, फिर भी उसको सुनकर प्योत्र के कान फटने लगे और उसका सिर चकराने लगा। उसकी टाँग को मानो लकवा मार गया। घुटनों से नीचे वह बेकाम हो गये। दीवार पर सेब का पेड़ वान्यालूकिन ने बनाया था। वह चोर था। बाद में उसने एक गिरजे मे चोरी की थी और जेल मे मर गया।

एक लम्बा व्यक्ति रद्दी सी टोपी पहने ग्रीष्म-गृह मे दाख़िल हुआ। उसकी परछाईं निस्तेज थी और उसके शरीर से तारकोल की गंध आ रही थी।

"कौन है, तिखोन?"

"और कौन?"

तिखोन का रूखा उत्तर सुनकर भी प्योत्र के कान मानो बहरे हो गये। बूढ़े जमादार ने अपने हाथ ऐसे फैंके, मानो वह चरचराते फ़र्श पर तैर रहा हो।"

"यह कौन चिल्ला रहा है?"

"ज़ाख़र मोरोजोव।"

"और यह सिपाही क्या कर रहा है?"

"युद्ध जो छिड़ा है!"

कुछ देर चुप रहने के बाद प्योत्र ने पूछा—

"क्या दुश्मन यहाँ भी पहुँच गया?"

"यह युद्ध तो तुम्हारे विरुद्ध है, प्योत्र इलिच!"

मालिक ने कठोर स्वर मे डाँटा—

"मेरे साथ मज़ाक मत करो, मूर्ख बुड्ढे! मैं तुम्हारा कामरेड नहीं हूँ।"

इसका उसे शान्त स्वर में उत्तर मिला—

"यह अन्तिम युद्ध है। वे अब और किसी युद्ध की इच्छा नहीं रखते और अब सब लोग एक दूसरे के कामरेड हैं, और मूर्ख के लिए मै बूढ़ा ही हूँ—यह सच है।"

इसमें सन्देह नहीं कि तिखोन उसकी खिल्ली उड़ा रहा था। फिर वह बिना टोपी उतारे अपने मालिक के चरणों के पास बैठ गया। अहाते में से एक भारी गले की आवाज़ सुनाई दी—

"याद रखो, आठ बजे के बाद कोई गलियों में न दिखाई दे!"

"मेरी बीवी कहाँ है?" प्योत्र ने पूछा।

"वह रोटी की तलाश में गई है।"

"रोटी की तलाश? क्या मतलब?"

"जो कुछ कह रहा हूँ। रोटी ईंट-पत्थरों की तरह सड़को पर तो बिखरी नहीं रहती!"

बगीचे मे अँधेरा घना हो रहा था। स्नानागार के पास बैठा सैनिक बार-बार जमुहाई ले रहा था। वह अब दिखाई नहीं पड़ता था, सिर्फ उसकी संगीन पानी में तैरती मछली के समान चमक रही थी। प्योत्र बहुत-सी बातें पूछना चाहता था, लेकिन वह चुप रहा। कोई समझ की बात तिखोन से न मालूम होती। प्योत्र के मन की उलझनें बढ़ती जा रही थी और वह बहुत भूखा था।

तिखोन भुनभुनाया—

"मैं मूर्ख सही, लेकिन सबसे पहले मैंने ही सत्य को पहचाना था। देख लो, ज़िन्दगी ने कैसी करवट ली है। मैं हमेशा कहता था कि तुम्हें कठोर परिश्रम करना चाहिए। लो वह दिन भी आ पहुँचा। तुम्हें कूड़ा-करट की तरह झाड़कर बाहर फेंक दिया गया। प्योत्र इलिच! शैतान काटता रहा और तुम उसका छुरा तेज़ करते रहे, किसलिए? तुमने अनगिनत पाप किये हैं। तुम्हें देखकर मुझे आश्चर्य होता था और मै सोचता था कि इसका अन्त कब होगा? और अब तुम्हारा अन्त आ गया है। तुम्हें अपने कर्मों का फल मिल रहा है। गाड़ी का एक पहिया खो गया है!"

"यह आदमी पागलों-सा बके जा रहा है!" प्योत्र ने मन ही मन सोचा। फिर भी उसनें पूछा—

"मैं यहाँ क्यों पड़ा हूँ ?"

"लोगों ने तुम्हे घर से बाहर निकाल दिया है।"

"और मिरोन ?"

"सारे परिवार को !"

"याकोव कहाँ है ?"

"वह बहुत दिनों से ग़ायब है।"

"इलिया कहाँ है ?"

"सुना है वह नई हकूमत के साथ है। उसी के कारण शायद ज़िन्दा हो, क्योंकि वह उनके साथ है, नहीं तो....।"

"पागलों-सा बक रहा है।" प्योत्र को इस बात का अब पूर्ण विश्वास हो गया। वह चुपचाप सोचने लगा, "तिखोन सठिया गया है, यही होना था।"

आकाश मे नन्हें-नन्हें निस्तेज तारे टिमटिमाने लगे। प्योत्र ने ऐसे तारे पहले कभी न देखे थे, इतने तारे कभी थे भी नहीं।

तिखोन ने अपनी टोपी उतारी और उसे उँगलियों पर घुमाते हुए भुनभुनाया—

"तुम्हें अपनी करनी का फल मिल रहा है, बेवकूफ़ी-भरे सियानपन का। तुमसे तो भिखारियों की दशा अच्छी है।"

अचानक उसका स्वर बदल गया। वह बोला—

"तुम्हें वह छोकरा याद है ? मुंशी का बेटा ?"

"क्यों, क्या बात है ?"

प्योत्र समझ नहीं पा रहा था कि इस आकस्मिक प्रश्न से आश्चर्य में पड़े या डरे। पर क्षण भर बाद वह अच्छी तरह समझ गया, जब तिखोन बोला—

"तुमने उसे मार डाला, उसी तरह जैसे ज़ाखर ने अपने पिल्ले को मार डाला। तुमने उसे क्यों मारा ?"

अब प्योत्र की समझ में आया। तिखोन ने इतने बरस बाद उसकी बीमार हालत में उसके विरुद्ध रिपोर्ट करके उसे गिरफ्तार करवा दिया है। इस बात से वह ज़रा भी न घबराया। वह तिखोन की इस मूर्खता पर झुँझला उठा। कुहनियों पर झुककर उसने सर उठाया और सूखे गले से बोलना शुरू किया।

उसके स्वर में व्यंग की कटुता थी—

"यह सब झूठ है ! और फिर हर अपराध की अवधि होती है। वह अवधि कब की बीत चुकी। इसके सिवा तुम चूक गये, तुम्हारे दिमाग नहीं है। तुम भूल गये हो कि उस दिन तुमने ही क्या कहा था, क्या देखा था....।"

मैंने क्या कहा था ? यही न कि मैंने तुम्हें हत्या करते नहीं देखा, लेकिन मैं समझ गया। मैंने जो कुछ कहा, वह यह देखने के लिये कि तुम क्या करते हो। मैंने झूठ बोला था और तुम ख़ुश हुए, मै चुपचाप सब देखता रहा—प्रतीक्षा करता रहा....तुम सब एक जैसे हो। अलेक्सी इलिच ने अपने शराबी ससुर को उकसाकर बार्स्की की सराय को आग लगवा दी। तुम्हारे पिता ने इस बात से समझ लिया कि यह किसका काम है और उसने शराबी को पिटवा कर ख़तम कर दिया। निकिता इस बात को जानता था। वह भी समझदार आदमी था ! वह शायद चुप रहता, लेकिन क्रोध में आकर उसने मुझे यह बात बता दी। मैंने उसे समझाया—"तुम भिक्षु हो, तुम्हें ऐसी बातें भूल जानी चाहिए, पर मैं इन्हे याद रखूँगा। तुमने निकिता के साथ क्या नहीं किया ? पहले उसे डराया। फिर फाँसी लगाने पर विवश कर दिया और तब संन्यास लेने के लिये—ताकि वह तुम्हारे लिये दुआएँ माँगे। तुम्हारे लिए प्रार्थना करते वह डरता था। इसीलिए ईश्वर पर से उसका विश्वास उठ गया....।"

ऐसा लगता था कि तिखोन कयामत तक बातें करता जायगा। उसके शब्द शान्त और संयत थे। यद्यपि प्रकट रूप से उनमें द्वेष का भाव न था। उसका शरीर अँधेरे में लगभग अदृष्ट था। उसके शब्द रात मे गोबरैले की तरह भनभनाते। शब्दों से प्योत्र को डर नहीं लग रहा था। पर उनकी गुरुता से वह दबा जा रहा था, उनके अप्रत्याशित रूप ने उसको गूँगा बना दिया। प्योत्र को पूरा विश्वास हो गया कि तिखोन की मति मारी गई है। तिखोन ने इस तरह लम्बी साँस छोड़ी, जैसे कोई अपने कंधे से भारी बोझ फेंक चुका हो। वह एकरस स्वर में अतीत की भूली घटनाओ को खोदकर बाहर निकाल रहा था, उन घटनाओं को, जिनको भूल जाना ही अच्छा था—

"तुम लोगों ने, आर्तामोनोव घराने ने, मेरा विश्वास भी खत्म कर दिया। तुम्हारे ही कारण निकिता ने मेरा विश्वास नष्ट कर दिया। तुम लोगों का न

कोई ईश्वर है और न शैतान। तुम्हारे घर में रखी मूर्तियाँ सिर्फ लोगों की आँखों में धूल झोंकने के लिये हैं। तुम किस पर विश्वास करते हो? यह समझ में नहीं आता। तुम्हें किसी चीज पर भी विश्वास है? धोखा-धड़ी में? तुम्हारा सारा जीवन धोखा-धड़ी ही था। अब सब पोल खुल गयी है। तुम्हारा पर्दा-फ़ाश हो गया है....।"

प्योत्र ने बड़ी कठिनाई से अपनी टाँगों को हिलाना चाहा, लेकिन उसके तलवे निर्जीव हो गये थे। उसे लगा मानो उसकी टाँगें टूट गई हैं, वह हवा में लटक रहा है। घबराकर उसने तिखोन के कंधे का सहारा लिया।

"यह क्या करते हो?" जमादार ने उसे झटककर अलग करते हुए कहा।" खबरदार, जो मुझे छुआ! तुम मेरा गला नहीं घोंट पाओगे। तुम्हारे शरीर में इतनी ताक़त नहीं बची! तुम्हारे पिता मज़बूत थे, लेकिन उन्होंने अपनी सारी शक्ति गप्पें हाँकने में नष्ट कर दी। तुमने मेरी श्रद्धा, मेरा विश्वास नष्ट कर दिया। अब मुझे मृत्यु से भय लगता है, यह सब तुम्हारे चकमे देख-देखकर, शैतानों!"

प्योत्र की भूख बढ़ती जा रही थी। वह अपनी टाँगों की दशा देखकर भय-भीत हो गया।

"क्या मैं मर रहा हूँ? अभी तो मैं पचहत्तर वर्ष का भी नहीं हूँ, हे ईश्वर....!" उसने लेटने की कोशिश की। लेकिन अपनी टाँगें उठा न सका। तब उसने तिखोन से कहा—

"मेरी टाँगें उठाकर ज़रा ऊँची कर दो।"

तिखोन ने पहले के मालिक की निर्जीव टाँगों को उठाकर बेंच पर रख दिया। फिर वह थूककर अपने हैट पर बैठ गया। उसके हाथों में कोई चमक-दार चीज़ थी। प्योत्र ने ग़ौर से देखा कि वह अँधेरे में सुई से कुछ सी रहा है, जिससे तिखोन का पागलपन उसकी दृष्टि में और भी प्रमाणित हो गया। बग़ीचे में रोशनी की तीन लकीरें दिखाई दीं। दूर पर लेकिन स्पष्ट स्वर में किसी ने कहा—

"साथियो! पीछे नहीं हटेंगे, कभी नहीं!"

"तिखोन ने अपनी बात में उस आवाज़ को डुबा दिया—

"तुम्हारे पिता ने मेरे भाई को मरवा दिया।"

"यह झूठ है।" प्योत्र के मुँह से हठात् निकल गया। फिर कुछ सोचकर उसने पूछा—"कब ?"

"तभी !"

"मूर्ख ! पागल ! तुम झूठ क्यों बके जा रहे हो ?" एकाएक क्रोध के आवेश में प्योत्र चिल्लाया। भूख के कारण उसकी शक्ति और भी क्षीण हुई जा रही थी। "आख़िर तुम क्या चाहते हो ? तुम क्या मेरी अन्तरात्मा हो ? मेरा न्याय करने आये हो ? पिछले तीस साल तक तुम क्यों चुप रहे ?"

"क्योंकि मैं सोचने में लगा था।"

"अपने मन में घृणा एकत्र कर रहे थे ?"

"अच्छा...! जाओ पुलिस को बता दो !"

"यहाँ कोई पुलिस नहीं।"

"जाकर उनसे कहना 'इस आदमी ने जीवनभर मुझे खाना-कपड़ा दिया। इसे सज़ा दो।' ओफ़ ! लेकिन तुम तो पहले ही पुलिस को सब कुछ बता चुके हो ! आख़िर तुम चाहते क्या हो ? मुझे डराते-धमकाते क्यों नहीं ? मुझसे रक़म वसूल करो।"

"तुम्हारे पास पैसा है कहाँ ? न कभी था। इन्साफ़ ? मैं तुम्हारा इन्साफ़ क्यों करूँ ?"

"तो फिर तुम यह धमकी किसलिये दे रहे हो, मूर्ख गँवार ?"

पर प्योत्र ने अस्पष्ट रूप से समझ लिया कि तिखोन ज़रा भी धमका नहीं रहा है। तिखोन भुनभुनाया—"सब हत्यारों का अन्त आ पहुँचा है। उन्होंने मेरे भाई को क्यों मारा ?"

"तुम्हारे भाई की बात झूठ है।"

दोनों बूढ़े एक-दूसरे की बात काटते हुए तेज़ी से बोल रहे थे।

"झूठ ? मैं उस रात उसके साथ था।"

"किसके साथ ?"

"अपने भाई के; जब तुम्हारे बाप ने उसकी हत्या की, तो मैं भाग आया। मरते समय तुम्हारे पिता ने ख़ून क्यों उगला ? वह मेरे भाई का ख़ून था।"

"यह बात पुरानी हो चुकी।"

"अब लोगो ने तुम्हें नीचा दिखाया। तुम्हे निकालकर बाहर फेंक दिया है। यहाँ कोई तुम्हारी बात पूछनेवाला भी नहीं है। मैं भी सदा की तरह एक किनारे खड़े होकर देखता रहूँगा।"

"तुम सदा की तरह मूर्ख हो।"

प्योत्र को लगा कि तिखोन उसे एक भयानक अँधेरी खाई की ओर ढकेल रहा है। वह बार-बार कह रहा था—

"वह बातें पुरानी हो गईं। सब बातें झूठी हैं। तुम्हारा कोई भाई नहीं था। तुम लोगों का अपना कुछ नही होता।"

"हमारी आत्मा अपनी होती है।"

"तुमने मुझसे बदला चुका लिया। तुमने इलिया को बिगाड़ दिया।"

"तुम लोगो ने ही मुझे बिगाड़ा। निकिता इलिच की बातों ने।"

"वह तो कहता था कि इसमे तुम्हारा कुसूर है।"

"मैंने कई बार तुम्हारे पिता की हत्या करनी चाही। अपना फावड़ा तक उसके सर पर मारने को उठाया....तुम चालाक हो!"

"चालाक तो तुम हो!"

"तुम्हें सेराफ़ीम को रखना चाहिये था। वह मुझे भी ले बीता। उसने कभी किसी को नुकसान नही पहुँचाया, पर उसका आचरण ठीक नहीं था। इसका कारण—

"... चारों ओर तुम्हारी गन्दी चालें थीं।"

"कौन जा रहा है? किधर?" अँधेरे में एक क्रोध-भरी आवाज़ सुनाई दी—"तुम गधों को कितनी बार बताया जाय कि आठ बजे के बाद मटरगश्ती करना मना है?"

तिखोन उठकर दरवाज़े की ओर बढ़ा और अँधेरे में मानो ग़ायब हो गया। प्योत्र उत्तेजना, भूख और थकान से चूर होकर अंधकार में ताकता रहा, फिर डरकर उसने आँखें बन्द कर लीं।

"कहो, कुछ मिला?" तिखोन किसी से पूछ रहा था।

"बस इतना ही।"

यह नतालिया की आवाज थी। वह इतनी देर तक कहाँ थी?

प्योत्र ने आँखें खोलीं। कुहनियों के सहारे उठकर उसने देखा दरवाज़े के पास दो काली मूर्तियाँ थीं। अचानक उसे याद आया कि वह जीवन भर एक ही समस्या का समाधान ढूँढ़ता रहा है। उसका जीवन निराशा और धोखा-धड़ी से क्यों ग्रस्त है? इसमें किसका कसूर है? 'इसकी ज़िम्मेदारी किस पर है?' अब उसकी समझ में आया।

उसकी पत्नी आकर घुटनों के बल बैठ गई।

"हे ईश्वर, तुम्हारी दया से.... ।"

"देखो तिखोन! सारा कसूर इसी औरत का है।" प्योत्र ने शान्ति की साँस लेते हुए कहा। "इस लालची औरत ने ही मुझे तबाह किया है। यही बात है।"

फिर ज़ोर से वह ग़ुर्राया--

"निकिता भी....इसी के कारण तबाह हुआ। यह तो तुम भी अच्छी तरह जानते हो।" बोलते बोलते प्योत्र की साँस फूल गई। सबसे विचित्र बात तो यह थी कि उसकी पत्नी न तो खफा हुई और न डरी। वह रोई भी नहीं। काँपते हाथों से प्योत्र के बालों को सहलाकर उसने घबराये स्वर में धीमे से कहा--

"शि....चुप रहो! लोग बड़े चिड़चिड़े हो गये हैं।"

"कुछ खाने को दो।"

नतालिया ने अचार का एक टुकड़ा और पानी मे भीगी रोटी का एक टुकड़ा उसके हाथ में रख दिया। अचार गरम था और रोटी कच्चे आटे की तरह उसकी उँगलियों में चिपक गयी।

प्योत्र भौंचक होकर चिल्ला उठा--

"यह क्या है? यह--मेरे लिए? और इतना ही?"

"भगवान् के लिए चुप रहो। और कुछ नहीं है। और सिपाही भी.... ।" नतालिया ने फुसफुसाकर कहा।

"तो मुझे बस यही मिलेगा? मेरी सारी ज़िन्दगी के बाद?"

उसने रोटी को हाथ मे लेकर तौला। उसे अस्पष्ट रूप से लगा कि कुछ हो गया है, कुछ असहनीय, कोई घातक अपमान। और इसके लिए बेचारी

नतालिया का कोई दोष नहीं है।

उसने रोटी दरवाजे की ओर फेंक दी और क्षीण, किन्तु दृढ़ स्वर में बोला :

"मैं यह नहीं लेता।"

तिखोन ने रोटी उठाकर झाड़ी-पोंछी। नतालिया ने एक बार फिर पति के हाथ में रोटी थमा दी।

"इसे खा लो। खफ़ा मत हो।"

नतालिया का हाथ झटककर प्योत्र ने ज़ोर से आँखें मींच लीं और क्रोध से फुफकारकर कहा--

"मैं यह नहीं लेता। दूर हटो!"